ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह ३७२ म अंक १५ जून २०२३ (वर्ष १६ मास १८६ अंक ३७२)

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्

विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादन अथवा संचारन-प्रसारण नै कएल जा सकैत अछि।
(c) २०००- २०२३. सर्वाधिकार सुरक्षित। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।*
ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।
(c)२०००- २०२३. विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives; and the right to e-publish/ print-publish all these archives. रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com कैँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ पठा सकैत छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकरो वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ऐ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

© Preeti Thakur (sales.videha@gmail.com)

Videha e-Journal: Issue No. 372 at www.videha.co.in

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ *(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*

माने आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओइपर (*गद्य-पद्य रूपी*) मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती केना पसरत।

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकें ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकें, क्षत्रियकें, शूद्रकें आ आर्यकें; अपन लोककें आ अपरिचितकें सेहो (माने सभकें)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकें समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकें प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तें तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

----

Videha: Maithili Literature Movement

ʄ

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्ति:

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তি:

अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय **(पृ. २-५)**

१.२.अंक ३७१ पर टिप्पणी **(पृ. ६-६)**

२.गद्य खण्ड

२.१.परमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ) **(पृ. ९-३३)**

२.२.कुमार मनोज कश्यप-छोड़ल निशानी **(पृ. ३४-३५)**

२.३.आचार्य रामानन्द मण्डल-हिंदू धर्म आ हिंदू विरोध/ प्रेम के जीत **(पृ. ३६-४०)**

२.४.आशीष अनचिन्हार-तीनू कथा- सपना आ भ्रम, घर, काटल कथा **(पृ. ४१-५९)**

२.५.डा. योगानन्द झा- श्री राज किशोर मिश्र ओ हुनक 'प्रलय-पाश' **(पृ. ६०-६५)**

२.६.डॉ किशन कारीगर-.मैथिली मे रचना चोरी के विकट समस्या आ समाधान **(पृ. ६६-६८)**

२.७.लालदेव कामत- १ टा लघुकथा आ ६ टा बिहैन कथा **(पृ. ६९-७२)**

२.८.लालदेव कामत- पोथी समीक्षा एक विमर्श- १.विद्यापति आत्मकथा केर दृष्टिबोध २.पुस्तक समीक्षा: लालू-लीला ३.जगदीश प्रसाद मंडल-उपन्यास "पंगू" **(पृ. ७३-७९)**

२.९.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खेप-२१) **(पृ. ८०-८६)**

२.१०.कुन्दन कर्ण- लघुकथा रीढ आ बीहनि कथा हॉट **(पृ. ८७-८९)**

२.११.नन्द विलास राय-वैष्णवे छी **(पृ. ९०-९०)**

२.१२.जगदीश प्रसाद मण्डल- सुचिता (धारावाहिक उपन्यास) **(पृ. ९१-१०६)**

२.१३.जगदीश प्रसाद मण्डल-आब नइ जीब (लघुकथा) **(पृ. १०७-११४)**

२.१४.रबीन्द्र नारायण मिश्र-बदलि रहल अछि सभकिछु (उपन्यास)-धारावाहिक **(पृ. ११५-१२६)**

३.पद्य खण्ड

३.१.राज किशोर मिश्र-फेर आएल जाढ़ **(पृ. १२८-१३१)**

४. अनुलग्नक (पृ. १-४३०)

१.विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक Videha e journal's all old issues (पृ. १-२९)

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download (पृ. ३०-८४)

३. मैथिली ऑडियो-वीडियोक संकलन Maithili Audios-Videos (पृ. ८५-९८)

४.मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्य Maithili Children Literature (पृ. ९९-११२)

५.विदेह स्त्री कोना (पृ. ११३-१२१)

६. विदेह ई-लर्निङ्ग (पृ. १२२-१३५)

७.विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण (including Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement) (पृ. १३६-२५८)

८.विदेह मिथिलाक खोज (पृ. २५९-२८५)

९.विदेह मिथिला रत्न (पृ. २८६-४३०)

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

𑓇 𑒠𑓂𑒨𑒾: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭 𑓅 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑓁 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒰𑒣: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒼𑒭𑒡𑒨: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱 𑒫𑒢𑒮𑓂𑒣𑒞𑒨: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑓂𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒹 𑒠𑒹𑒫𑒰: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑓂𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:-जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒝𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓂𑒟𑒢𑒰 𑒖𑒹 𑒠𑓂𑒨𑒳𑒪𑒼𑒏𑒧𑒹, 𑒁𑓀𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭𑒧𑒹, 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲𑒣𑒩, 𑒖𑒪𑒧𑒹, 𑒌𑒭𑒡𑒧𑒹, 𑒫𑒢𑒮𑓂𑒣𑒞𑒱𑒧𑒹, 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒧𑒹, 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰𑒑𑒝𑒧𑒹 𑒂 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒧𑒹 𑒬𑒰𑓀𑒞𑒱 𑒯𑒳𑒁𑒨।

𑓇-𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒝, 𑒠𑓂𑒨𑒾-𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨-𑒞𑒩𑒹𑒑𑒝, 𑒁𑓀𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭- 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒂 𑒠𑓂𑒨𑒴𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒥𑒲𑒔, 𑒂𑒣:-𑒖𑒪, 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒹𑒠𑒹𑒫𑒰- 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰, 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧- 𑒮𑒩𑓂𑒖𑒏।

𑓆

ॐ, स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात्।

𑓇, 𑒮↓𑒯𑒮𑓂𑒩↑𑒬𑒲𑒩𑓂𑒭𑒰↓ 𑒣𑒳𑒩↑𑒭𑓁। 𑒮↓𑒯↓𑒮𑓂𑒩𑒰↓𑒏𑓂𑒭𑓁 𑒮↓𑒯𑒮𑓂𑒩↑𑒣𑒰𑒞𑓂।

स भूमिं ग्वंग वि॒श्वतों वृ॒त्वा। अत्यं॑तिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

𑒮 𑒦𑒴𑒧𑒱𑓀↑ 𑓅 𑒫𑒱↓𑒬𑓂𑒫𑒞𑒼↑ 𑒫𑒵↓𑒞𑓂𑒫𑒰। 𑒁𑒞𑓂𑒨↑𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒠𑓂 𑒠𑒬𑒰𑒓𑓂𑒑𑒳↓𑒪𑒧𑓂॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

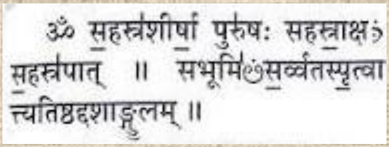
ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः
सहस्त्रपात् ॥ सभूमिं सर्व्वतस्पृत्वा
त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

प॒द्भ्याग्ँ॑ शू॒द्रो अं॑जायत॥

𑒣↓𑒠𑓂𑒦𑓂𑒨𑒰𑒑𑓂𑒿↑ 𑒬𑒴↓𑒠𑓂𑒩𑒼 𑒁↑𑒖𑒰𑒨𑒞॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिशः॒ श्रोत्राँ॑त्।

𑒣↓𑒠𑓂𑒦𑓂𑒨𑒰𑓀 𑒦𑒴𑒧𑒱↓𑒩𑓂𑒠𑒱𑒬𑓁↓ 𑒬𑓂𑒩𑒼𑒞𑓂𑒩𑒰↑↑𑒞𑓂।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

卐 (Swastik)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम সিদ্ধিৰস্তু, সিদ্ধম Devanagari Anji)

Ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

𑓆 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

𑓆

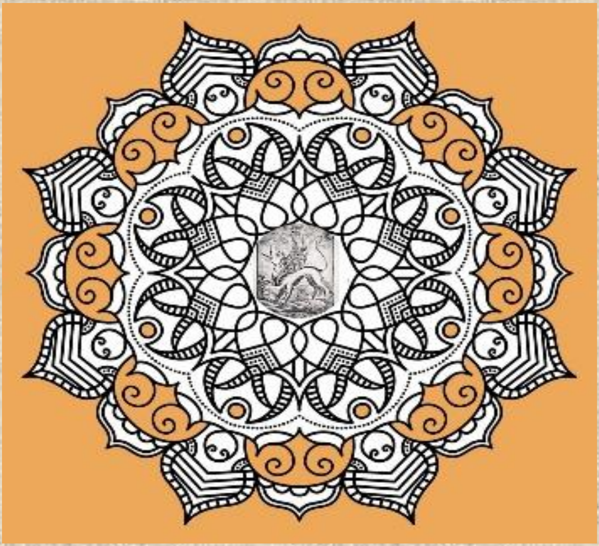

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३७१ पर टिप्पणी

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१

बद्री नाथ राय 'अमात्य' क 'मैथिल भैया करू विचार'

बद्री नाथ राय 'अमात्य' क 'मैथिल भैया करू विचार' बुद्धिनाथ मिश्र जी केर पद्य जकाँ झनझनाइत बजैए, सुमधुर, लय आ तुकबन्दी युक्त, गेय। मुदा ई समानता ओतहि खतम भऽ जाइए, आ जे विपरीतता अबैए से अछि ऐ संग्रहक विषय वस्तु, आ तकर अँखिगर निरीक्षण। आ से अछि बद्री नाथ राय 'अमात्य' क आँखि आ खून दुनूक पॉजीटिव हेबाक कारण, आ से ए बी ओ बा एबी पॉजिटिव नै अछि, ई अछि मिथिला पॉजिटिव। खूनो नै रङो मिथिला केर छन्हि, जातिवादीक उज्जर केश 'डाइ' करा देता मिथिला केर रङमे, जे ओ घोरने छथि।

तन-मन जे घवाह भेल छन्हि आ पोसल कुकुड़ कटाह भेल छन्हि तकर उत्तर चाहियन्हि कविकेँ, आ से उत्तर मैथिलेसँ चाही हुनका। रसक ज्ञानीयेकेँ ओ रसखान कहता। मुदा मात्र प्रश्ने नै ठाढ़ करै छथि, उत्तरो दइ छथि- कादो करब घास के गारब/ अगिला खेती धान करब हम।

बद्री नाथ राय 'अमात्य' विशाखादत्तक मुद्राराक्षसक अमात्य मोन पाड़ि देलन्हि।

२

कल्पना झा- नशामुक्ति हित गाबी गीत

मद्य निषेध विभाग आदि द्वारा नशामुक्ति विषयक कार्यक्रममे हिन्दीमे 'नशामुक्ति गीत' कार्यक्रमक प्रारम्भमे अहाँ सुनने हएब। कल्पना झा मैथिलीमे ७५ टा गीतक एकटा संग्रह लऽ कऽ प्रस्तुत भेली जे मात्र अही विषयपर अछि। लेखकक समाजक समस्यासँ सरोकार रखबाक ई एकटा उदाहरण अछि। आ समस्या जे एक्के संग

मनोवैज्ञानिक आ सामाजिक दुनू अछि। समस्या जे सभ उमेर आ सभ आर्थिक स्थिति बला लोक लेल समान रूपसँ खतरा बनि आयल अछि। अहाँक घरक लोक एकटा खतराक बीच घुमि रहल छथि, आ कोनो काल ई समस्या हुनका झपट्टा मारि अपनामे समाहित कऽ सकै छन्हि। कोकीन, हेरोइन, गाजा, तारी, दारू सँ लऽ कऽ दर्द रोधी दवाइ, आ सुतबाक गोली, भाङ आदि सेहो एकर परिक्षेत्रमे अबैत अछि। कल्पना झा ऐ मे गुटखा आदि सेहो जोड़ि देने छथि। जर्दामे नशा होइते छै, मुदा सरकार गुटखामे जर्दाक मिश्रणपर प्रतिबन्ध लगा देने छै, से गुटखा बनि गेल अछि पान मसाला। मुदा ऐ उत्पादक आब लखनऊ एफ.एम.पर प्रचार एना भऽ रहल अछि- बड़े मियाँ संग छोटे मियाँ फ्री, माने पान मसाला संग चूनक डिब्बी आ जर्दाक पुड़िया अलगसँ फ्री, माने अहाँ पान मसालामे चून आ जर्दा अपनेसँ मिला कऽ गुटखा बना लिअ, उत्पादक मिला कऽ नै देत, कारण सरकार मना केने छै। से बड़े मियाँ भेल पान मसाला आ छोटे मियाँ भेल चून आ जर्दा।

कवि सभ तरहक ड्रग प्रयोगक जानकारी रखैत छथि आ ओकर दुरुपयोगक प्रति सचेत छथि, चाहे सुइया भोकबाक हुअय, सुंघबाक हुअय बा जीहपर लेबाक तरीका हुअय। ई घरकेँ तोड़ैए, समस्याक जडि अछि। मुदा कवि आक, धतूरक औषधीय प्रयोगसँ अवगत छथि आ ओकरा बदनाम नै करबाक आग्रह करै छथि। ओ खैनी सुरती बनि अपन बखान सेहो करै छथि, अपन दुर्गुणक चर्चा करैत छथि। हलाहल शंकरक चर्चाक संग बसन्त आगमन आ मद्यक वेशमे चैन भंगक चर्चा अछि। फेर शंकर आ काली सँ कवि पथ प्रदर्शन करैले सेहो कहै छथि।

तमाकू कृषिपर सेहो अपन दृष्टिकोण कल्पना जी रखने छथि। मुदा एतऽ तमाकू कृषिक आलोचनामे बाहरी देशसँ सिगरेटक बढ़ैत तस्करीपर हुनकर ध्यान नै गेलनि। तमाकू कृषकक जन्तर-मन्तरपर आन्दोलन आ ऑटोक पाछाँमे तमाकू कृषकक कनैत कल जोड़ने आकृति दिल्ली नग्रमे हमरा अभरल अछि। सिगरेटपर अनाप-शनाप् टैक्ससँ जे सिगरेट तस्कर माफियाक नव वर्ग उत्पन्न भेल अछि तकर कारण तमाकू कृषक ऐ तरहक लॉबीकेँ मानैत छथि जे हुनका लोकनिकेँ (तमाकू कृषककेँ) विलेन बना

कऽ ऐ तस्कर माफियाकेँ फायदा पहुँचा रहल अछि, आ ओइ छद्म प्रचारक शकार भेली कल्पना झा।

जँ अहाँ एलीट सिगरेट लॉबीसँ गप करब तँ ओ की अहाँकेँ पूछत आ अहाँक उत्तर की हएत से प्रश्नोत्तरी नीचाँ देल जा रहल अछि-

-की अहाँ सिगरेट पिबै छी?

-नै।

-कियो सिगरेट नै पीबि रहल अछि, हमर छोटका भाइ सिगरट नै पिबैत अछि। हम कॉलेजमे सिगरेट पिबैत रही आब नै पिबै छी। सिगरेट इण्डस्ट्री मरि रहल अछि।

जँ अहाँ एलीट बीड़ी लॉबीसँ गप करब तँ ओ की अहाँकेँ पूछत आ अहाँक उत्तर की हएत से प्रश्नोत्तरी नीचाँ देल जा रहल अछि-

-की अहाँ बीड़ी पिबै छी?

-नै।

-कियो आब बीड़ी नै पिबैए, रिक्शोबला आब सिगरेटे पिबैए। बीड़ी उद्योग मरि रहल अछि।

डी.आर.आइ. केर रिपोर्टक मोताबिक २०२१-२२ मे ११ करोड़ सिगरेट स्टिककेँ जब्त कएल गेल, ई सस्तौआ सिगरेट तस्करीसँ आनल जा रहल छल। एकर कइएक गुणा माल पकड़ल नै जा सकल हएत। बिहारमे मद्य निषेधक बाद किछु दिन तँ सभ ठीक रहल, मुदा आब गामे-गाममे एकटा अपराध नेटवर्क बनि गेल अछि जे गामे-गाम दारू उपलब्ध करबैत अछि। तँ मद्य-निषेधक गीत गौनिहारकेँ अहाँ अपराध नेटवर्क लेल लॉबी ग्रुप मानब? उत्तर अछि नै, मुदा हुनकर उपयोग कएल गेलन्हि से तँ मानैये पड़त।

कारण कवि आक, धतूरक औषधीय प्रयोगसँ अवगत छथि आ ओकरा बदनाम नै करबाक आग्रह करैत छथि तेँ हमरा लगैए जे देशमे बनल सिगरेट (डिमेरिट गुड्स) पर अत्यधिक टैक्स लगलासँ होइत विदेशी सिकरेटक तस्करी आ तकर परिणामस्वरूप तमाकूक कृषकक दुर्दशापर जँ ध्यान रखितथि तँ आर नीक रहैत। कल्पना झा अपन हित-अपेछितक नशा प्रयोगसँ चिन्तित छथि, नशामुक्ति हित लेल गीत गाबि रहल छथि। जँ अहूँ ऐ लेल चिन्तित छी तँ अहूँकेँ बुझबाक चाही जे ई नशाक आदति केना लागै छै, एकर दुरुपयोग केना शुरू होइ छै आ बढ़िते जाइ छै। तइ लेल ई पोथी उपयोगी हएत। जँ अहाँ स्वयं नशा कऽ रहल छी आ ऐ सँ मुक्ति चाहै छी तँ ई पोथी अहाँ केँ बुझबामे मदति देत जे केना ऐ समस्यासँ लड़ी आ जीती आ अपन जीवनपर नशाक नियंत्रण सँ मुक्त होइ।

-Gajendra Thakur, editor, Videha (be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast List.)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.२.अंक ३७१ पर टिप्पणी

मनोज ठाकुर

मिथिला मैथिल जोड़बाक मे आहाक बहुत नीक पहल, धन्यबाद। एक विशेषांक मिथिलाक देवी देवताक महत्व आ आजुक समय मे ओकर स्थान पर आधारित होबक चाही एहन अपेक्षा अहि।

कल्पना झा

प्रथमदृष्टया नीक विषय वस्तु सँ युक्त अंक लागि रहल अछि। सार्थक पहल अछि विदेहक विशेषांक सभ।

लक्ष्मण झा 'सागर'

बहुत नीक आलेख सब जुटाय लेने छी। एतेक व्यस्त जीवन मे मैथिली साहित्यक प्रति एहेन रुचि आ एते बरका बरका काज हाथ मे ल के तकरा सही समय मे सम्पादित कय लैत छी से अहाँ आ अहाँक टीम सं संभव भ रहल अछि। अहाँक जज्वा आ जुनुंन के हम सलाम करैत छी! बधाइ!!

प्रियंका मिश्र

सहृदय धन्यवाद! 'विदेह'क माध्यमसँ बहुत किछु सिखबाक, बुझबाक अवसरि संग हमरा सभकेँ मार्गदर्शन सेहो होएत। हमर सभक प्रयास रहत जे अपनामे निरंतर सुधारक संग काज करबाक प्रयास करी।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.गद्य खण्ड

२.१.परमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ)

२.२.कुमार मनोज कश्यप-छोड़ल निशानी

२.३.आचार्य रामानन्द मण्डल-हिंदू धर्म आ हिंदू विरोध/ प्रेम के जीत

२.४.आशीष अनचिन्हार-तीनू कथा- सपना आ भ्रम, घर, काटल कथा

२.५.डा. योगानन्द झा- श्री राज किशोर मिश्र ओ हुनक 'प्रलय-पाश'

२.६.डॉ किशन कारीगर-.मैथिली मे रचना चोरी के विकट समस्या आ समाधान

२.७.लालदेव कामत- १ टा लघुकथा आ ६ टा बिहैन कथा

२.८.लालदेव कामत- पोथी समीक्षा एक विमर्श- १.विद्यापति आत्मकथा केर दृष्टिबोध २.पुस्तक समीक्षा: लालू-लीला ३.जगदीश प्रसाद मंडल- उपन्यास "पंगू"

२.९.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खेप-२१)

२.१०.कुन्दन कर्ण- लघुकथा रीढ आ बीहनि कथा हॉट

२.११.नन्द विलास राय-वैष्णवे छी

२.१२.जगदीश प्रसाद मण्डल- सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)

२.१३.जगदीश प्रसाद मण्डल-आब नइ जीब (लघुकथा)

२.१४.रबीन्द्र नारायण मिश्र-बदलि रहल अछि सभकिछु (उपन्यास)-धारावाहिक

२.१.परमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ)

Scan 03 Jun 23 16:57:50

Friday, 2 June 2023 12:22 PM

শ্রী

গীতা মাহাত্ম্য
(পদ্ম পুরাণ উত্তর খণ্ড)
দোসর অধ্যায়

শ্রী ভগবান কহলথিন - লক্ষ্মী. পহিল
অধ্যায়ক মাহাত্ম্যক উত্তম উপাখ্যান
হম অহাঁ কেঁ সুনা দেলহুঁ। আব দোসর
অধ্যায় কেঁ মাহাত্ম্যক শ্রবণ করু। দক্ষিণ
দিশ বেদবেত্তা ব্রাহ্মণ লোকনিক পুরন্দ-
রপুর নাম সঁ এক নগর মে শ্রীমান্
দেবশর্মা নাম সঁ এক বিদ্বান ব্রাহ্মণ
রহৈত ছলাহ। ও অতিথী লোকনিকক
পূজক, স্বাধ্যায়শীল বেদশাস্ত্রক
বিশেষজ্ঞ, যজ্ঞক অনুষ্ঠান করৈবলা
আ তপস্বী লোকনিকক সদিখন
প্রিয় ছলাহ। ও উত্তম দ্রব্য সঁ আগি
মে হবন কএকে কতেকো দেব থবি

দেবতা কেঁ দৃষ্ট কেলথিন। সদা
ও ধর্মমে চাঞ্চল্য কেঁ কখনহুঁ শান্তি
নহি মিললৈন। ও পরম কল্যাণময়
তত্ত্বক জ্ঞান প্রাপ্তিক আশা সঁ সবদিন
দেব সামগ্রী সঁ সন্ত সঙ্কল্প বালা
তপস্বী লোকনিকক সেবা করই
লগলাহ। এহি প্রকার শুভ আচরণ
করৈত হুনকা কতেকো সময় বীত
গেল। তদনন্তর এক দিন পৃথ্বী পর
হুনকা লগ এক ত্যাগী মহাত্মা
প্রকট ভেলাহ। ও পূর্ণ অন্তর্বর্তী,
আকাঙ্ক্ষা রহিত নাসিকাক অগ্র
ভাগ পর নজরি রাখই বালা আ
শান্ত চিত্ত চলাহ। সদিখন পরমা-
লোক চিন্তন মে লাগল আনন্দ
বিভোর রহৈত চলাহ। দেবশর্মা তাহি
নিত্যসন্তুষ্ট তপস্বী কেঁ শ্রদ্ধাভাব সঁ

𑒣𑓂𑒩𑒝𑒰𑒧 𑒏𑓄 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢 - 𑒧𑒯𑒰𑒬𑓂𑒩𑒧𑒹𑒢 ।
𑒃𑒮𑒩𑒰 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒧𑒨𑒲 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒦𑒹𑒪 ।
𑒞𑒐𑒢 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒲 𑒮𑓀𑒞 𑒠𑒹𑒫𑒬𑒩𑓂𑒧𑒰 𑒏𑒹𑒿
𑒮𑒼𑒢𑒣𑒳𑒩 𑒑𑒰𑒿𑒫𑒏 𑒢𑒱𑒫𑒰𑒮𑒲 𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩𑒫𑒰𑒢𑒏
𑒣𑒩𑒱𑒔𑒨 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢 𑒖𑒹 𑒥𑒏𑒩𑒲𑒏 𑒔𑒩𑒥𑒰𑒯
𑒕𑒪 𑒂 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱𑒢 - 𑒫𑒋𑒯 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏
𑒅𑒣𑒠𑒹𑒬 𑒠𑒹𑒞𑒰𑒯 ।
𑒞𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒠𑒹𑒫𑒬𑒩𑓂𑒧𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒬𑓂𑒩𑒧𑒏 𑒔𑒩𑒝
𑒫𑒢𑓂𑒠𑒢𑒰 𑒏𑓄 𑒮𑒧𑒵𑒠𑓂𑒡𑒱𑒬𑒰𑒪𑒲 𑒮𑒼𑒢𑒣𑒳𑒩 𑒑𑒰𑒿𑒫
𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒱 𑒍𑒏𑒩 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒠𑒱𑒬 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒫𑒱𑒬𑒰𑒪
𑒫𑒢 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒟𑒱𑒢 । 𑒍𑒯𑒱 𑒫𑒢 𑒧𑒹 𑒢𑒠𑒲𑒏
𑒏𑒕𑒹𑒩 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒰𑒟𑒩 𑒣𑒩 𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩𑒫𑒰𑒢
𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯 । 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒰-
𑒞𑒱𑒩𑒹𑒏 𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒪 𑒦𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪 । 𑒍
𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒖𑒩𑒱 𑒮𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯 ।
𑒍 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒂𑒣𑒮𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒦𑒰𑒫𑒱𑒏 𑒫𑒻𑒩𑒱
𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒋𑒏 𑒚𑒰𑒧 𑒖𑒧𑒰 𑒦𑓄 𑒣𑒩𑒮𑓂𑒣𑒩

[illegible]
ग्राम उद्यान मे हरा सिसकि रहल छल।
मृगक झुंड शान्त भाव सँ बैसल छल।
मिथिलाक दया सँ भरल आनन्दमयी
मनोहारिणी नजरि सँ पृथ्वी परमात्म
अमृत छीटि रहल छलाह एहि रूप मे
जनका देखि देवशर्माक मन प्रसन्न
भऽ गेल। ओ उठिक भऽ विनयपूर्वक
मिथिलाक लग गेलाह। मिथिलाक सेहो
माथ झुका कऽ देवशर्मा केँ सत्कार
केलथिन। तदन्तर विद्वान देवशर्मा
अनन्य चित्त सँ मिथिलाक लग गेलाह।
जखन जनक ध्यानक समय समाप्त
भेल तखन देवशर्मा अपन मनक
बात पुछलथिन - महाराज हम आत्मलोक
ज्ञान प्राप्त करऽ चाहैत छी। हमरा
एहि मनोरथक पूर्तिक लेल एहन
उपायक उपदेश दिअ जाहि सँ

উমরা সিদ্ধি মিল সকে।
দেবশর্মাক বাত সুনি মিশ্রজান থোড়েক
দের কিছু সোচলেথ ওকর বাদ এহি
প্রকারে কহলথিন - বিহ্বল এক সময়
ক বাত অছি ওম জংগল মে বকরীক
রক্ষা কহ রহল ছলাহুঁ তখন এক টা
বাঁঘ পর ওমর নজরি পড়ল। ও
তেহন ভয়ংকর ছল জে মানুষ ও
সবকেঁ খা জায়ত। ওম মৃত্যু সঁ
ডরেত ছলাহুঁ তেঁ বাঁঘ কেঁ আবেত
দেখি বকরীক ঝুণ্ড কেঁ আগু কহ
ওহি ঠাম সঁ পরা গেলাহুঁ। মুদা এক
টা বকরী তুরংত সব ভয় কেঁ ত্যাগি
নদীক কাছের মে বাঁঘ লগ রেবোক
থোক চলি গেলীহ। যেহি তহ বাঘ
সেহো সব ত্বেষ ছোড়ি চুপচাপ
ঠাড় ভহ গেল। বাঁঘ কেঁ এহি অবস্থা

मे देखि बकरी कहलथिन - हे बाघ
अपनेक द्वारा अतिथि भोजनमिलन
अछि। हमरा शरीर सँ माउस निकालि
अहाँ प्रेम पूर्वक खाउ। अहाँ एतेक
देर सँ किए ठाढ़ छी। अहाँक मन
मे हमरा खायक विचार किएनहि
होयत अछि।
बाघ कहलनि - बकरी एहि ठाम आबि-
तहि हमरा मन सँ द्वेषक भाव निकलि
गेल अछि। भूख प्यास सेहो मरि गेल
अछि। तेँ नञ मे आबि तक आब हम
अहाँ केँ भक्षण करब नहि चाहैत
छी। बाघ केँ एना कहला पर बकरी
कहलैन्हि - हम नहि जानैत छी जे
हम कोना निर्भय भऽ गेलहुँ अछि।
एकर कोन कारण भऽ सकैत अछि।
जौं अहाँ जानैत छी तऽ कहल बताउ।

তা স্থান বোধ কইলনি - হম সেহো
নহি জানৈত ছী। চন্দ্র সোমা মে
ঠাঢ় ভেল মহাপুরুষ সঁ পুছৈত ছী।
এখন নিশ্চয় কএ ও হুনৰ ওহি ঠাম
সঁ চললাহ। হুনকা হুনক স্বভাব
মে জা বিচিত্র পৰিবৰ্তন দেখি
হম বিস্ময় মে পড়ল ছলহুঁ। তখনহি
ও সব হমৰা লগ আবি প্রশ্ন কেলনি।
ওহি ঠাম গাছক ডাঢ়ি পৰ এক টা
বানৰৰাজ বৈসল ছলাহ। হুনকা
হুনক সংগ হম সেহো বানৰৰাজ সঁ
পুছলহুঁ। হে বিপ্রবৰ হমৰা পুছলা
পৰ বানৰৰাজ কহলনি - হে অজাপা-
ন . মন্ত্র . এহি বিষয় মে হম অহাঁ কে
প্ৰধান চূড়ান্ত সুনাবৈত ছী। এহি
সোমা মে বনক অন্দৰ জে শ্ৰেষ্ঠ
মন্দিৰ অছি ওকৰা দেখু। এহি
মন্দিৰ মে ঠাকুৰজী যঁ স্থাপিত

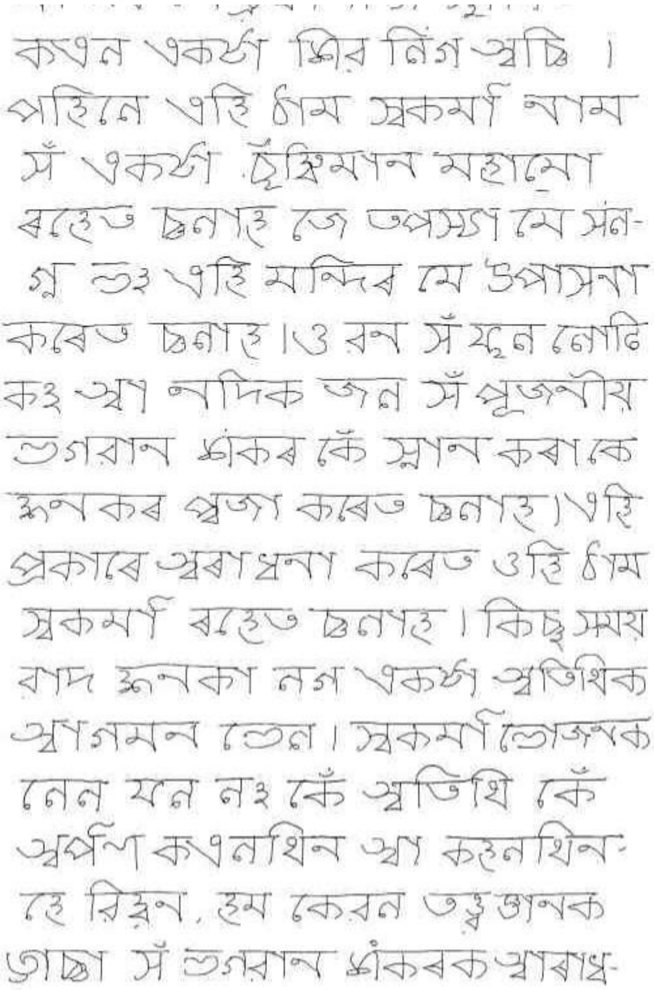

कथन एकटा शिव लिंग अछि ।
पहिने एहि ठाम सुकर्मा नाम
सँ एकटा बुद्धिमान महात्मा
रहैत छलाह जे तपस्या मे संल-
ग्न भऽ एहि मन्दिर मे उपासना
करैत छलाह। ओ वन सँ फूल तोड़ि
कऽ आ नदिक जल सँ पूजनीय
भगवान शंकर केँ स्नान कराके
हुनकर पूजा करैत छलाह। एहि
प्रकारे आराधना करैत ओहि ठाम
सुकर्मा रहैत छलाह। किछु समय
बाद हुनका लग एकटा अतिथिक
आगमन भेल। सुकर्मा भोजनक
लेल फल नइ केँ अतिथि केँ
अर्पित कएलथिन आ कहलथिन-
हे द्विज, हम केवल तत्त्वज्ञानक
इच्छा सँ भगवान शंकरक आराध-

ना करैत छी। आजा एहि आरा-
धनाक फल परिपक्व भऽ उमरा भेटि
गेल किएक तऽ अखन अहाँ एहन
महापुरुषक उमरा पर अनुग्रह भेल
अछि।

सुकर्मा जा मन्त्रक रचना अनिवर्चनीया-
क ध्वनि महात्मा अतिथि केँ बड़ खुशी
भेलनि। ओ एकर्थ मिथिलाखण्डक
गीताकोदासक अध्याय निज देलथिन।
टीकाकेँ ओकर पाठ आ अभ्यास-
क लेल आज्ञा दैत कहलथिन-हे
टीका एहि सँ अपनेक आयोजन
सँ सम्बन्धित मनोरथ अपने आप सफल
भऽ जायत। जा कहि ओ बुद्धिमान तपस्वी
सुकर्माकेँ सोझा मे देखैत देखैत
अन्तर्धान भऽ गेलाह। सुकर्मा निश्चित
भऽ उनका आदेशानुसार निरन्तर

গীতা দোসর অধ্যায়ক অভ্যাস
করয় লগলাহ। তদনন্তর কিছু সময়ক
পশ্চাত অন্ত করল মুক্ত ভয় জনকা
আত্মজ্ঞানক প্রাপ্তি ভেলনি। জেহিও
জতয় - জতয় গেলথিন ততয় - ততয়কে
তপোবন শান্ত ভয় গেল। শীত-উষ্ণ
আ রাগ দ্বেষ সব বাধা দূর ভয় গেল।
এতবে নহি ওহি ঠাম হিংস্র পশুসক
কষ্ট ধমে ভয় গেল আ ভয় সেহো
সমাপ্ত ভয় গেল। ভা সব দোসর
অধ্যায়ক জপ করয়বালা স্বকর্ম
ত্যাগফলক তপস্যাক প্রভাব সমস্ত।
মিত্রবান কহলথিন - বানররাজ
কেঁ ধন্য কহলা পর প্রসন্নপূর্বক কঁকরী
আ বাঘ সংগ হম ওহি মন্দির দিস
চলি গেলহুঁ। ওহি ঠাম শিলাখণ্ড পর
লিখল গীতাক দোসর অধ্যায় কেঁ
হম দেখলহুঁ আওর পঢ়লহুঁ। ওকরে

बेरि - बेरि पढ़लासँ हम उपन्यासक
पार पाबि लेलहुँ तेँ हे ज्ञानवृद्ध
अहाँ सेहो सदिखन गीताक दोसर
अध्यायक पाठ करू। एना करबासँ
पर मुक्ति अहाँ सँ दूर नहि रहत।
श्री भगवान कहलथिन - प्रिये,
मित्रवानक आदेश पर देवशर्मा
हुनका पूजन व प्रणाम कए पुरन्दर
पर दिस चलि गेलाह। ओहि ठाम
कोनो देवालय मे पूरेज्ञि आमे-
ज्ञानी महात्मा केँ पाबि ओ सब
वृत्तान्त कहलथिन। आ सबसँ पहिने
हुनके सँ गीताक दोसर अध्याय
के पढलथिन हुनके उपदेश सँ
श्रद्धा अनु करबा यज्ञ स्वकर्म सब दिन
श्रद्धा सँ दोसर अध्यायक पाठ करए
लगलाह। तखन ओ अनवद्य परमपद

কেঁ প্রাপ্ত কেলনি ।

—— ০ ——

পরমানন্দ লাল কর্ণ

গীতা মাহাত্ম্য
(প্রেম প্রবাহ উত্তর খণ্ড)

তেসর অধ্যায়

শ্রী ভগবান কহলথিন - প্রিয়ে , জনস্থান মে জড় নাম সঁ একটা ব্রাহ্মণ ছলাহ , জে কৌশিক বংশ মে উৎপন্ন ভেল ছলথি । ও অপন জাতীয় ধর্ম ছোড়ি কঽ বনিয়াক কাম করৈত ছলাহ । ও দোসর স্ত্রীক

সংগ ব্যভিচার করইক ব্যসন মে পড়ি গেলাহ। ও সদিখন জুআ খেলেত, মদিরা পীবেত আ শিকার কই জীবক হত্যা করেত ছলাহ। এহি প্রকারে ওনকর সময় বীতেত ছল। ধন নষ্ট ভই গেলা পর ও ব্যাপারক লেল সমুদ্র উত্তর দিশ চলি গেলাহ। ওহি ঠাম সঁ ধন কমা কই ঘর দিশ চললাহ। কিছু দূর চললাক বাদ সব দিশ অন্হার ভই গেল তখন একটা গাছক নীচা ব্যর্থ সব ধৈর্য দবা কেঁ প্রাণ লই লেলকেন্হ। ওনকর ধর্মক লোপ ভেলাক কারণে ও ভয়ানক প্রেত যোনি মে জন্ম লেলথি।

ওনকর পুত্র বড় ধর্মাত্মা আ বেদক বিদ্বান ছলাহ। ও সখন ধরি

𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒪𑒾𑒙𑒏 𑒥𑒰𑒙 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯।
𑒖𑒐𑒢 𑒍 𑒢𑒯𑒱 𑒋𑒪𑒟𑒱𑒢 𑒞𑒐𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩
𑒣𑒞𑒰 𑒪𑒑𑒰𑒥𑒨 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼
𑒒𑒩 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒔𑒪𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒍 𑒮𑒥 𑒠𑒱𑒢
𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒐𑒼𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰
𑒩𑒰𑒯𑒑𑒲𑒩 𑒮𑒿 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒼𑒢𑒼
𑒮𑒧𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒧𑒱𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒞𑒠𑒢𑒢𑓂𑒞𑒩
𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒩𑒰𑒯𑒑𑒲𑒩 𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰
𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏
𑒮𑒯𑒰𑒨𑒏 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒿 𑒮𑒥 𑒯𑒰𑒪
𑒖𑒰𑒢𑒱 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳 𑒣𑒩 𑒠𑒳𑓁𑒐 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱।
𑒍 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒹𑒩𑒱 𑒮𑒼𑒔𑒱
𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒣𑒰𑒩𑒪𑒾𑒏𑒱𑒏
𑒏𑒩𑓂𑒧 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒮𑒿 𑒮𑒥 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏
𑒮𑒰𑒧𑒑𑓂𑒩𑒲 𑒪𑓄 𑒏𑒹 𑒍 𑒏𑒰𑒬𑒲 𑒖𑒨𑒥𑒰𑒏
𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒥𑒰𑒙𑒹 𑒧𑒹 𑒩𑒳𑒏𑒻𑒞
𑒮𑒰𑒞-𑒂𑒚 𑒠𑒱𑒢 𑒔𑒪𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒢𑒩𑒧

দিন ওহি গাছ লগ পহুঁচলাহ জাহি
ঠাম জনকর পিতাজী মারল গেল
ছলাহ। ওহি ঠাম ও সন্ধ্যোপাসনা
কয় গীতাক তেসর অধ্যায়ক পাঠ
কেলথিন। তখনহি আকাশ মে
ভয়ংকর আবাজ ভেল। ও অপন পিতাজী
কেঁ ভয়ংকর আকাশ মে দেখলথিন।
ফেরি তুরংতহি অপনা সামনে আকাশ
মে একটা নীল বিমান সেহো
দেখলথিন জে তেজ সঁ ব্যাপ্ত ছল।
তাহি মে কতেকো ঘণ্টী লাগল ছল।
বিমানক তেজ সঁ সব দিশা আলোকিত
ভয় রহল ছল তা দৃশ্য দেখি জনকর
চিত্তক চঞ্চলতা দূর ভয় গেল। ও বিমান
পর অপন পিতাজী কেঁ দিব্য রূপ
মে বৈসল দেখলথিন। হুনকা শরীর
পর পীতাম্বর শোভায়মান ছল আ
মুনি লোকনি জনকর স্তুতি কয় রহল

ছলনি। হুনকা দেখি পুত্র প্রণাম কেলথিন। তখন পিতাজী সেহো হুনকা আশীর্বাদ দেলথিন।

তকর বাদ ও পিতাজী সঁ সব বাত পুছলথিন। তখন হুনকর পিতাজী সব বাত এনা কহলথিন- বেটা. দিনেশ হমরা লগ গীতাক তেসর অধ্যায়ক পাঠ কঽ অহাঁ হমরা সঁ কখন গেল ইস্কুল কর্মকি বন্ধন সঁ ছোড়া দেলক। আব অহাঁ ঘর জাউ কিএক তঽ জাহি লেল অহাঁ কাশী জাইত ছলহুঁ ও প্রয়োজন গীতাক তেসর অধ্যায়ক পাঠ সঁ সিদ্ধ ভঽ গেল অছি। পিতাজীক এনা কহলা পর পুত্র পুছলথিন - তাত. অহাঁ হমরা হিতক উপদেশ দিঅ আ কোনো কাম জে হমরা লেল হোইত সে বতাউ। তখন

𑒣𑒱𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱𑒢 - 𑒁𑒢𑒒, 𑒁𑒯𑒰𑒿
𑒍𑒯𑒢𑒹 𑒏𑒰𑒧 𑒖𑒳𑒢𑒱 𑒏𑒩𑒥। 𑒯𑒧 𑒖𑒹 𑒏𑒩𑓂𑒧
𑒏𑒨𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒏𑒩𑓂𑒧 𑒯𑒧𑒩 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒰
𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒹𑒯𑒹𑒢 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒍 𑒒𑒼𑒩 𑒢𑒩𑒏 𑒧𑒹
𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒅𑒠𑓂𑒡𑒰𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼
𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲 𑒂 𑒁𑒣𑒢𑒰
𑒪𑒑𑒏 𑒂𑒍𑒩 𑒖𑒞𑒹𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒢𑒩𑒏
𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒟𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒦 𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒠𑓂𑒡𑒰𑒩
𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒿 𑒦𑓄 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲 𑒍𑒯𑒢𑒹 𑒯𑒧𑒩
𑒧𑒢𑒼𑒩𑒟 𑒁𑒕𑒱। 𑒫𑒻𑒭𑓂𑒝 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒰𑒡𑒢
𑒮𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒏𑒙 𑒮𑒿 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒹𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱
𑒍𑒏𑒩𑒹 𑒁𑒢𑒳𑒭𑓂𑒚𑒰𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒩𑒢𑒰𑒍
𑒅𑒔𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒏𑒩𑒹 𑒁𑒢𑒳𑒭𑓂𑒚𑒰𑒢 𑒏𑓄 𑒁𑒯𑒰𑒿
𑒁𑒩𑓂𑒖𑒱𑒞 𑒣𑒳𑒝𑓂𑒨 𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒰𑒩𑒏𑒲 𑒖𑒲𑒫 𑒏𑒹𑒿
𑒮𑓀𑒏𑒪𑓂𑒣 𑒏𑓄 𑒏𑓄 𑒠𑓄 𑒠𑒱𑒁। 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒿
𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒖 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒨𑒰𑒞𑒢𑒰 𑒮𑒿
𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒦𑓄 𑒏𑒧 𑒮𑒧𑒨 𑒧𑒹 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳𑒏𑒣𑒩𑒧

पदधार केलाह ।

पिताजीक ई संदेश सुनि पुत्र कहलथिन - तात जौं एहन बात अछि आ अपनेक इच्छा अछि तइ हम समस्त नारकी जीव कें नरक सँ उद्धार कऽ देब । ई सुनि हुनकर पिताजी कहलथिन बेटा एवमस्तु. अहाँक कल्याण हो। हमर अन्तिम प्रिय काम सम्पन्न भऽ गेल । एहि प्रकारे पुत्र कें आश्वासन दऽ हुनकर पिताजी भगवान विष्णुक परमधाम चलि गेलाह । तत्पश्चात ओ सेहो नैमिष कें घर आबि गेलाह । तकर बाद परम सुन्दर भगवान श्री कृष्ण मन्दिर मे हुनका सोझा मे बैसि पिताजीक आदेशानुसार गीताक तेसर अध्यायक पाठ करऽ लगलाह। नारकी जीवक उद्धार कें लेल गीता जनित सब पुण्य आ संकल्प कऽ

के अनका दइ देलथीन।

एहि रीति भगवान विष्णुक दूत यातना भोगइवाला नारकी जीव कें छोड़बइक लेल यमराज लग गेलथिन। यमराज कतेको प्रकार सँ सत्कार कइ अनकर पूजन केलथिन आ लक्ष्मणक्षेम पुछलथिन। ओ कहलनि धर्मराज, हमरा लेल सब दिशसँ आनन्दहि आनन्द अछि। एहि प्रकार सत्कार कइ पितृलोकक सम्राट परम बुद्धिमान यमराज विष्णुदूत सँ यमलोक आबइक कारण पुछलथिन।

तखन विष्णुदूत कहलनि - यमराज, शेषशय्या पर विराजमान भगवान विष्णु हमरा लोकनि कें अहाँ लग किछु सन्देश देबाक लेल भेजलथि अछि। भगवान हमरा लोकनि के अहाँ सँ

𑒬𑒰𑒮𑒢𑒏𑓂𑒭𑒹𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒔𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒂𑒖𑓂𑒘𑒰 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒢𑒩𑒏 𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞 𑒣𑒰𑒣𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒅।

𑒁𑒧𑒱𑒞𑒞𑒹𑒖𑒮𑓂𑒫𑒲 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳𑒏 𑒂𑒠𑒹𑒬 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒧𑒰𑒟 𑒗𑒳𑒏𑒰 𑒏𑓁 𑒮𑓂𑒫𑒲𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯 𑒂 𑒧𑒢𑒹 𑒧𑒢 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒼𑒔𑒋-𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯। 𑒞𑒞𑓂𑒣𑒬𑓂𑒔𑒰𑒞 𑒧𑒠𑒼𑒢𑓂𑒧𑒞𑓂𑒞 𑒢𑒰𑒩𑒏𑒲 𑒖𑒲𑒫 𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒩𑒏 𑒮𑒿 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳𑒏 𑒫𑒰𑒮 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒨𑒧𑒩𑒰𑒖 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒭𑓂𑒚 𑒫𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒿 𑒏𑓂𑒭𑒲𑒩𑒮𑒰𑒑𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒏𑒼𑒙𑒱-𑒏𑒼𑒙𑒱 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨 𑒮𑒢 𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒢𑒲𑒪 𑒏𑒧𑒪 𑒠𑒪 𑒮𑒢 𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒰𑒟 𑒖𑒑𑒠𑓂𑒑𑒳𑒩𑒳 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒯𑒩𑒱𑒏 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢𑒏 𑒞𑒹𑒖, 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒬𑒨𑒢 𑒥𑒢𑒪 𑒬𑒹𑒭𑒢𑒰𑒑𑒏 𑒤𑒢𑒏 𑒧𑒝𑒱𑒏𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒮𑒿 𑒠𑒳𑒑𑒳𑒢𑒰

छल। ओ आनन्दमग्न देखि पड़ैत छलाह।
जनकक हृदय प्रसन्नता सँ परिपूर्ण छल।
भगवती लक्ष्मी अपन सकल त्रिभुवन सँ
प्रेमपूर्वक जनका बेरि बेरि निहारि
रहल छलीह। चारुकात योगी लोक-
कनि भगवानक सेवा मे ठाढ़ छलथि
ओहि योगी लोकनिकक आँखिक
तारा ध्यानस्थ लोकक कारणे नि-
श्चल प्रतीत भऽ रहल छल। देवराज
इन्द्र अपन विरोधी कैं परास्त करबाक
उद्देश्य सँ भगवानक स्तुति कऽ रहल
छलाह। ब्रह्माजीक मुख सँ निकलल
वेदान्त वाक्य मूर्तिमान भऽ भगवानक
गुणगान कऽ रहल छलाह। भगवान
पूर्णतः सन्तुष्ट लोकक संगहि संग
समस्त योगी दिव्य सँ उदासीन प्रतीत
होयत छलाह। समस्त जीव मे सँ जे

𑒮𑓀𑒔𑒨 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒥𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒏𑒞𑓂𑒩𑒱 𑒮𑓀𑒑 𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣 𑒮𑒿 𑒁𑒐𑒱𑒪 𑒔𑒩𑒰𑒔𑒩 𑒖𑒑𑒞 𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱 𑒮𑒿 𑒂𑒧𑒼𑒠𑒱𑒞 𑒏𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒬𑒹𑒭𑒢𑒰𑒑𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰 𑒮𑒿 𑒅𑒠𑓂𑒦𑒰𑒮𑒱𑒞 𑒂 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒞𑓂𑒩 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒣𑒏 𑒠𑒱𑒫𑓂𑒨 𑒫𑒱𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒡𑒰𑒩𑒝 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒢𑒲𑒪𑒏𑒧𑒪 𑒮𑒠𑒵𑒬 𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧𑒫𑒩𑓂𑒝 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒯𑒩𑒱 𑒋𑒯𑒢 𑒖𑒰𑒢𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒧𑒰𑒢𑒴 𑒔𑒰𑒿𑒠𑒢𑒲 𑒮𑒿 𑒒𑒹𑒩𑒪 𑒢𑒦 𑒮𑒳𑒬𑒼𑒦𑒱𑒞 𑒦𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒏𑒹𑒿 𑒗𑒰𑒿𑒏𑒱 𑒨𑒧𑒩𑒰𑒖 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞𑒱 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯।

𑒨𑒧𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱𑒢 - 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞 𑒖𑒑𑒞𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒞𑒰 𑒣𑒩𑒧𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒞𑓁𑒏𑒩𑒝 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏 𑒧𑒳𑒐 𑒮𑒿 𑒫𑒹𑒠𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒠𑒳𑒩𑓂𑒦𑒰𑒫 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒯𑒲𑒿

বিশ্বৰূপ আ একৰ বিধায়ক ব্ৰহ্মা
ছথি। অপনেক নমন অছি। অপনা
বল আ বেগ সঁ জে উৎকর্ষ প্রতীত হোইত
অছি। এহেন দানবেন্দ্রক অভিমান
চূৰ কৰইবালা ভগবান বিষ্ণু কেঁ নমন
অছি। পালন কৰৈত যশ সত্ত্বময় শৰীৰ
ধাৰী বিশ্বক আধাৰভূত সর্বব্যাপী
শ্ৰী হৰি কেঁ নমন অছি। সমস্ত দেহধা-
ৰী লোকনিকক পাতক ৰাশি কেঁ হৰ
কৰইবালা পৰমাত্মা কেঁ নমন অছি।
জিনকা ললাটবর্তী আঁখি খোলৈত
খুলল পৰ আগিক লপট নিকলই
লগৈত অছি। তাহি ৰুদ্ৰৰূপ ধাৰী
অপনেক পৰমেশ্বৰ কেঁ নমন অছি।
অহাঁ সমস্ত বিশ্বক গুৰু আমো আ
মহেশ্বৰ ছী। সব বৈষ্ণৱ লোকনি কেঁ
সংকট সঁ মুক্ত কৰই জনকা পৰ অনুগ্ৰহ

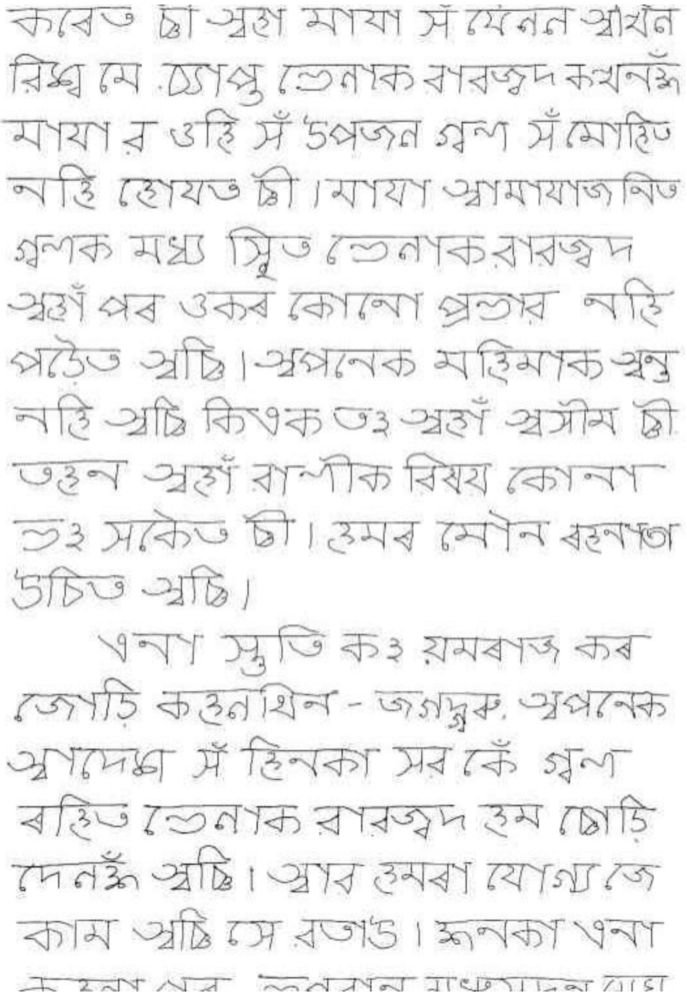

[illegible]
সন গম্ভীর বাণী সঁ মানু অমৃত
রস সীঁচেত কহলথিন- ধর্মরাজ।
অহাঁ সবহক প্রতি সমান ভাব
রাখেত লোক কেঁ পাপ সঁ উদ্ধার
কই রহল ছী। অহাঁ সব দেহধারীক
ভার রাখি হম নিশ্চিন্ত ছী।অহাঁ
অপন কাম করু আ অপনা লোক
চলি জাউ।

এ কহি ভগবান অন্তর্ধ্যান ভই
গেলাহ। যমরাজ সেহো অপনা লোক
চলি গেলাহ। ও চাণ্ডাল অপন জাতি
আ সব নারকী জীব কেঁ নরক
সঁ উদ্ধার কই অপনে সেহো শ্রেষ্ঠ
বিমান সঁ শ্রী বিষ্ণুধাম চলি গেলাহ

——— ০ ———

পরমানন্দ লালকর্ণ

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२.कुमार मनोज कश्यप-छोड़ल निशानी

कुमार मनोज कश्यप

१ टा लघुकथा

छोड़ल निशानी

चंडाल-चौकड़ी सुग्गाक गेल्ह के शीशो गाछक धोधि सऽ ताकि कऽ निकाललक आ भैया ओकरा आँजुर मे पुलकित ओ रोमांचित होईत घर लऽ अनलाह। एखन ओकरा पाइँखो नहिं भेल छलै। घरक सभ लोकक परिचर्या आ स्नेह भेटलै तऽ गेल्ह सऽ पूर्ण सुग्गा मे विकसित हेबा मे कोनो बेसी समय नहिं लगलै। ओकरा लेल हाट सऽ नवका पिंजड़ा एलै आ एक दिन ओकरा ओहि मे बन्न कऽ देल गेलै जे ओ उड़ि कऽ पड़ा ने जाए। ओ सुग्गा लोकक आवाजक नीक नकल करैत किछु फिल्मी गीतो के एक-दू पाँती सेहो सीख लेलक। आब सभक आकर्षण आ चर्चा के विषय छल ओ सुग्गा।

भैया उच्च शिक्षा खातिर विदेश कि गेलाह; ओतहि के भऽ कऽ रहि गेलाह। क्रमशहे गाम-घरक अवरजात कम भेल; फेर मोबाईल पर सेहो हाल-चाल के क्रम घटैत गेल। एम्हर ओ सुग्गा एकबेर पिंजड़ा सऽ निकलि कऽ पड़ेबाक प्रयास तऽ केलक मुदा दू पल नीमक डारि पर

बैसि नहिं जानि की सोचलक कि पुनः ओसारा पर आबि कऽ बैसि गेल। तकरा बाद ओ पिंजड़ा मे कहियो नहिं बन्न कैल गेल। एहिना घर-बाहर फुदकैत रहैत अछि। आन खन ओ कतहु रहै मुदा माय के गह्वर निपै काल आ तुलसी चौड़ा लग पूजा काल हुनके लऽग रहैत अछि।

माय के संतोष जे भैया नहिं सही हुनकर छोड़ल निशानी तऽ संगे छनि।

-कुमार मनोज कश्यप, सम्प्रति: भारत सरकार के उप-सचिव, **संपर्क:** सी-11, टावर-4, टाइप-5, किदवई नगर पूर्व (दिल्ली हाट के सामने), नई दिल्ली-110023 मो. 9810811850 / 8178216239 ई-मेल : writetokmanoj@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.३.आचार्य रामानन्द मण्डल-हिंदू धर्म आ हिंदू विरोध/ प्रेम के जीत

आचार्य रामानंद मंडल

हिंदू धर्म आ हिंदू विरोध/ प्रेम के जीत

१

हिंदू धर्म आ हिंदू विरोध

वर्तमान भारत के चारटा नाम हय -आर्यावर्त, हिन्दुस्तान, इंडिया आ भारत।तहिना वर्तमान हिंदू धर्म के चार टा नाम हय -आर्य धर्म, ब्राह्मण धर्म,सनातन धर्म आ हिंदू धर्म ।समय यानी कि काल परिवर्तनशील हय।त जेना भारत के नाम बदलैत रहलैय तहिना धर्मो के नाम बदलैत रहलैय।आइ कालि सबसे ज्यादा चर्चा -परिचर्चा हिंदू आ हिंदू धर्म पर हो रहल हय। हिंदू धर्म के विरोध ज्यादा हिंदूये क रहल हय।खास के जे हिंदू धर्म मे शोषित आ दमित वर्ग हय। हिंदू धर्म में जे वर्णव्यवस्था वा वर्णाश्रम धर्म हय वोइसे लोग नाराज़ हय। आइ कालि संत तुलसीदास रचित रामचरितमानस पर ज्यादा वाद -विवाद हो रहल हय। रामचरितमानस में कुछ जाति के अधम आ नीच बतायल गेल हय।त उ वर्ग ज्यादा आक्रामक हय।वो लाजिमीयो हय।जैइ वर्ग के गुणगान वा महिमा मंडित कैल गेल हय वो वोकरा पक्ष मे हय।वोकर कहना हय कि रामचरितमानस में सभ

जाति के समभाव सं देखल गेल हय। जेना शबरी के जूठा बैर खाय के बात त केवट के दोस्ती।त इहो बात अच्छा न लगैय हय।शबरी त भक्त हय। दासी हय पामर हय।नीच जाति के हय जे शबरी स्वयं स्वीकार करैय हय।भला अब अइ युग मे शबरी के जाति के कोई काहे मानत।केवट मल्लाह अपन दोस्त राम के गोर धो के पीयैत रहे।कि आइ के युग मे कोई दोस्त के गोर धो के पीयत।वोहु मे दोस्त में दोस्ताना होइ हय। बराबरी माने कि समानता के भाव। परंतु केवट आ राम के भाव दास आ प्रभु मालिक के भाव हय।त केवट वंशी वा कोई काहे मानत।इ सभ विरोध आइ न अतीत मेयो महात्मा बुद्ध,संत कबीर,संत रैदास, महात्मा फुले,संत पेरियार आ बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर कैले रहलन।

संत कबीर आ संत रैदास त राम के मानैत रहल। परंतु संत तुलसीदास के अयोध्यावासी राम के न वरन् घटघट वासी राम के मानैत रहलन। माने कि संत कबीर आ संत रैदास निर्गुण राम के त संत तुलसीदास सगुण राम के। निर्गुण राम वर्णरहित त सगुण राम वर्णाश्रित।

वर्तमान समय मे जे असल विवाद हय वो जातीय सामाजिक विषमता के लेके है न कि धार्मिकता के लेके। भारत के संविधान जातीय विषमता पर रोक लगबैय त कोनो धर्म के माने के स्वतंत्रता देइ। भारत के लोग के भारत के संविधान मे अपन विवाद के समाधान मिलत।

२

प्रेम के जीत

एगो गांव में युवती मैथिली आ युवक रार के घर रहे। मैथिली देखें में खुब सुन्नर रहे।५फीट ३इंच के कद रहे।दूधिया रंग ,नागीन सन केश,चान सन् मुखरा,बिलरी सन आंखि,केरा के थम्भ सन जांघ, शेरनी संन कमर,अप्रस्फुटित कमल सन उरोज,आम के नयका ललका पात सन पैर, हथनी जैसन चलनाई आ कोयल जैसन बोली।जे देखे से देखते रह जाय।लोग कहे कि भगवान फुरसत के समय में मैथिली के बनैले हए

मैथिली के बाप मैथिल लटगेना के दोकान कैलै रहे।वो भांग पीस के भी बेचैत रहे।

तहिना रार ५फीट ५इंच के बांका जमान। सांवला रंग,औठिया काला केश,राजीव सन नयन,हलका मोछ,सिंह जैसन छाती। कोनो युवती के आकर्षित करे , लेल समर्थ।रार सम्पन्न किसान के बेटा रहे।रार कभी कभी सौख में भांग भी खायत रहे।

एकटा दिन रार भांग खरीदे के लेल मैथिल के दूकान पर गेल। परंच दोकान पर मैथिल के बदले वोकर बेटी मैथिली बैठल रहें। मैथिली बोललक " बाबू जी एक महिना के लेल बाहर गेल छथिन ।तैला हम बैठल छी।बोला तोरा की चाही। रार कहलक-हम थोड़ा सा भांग लेब।सौकिया कभी कभी खा लेइ छी। मैथिली भांग रार के दे देलक।रार भी दाम ०२रुपया दे देलक।

अब रार रोज भांग खरीदे आबे लागल।वोकरा मन में मैथिली से प्रेम होय लागल।भांग आ दाम के लेन देन में दूनू के हाथक छूअन से प्रेमक तरंग एक दोसर के हृदय से प्रवाहित होय लागल। कुछ ही दिन में प्रेम अपन रंग दिखाबे लागल।अपन हाल रार अपन खास दोस्त से बतैलक ।दोस्त-तू मैथिली के लेके भाग जा।तू अपन नेपाल के कुटुंब इहां चल जा। मैथिली के बाप मैथिल तोरा न छोड़ तो।

इ सभ बात रार मैथिली के बतैलक। मैथिली बोलल-अंहा के हम प्रेम करै छी।आइए हम दूनू गोरे घर छोड़ दू। अंहा जंहा ले चलव,हम चले लेल तैयार छी।

हम दूनू गोरे मंदिर में शादी क लेव।

दो प्रेमी मैथिली आ रार जनकपुर के मंदिर में पहुच गेल। भगवान आ पुजारी के सामने रार मैथिली के मांग में सिंदूर भर देलक। अब रार मैथिली के स्वामी आ मैथिली रार के स्वामिनी बन गेल।

रार आब मैथिली के लेके अपन कुटुंब के इंहा हरिऔन (नेपाल)चल गेल। पहाड़ी जगह पर मैथिली आ रार के खूब मन लागे। पहाड़ पर घूमे। कहियो नदी में नहाय त कहियो झरना में नहाय।घंटो पहाड़ पर बैठ के प्रेम के बात करे। उन्मुक्त वातावरण में उन्मुक्त प्यार करे।अइ बीच में मैथिली गर्भवती भे गेल। एगो सुन्दर लैइका के जनम देलक। दूनू गोरे मिलके नाम रखलक अंगराज।

मैथिली के बाप अदालत में अपहरण के केस क देलक। लेकिन मैथिली आ रार लापता रहे।साल भर बाद रार आ मैथिली नवजात शिशु अंगराज संग अदालत में हाजिर भेलन। मैथिली अदालत में कहलन-जज साहब।हम आ हमर स्वामी रार बालिग छी।हम दूनू गोरे एक दोसर के प्रेम करै छी। हम दूनू गोरे पूरे होश हवास में मंदिर में शादी क लैले छी। हमरा दूनू गोरे के इ नवजात शिशु हैय। हम दूनू गोरे आब जीयब मरब साथे साथे।

जज साहब-अंहा दूनू गोरे रार आ मैथिली के विआह कानूनी रूप से जायज हए।

रार, मैथिली आ अप्पन बच्चा के लेके घर आ गेल।रार के माइ अपना बहु बेटा के आरती उतार लैन। पोता सहित घर में शुभ प्रवेश करैलन।आइ मैथिली के बाप मैथिल भी खुश हए। मैथिल कहै छथिन-बालिग बेटा-बेटी के प्रेम में माइ बाप के बाधा न बनै के चाही।आइ मैथिली के परिवार आ रार के परिवार खुश आ खुशहाल हए। प्रेम के जीत भे गेल।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी,*सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व०राजेश्वर मंडल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-०१ जनवरी १९६० योग्यता- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रूचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता -*

कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह भासा के न बांटियो। २०२२ प्रकाशित रचना - सझिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गान। २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबार -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी। स्थायी पत्ता- ग्राम- पिपरा विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढी। वर्तमान पता-पिपरा सदन,मुरलियाचक वार्ड-04 सीतामढ़ी पोस्ट-चकमहिला जिला- सीतामढी राज्य-बिहार पिन-843302 मो नं-9973641075 ईमेल- ramanandmandal001@gmail.com

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.४.आशीष अनचिन्हार-तीनू कथा- सपना आ भ्रम, घर, काटल कथा

आशीष अनचिन्हार-संपर्क-8876162759

तीनू कथा- सपना आ भ्रम, घर, काटल कथा

(मैथिली कथामे हमर योगदान अतबे अछि जतेक कि रमानाथ झाजीक योगदान मैथिली गजलमे छनि। एखन धरि कुल मिला कऽ हमर तीन गोट कथा प्रकाशित भेल अछि जे कि विभिन्न माध्यमसँ प्रकाशितो भेल अछि। एहिठाम हम तीनू कथाकेँ एकट्ठा दऽ रहल छी जाहिसँ पाठककेँ सहूलियत हेतनि। आ संगे-संग विदेहक पाटक सेहो एकरा पढ़ि सकथि- आशीष अनचिन्हार)

१

सपना आ भ्रम

घटनासँ पूर्वक गप्प :

सपना देखैत लोक सावधान भऽ जाउ। बड्ड दिन धरि अहाँ सभ सपना देखलहुँ, किछु दिन बिनु स्वपन देखने रहू।

"की कहलहुँ ? सपना देखबाक हिस्सक लागि गेल अछि हमरा सभकेँ। हँ से त' सत्ते कहलहुँ - अहाँ, आ से हमहूँ बूझि रहल छी।"

"फेर की कहलहुँ। सपना देखब आवश्यक छैक जिनगीक लेल। ई के कहलक अहाँकेँ? बेस मानलहुँ हम जे सपना देखब आवश्यक छैक, मुदा कनेक ई अहाँ फरिछाउ -जे की केवल सपने देखब आवश्यक छैक ओकर क्रियान्व्यन किछु नहि।"

"की भेल औ, चुप्प छी किएक किछु बाजू ने।"

"ओह बुझाइत अछि जे फेर अहाँ सभ सूति रहलहुँ घोर निन्नमे सपना देखबाक लेल, खाली आ खाली सपना देखबाक लेल।"

सूतब एक रंगक गप्प भेल। सपना देखब दोसर रंगक आ सपना देखि ओकरा क्रियान्व्यन करब तेसर रंगक गप्प भेल। मुदा ई तीनू एक दोसरसँ संबंधित अछि प्रजातंत्रक नेता जकाँ। एह कड़ी महँक जँ कोनो कड़ी टूटि गेल तँ सभटा खेल खतम आ पैसा हजम ।

"आ भ्रम की छैक।"

"अच्छा, अच्छा उठि गेलहुँ की ?"

"हँ कनेक आँखि लागि गेल छल"

"हँ से तँ लगबे करत हिस्सक अछि ने। मुदा हम एहि प्रसंगकेँ छोड़ि अहाँक प्रश्नपर आबी से उत्तम। ओना अहाँक प्रश्नक उत्तर जतेक कठिन ततबे सरल। आब अहाँ ई उदाहरण नहि देब जे संसारे भ्रम थिक। ई गप्प हमरो बूझल अछि। मुदा एहि बाटे जाएब हमरा अभीष्ट नहि।"

"हँ तँ अहाँ हमरासँ की पुछने छलहुँ, इएह ने जे भ्रम की थिक। अच्छा एकटा गप्प कहूँ, अहाँ सभ त निश्चित रूपँ मैथिली साहित्यक प्रेमी हएब। हएबे करब। जकरा पाबि कऽ अनेरे पुरस्कार ओ सम्मान भेटैत हो ओकरासँ प्रेम नहि करक तँ करबैक केकरासँ। हँ तँ जखन अहाँ लोकनि

साहित्यक प्रेमी छी तँ किछु ने किछु कहबी जनिते हएबैक। आब अहाँ सभ मोने-मोन

कहब जे ईहो कोनो पुछबाक गप्प छैक। मुदा हम जनैत छिऐक जे गप्प छैक। आब जखन गप्प कहबीपर एलैक अछि तखन अहाँ सभकेँ तँ एकटा कहबी मोने हएत ने औ? कोन, जनैत छियैक ? वएह जाहिमे कहल गेल छैक जे अपने सूतल छी आ विआह होइत अछि।" आब अहाँ सभ किछु-किछु बुझए लागल हएबैक।

"की कहलहुँ, एखनो धरि नहि बुझलिअइ। ठीक छैक तखन हमरा दोसरो कहबी कहए पड़त।"

"जेना"

"जेना की ओ कहबी छैक-अपने नहाइत छी आ कीदन दहाइत अछि।" आबो बुझलिअइ यौ? की बजलहुँ, एखनो धरि बुझाएल ई गप्प। अरौ बाप रौ बाप। आब हम कोना बुझाएब अहाँ सभकेँ। अच्छा, कोनो गप्प नहि, एहि बेर हम तेरहम विद्याक प्रयोग कए रहल छी।"

"अर्थात्।"

"अर्थात् जे आब हम सोझे-सोझ गप्पकेँ खोलि कऽ कहब।"

"कहू"

"हँ, सुनल जाए। मनुख जा धरि सपना देखैत अछि ता धरि तँ ठीक आ आवश्यको छैक, मुदा जहाँसँ मनुख सपनामे क्रियान्वित काज के वास्तविक जीवनमे सत्त बूझि लैत छथिन्ह ओही ठामसँ भ्रम शुरू भए जाइत छैक। एकरे जँ दोसर तरहें एना कही जे-सपना देखब जरूरी छैक मुदा सपनामे भेल काज के वास्तविक जीवनमे बिनु हाथ-पएर डोलेने सत्त मानब भ्रम थिक। आब तँ बुझिए गेल हेएबैक जे सपना कि थिक आ भ्रम की।"

"आबो बुझलिअइ औ"

"की भेल औ"

"ओह फेर सूति रहलिअइ की ? जाउ, सूतू ग।"

घटनाक गप्प :

पुरबा बहैए

मच्छर कटैए निन्न नहि अबैए

कनियाँ मोन पड़ैए...

टेपसँ मधुर गीत बहार भए रहल छल आ एम्हर बाबू साहेब अपन मित्र दिलीपकेँ रातुक सपनाक संबंधमे सुना रहल छलाह। बाबू साहेब दिलीप के कहलखिन्ह-"बुझलह रातुक सपनामे तों हमरासँ प्रश्नपर प्रश्न करैत चल गेलह आ हम जबाबपर जबाब दैत।"

दिलीप अविश्वासक भावसँ साहेब दिस तकलक आ पुछि देलकै-"कहक तँ जे हम तोरासँ की-की पुछलिअह आ तो हमरा की-की जबाब देलह। बाबू साहेब जाँघपर हाथ मारैत बजलाह-"एहीठाम तँ मारि खा गेलहुँ। एखन धरि मोन नहि पड़ल अछि। भोरेसँ मोन पाड़ि रहल छी। दिलीप हँसि देलथि। बाबू साहेब थोड़ेक रुष्ट होइत पुछलखिन्ह-की विश्वास नहि होइत छह ? दिलीप पूर्ववत भावसँ उत्तर देलखिन्ह "सपनों सभ कोनो विश्वास करबाक वस्तु होइत छैक। प्रत्येक दिन-रातिमे प्रत्येक मनुष्य नहि जानि कतेक सपना देखैत हेतैक। के गनती राखता हँ जँ ओ वास्तविक जीवनमे सत्त हुअए तखन ने ओकरा सत्त मानल जाए।" बाबू साहेबक मुँह अप्पन सन भए गेलन्हि, मदा कनेकबे देर धरि। किछु देर घरि ओ किछु बिचारत दिलीपसँ जिज्ञासा केलखिन्ह अच्छा मीत एकटा गप्प कहअ जे वस्तु सच का आकर छाँह?

आ दिलीप अकबका गेलाह अनचोकेमे एहन प्रश्न सुनि कऽ। किछु ने फुरेलन्हि उत्तरमे। सोचमे डूबि गेलाह। मुदा कतेक देर धरि, किछु ने किछु त उत्तर देबहे पड़तनि। किछु विचारैत ओ गंभीर स्वरमे बजलाह-"दुनू सत्त।"

बाबू साहेब फेर पुछलखिन्ह "कोना"

दिलीप फरिछबैत कहलखिन्ह- "ई गप्प तँ निश्चित छैक जे वस्तु सच थिक आ वस्तुएसँ त छाँह होइत छैक, तँइ वस्तुक संगे-संग छाँहो सत्त।"

बस आब की छल बाबू साहेब खुश होइत पुछि देलखिन्ह "अच्छा मुदा ई कहह जे वस्तु सत्त छैक तँइ ओकरासँ उत्पन्न छाँह सेहो सत्त भए गेल। मुदा तोरे कथनानुसार सपना फूसि आ ओकर सकार रूप सत्त, एहन दोहरा भाव किएक जखन की मूल प्रश्न एकै छैक। जेना वस्तु ओ ओकर छाँह एक दोसरसँ संबंधित छैक तेनाहिते संपना आ ओकर सकार रूप एक दोसरसँ संबंधित छैक।" दिलीपपर ई दोसर बेर बज्जर खसलैन्ह। ओ बिनु पपनी खसेने बाबू साहेब दिस देखए लगलाह आ बाबू साहेब दिलीपक आँखिमे।

घटनाक पछातिक गप्प :

एहि कथामे ने किछु सार छैक ने रस से हम मानैत छी। मुदा कनेक काल लेल हम अथवा अहीं जँ दिलीप भऽ जाइ तँ बाबू साहेब के हेताह ? के जोखिम उठा सकैत छथि बाबू साहेब

बनबाक लेल ? ई प्रश्न जतबे अनिर्णायक छल ततबे एखनो अछि आ आँगा रहत की नहि रहत से हम नहि कहि सकी, कारण हम कोनो भविष्यवक्ता नहि छी।

मुदा प्रश्न तँ सोझामे ठाढ़ अछि। जे व्यक्ति केकरो एक पक्ष के सत्त मानैत छथिन्ह त ओकर दोसर पक्ष के फूसि किएक ? जखन की दूनू पक्ष एक दोसरसँ संबंधित छैक। अविभाज्य छैक। प्रश्न तँ उठबे करतैक, आखिर किनको लेल ब्रह्म किएक सत्त आ माया किएक फूसि ? प्रश्न बहुत रास

आबि सकैत अछि। बड़ जोरसँ रोकलाक पछातिओ। आ जे मायाकेँ सत्त मानत छथिन्ह से ब्रम्हकेँ फूसि किएक ?

प्रश्नक काज छैक बढ़नाइ बढ़बे करतैक, खाली हम अहाँ एक दोसरक मुँह देखैत रहबैक। अच्छा ई कहू जे - प्रकृतिक उद्दीपन सत्त की आत्माक द्वन्द सत्त की इन्द्रियक दमन सत्त। सत्त की छैक।

प्रश्न बढ़ले जा रहल अछि।

राम सत्त की रावण ? केओ कहताह राम केओ रावण। मुदा की रामक बिनु रावणक आ रावणक बिनु रामक अस्तित्व संभव छैक। ई प्रश्न सभ भूतकालक थिक से अहाँ कहि सकैत छियै संगहि-संग अहाँ हमरा भूतजीवीक उपमा सेहो दए देब, तँइ आब हम वर्तमान कालमे प्रवेश करब।

आब अहीं कहू जे एहि मेंसँ सत्त की छैक अमेरिकाक दादागीरी, पाकिस्तानक आतंकवादी, इरानक स्वाभिमान, चीनक कूटनीति की भारतक शान्ति। सत्त की छैक एहिमेसँ। अहाँ कहबे करब जे अमेरिकाक दादागिरी आ पाकिस्तानक आतंकवादी फूसि आ भारतक शान्ति सत्त। मुदा ई भावना भने अहाँक देश-प्रेमक परिचायक हुअए। मुदा एकरा निरपेक्ष नहि कहल जा सकैए। अंततः शान्ति की छै। आतंक एवं दादागिरीक दमनक पश्चात् जे आनंद बुझाइत छैक ओकरे नाम हम अहाँ शान्ति देने छियै ने। आब अहीं सभ सोचिऔ कनेक जे जँ आतंक नहि हेतैक तँ शान्तिक उत्स हेतैक कतएसँ आ जँ कहींसँ उत्स भइओ गेलैक तँ, हेतैक केकरा लेल। तँइ आतंको सत्त आ शान्तियो सत्त।

"अपनेक कहक अभिप्राय ?"

"अच्छा उठि गेलहुँ। बड्ड देरक पछाति निन्न टूटल अहाँक ?"

"हँ, फेर कनेक आँखि लागि गेल छल!"

"अच्छा "

"हँ त हम अपनेक अभिप्राय पुछैत छलहुँ"

"अभिप्राय ? हँ तँ हमर कहक अभिप्राय जे संसारमे सभ सत्त थिक"

"अच्छा मानू जे सभ सत्त थिक तँ फूसि की थिक। की पृथ्वी फूसि विहीन अछि"

"नहि-नहि, इहो कहब निरपेक्ष नहि हएत जे पृथ्वीविहीन अछि"

"अँए की बजलहुँ, एखने कहैत छलियै जे पृथ्वीपर सभ सत्ते अछि आ एखने कहलिअइ जे पृथ्वी फूसिविहीन नहि छैक। एना दुचित्तापन किएक ?"

"सरकार ई दुचित्तापन नहि थिक। हम जे पहिने कहलहुँ सेहो सत्त आ एखन जे कहलहुँ सेहो सत्त"

"फेर अहाँ गप्पकेँ घुरछिया देलियै" "नहि सरकार गप्प तँ एकदम सोझ छैक, खाली हमर अहाँक मोन बौआ रहल अछि"

"ई अहाँ की सभ बाजि रहल छी से नहि जानि"

"जानए के प्रयासो तँ करियौ"

"तखन अहीं कहू".

"की"

"इएह जे अहाँक दूनू गप्प कोना सत्त"

"हम कहैत छलहुँ जे शान्तियो सत्त आ आतंको सत्त सएह ने"

"हँ"

"अच्छा आब एकटा गप्प सूनू मानू जे एकटा आतंकवादी आतंकक प्रसार कएलक आ नुका गेल। तकरा पछाति शासक ओकरा ताकि-हेरि कऽ समुचित दंड देलक। आब एहि गप्पकेँ नीक जकाँ बुझियौ आतंकवादी जे आतंक प्रसार कएलक ई भेल आतंकवादीक सत्त आ शासन ओकरा दंड देलक। ई भेल शासनक सत्त। मुदा की देखैत छिऐक हम-अहाँ सभ। आतंकवादी अपन सत्त देखा चल जाइत अछि आ शासन चुप्प रहैत अछि। इएह चुप्पी तँ फूसि थिक, भ्रम थिक। रावण सीताहरण कए लैत अछि आ आबक राम रामेश्वरक स्थापना कए घूरि अबैत छथि, इएह घूरि जेनाइ तँ फूसि थिक, भ्रम थिक। शासनक सत्त तखने रहतैक जखन की ओ आतंकीकेँ दंड देत। रामक सत्त तखने जखन की ओ रावण के परास्त कए सकथि। मुदा से नहि भए रहल आ ई जे नहि भए रहल सएह तँ फूसि आ भ्रम भेल। आ इएह फूसि इएह भ्रम चारू दिस पसरि रहल अछि। इएह आँगन, दुआरि, चौकठि, बड़ेरी, मोन, आत्मा सन के गछारने अछि। आ हम-अहाँ इएह फूसि इएह भ्रमक दुनियाँमे बौआ रहल छी, एहि छोड़सँ ओहि छोड़, एहि आरसँ ओहि पार धरि हाथमे एकटा टूटल छौकी लेने।

(ई कथा हमर पहिल प्रकाशित कथा अछि जे कि २००७ मे विद्यापति सेवा संस्थानक स्मारिकामे प्रकाशित भेल छल।)

२

घर

घर तीन प्रकारक होइत छैक। उच्च, मध्यम आ निम्न। एकर आरो भेद उपभेद भए सकैत छैक मुदा ताहिसँ हमरा कोनो बहस नहि। ओहिठाम हम जाहि घरक खेरहा कहब से भेल मध्यम। तँ आगा सुनू खेरहा मध्यम घरक। घरक मतलब मध्यम घर बुझल जाए।

प्रत्येक घर ओ जीव होइत छैक जे मनमानी कए सकए। तुच्छ आर्दशक संग। तानाशाहीक बिना कोनो घर, घर नहि होइत छैक, चाहे ओ हमर घर हो वा कि अहाँक। सत्त इएह थिक। घर काठ अथवा ईंटासँ नहि, हुक्मसँ बनैत छैक। घर भूकंप अथवा तोड़लासँ नहि, हुक्म तोड़लापर टुटैत छैक। घर ओ नहि जाहिमे केओ फरमाइश कए सकल। घर ओ छैक जाहिमे हाथ उठा कए दए दिऔक। जकरा भागमे जे होएतैक से भेटतैक।

घर अपना मोने किछु नहि होइत छैक। होइत छैक सभक मर्जीसँ मुदा ई घरे थिक जे अपन मर्जी के सभहक मर्जी बुझए लगैत अछि। ओकरा ईहो मोन नहि रहैत छैक जे हमर अस्तित्व कतएसँ अछि। ई घरे थिक जे जानि बुझि कए कोतबालक पदवी लैए प्रचुर योग्यता आ संभावनाक अछैतो प्रत्येक समय ओ कोतवालीक रुतबा देखबैत छैक अनेरो। ई घरे थिक जे कोतवाल बनि सूति रहैत अछि आ निन्नमे गबैत रहैए-'जगले रहिअह हो भाए। आ चोर चुप्पचाप माल निकालि लैत अछि ।घरकेँ दसटा आँखि होइत छैक दसटा दिशाक रूपें जे सदिखन लाल टरेस रहैत छैक। आ ई आँखि देखिते दोसरक आँखि झुकि जाइत छैक अनायास। घरक एकटा गरदनिमे एक लाख हाथीक आवाज रहैत छैक। कनिकतो खखसलापर लोकक पएर थकमका जाइत छैक। कान फाटि जाइत छैक। माथ दुखाए लगैत छैक अपने मने। लगही-नदी बंद भए जाइत छैक।

प्रारंभिक वाक्य-: घर हिटलर अछि वा हिटलरे घर अछि एकर खोज करब आवश्यक।

घर ओ जगह थिक जाहि ठामक घैलमे नोर भरल रहैत छैक आ चूल्हापर चढ़ाओल रहैत छैक हँसी। पिआस लगलापर लोक नोर पिबैत छैक आ भूख लगलापर हँसी चिबबैत छैक से अहाँ सभ बिनु लिखने बूझि गेल होएबैक। घरक लोक जखन लगही करैत होएतैक तखन नोर निकलेत होएतैक पोखरि दिस जाए कालमे हँसी। आ लोक जतए लगही करैत छैक ओहिठाम फुटि जाइत छैक मोनि। दिसा फिरलाहा जगहपर जनमि

जाइत छैक गाछ। कथीक से सोचि लिअ। आ मोनि जतेक गहींर भेल चल जाइत छैक ओहि महक पानि ततबे सुखाएल जाइत छैक। गाछ जतेक नमहर होइत छैक, मनहूसी ओतबे नमहर भए जाइत छैक। गाछक डारि -पात नमरि जाइत छैक, सांसारिक समस्या जकाँ।

हँ, एकटा गप्प आरो होइत छैक। पाहुन-परक अएलापर घैलक नोर नहि देल जाइत छैक। रान्हल हँसी जरूर भेटैत छैक। पाहुनक जखन लगही करैत छथि तखन मोनि नहि फुटैत छैक। हँ, दिसा फिरलापर गाछ जरूर जनमि जाइत छैक। आ सहयोग देबए लगैत छैक पहिनेसँ जनमल गाछकें। मोनि फुटैत अछि, गाछ जनमि जाइत अछि घरो-चलैत रहैए।

भरत वाक्य - : नोर आ हँसीक माँझ घरक स्थान छैक।

घर ओ जगह थिक, जाहि ठामसँ दू टा बाट फुटैत छैक। एकटा आगू दने आ दोसर पाछू दने। बाम दहिनक प्रश्ने नहि। आगू महँक बाट पकड़ब तँ घंटा भरि लागत चौटिआपर पहुँचबामे। आ चौबटिओ तेहने। केन्द्र बिन्दुसँ चारि टा बाट निकलल आ फेर ओहि एक-एक बाटक शुरूआते में चौबटिआ फुटि गेल छैक आ क्रमश: प्रत्येक बाटमे एहनाहिते चौबटिआ फुटल छैक। आ अहाँ चौबटिआपर पहुँचि, थकमका जाएब। अथ-उथमे पड़ि जाएब। किछु नहि काज देत। कखनो सोचब जे ओहि बाटपर चलल जाए तँ कखने ओहिपर। घनचक्कर। किछु ने फुराएत। आ एहन समयमे बात अहाँ थाकि कए ओहि ठाम बैसि जाएब वा कोनो बाटपर चलि बिला जाएब वा पुनः घर घुरि जाए जहाजक चिड़ै जकाँ। आ जँ पाछूक बाट पकड़ब तँ पाँचो मिनटसँ बेसी नहि लागत चौबटिआपर पहुँचएमे। मुदा ओही चारि मिनटमे पाँच जुगक अनुभव भए जाएत। गोठुल्लासँ आगू बढ़ि पाएब जँ ओहि महँक निकलल बत्तीसँ आँखि माथ सही-सलामत बचि गेल तँ। आगू बढ़लापर दूगो घर बीचक एकटा गली भेटैत छैक। देहोसँ कम्म चौड़ा। कहिओ देबालमे लागि छिला जाएत। कहिओ किछु...। अगत्या पार कए जेबैक अहाँ कोनाहुतो ओहि गलीकें। आबि जएब चौबटिआपर। मुदा चौबटिआपर पाछूक बाटसँ पहुँचबाक पछातिओ अहाँक आगू में ओएह सनातन प्रश्न आबि ठाढ़ भए जाएत।

कोन बाटपर बढ़ल जाए। निर्णय नहि कए सकब से हमरा बुझल अछि। आओर अंत में ओएह तीनटा उपाय-थाकि कए बैसि रहब वा अनचिन्हार बाटपर पएर बढ़ा देब वा घर घुरि आएब।

ई घरे थिक जे दू-दूटा बाट राखिओ कए ककरो आँगा नहि बढ़ए दैत छैक। बृहस्पतिओ ग्रहसँ बेसी आकर्षण शक्ति छैक एकरामे। जतेक प्रबल शक्तिसँ अहाँ बाटपर बढ़बाक प्रयास करब एकर शक्ति ओतबे बढ़ल जाइत छैक। रामक समकालीन बालि जकाँ। आ अंतमे नुकाइए लेत ओ अपना पेटमे। घोर अन्हरियामे। पटकैत रहू माथ एहि देबालसँ ओहि देबालपर। टूटत नहि। फूटत नहि।

निष्कर्ष वाक्य-: घर दू मूँहा अजगर थिक।

घर ओएह थिक जे युग-युगसँ दुर्गा बनबाक देखैत देखैत मरि जाइत अछि। घर कहिओ ने बनि पबैत अछि दुर्गा। दुर्गाक दसटा हाथ आ एकटा मूँह देखि घर सोचैत रहि जाइत अछि जे दुर्गे जकाँ हमरो दसटा हाथसँ अबितै आ एकटा मूँहमे जाइत से कतेक नीक होइतैक। मुदा ई सपना देखिते-देखिते ओ भए जाइत छैक रावण। अबैत छैक दूटा हाथसँ मुदा जाइत छैक दस टा मूँहमे। कखनो कऽ घर ब्रम्हा आ रावणक रक्तसंबंधक प्रसंगमे सोचए लगैत अछि। सत्ते चतुर्मुखीक संतान दसमुखी केना ने हो।

कहिओ-कहिओ घर सोचैत अछि जे दुर्गा नहि सही गणेश किएक नहि भए जाइत छी। पेट रहत मनुखक मूँह रहत जानवरक। जानवरक मूँहसँ दूभि-पात चिबाइए सकैत छी। सोहारी ओ भात तँ खएबामे कोनो दिक्कत नहि। मुदा घरक ईहो मनोकामना पूरा नहि भए पबैत छैक। आ रहि जाइत छैक ओ पहिनेहे जकाँ। कहिओ कए अधरतिआमे घर बिसुनाए लगैत अछि आ ओही कालमे ओकर बड़बड़ेनाइ चालू भए जाइत छैक। बड़बडेनाइमे ईहो मिलल रहैत छैक प्रार्थनाक रूपमे-हे भगवान वा तँ हमर मूँहे गाएब कए दिआ वा पेटे। ई दूनू बड़का गुंडा अछि। खास कए ई पेट। आ अंतमे ई प्रलाप सेहो बन्न भऽ जाइत छैक आँखिक संगे-संग।

निष्पति वाक्य -: घर बड्ड किछु सोचैत छैक मुदा ओ पूरा नहि भए पबैत छैक।

घरे एकटा एहन जीव होइत अछि जे अपना भीतर बाजल गेल हरेक शब्दकेँ रोकबाक लेल छोटोसँ छोट भुरकी बन्द कए दैत अछि। ई जनितो जे शब्दक दूत बसात होइत छैक। आ घरे तँ छैक जे दोसर ठामक गप्प सुनबाक लेल टाट की चारोकेँ हटा दैत छैक चाहे ओहिमे रहए बलापर पाथर खसौक वा पानि पड़ौक वा रौद लगौक। कोनो असरि नहि घरपर। आ एहन सामर्थ्य तँ घरे के हो जे घर में रहएबाला सभ पाथर, पानि रौदसँ भरि जाइत छैक मुदा ओ अपन काज कइएक निचैन होइए।

छोट वाक्य -: घर मने ओ व्यापारी भेल जे कनेक लाभ लेल बड़का हानि के मोजर नहि दैछ आ बुझैछ जे हमरा पौ बारह अछि।

कहिओ अहाँ सभ सोचलहुँ अछि जे आङनक घर आ दरबज्जाक घरमे की अंतर होइत छैक। नहि ने। प्रयासो नहि कएने होएबैक। ओना दरबाजापरक घरकेँ घर कहले. नहि जाइत छैक। तइओ...। आङनक घर मने घरबैआ केबाड़ लगा लेताह तँ चारू दिससँ सुरक्षित। दरबज्जाक घरमे अहाँ सुरक्षित भइओ .सकैत छी आ नहिओ भए सकैत छी। कतेको गोटाक घर आ दरबज्जामे मात्र एकटा टाटक अस्तित्व रहैत छैक। टाट हटा दिऔक कोन घर रहत कोन दरबज्जा से बुझि नहि पड़त। मुदा तैओ आङनक घर आ दरबज्जाक घरमे अंतर होइत छैक।

आङनक घरमे अहाँ ककरोपर खिसिआ कए हाथ छोड़ि देबैक मुदा दरबज्जाक घरमे चुप रहबाक अतिरिक्त आन कोनो उपाय नहि। कारण जे होइक। आङनक घरमे केओ नोर बहा कए टाटकेँ अपन कथा कहि सकैत छथि। मुदा दरबज्जाक घरमे नोर की बेसी हँसिओ नहि सकैत छी। बेसी हँसब तँ लोक बताहे बूझत। आङनक घरक कोनो कोनमे एकटा कापी आ एकटा कलम रहैत छैक जाहिसँ लिखाइत छैक करेजक गप्प। दरबज्जाक घर महँक काँपीपर लिखाइत छैक नून-तरकारीक हिसाब।

नमहर वाक्य-: आङनक घरमे सहजता होइत छैक। दरबज्जाक घरमे कृत्रिमता।

घर मने एकटा ओहन मंच जाहिपर होइत रहैत छैक हर समय रंग-बिरंगी चौकी तोड़ नाच। एही चौकी-तोड़ नाचकेँ लोक गँड़िघुम्मा नाच कहैत जाइ छथि। आ नाचमे नटुआक जे घूमै घरक मूँह जरूर घूमि जाइत छैक। नाच खत्म भेलापर चौकी टूटल ककरो भेटतै की नहि भेटतै। मुदा टूटल मंच, टूटल घर जरूर भेटैत छैक। नाच शुरू होइत छैक चौकीतोड़क नामे मुदा अंतमे ओकर नाम रखबाक इच्छा भए जाइत छैक घरतोड़। मुदा ईहो एकरा अजगुते गप्प छैक जे एहि नाचक नाम हरेक बेर शुरू में चौकीतोड़ आ अंतमे घरतोड़ रहिते छैक। लोककेँ दूनू नाम पसिन्न छैक। एकैटा नामसँ गुजर नहि चलतै। आ ई घरे अछि जे एहि नाचमे ओ स्वयं भूमिका लैए आ दोसरो घरकेँ भूमिका दैए। आ सभ मीलि कए खेलैए चौकीतोड़ उर्फ घरतोड़ नाच।

आप्त वाक्य - : घर एकटा मंच छैक जाहिपर नाच होइत छैक। सभ मीलि नाचैए आ खुश होइए। साँझ होइए, भोर होइए। इजोरिआ जाइए अन्हरिआ अबैए। देबाल ढहैए, चार टुटैए। नेओं पडैए, पीलर गड़ाइए। एस्वेस्टस किनाइए वा छत ठोकाए। सभ किछु होइए। एक घरसँ एकैस घर होइए। होइत जाइए। होइत जएबाक लेल बाध्य होइए।

अन्तिम वाक्य - : घर ओ घर नहि अछि जे पहिने छल। घर ओ घर नहि रहत जे एखन अछि।

(ई कथा अक्टूबर-दिसम्बर २००८ मे पटनासँ प्रकाशित घर-बाहर नामक पत्रिकामे प्रकाशित भेल छल)

३

काटल कथा

10 जनवरी (समय भोरक 5.39 मिनट)--- आइ भोरे गंगासागर ट्रेनसँ दड़िभंगा रेलवे स्टेशन उतरलहुँ। किछु डेग चललाक पछाति बुझाएल जेना डाँड़सँ निच्चा पानि झहरैत हो। डाँड़सँ उपर नै, किएक तँ गंजीपरसँ अंगा, अंगापरसँ अधकट्टी सुइटर आ तकरा उपर पूरा बाँहिक जैकेट छल। पूरा माथ गुलबंद महाराजक शरणमे। तँए डाँड़सँ उपर किछु नै बुझना गेल। मुदा डाँड़सँ निच्चा छल मात्र खौरकी हाफ जँघिया आ ताहिपरसँ फूल पैन्ट। तखन पानि की पाथरो बुझेतैक।

आब अहाँ सभ हमरा किछु कहब से हमरा बुझा रहल अछि। अहाँ सभ कश्मीरक पानिकेँ बर्फमे बदलनाइ विश्वास कए सकैत छिऐ मुदा एहि गप्पकेँ नै। कारण--------------- ओना कारण एकर बड्ड सोंझ छै आ अहाँ तँ बुझिते हेबै जे सोंझ गप्प मगजमे बड्ड देरीसँ घुसैत छै। ओना जे होइक एकर कारण, छै मुदा स्वाभाविके। मनुख जाहि वस्तु आ ओकर परिवर्तनकेँ आँखिसँ देखैत छै ओकरेपर ओ विश्वास करैत छै। बिनु आँखिक देखने केओ विश्वास करत ताहि लेल माथक पसेना एड़ीसँ पोछए पड़ैत छै। ओना एहि गप्पक बीचमे हम अपन टाँग अड़ाएब जे किछु गप्प देखबाक नै विश्वास करबाक होइत छै, ओनाहिते जेना की कन्यागत कहै छथिन्ह जे हमर कन्या पवित्र छथि आ वरागतकेँ विश्वास करहे पड़ैत छै। ओना वरागतक विश्वास कोन जौड़सँ बन्हालए रहैत छै से हम नै कहब। अस्तु कोनाहुतो जाँघ-टाँगसँ पानि झहरबैत वेटिंग रूम एलहुँ, किछु खन बैसलहुँ आ फेर उठि कए चाह बला लग एलहुँ। आब अहाँ सभ अनुमान कए सकैत छिऐ जे ओहि ठाम हम निश्चित रूपेँ चाह पीने हएब आ से स्वाभाविके छै। व्यर्थमे केकरो दोकानपर जा कए ठाढ़ भए जेबै तँ गमजन होइत देरी नै लागत।

गिलासक चाह आधा खत्म भए गेल छल, आधा बाँचले छल (कृप्या अहाँ लोकनि एकरा दर्शनक विषय नै बूझब) तखने एकटा विचित्र प्राणीक आगमन भेल। ओना एक गोट विद्वान कहने छथि जे मनुख अपना आपमे एकटा विचित्र प्राणी अछि। आब ओ विद्वान विचित्र प्राणीकेँ देखने होथिन्ह की नै मुदा आइ हम देखि लेलिऐ। आगंतुक प्राणी अहाँकेँ ने पूर्ण रूपेँ पुरुष बुझेताह आ ने स्त्री। जँ गँहिकी नजरिसँ देखबै

तँ ओ अहाँकेँ हिजड़ो नै बुझेताह। आब ओ अहाँकेँ जे बुझाथि से बुझैत रहू, मुदा हमरा ऐ प्रसंगसँ उतरि हुनक वयसपर एबाक चाही। ओना ओ देखलासँ साठिक सेहो बुझेताह आ सत्तरिक सेहो, मुदा हुनक वयस चालीससँ उपर नै। आब अहाँ सभ ई नै कहब जे अहाँ कोनो हुनकर टिप्पनि बनेने छिएन्हि ? सत्ते, हम तँ हुनकर टिप्पनि नहिए बनेने छिऐ मुदा जे हम कहलहुँ से सत्य जँ गड़बड़िओ हेतै तँ एकै-दू बर्खक। आब अहाँ सभ चाह बलाक वयस पूछू। अहाँ पूछब तँ हम उत्तर देब जे हुनकर वयस हमरासँ बीस होइन्हि की उन्नीस छलाह हमरे बराबर।

आब अहाँ सभ बोर भए गेल हएब। हफिआइत हएब आ केखनो खिसिआ कए पूछब जे ई इतिहास सुनौलासँ कोन लाभ। हँ बाबू ओना इतिहास सुनेलासँ तँ कोनो लाभ नै छै मुदा इतिहास तँ इतिहासे होइत छै। फेर हम कहाँ भसिया गेलहुँ। केखनो काल कए हम ओनाहिते भसिआ जाइत छी जेना की मुद्रास्फीतिक बाढ़िमे घर आ घरक बजट।

हँ तँ आब सुनू- ओ विचित्र प्राणी चाह बलासँ चाह मगँलकै। चाह बला चाह छानि ओकरा हाथमे देबएसँ पहिने पाइ मँगलकै आब तँ बाबू कहबीए छै " घर कहाँ दरभंगा, झोड़ामे की छौ अंगा, टिकट कहाँ बाबू भिखमंगा " । आब तँ अहूँ सभ बुझिए गेल हेबै, अबूझ तँ नहिए छी। चाह बला बमकि उठल---------- भाग सार--------मादर--------------- फादर--------बहान-------------------सभ विशेषण उझीलि देलकै। बमकैत बाजल--- हम जुआनकेँ भीख नै दैत छिऐ। जो साला बुढ़बा होता है... उसीकेँ माइ को ओही छिन्नी साँड़ को भीख देता हूँ। विचित्र प्राणी पाँच डेग पाँछा हट गेल। चाहो बला पाँच डेग पाँछा हटि गेल। हमरो चाह खत्म भए गेल छल, पाइ देलिऐ आ विदा भए गेलहुँ बस स्टेन्डक लेल।

10 जनवरी (समय भोरक 6.38 मिनट)--- रेलवे स्टेशनसँ निकलि बाटपर एलहुँ टेम्पू पकड़बाक लेल। किछु खन प्रतीक्षा करए पड़ल। टेम्पूक नै, टेम्पूकेँ आदमीसँ भरबाक लेल। टेम्पू आब चालू भेल। कन-कन बसात आ जर्किनसँ देह परमहंसीय अवस्थामे पहुँचि गेल। ने स्वस्थ जकाँ फुर्तिगर आ ने लकवाग्रस्त जकाँ निष्क्रिय। कहुना बस स्टेन्ड

पहुँचलहुँ आ पहुँचिते सूपक भाँटा भए गेलहुँ। बाम-दहिन होइत-होइत पता लागल जे बसक लेल प्रतीक्षा करए पड़त सेहो कतेक तँ पौने एक घंटा। बेस कएले जा सकैए। आब अहाँ सभ कहबे करब जे अहाँक प्रतीक्षा लेल हम किएक प्रतीक्षा करू। बेस अहाँ प्रतीक्षा किएक करब हम कहिए दैत छी। हँ, ओहि पौन घंटामेसँ जखन शुद्ध कए बिस मिनट बीति गेल तखन एगो कूटक बक्सामे किछु हिन्दी पत्रिका लेने एकटा बच्चा आएल आ सुटसँ आँखिक आगाँमे एगो सरस-सलिल चमका कए बाजल--------

" लिजिएगा हो "

हम प्रतिप्रश्न करैत पुछलिऐ-----

" मैथिली पत्रिका रखैत छहक "

हमर प्रतिप्रश्नक उत्तरमे ओहो प्रतिप्रश्न करैत पुछलक---

" माने का "

हम कहलिऐ-----

" जेना हाल-चाल छै "

ऐ बेर ओ मूड़ी डोलबैत दीर्घ " ओ " केर उच्चारण केलक आ बकसासँ एकटा पोथी निकालि देखबैत बाजल------

" इहे ह"

आ अनचोकेमे भोरे-भोर एकटा जुआन छौंडीक नाङट फोटो आँखिक सोंझा आबि गेल आ संगमे गरमी थोड़ेक सेहो सनसनी आ तनतनीक अतिरिक्त। हम ओकरा फेर पुछलिऐ----

" ई नै हो, ओ जे मणिकांत झा निकालै छथिन्ह से "

ओ छौड़ा चट्ट पोथीकेँ भीतर राखैत बाजल----

" न ऊ सभ हमरे पास नहीं होगा"

आ सरसराइत ओ चल गेल। आ हम ओही ठाम ठंडीमे गरमीक अनुभव करैत रहि गेलहुँ मात्र एकट बसक प्रतीक्षामे।

10 जनवरी (समय भोरक 7.50 मिनट)--- बस अपना नियत समयसँ लेट भए गेल संगहि-संग कच्छमच्छी सेहो ढूकए लागल। एहने समयमे पता लागल जे हमरा गामक तँ नै मुदा हमर गामसँ तीन गाम पाँछाक बस फल्लाँ ठाम लगतै। मोनमे कच्छमच्छीकेँ लेने ओहिठाम पहुँचलहुँ मुदा बस नै आएल छल। ओना ओकर एबाक समयों नै भेल छलै। जे-से फेर हम लगीचक चाहक दोकानमे बैसलहुँ आ चाह पीबाक लेल बाध्य भेलहुँ। चाह खत्म भेल। नियत समय सेहो पूरल। आशचर्य, बस अपना स्थानपर आबि गेल छल। पाइ दैत फुर्तीसँ हम उठलहुँ आ बसमे चढ़ि आगूक सीट दफानलहुँ। आब जँ अहाँ सभ साकांक्ष हएब तँ हमरासँ पूछि सकैत छी जे आगुएक सीट किएक अहाँ बीचोमे तँ बैसि सकै छलहुँ। बंधु ई सत्य जे हम बीचोमे बैसि सकैत छलहुँ मुदा जा धरि कोनो बाध्यता नै हो हमरा अगुअइते नीक लगैए की पछुअइते। अस्तु बसमे लोक मतलब रंग बिरही माल-जाल भरलाक पछाति कंडक्टर ड्राइवरकेँ प्रस्थान करबाक इशारा केलकै। बस तँ प्रस्थान करबे करतै मुदा अहाँ सभ नै प्रस्थान करू। आब हम फेर मतलाबक गप्पपर अबैत छी। बस बाघ मोड़सँ होइत बेला मोड़ आ तकरा बाद दड़िभंगा-जयनगर नेशनल हाइवे पकड़लक आ हनहनाइत चलए लागल। हनहनाइत माने ओतेक तेजी जे की रोडक कंडीशन देकैत क्षम्य छै। हँ तँ लिअ एतबे देरमे बस खिरमा चौक पहुँचि गेल आ अपन गनतव्यसँ मात्र आध घंटाक दूरीपर अछि। एहि चौकपर एकटा जनानी बसमे चढ़लीह आ हुनक संगमे एकटा बच्चा आ मर्द सेहो। आब जनानी, बच्चा आ मर्दक बीच की संबंध छै से हमरा नै पता। भए सकैत अछि जे ओ दूनू पति-पत्नी होथि वा भाए-बहीनि वा अन्य कोनो--। किछु भए सकैत छै। एखनो एहन समय छै जँ कोनो युवक-युवती एक संगे देखा गेल तँ लोक ओकर संबंधक व्याख्या प्रेमेक स्तरपर करैत छै।

एहि छोड़ि आरो कोनो संबंध भए सकैत छै ई सोचबाक फुरसति केकरो लग नै छै।

ओह, हम फेर भसिआएल जाइत छी। हँ, तँ जखन बस खिरमा चौकसँ आगू बढ़ल तखन बच्चा अपन स्वभावक अनुरूपेँ चारू कात मूँह घुमेनाइ चालू केलक। आ जखन कोनो बच्चा कौतुक करए लागए तँ ओकर आगू-पाछू बलाक मोन सेहो कौतुक करए लागैत छै। चाहे बूढ़ हो की जुआन। आ एकर कारण जे होइक। तँ बच्चाक देखाँउस एकटा अन्य युवक सेहो करए लागल जे पाछूक सीटपर बैसल छल। बच्चा किछु देर धरि देखैत रहल आ एकै बेर भभा कए हँसए लागल। हमर बगलमे बैसल एकटा युवक ऐ क्रियाकलापकेँ देखि बाजल- देखिऔ घाघकेँ। बच्चाकेँ हँसा ओकर माएकेँ लोभेतै।

हम किछु नै बजलहुँ। जरूरते की छल। मुदा सोचबाक लेल बाध्य छलहुँ। की हँसी खाली स्त्रीकेँ फँसेबाक लेल होइत छै अथवा हँसबाक लेल कोनो विशेषे कारण वा समय होइत छै। हमर मोन नै मानैत छल। मुदा प्रमाण तँ युवक सद्यः देने छलाह जे हँसीक उपयोग मात्र एही सभहँक लेल करैए लोक।अहाँ सभ हमर सोच हमर विचारक खंडन करब जे एहन गप्प नै छै। आ हमहूँ मानैत छी जे एहन गप्प नै छै, मुदा जखन कोनो शोधकर्ता कहलकै जे हँसी जरूरी छै स्वास्थ्यक लेल आ तकरा बाद जे लाफ्टर कल्ब, शो इत्यादि चलल छै तकरा देखि मानए पड़ल जे हँसीक मात्र एकै-दूटा उपयोग छै।

मनुख लग आब स्वाभाविक हँसी नै छै। स्त्री फँसेबाक नामपर वा नीक स्वास्थ्यक नामपर हदसँ बेसी हँसैत लोककेँ देखि ई विश्वास करब कठिन छै जे ऐ ठाम केओ कनितो हेतै। अमीरसँ गरीब सभ हँसि रहल लाफ्टर शोकेँ सहारे मुदा स्वाभाविक नै। एहि मामिलामे पाइ कोनो विभाजक नै। दूध पिबैत लोक आ माँड़ पिबैत लोक दूनू एकै लाफ्टर शो के देखि हँसैत अछि आ कामना करैत अछि जे भरि दिन भरि राति एहने सुखद हुअए। मुदा से की संभव छै-------।

आ एकै झटकामे बस रूकल संगहि-संग हमर विचार सेहो। बसक गंतव्य आबि गेल छल मुदा हमर नै। हमरा एखन तीन गाम आरो पार कारबाक अछि। मुदा जा धरि हम ऐ तीन गामकेँ पार करैत अपन गाम पहुँची, अहाँ सभ कोनो ने कोनो लाफ्टर शोकेँ देखू, बलजोरीसँ हँसू आ ऐ भ्रममे रहू जे हमर स्वास्थ्य सुधरल जा रहल अछि।

[ई कथा रहुआ-संग्राममे आयोजित "सगर राति दीप जरए" मे पढ़ए लेल रहए मुदा ओतए किछु लेखक सभ सूति रहल रहथि (ओहि सत्रक अध्यक्ष जागल रहथि) आ तकर विरोध करैत हम ई कथा नै पढ़ने रही।]

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.५.डा. योगानन्द झा- श्री राज किशोर मिश्र ओ हुनक 'प्रलय-पाश'

डा. योगानन्द झा

श्री राज किशोर मिश्र ओ हुनक 'प्रलय-पाश'

मैथिली साहित्य ओ संस्कृतिक विकास मे प्रवासी मैथिल लोकनिक योगदानक इतिहास अत्यन्त गौरवमय रहल अछि। एकरे प्रतिफल थिक जे मैथिली पत्रकारिताक आरम्भिक केन्द्र मिथिला सँ सुदूर भारतक गुलाबी शहर जयपुर, आधुनिक मैथिली नाटकक सूत्रपातक केन्द्र विश्वनाथक नगरी काशी आ मैथिली आन्दोलनक विशिष्ट केन्द्र बिन्दु कोलकाता कहल जाइत रहल अछि। मैथिल लोकनि आजीविका किंवा आन कोनो लाथें जखन मिथिलाक धरती केॅं छोड़बाक हेतु बाध्य भेलाह तँ अपना संग मातृभाषा ओ मातृभूमिक प्रति अजस्र प्रेमानुबन्ध कँ जोगौने रहलाह आ तकर अभिव्यक्ति सांस्कृतिक अनुष्ठान ओ भाषिक सक्रियताक रूप मे होइत रहल, जकर प्रभाव मिथिला कँ सेहो सुगबुगबैत रहलैक। आइयो प्रवासी मैथिलक भाषिक सक्रियताक दृष्टिञे

प्रो.उदय नारायण सिंह 'नचिकेता ',नवीन चौधरी, अशोक कुमार झा, शैल झा, लक्ष्मण झा 'सागर ', शेफालिका वर्मा, डा. गंगेश गुञ्जन, मन्त्रेश्वर झा, देवशंकर नवीन, अनल कान्त, प्रकाश झा, विजय चन्द्र झा, पंकज पराशर, प्रेम कान्त चौधरी, महेन्द्र मलंगिया, विद्यानन्द झा, रवीन्द्र कुमार चौधरी, अशोक अविचल, दीपक कुमार झा, सिया राम झा'सरस', गजेन्द्र ठाकुर, सुशील, डा. महेन्द्र ,राजकुमार मिश्र, मनीष कुमार झा, वीरेन्द्र मल्लिक, विनोद कुमार झा, चन्द्रमोहन कर्ण आदिक नाम अत्यन्त आदरक संग लेल जाइत छनि। तथापि किछु एहनो छपकल मैथिल लोकनि छथि जे सर्वथा अनासक्त भावें मिथिला -मैथिलक अर्चा -चर्चा मे दत्तचित्त छथि। एहने एकटा स्थितप्रज्ञ मैथिली कर्मयोगी थिकाह श्री राज किशोर मिश्र। मूलतः अड़ेरडीह, मधुबनी निवासी श्री मिश्र (जन्म तिथिः 27.01.1960) सम्प्रति दिल्लीये मे बसि गेल छथि आ मुख्य महाप्रबन्धक (विद्युत), भारत संचार निगम लिमिटेडक' गरिमामय पद सँ अवकाश ग्रहण कयलाक बाद सँ जेना पूर्णतः काव्यशास्त्र विनोदहिक ब्रह्मानन्द सहोदरक अवगाहन मे निमग्न रहऽ चाहैत होथि, तहिना निरन्तर लेखन -प्रकाशन सँ आबद्ध भऽ चुकल छथि। गद्य आ पद्य लेखन मे समान रूपेँ निष्णात एहि मनीषीक एगारह गोट काव्य पुस्तक राष्ट्रभाषा मे तथा सात गोट कविता संग्रह,एक गोट गल्प संग्रह आ एक गोट आलेख संग्रह मातृभाषा मे प्रकाशित भऽ चुकल छनि। राष्ट्रीय ओ अन्तःराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित ओ सम्मानित हिनक पोथी सभक सामान्य लक्ष्य भने लोकरंजन होइनि मुदा विशिष्ट लक्ष्य रहलनि अछि लोकशिक्षण, जाहि मे लोक कल्याणक भावना प्रक्षेपित भेलनि अछि आ सैह सत्साहित्यक लक्षणो थिक। ई साहित्य केँ वैज्ञानिकता सँ ओत-प्रोत देखऽ चाहैत छथि जकर सविशेष लक्षण डा. गणपति मिश्रक 'हमहूँ कविता लिखि सकैत छी 'आ योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'जीक 'उड़न छू गोला ' आदि किछुए पोथी मे परिलक्षित होइत अछि। स्वभावतः हिनक रचनावली सभ मैथिली काव्यक क्षेत्र मे एकटा अभिनव ओ सुचिन्तित पदक्षेप थिकनि। मैथिली मे श्रीमिश्रक जे पोथी सभ हमरा दृष्टिपथ पर आयल अछि से सब थिक क्रमशः चाननि, मंथन, अष्टदल; नव पात नव बात ; उपायन ,सप्तपर्ण ; नव घर उठय , पुरान घर खसय ; एवं प्रलय -पाश। एहि सब मे प्रथम छओ गोट 2022ई.मे तथा तथा अन्तिम दुनू वर्तमानहि वर्ष मे

प्रकाशित भेलनि अछि। मूलतः कवि होइतो ई रचनाकार गद्यो विधा मे अपन स्वर्ण लेखनीक चमत्कार प्रदर्शित करबाक प्रयास कयलनि अछि। एहि विधा मे 'मंथन ' हिनक समसामयिक विषय परक दस गोट निबन्धक संग्रह थिकनि आ 'अष्टदल 'आठ गोट गल्पक संग्रह। शेष सबटा पोथी कविता संग्रह थिकनि जाहि सब मे परम्परानुमोदित छन्दबद्धता केँ यथासंभव मर्यादित रखबाक प्रयास भेल अछि। नयनाभिराम जिल्द ओ आकर्षक छपाइ-सफाइ सँ युक्त हिनक पोथी सभ सहजे सहृदय पाठककेँ दरस -परस, अवगाहन ओ चिन्तनक हेतु प्रेरित करैत अछि। तथापि पृष्ठ-निर्मिति मे बेसी सँ बेसी कागत छेकबाक प्रवृत्ति राष्ट्रकल्याणक दृष्टि मे पुनश्चिन्तनक आहवान करैत अछि ,तँ तुकान्तक पाँती सभक व्यवस्थापन अनेक स्थल पर साज -सज्जा पर कशाघात करैत बुझना जाइत अछि। व्ययाधिक्यक प्रति अन्यमनस्कता लेखकीय -प्रकाशकीय औदात्य केँ प्रतिष्ठापित कयने अछि।
श्रीमिश्रक कवित्व-शक्तिक आभा-मंडल वैज्ञानिकता सँ संपुटित छनि जकर श्रेष्ठतम प्रस्तुति थिकनि सद्यः प्रकाशित 'प्रलय -पाश 'कविता संग्रह। एहि मे हिनक एक कोड़ी कविता संगृहीत भेलनि अछि जाहि मे समसामयिक विषय -वस्तुक चयनकऽ शृङ्खलाबद्ध ज्ञान केँ यथार्थपरक, लौकिक ओ प्रायोगिक स्वरूप मे प्रस्तुत करैत विचार -मीमांसा कयल गेल अछि।
ई सब मानव -मस्तिष्क केँ झकझोरि देबाक सामर्थ्य तँ रखितहिँ अछि संगहि विशुद्ध रूपेँ आधुनिक परिवेशक विश्व -मानवताक समस्या ओ तकर समाधानक उपायक रूप मे कान्तासम्मिततयोपदेशक नियोजन करैत अछि ।वस्तु चयनक दृष्टि मे हिनक ई कविता सब अभिनव चिन्तन परक ओ मार्गदर्शक प्रकृतिक थिक।
आधुनिक युग वैज्ञानिक प्रगतिक युग थिक। सम्प्रति मानव विज्ञानक बल पर सुख -समृद्धिक समस्त संसाधन केँ जुटयबा मे सफल सिद्ध भेल अछि। निरन्तर वैज्ञानिक आविष्कार ओ यांत्रिक क्षमताक वर्द्धिष्णुताक कारणे भूगोल -खगोल पर मानवक साम्राज्य स्थापित भऽ गेल अछि। आइ नहि केवल विश्व ग्रामक परिकल्पना साकार सिद्ध भऽ गेल अछि अपितु चन्द्र, मंगलादि ग्रहो पर बसबाक हेतु मानव उताहुल अछि। भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा ओ मनोरंजनक नित्य नूतन साधन पर

मानवक अधिकार स्थापित भऽ गेलैक अछि । आगि सलाइ मे बन्द भऽ गेल अछि तँ वर्षा, बाढ़ि आ समुद्र धरि पर मानवक नियंत्रण स्थापित भऽ गेल अछि। रोग, वार्धक्य, जंगली जीव, शीत, उष्णता आदि सेहो मानवक नियंत्रण मे आबि गेल अछि। एतऽ धरि जे प्रकृति प्रदत्त लिंग -भेदहु पर मानवक सत्ता स्थापित भऽ गेल अछि। मुदा प्राकृतिक व्यवस्थाक विपरीत चलबाक हेतु मानव कैँ प्रकृतिक विपुल शोषण करबाक बाध्यता रहलैक अछि, जकर परिणाम ई भेल अछि जे बगदल प्रकृति अनेक समस्या लऽ कऽ उपस्थित भऽ गेल अछि यथा माटि मे उर्वरा शक्तिक अभाव, गलैत हिमनद जन्य प्रलय -प्रवाह, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, असामयिक ऋतु चक्र, फूटैत ओजोन परत जन्य असाध्य उष्णता, वनक विनाश जन्य बाढ़िक प्रकोप, पृथ्वीक गर्भस्थ जल -तलक निम्नगामिता, मरुभूमिकरण, जैव विविधताक विनाश,अंतरिक्षीय उत्पात,ध्वनि प्रदूषण

,

प्रकाशक रेडियोधर्मिता, प्राकृतिक शीतलताक अभाव, कंक्रीटीकरण, सांस्कृतिक विकृति, पर्यावरण प्रदूषण, अगिला पीढ़ीक हेतु जपाल अन्धकारमय भविष्य आदि। श्रीमिश्र 'प्रलय-पाश' कविता संग्रहक कविता सभक माध्यमे एहने समस्या सभ पर गहन चिन्तन कय समाधानक उपाय सभ दिस इंगित कयलनि अछि। स्वभावतः हिनक कविता सभ मे विज्ञान ओ साहित्यक गठजोड़ भेटैत अछि, असन्तुलित विकास पर प्रहारपूर्वक प्रकृतिक संग तालमेल बैसयबाक शिक्षण -प्रशिक्षण भेटैत अछि, मुदा से भेटैत अछि उपदेशात्मक थोपल स्वरूप मे नहि, अपितु श्रृङ्खलाबद्ध जीवन -मीमांसाक माध्यमे, जे सहजे ग्राह्य भऽ जाइत अछि, खास कऽ संवेदनशील सहृदय कैँ। एतावता ई संग्रह मैथिली कविता विधा कैँ कविक समसामयिक ओ प्रगतिवादी दृष्टिकोण सम्पन्न अतुलनीय देन थिकनि। अपेक्षा कयल जा सकैछ जे ई संग्रह मैथिलीक कवि-समुदाय कैँ नित्य नव चिन्तन दिस प्रेरित करतनि।
प्रलय-पाशक कविता सब प्रसाद गुण सम्पन्न अछि तँ अर्थक निर्वचन मे कतहु बाधा नहि अबैत अछि। कवि एक दिस जँ गाम -घरक बोली -बाणीक सहजता कैँ अपनाबैत तद्भव ओ देशज शब्दावलीक प्रयोग करैत देखि पड़ैत छथि, तँ तत्समो शब्दक प्रयोग मे ओहिना निष्णात बुझना जाइत छथि। से हिनक अध्ययनशीलता ओ विद्वत्ताक परिचायक थिक।

झहरल, हहरल, टघरल, हुलसल, फुलसल, सदृश शब्दावलीक संगहि रश्मि, जलनिधि, अपशिष्ट, कोकिल, शिशिर सदृश शब्दावलीक प्रयोग सोहाओन अछि। यत्र -तत्र विदेशज शब्दोक प्रयोग मे कवि कोताही नहि कयलनि अछि।

एकटा कविता 'नव जीवन -संस्कृति 'मे संस्कृतिक क्षरणक प्रति कविक जुगुप्सा भाव एहि शब्दैँ प्रकट भेलनि अछि -

पानिक बदला मे कोका कोला ।
मसल्ला -तेल सँ लथपथ छोला।।
मुर्गा, मासु, बर्गर ,मोमोज।
एकरे मतलब भेलै भोज।।
बगिआ, पिड़ुकिया, टिकड़ी, गुड़पुरी ।
एहि पकमान सँ उठैछ सुड़सुड़ी।।
नवतुरिया मे हँसी -ठट्ठा।
छोटो बात पर लट्ठम -लट्ठा।।
के उठाओत ठठरी पर, मुर्दा के भार।
शववाहन भेल जा रहल ,अंतिम कहार (पृ. 84,86)

एहिना हिनक एहि संग्रहक सबटा कविता पाठकक मनोमस्तिष्क मे चिन्तनक पथार लगबैत चलैत अछि, मानव -कल्याणक मार्ग दिस अग्रेषित करैत रहैत अछि। अन्त मे कविक उपसंहृति छनि -

प्रदूषण रहित होअय विकास।
तखने जीवन ,तखने प्रकाश।। (पृ. 128)

स्वभावतः हिनक रचनावली आधुनिक मैथिली काव्यधाराक अन्यतम निधि प्रमाणित होएत, से अपेक्षा कयल जा सकैछ।

ओना राष्ट्रभाषा हिन्दीअहु मे श्रीमिश्रक एगारह गोट पोथीक प्रकाशनक सूचना अछि जाहि मे सात गोट कविता संग्रह विधाक तथा चारि गोट खण्ड काव्य विधाक अछि। कविता संग्रह सभक नामावली अछि क्रमशः प्रवाहिनी, पुष्परेणु, शतभिषा, जल -लता, वेणुपत्र, कृतांजलि तथा त्विषा ओ खण्ड काव्य सभक शीर्ष अछि क्रमशः ऊर्जा -वर्णन, संवेग, प्रदूषण तथा जल -संकट। एहि मे ऊर्जा -वर्णन कैँ 'इंडिया बुक ऑफ रेकर्ड्स',

'एशिया बुक ऑॅफ रेकॉर्ड्स' तथा 'वर्ल्ड बुक आफ रेकॉर्ड्स' द्वारा ऊर्जा विषयक प्रथम हिन्दी काव्य तथा प्रदूषण कैँ 'इंडिया बुक ऑफ रेकॉर्ड्स'द्वारा 'कम्प्रीहेन्सिव डिटेल्स आफ पाॅल्युशन 'पर प्रथम हिन्दी काव्य घोषित कऽ समलंकृत कयल गेलनि अछि। वृत्तियेॅं विद्युत अभियन्ता एहि मैथिल सपूतक जीवनोपलब्धि पर सहजहिँ गौरवान्वित भेल जा सकैत अछि।वर्द्धस्व राष्ट्रं विमली कुरुष्व।

-योगानन्द झा, भगवतीस्थान मार्ग, कबिलपुर, पो. -लहेरियासराय, जि.-दरभंगा -846001(बिहार), M : 9334493330

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.६.डॉ किशन कारीगर-.मैथिली मे रचना चोरी के विकट समस्या आ समाधान

डाॅ. किशन कारीगर

मैथिली मे रचना चोरी के विकट समस्या आ समाधान

मिथिला मैथिली स जुड़ल लोक सब एक नम्बर धूर्त,दलाल आ रचना चोर प्रवृति के होइए. इ कटु सत्य स्वीकारह पड़त. कुकृत्य क अहाँ सब कते दिन चोरनुकबा खेला खेलैत अप्पन कुकृत्यक झांप तोप करैत रहब?
जसौती कमेबा दुआरे अहाँ मिथिला मैथिली के आयोजक प्रकाशक सलाहकार आदी बनल साहित्य अकादमी वला पुरूस्कारी आयोजनी

वेबिनार मलाई खा ढेकरैत फिरै जाई छी से कते दिन छजत? पब्लिक अहाँ के कुकृत्य बुझि गेल यै आ कतेको बेर अोई साहित्यिक दलाल सबहक देखार चिन्हार भेल. तइयो लाजे कथिक निरलज्ज भेल चुपेचाप रचना चोरी क जसौती कमाई लै सबटा अपकर्म कुकर्म करैत रहै जाउ. धूर छिया.

रचना चोरी समस्या के कारण:-

1. मैथिली के अधिकांश पत्र पत्रिका साहित्यिक गिरोहक अधिन त्रैमासिक छमाही द्वैमासिक रूपे बहराइत रहलै. जेकर पब्लिक तक कोनो पहुँच नै रहलै.

2. कोनो नीक रचना के चोरा के अपना नामे प्रकाशित क लेब. रचना पठौनिहार वा पब्लिक तक नै पत्रिका पहुँचै देबै आ नै रचना चोरी के दोख लागत.

3. रचना पठौनिहार के कोनो माध्यम स सूचित नै करब जे ओक्कर रचना प्राप्त भेलै प्रकाशित अप्रकाशित? आखिर की भेलै?

4. कोनो अपरिचित वा आन गिरोहक वा स्वतंत्र लेखक के मौलिक रचना के सद्य: वा की पैरोडी तोइड़ मरोईड़ के अपना नामे प्रकाशित करबाक ठकहर प्रवृति.

5. रचना चोर के देखार भेला पर ओकर सामूहिक प्रयास नै क ओई चोरबा चोरनी के गैंगवार बचेबाक प्रयास आ कुकृत्यक झांप तोप क मैथिली मे अहिना होइत एलैए वला राग अलापब.

6. काॅपीराईट अधिनियम के जानकारी नै राखब वा संपदाकीय मनमाना फार्मूला पर चलब. जे के की हमरा कए लेत?

7. रचना चोरी सिद्ध भेलाक बादो ओई रचना चोर सबके मंच देब आ

अप्पन गिरोहबादी ठेकदारी के फिराक मे रहब.

समाधान:-

1. रचना चोरी करनिहार पुरूष स्त्री जे कोई होऊ तेकर साहित्यिक बहिष्कार आ कॉपीराईट अधिनियम के दुआरा ठोस जुर्माना लगेबाक चाही.

2. रचनाकार के अहि बात के सूचना मेल वा लिखित वाट्सएप माध्यमे सूचना अबस्से दी जे ओकर रचना प्राप्त भेलै तकरा बाद प्रकाशित अप्रकाशित की भेलै.

3. कॉपीराईट अधिनियम के मानब आ जानकारी राखि निष्पक्ष प्रकाशक संपादक व्यवस्था के मजबूती स लागू करब.

4. अहाँ संपादक प्रकाशक के धर्म निरवाह करैत रचना मौलिकता के जाँच वा मौलिक रचना संग छेड़छाड़ करबाक प्रयास अबस्से करी.

5. मौलिक रचना प्रकाशन लेखन प्रोत्साहन दिस सामूहिक प्रयास मे भागिदार बनि रचना चोरी के रोकै मे सहयोग अबस्से करी.

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.७.लालदेव कामत- १ टा लघुकथा आ ६ टा बिहैन कथा

लालदेव कामत- १ टा लघुकथा आ ६ टा बिहैन कथा

१

१ टा लघुकथा

अपन हारल बहुक मारल कियो-कियो बजैछ!

कन्यागत १२ वजे रातिमे अपन बिछौटा ५०गोटेक आकस्मिक बैसार केलनि।एकगोट समर्थक पुछलखिन कतय करब बैठक।ताहिपर कन्यागत बाजल चलू लड़का कैं दियादेक दुआरि पर।बेटी धी बाली बात थीकैक, की करब?जातिगत खाप बैसारमे कन्यागत उगललनि"यौ गोतिया लोकनि!"लागल रहलौंह अपने सबदिन "बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ "मैं।परंच दूनू बड़कि दूदिश बेर गेल य।काल्हिखन पता चलिते खूब मारपीटधरि केने रहियैक।अपन चीरचोली एक हप्ता सँ दूनू छौंरी अन्तय राखि आयल अछि।धरि कोर्टमैरेजक उमेर तँ तीन शाल कमे, दूनू छौरोक नँय पूरल छैक उमेर ,से की कयल जाय?

एक नव पक्षधर अपेक्षित टोनि देलकनि-अपन हारल आ बहुक मारल थरि कियो - कियो सुनाबैछ!बिनु निर्णय के बैसार खत्म होइते बेटी बाला हारल नटुआ सदृश ......झमान भ' पंचायत भरिमे गिरल।

२

६ टा बिहैन कथा

१

उम्मीदवारी आकर्षण

लाल बाबू पंचायती राज चुनाव मेँ ठाढ भेलाह ,तँ हुनक विरोधी प्रत्याशी एकगोट बलुआबाला मंडिलपर दस गोटेक सामने बाजैत अपन चुनावी आकर्षण लेल बाजि उठलैक जौं अहाँ सँ एक भोट कम हमरा भेटत तँ सदा लेल भोंटभांट सँ संन्यास ल'लेब।देखा चाही आगू की होईछ।

२

तुष्टिकरण

बुमब्ईमे आर एस एस० सँ प्रशिक्षण पाबि गाममे एकटा जुबक खुब हिन्नूके बीच अपन प्रशंसा अपने बघारैत रहय।ताबीच सरपंच पदक इलेक्शन केँ डुगडुगी बाजि गेलैक।ओकर परोसी एक मोहम्मद खां साहेब रहैक जे बुझेलकै -रौ बौआ तोरा वाडक चारिगो तोहर जाति जे सरपंच बनय चललखुन से तोहर परीक्षा धरि ऐबेर लेतौक।तोँ की करबिही।ओ जुबक बाजल-हौ रौतो सँ रौत चतुर सुजान बाला बिहैन कथा सुनने छहक नै।सयह करब ,हमर जे मुखिया उम्मेदवार छथि ने, हुनके कहल सँ अपना कुटूमो केँ नँय आ हुनके मिलानीके जे तोहर जाति सरपंचमे ठाढ छह;तकरे पोलींग एजेंट बनि तुष्टिकरण नीति अपनायब, ओहो तँ गौंवाँ समाजे छथि।ककरो की दबौटमे छियै?अपने तरेतर अकारण हँसयधरि लागल।

३

नमालत

जोखना पासंग मारिकय नौबेर लत कयकेँ तौललक।दशम धरि ठौसगर पड़िते ठाकुरजी बाजल,बस-बस भ'गेल संतोषजनक।जोखना तरजू रखैत कहलक हौ समांग!वोटे जकाँ हम बुतातो जोखैत छी,तैँ ने हमरा लोक जोखना नामे परोपट्टामे जनैत अछि।आगू गप्प बढबैत इहो बाजल-हौ हमरा टोलक नेताजी आठकाठ पर सँ उतरलाह एहिबैरक सरपंचक भोंटमे ,से ठीके कहल गेल छैक-नमालत भ 'जेना सुस्त पैर गेल हो।हे

हौ,से एना कियेक बुझैत छह,जानिलैह बुढहो शेरकेँ कतौह मौसक बदला घास खाइत देखलहक हय।फेर कोनू चुनाव लगिचाय दहक नै,देखमे अपने आबि जेतह।ओहन उम्मीदवार तँ नौ दिनक प्रवास पर सब मास गाम सँ बाहर सामाजिक राजनीतिक जतरा करैते रहैत छैक,तेँ की नमालत कोनो दिनदुरागमन केर वादक पहिल नौरोजी विदागरी थीकैक?

४

नहला पर दहला

एक गाममे एकटा दरबार कहबै बाला मरड़ रहथि।हुनका नाँगर बेटाक बियाह समय सँ नहिँ होइत रहनि।से एकटा मजबिकनीके किछ पाई केर लालच द' बोर पाथलनि।दोसर एकटा गाममे एक बेटीक बाप झखैथ रहथि ,अपन आन्हरि समर्थ बेटीक वियाह ले।से ओहि घटक केँ टेबि जोरा सांचि धोती आ किछु कैंचा थम्हाबैत शुभ लग्नमे बेटी बियाहैक भार देलखिन।मध्यस्थ बजलाह-मान्यजन संग ८बरातिक संग अमुक गामक दक्षिणबारि टोलमे बेटा बियाहैले चलल जाय।भलदिन भल,मंगलदिन चल....।घरदुआरिक बाद लड़िकाक बाबूजी खुशीमने राग प्रलाप करय लगलाह-"अबाह बेटा कोहबर गेल,राउतक मोन बढ हर्खित भेल.....।। समैध सुनितहिँ प्रतित्तर दैत उत्साहमे गाबय लगलाह- "रौतो सँ राउत चतुर सुजान,दूनू आँखि निरपट देखब बिहान......!गहनमरु कन्यादानमे गीतहारिके सुपारी धैर खूब जेथगर सँ बेन भेटलनि।

५

सौसक दिएमान

मन्शी रामू जी अपना द्वितीय सासुराइर मैनही गाम आयल रहय।ओतय दूपहरका कलौमे छ: तरकारी,न अँचार सजल रहैक।खाइकमे तीन तरहक चटनी सेहो परसल गेल छलैक।सासुमाय बढ अह्लाद सँ जमायके रूचि सुनि-बुझि घौकाक साग सेहो बनौने रहथिन।तीमन तरकारी क' लेल थारीमे परसल भात झँपाधरि गेल रहैक।बाटीमे गिलगर खाइक सुआद कने तीत रहनि।से पहुनाईमे एतेक व्युतपन अपूर्व सागक झोर सहित बाटिभरि एकेनिशामे गटागट पी लेलक।कारण बेर-बेर कौर खाइत काल जे जीत लगतैन से एकेबेर नै किया तीत सूआद बुझता।सासुमाय जेना बेटी मुहेँ पहिले सुनने छलीह,से स्वंय दृश्य देखि पतिएलीह।हुनका

नीक लगैत देखि आओर बाटी दर बाटी भरि परशन हरियर डग-डग सागपत्ताक झोर परसलीह।आब तँ अपन जान अबग्रहमे देखि रामूजी बरबड़ेलाह-"एतेक जे प्रलय करबाक छन्हि तँ बरु घेंटे मोइक दौथ नै! अश-बीश करैत रामूजी बिनु दुध-दही,अमौट खयने थारिपर सँ उठै सँ पहिले ऐँठहाथ लोटाक जलमे घोंइक लेने छलाह।

६

हकरा

एकटा अत्यंत महत्वपूर्ण भोज जाहि चिन्हित नोतहारी लेल भेल रहैक,ताही मेँ किछ बिनु सिदहासमर कैँ हकरा भोजक पाँतिमे खायले ठेसी सँ बैसल।परोक्ष रुपे तकरा ठेलियाके किछ तमशगीर लोक जे पठेने रहैक,से सबसँ अहगरकैँ व्युतपन रुपे दत्तचित भ'खेलक।जिनका लेल भोजन तैयार रहैक से अपनाकैँ वंचित बुझलक।कारण भेलै जे ताधरि भोजक वस्तु सैधि गेलैक।तेहने न स्थिति चुनावों मौसम में पारखि लोक परैखैत अछि।तेँ कहल गेल छैक "विनु नौतहि जाईछ जे हकरा।"

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.८.लालदेव कामत- पोथी समीक्षा एक विमर्श- १.विद्यापति आत्मकथा केर दृष्टिबोध २.पुस्तक समीक्षा: लालू-लीला ३.जगदीश प्रसाद मंडल- उपन्यास "पंगू"

लालदेव कामत

पोथी समीक्षा एक विमर्श- १.विद्यापति आत्मकथा केर दृष्टिबोध २.पुस्तक समीक्षा: लालू-लीला ३.जगदीश प्रसाद मंडल- उपन्यास "पंगू"

१

विद्यापति आत्मकथा केर दृष्टिबोध

विद्यापति'क आत्मकथा 'उपन्यास' गोविंद झा कृत १९९३में बहरायल रहय।शेखर प्रकाशन पटना'क एहि मैथिली पोथीक दाम ५०टंका सस्त संस्करण ३०टाका धरि राखल गेल छैक।एहिमे१२६पृष्टांकित अछि।४५अध्यायक पाठ केर अतिरिक्त आखरि पन्ना पर भनितामे बहुत किछ वयोवृद्ध लेखक महोदय कहि चुकल छथि।लेखकक विषयमे संक्षिप्त जनतब दूनू भीतरक कोभर पर स्पष्ट देल गेल य। तैयो पाठक वर्गके मिथिला'क इतिहास आ प्राचिन मैथिली साहित्यमे रुचि रखने उपन्यासक कथ्यशैली पर विवेचना करब आवश्यक बुझायत। विद्यापति'क युग आ हुनक वांग्मयक विशेषज्ञ प्रो०कृष्णचन्द झा"मयंक"

जी सँ हमरा मिथिला विभूति स्मृति समारोह हटनी में बहुतराश गप्प भेल रहय। ताहि प्रसंग किछ प्रश्न मोनमे औनाइते रहि गेल ,तेँ अपन दृष्टिकोण राखब परम आवश्यक सन बुझना गेल हन्। विद्यापतिक आत्मकथा हिनक सर्जनात्मक कृर्ति थिकैन।एखनो सयसालक उमेरमे लिखल एकटा नव पोथी मैथिली भाषीक बीच अधिक चर्चामे अछि।हिनक पूर्वमे सामाक पौती कथा संग्रह आ अंतिम एकन्नी रचना जगतमे विशेष रूपे मैथिली साहित्यक अक्षय भंडारकेँ भरने य।प्राय: कथाकार सँ रचनाकार लोकनि उपन्यासकार होय दिश बढैत य,से हिनको पर उतरैत छैक। समकालीन मैथिली भाषामे संवेदनात्मक गद्य लेखन कार्यमे कथा बेसी आ उपन्यास कम लिखाएल य।ताहिमे हिनक भुमिका नीके कहक चाही;परंच मिथिला समाजक जनसंख्या आधारित अभिज्ञान तँ हुनका पकठोस रहबा सँ बंचित कैने छैक; एहि उपन्यासके अभिजात वर्गक समर्थन बेशी भेटल अछि।परंच वैदेहीक अंकमे रमेश चन्द्र झा सद्यप्रकाशित उपन्यास बावत धज्जी उड़बैत छथि।

"विद्यापतिक आत्मकथाक" आरम्भ विद्यापति द्वारा अपन जिंदगीनामा केँ घुरमे सुड्डाह करैत भेल य। परंच पौत्र नोने द्वारा महाकवि क'आत्मकथाकेँ आगि सँ सुरक्षित निकालि देल गेल अछि।तदुपरांत , विद्यापति अपन जीवनक अमूर्त भावक चीरफार आरंभ करैत छथि।"हम झप्पा खोलल।ओहिमे सँ किछ पोथी बाहर कय कातमे राखल । शेष पोथीक बन्हना खोलि-फोलि आ काठक पटरी हटा-हटाय ओकर तड़ित सभ पर दोसर कात थकियाओल। तखन बन्हलाहा पोथी सबके फेर ओहि झपामे दय लेल आ नोनेके अज्ञा देलिऐक ,आब ई झप्पा जतय छलैक ततहि राखि आबह।पृष्ट-१ एहि तरहेँ उपन्यासक हिंदी जेकाँ शुरू भेल छैक। उपन्यासक कथावस्तु नान्यवंशक अंतिम अकर राजा हरिसिंह देवक नेपाल पलायन सँ शुरू होइत अछि। दरवारक प्रधान पंडित आइनवार वंशक संस्थापक पुरुष कामेश्वर ठाकुर द्वारा शासन करब,फिरोजशाह तुगलक द्वारा हिनका सकर राजा घोषित करब,कामैश्वर ठाकुरक तीनगोट कुमारमे राजगद्दी क' हेतु राजकीय दावपेंच चलायब ,असलान द्वारा गणेश्वरक हत्या,राय अर्जून एवं शिवसिंहमे जनमी दुशमनि ओइनवारवंशक ड्योढिक चारि खण्डमे विभाजित होयव,कृर्तिसिंह द्वारा हाजीपुरक तुर्कके पराजित करब,

देवीसिंह द्वारा वागमतिक किनारमे देवकुली गाममे अपन राजधानी बनायब, शिवसिंह द्वारा राजधानीक स्थानमे परिवर्तन कए गजरथपुर किलाघाटमे नव वास्तुकलाक नींवदेव आदि मिथिलाक मध्यकालक इतिहास कथोपकथन शैलीमे एहि उपन्यासमे भेटैत अछि।एहि प्रसंग संध्या गायत्रीक जप,माटिक महादेवक पूजा,सोहरक स्वरलहरी ,विशिष्ट मूल गोत्र सोदरपूरिए ,खौआरए एंव माण्डर कुलक विशेष चर्च,विसयबारक उपेक्षा ,मूलक आधार पर एक-दोसराके छोट-पैघ बूझब ,चौपाड़ि शिक्षाक केन्द्र ,दर्शन् न्याय -नव्य न्यायक अध्ययन,दियादि कलह,वार्ता लेव,स्त्री एवं दास बिक्रय असहनीय कर भार अधिक उल्लेख एहि साहित्यिक कृतिमे कयल गेल अछि। रेणुकादेवीक मुसलमान आक्रान्ता द्वारा बलात्कारक परियास आ मिथिलाक धर्मशास्त्री द्वारा ओकरा अजाति बुझब,परंच विद्यापति द्वारा ओहि भागल जनिजात रेणुकाकेँ अपना घर में राखि मौसी बनाएब नीक वर्णन अछि।१४म् शताब्दिमे विद्यापति प्रगतिशील देखेलाह य।तैयो ई विद्यापति 'क आत्मकथा नय भ'केँ शिवसिंह 'क आत्मकथा मानल जायत। विद्यापति क' जीवन चरितमे ई कतुहुँ लिखल नय य जे वो संस्कृत शिक्षा ग्रहण करबाक हेतु सरिसबपाही अयलाह।से बात इतिहास सम्मत नहिं रहैत गोविन्द झा वर्णन धरि कयलन्हि,एकरा सांच नय मानल जा सकैत य।लेखक स्वंय माण्डरवंश सँ संबंध रखैत छथि तेँ तत्कालीन मिथिलाक मात्र पाँजिबाला ब्राह्मण एवं शिक्षितकर्ण कायस्थक चर्च कयने छथि। मिथिला'क अस्मिता किसान चेतना सँ जुड़ल ऐ जेकरा यात्रीजी उजागर कयलैन। विद्यापति'क आत्मकथामे मिथिलाक किसानक साक्षात्कार,ओकर सामाजिक-आर्थिक दशाक चर्च भुलहुँ सँ नय भेल य।एतौका संस्कृति,धरोहर आ माटि पानिक दिग्दर्शन नहि कराबैत य।तेँ ई मथिलाक उपन्यास नय ओईनवार वंशक विरूदावली वा शाहनामा कहल जा सकैछ।एहिवंशक पदाधिकारी द्वारा सर्वहारा आ किसान रुपन मड़र सँ पूर्ण लगान नहिं अदाय केने मंत्रीवर चन्द्राकर ओकरा हरीमे ठोकि पिठपर छौंकियबैत छैक।एकदिवसीय स्त्रीपूजा होइत अछि तँ दोसर दिस स्त्रीदासी केँ बेचबाक परम्परा देखमे अबैछ।तेँ ई ऐतिहासिक उपन्यास नहिँ वरण ओइनवार शासकक ईतिवृति मात्र थीक। एहि पोथीके सुविज्ञ पाठक विद्यापतिक पाँति रचनावली बूझत।

२

पुस्तक समीक्षा: लालू-लीला

लालू-लीला: लेखक-सुशील कुमार मोदी प्रकाशक-प्रभात पेपरबैक्स 4/19 आसफअली रोड - नई दिल्ली 02 फौन नंबर - 23289777 पृष्ठ-198 (बृहट् आकार) मूल्य ₹ 200

छात्र आन्दोलनक उपज, बिहारक दूबेर सँ उपमुख्यमंत्री उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदीक "क्या बिहार भी असम बनेगा ", चारा चोर-खजाना चोर, आरक्षण, विभेद मूलक न्याय तथा बीच समर में केरबाद आब सद्य: प्रकाशित पुस्तक'लालू- लीला"लालूजी परीबारक भ्रष्टाचार केर अंतहीन दस्तानक जीवंत दस्तावेज थीक अधिकतर एहि पोथीमे जे तथ्य देखल गेलैक,से सुमो० 40सँ बेसीये बेर प्रेस कॉन्फ्रेंस करैत उजागर करने छथि।बिहारेटा नहिँ अपितु देशविदेशक सुधि पाठक केँ लगैत रहैत छैक जे अखबार मेँ लालू जीक मादे आगू की बताओल जायत। हुनकर सार्वजनिक जीवनकेँ पोल फोलैत चहटगर रूपेँ सुशील कुमार मोदीजी परसैत छथि, तथ्यक आंकड़ा जानबाक हरदम मनमे जिज्ञासा बनल रहैत छैक। तेहन मेँ सम्पूर्ण खोराक भड़ि सामग्री प्रस्तुत पोथी मेँ अवलोकन करय लायक भेटत। पोथीमे पाठ आरम्भ होयसँ पहिलुके पृष्ट पर दू गोट केन्द्रीय मंत्री मा०अरुण जेटली (वित्त आओर कारपोरेट मामला) आ मा० नितिन गडकरी (पोत एवं परिवहन, सड़क एवं संसाधन , नदीविकास आ गंगा संरक्षण) केर उद्गार एहि अवसर पर छापल अछि। एहि लालू-लीला केँ प्रसिद्ध प्रभात प्रकाशन निर्भिकतापूर्वक छापि पोथी (हिंदी) निर्माण कार्यमे लागल अपन 60 वर्ष पूरेलनि अछि। हिनकर प्रकाशित प्रमुख पोथीक नि: शुल्क सूचि प्राप्ति लेल अपन नाम-पता 78270-07777 पर एस एम एस वा मिस्डकॉल देबालेल आखरि कभर पर विज्ञापन लागल पायब । एहिक संग 65 वर्षीय लेखक सुशील मोदीक रंगील फोटोयुक्त हुनक संक्षिप्त जीवन परिचय पर अपनेक नजेर सेहो जायत। सुशील कुमार मोदी जीक लेखकीय पन्ना शुरुआत सँ पहिले प्राक्कथनमे भारत सरकारक माननीय मंत्री रविशंकर प्रसाद (कानून व न्याय, इलेक्ट्रॉनिक एवं आई०टी) केर सारगर्भित व लेखककेँ हार्दिक बधाई दैत, हुनक राजनीतिक संगी सभक

जिक्र सेहो पढ़वाक भेटत।
एहि हिंदी किताबमे अंग्रेजी डेटा केर सेहो जगह-जगह समावेश करैत पोथीके आकर्षित बनाओल गेल अछि। तैयो हिंदी साक्षरता सँ कम पढ़ल-लिखल व्याक्तिके पोथीक सारांश जानयमे दोसर शिक्षित लोकक सहारा लिअ पड़तैक। पोथीमें कतौ खामी नहिं, परंच खुवी आ खाशियत दृष्टिगोचर होयत। प्राय: युवा पीढ़ीक पाठक (ग्राहक) पोथी किनैतकाल बुकस्टाॅल पर पोथीके उनटावैत पुनटाबैत समेय चित्रांकनक एक झलक पावय आ नेत्रतृप्तिक आनन्द उठावैत छैक, से एहि पोथीमें सचित्र भेटत। मोदीजी बढ़ सौष्टव अन्जादमे एहि पोथीमे विषय वस्तुके अनुक्रममे सजौने छथि। प्रमुखरूपे एहिमे खोखा कम्पनी, दान वसियत, पावर ऑफ एटॉर्नी आ हरेक काजक बदलामे जमीन- मकान हथियेवाक लालू परिबारक नायव फंडा दरसौने अछि। अधिक जनतब लेल आवश्वक रूपे पढ़ू आ एहि पोथीके घरेलू पुस्तकालय मेँ संगग्रहित करबाक मोन मानिजायत । लारा'क अर्थ व बेटा- बेटी मोहमे पैसल लालू- राबड़ीजीके सेहो ई पोथी हाहुति सँ बँचबाक सबक दैत फरिच्छ रूपे देखायत छैक। परस्पर विरोधी राजनितिक गलियारामे एहन पोथी छूहक्का उड़िजेबाक संभावना बनल रहैत छैक।

३

<u>जगदीश प्रसाद मंडल-उपन्यास "पंगू"</u>

एहिबेरक मैथिली भाषा मेँ मूल पुरस्कारक विजेता चर्चित साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मंडल,हिनक उपन्यास "पंगू" साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत भेल अछि।१०वर्षपूर्व हिनक पोथी "गामक ज़िन्दगी"केँ सेहो रविन्द्र एवार्ड "नेशनल "भेटल रहनि।हालहिमे हिनक नवपोथी "संचरण" केँ लोकार्पण 'सगर राति दीप जरय'बैनर तर सर्वहारा मंच, मैथिली कथा गोष्ठीमे भेल अछि।सयह कथा पोथी पल्लवि प्रकाशन सँ सद्यप्रकाशित' संचरण 'हमरो भेटल रहय,ताहि पर मधुरामे बाजक मौका नहिँ हाथ लागल छल।एक पाठ पढ़ियो नहिँ पेने रही।ओहीक कथा सत्तैरमे- टुटि क' खसि पड़लैन,मृत्यु सजियापर पड़ल विवेक बाबा, संचरण, ज़िन्दगी सँ प्रेम,परिवारे बगैद गेल, ज़िन्दगी पिछैर गेल आ श्रमहीन कथा मैटर जे उपलब्ध भेल छल,पढि लेने रही।बड नीक लागल

रहय।श्री मंडल जीक प्रस्तुत पोथीक आखरिपाठ समुद्रलंघन एहिबीच पढबाक सौभाग्य प्राप्त भेल।मानव आर्ट सँ छपल "संचरण " कैँ सरकार सँ ISBN (978-93-93135-16-2) प्राप्त छन्हि।101 पृष्टक एहि पोथीक दाम भारू 0250टाका निर्धारित छैक।2022मेँ बहरायल ई पोथी मातृभाषा मैथिलीक अक्षय भंडार कैँ भरयमे एक डेग आरो आगू बढल।ख्यातिलव्ध जगदीश प्रसाद जीक लेखनशैली वा रचनाधर्मिता तेहन ने होइछ जे कथाक पात्र केर कथ्य प्रदर्शन घुमाकय सोझगर रुपे समेटल बुझाइछ,से नव पाठक कैँ सेहो बोधगम्य भाषा शैलीकैँ फरिच्छसन तथ्य समझि-बुझि जायबामे कोनू भांगठ नहिँ रहतैन।सैकड़ों मैथिली पोथीक लेखक एहि 10शालमे गतिमान रचनाकार मंडल जी निठाहे कतेको विधामे कलम चलेने छथि।आखरी पाठ क्र०8 समुद्रलंघनमे जानि सकलौंह से किछ एहि तरहेँ छैक,जे आन कथाकार सँ हिनक पहिचान अलग करैत अछि।

निर्धारित समय पर पंचायती राज चुनाव आबि गेल छैक,5-6खेप जे पहिलो चुनाव भेल रहैक से समय केर बान्हके मजबुत केलकै।पुरना रूतबामे सुधारों भेलैक।जीवानन्द काका आ बड़बरिया भायमे तिनू स्तरक पंचायतक प्रखंडक आ जिला परिषद केर चुनावक निहितार्थ सब तरहक गप्प करय छैक।ओना आब लेखक अपनाकैँ एहि भोंटभाट सँ अलग रखै छथि।परंच राज्य आ केन्द्रीय सरकार जे हरिजन,अधिक पिछरल तबका आ जनिजाइतक वर्ल्ड ले आरक्षण सीट सीमा नीक ढंगे नहिँ निमाहैत छैक,ताही पर अधिकार सँ बंचित तदसंबंधीत गप्प सेहो विमर्शक हिस्सा बनैछ। मतदान सँ तीन दिन पहिले कहैत छैक रंगत तँ भोट बितला पर समाजमे लागत। कानून तँ निशन 99 चोट देनहारके कहाँ पकरै छैक,ओ तँ सौवां चोट देनहार जे एके बेर उपर सँ समधाईन चोट दैत अधोगति करैछ, कैँ अपराधी मानैत अछि;जे हत्यारोपी धरि होइछ।गुलटेन कैँ आबि गेला सँ तहधरिक बातक चर्चा होइत रहैछ। चानीसन झलक साफ देखाईत पाठ मेँ गहींरगर चर्चा भेलैक अछि।जुगे बदैल गेने ने जीनगी जीयत लोक,नहिँ तँ समुन्दरके पानिक फेन जेकाँ फेंका जायत हिलकोरमेँ।सत्ताधारी जमात समुन्दर जेकाँ अपना पेट सँ लहरि उठा बसात बनि आकाशमण्डल कैँ प्रभावित करैत छैक। दुनियांमे लोक खेलारी-मदारी सँ भरल छैक। जौं परेखने-बुझने नहिँ रहै जायत तँ

भांजे नँय लगतैक।बरबरी केँ बरबराइत देख ईहो सुझाव अबैत छैक जे डाक्टरों तँ बेशी बाजब केँ बताहक अबैत लक्षण कहैत, अधिक बाजब पर रोक करै छैक।अपन जीवन धारण लोक अपने बाँहिबल सँ केने ने छैक आ बिनु खगताक बिचार अपना मुहेँ कियाक निकालत। बुद्धिजीवी लोक तँ एहन अतिरिक्त बाजब केँ बुरिपन्नाक दर्जाधरि दैत छैक।मजबिकनी दुआरे -दुआरिए बोटर लगधरि पाई पहुँचाय अपना पक्षमे करब नितांत आवश्यकता -चतुराय कथा मेँ देखायल गेल अछि।किछु वोटर तँ मानसीक रुपेँ समर्थक रहैछ,किछु पार्टीक कैडर भेल,जाहि में खर्च नहिँ लगैत अछि।ओना अपवाद मानूं तँ बँटैक ढौआमे अदहा -छिदहा अपने नुका लेने रहैछ।किछु प्रवन्धनमे सँ सेहो कपैच हथिया लैत छैक।बहती गंगामे कियाक ने हाथ धुअल जाइ।नैतिकता पर प्रश्न ठाढ करबामे आरो बेशीखुलै सँ कथाकार चुकलाह अछि।धरि पाठ में ई आबि गेलैक अछि -" गामक सब किरदानी सब कियो आँखिये देखे रहल छी,विसबासू लोकक मुहेँ सुनैतो छी;पोखैर,धार आकि महासमुन्द्र मेँ जलोदीप दिश कियो खतरा देख कोना बढ़त,नै जाइ छैक।"मात्र कथाकार कथामे वृन्दावनके गोपीकेँ हंटै- दबारै बला द्वापर युगक दूर्वासा बाबा,त्रेता युगक हनुमानजी समुद्रकुदि लंकाक चरचित लैत पुन:आबि रामक संग लक्ष्मण सहित बानर भौलक सेना धरिक बीच ईमानपुर्वक सब कथा पर अंशत: व्याख्यान देवा सँ धार्मिक वातावरण बनेबामे समर्थ भेलाह अछि। ई सब अनर्थ:उपकथा सोन्हियेने छथि।आब अवस्था दुवारे कथाकार क' नव पोथी लिखबाक रफ्तार कमतर होयत जेबाक अशंका होइछ।जखनकि पाठक केँ हिनके लिखल आरो पोथी उपाय बेबाक बेगरता बुझाएत।एखन एतबे।

-लालदेव कामत, स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक, पूर्व मंत्री जिला उपाध्यक्ष - अति पिछड़ा मौर्चा भाजपा, झंझारपुर

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.९.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खेप-२१)

निर्मला कर्ण (१९६०-), शिक्षा - एम् ए, नैहर - खराजपुर,दरभङ्गा, सासुर - गोढ़ियारी (बलहा), वर्त्तमान निवास - राँची,झारखण्ड, झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभाग मे बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पद सँऽ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।

मूल हिन्दी- स्वर्गीय जितेन्द्र कुमार कर्ण, मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण

अग्नि शिखा (भाग- २१)

पूर्व कथा:

राजा पुरूरवा स्वर्गक अर्धासन के त्यागि,उर्वशी सँ विदाई लऽ कऽ पृथ्वीक लेल प्रस्थान कएल।

आब आगू:

"स्वामी, अहाँ राजा पुरूरवा केँ नाराज कय नीक नहि केलहुँ। एहि सँ स्वर्ग केँ कोनो लाभ नहि भऽ सकैत अछि।"

वैजयंत प्रासाद मे इन्द्रक कपार आ केश केँ आँगुर सँ सोहराबैत बजलीह हुनक अर्धांगिनी शची।

हम नीक वा बेजाय केलौं,अहाँ एहि बातक चिंता किएक कऽ रहल छी?

अहाँ एहि पर ध्यान नहि दिय। ई हमर काजक क्षेत्र अछि। हमरा स्वयं देखऽ पड़त - हमरा केकरा सँ कोना निपटारा करऽ के अछि । हमर काजक क्षेत्र मे आहाँ के हस्तक्षेप करबाक कोनो आवश्यकता नहि"।
"पत्नी के कर्तव्य छै ओ अपन पति के कुकर्म सऽ विमुख होयवाक लेल चेतावनी देथिन" - शची बहुत विनम्रता स बजलीह।
"ओ हमर शासन में सदिखन हस्तक्षेप करैत छलाह, जे हमर सहनशीलता सँऽ सीमा पार भऽ गेल छल। आब हम हुनका सहन नहि कऽ सकलहुँ" - इन्द्र तमसाइत बजलाह।
"स्वामी, अधलाह काज मे टोकब आ मना करब कोनो हस्तक्षेप नहि कहाईत अछि" - शची इन्द्र कैँ बुझाबय चाहैत छलीह।
"अहाँ ई सब नहि बुझब,ई सब राजनीति के बात छै। अहाँ बस भीतर अपन कर्तव्य के निर्वहन करु,हमर काज नहि देखू। जाउ हमरा लेल सोमरस पठाउ" - गप्प समाप्त करैत इन्द्र बजलाह।
"नीक बात छै,हम जाइत छी,मुदा अहाँक ई ईर्ष्यालु आ घमंडी व्यवहार हमरा एकदम सभ्य नहि लगैत अछि। देवताक प्रतिकूल राक्षस सनक व्यवहार अछि ई" - शची कोठली सँ कहैत आगू बढ़लीह।
"ओह शची,अहाँ हमर मोन कैँ दग्ध कऽ देलहुँ"। पत्नी शचीक नीतिपरक बात सँऽ इन्द्र के मुख पर क्रोधक भाव आबि गेलनि। ओहि क्रोध में कक्ष में ओ इम्हर ओम्हर चहलकदमी करैत बाजि उठलाह " अहाँ राजनीति नहि बुझब शची। एकरा राजनीति कहल जाइत छैक।आब हम जे किछु जेना चाहब से तहिना करब । पुरूरवा हमर आधा अधिकार ग्रहण कएने छल। ओकरा नामक जे डंका बाजैत छलैक, तेकरा नष्ट केनाई अत्यंत आवश्यक छल। देखु आहाँक पति कतेक बुद्धिमान छथि।ओकरा सँऽ सहायता सेहो लेलनि,आ दूधक माछी जकाँ स्वर्ग सँऽ सेहो भगा देलखिन। ई राजनीति थिक,आ हम थिकहुँ कुशल राजनीतिज्ञ । हमरा सऽ राजनीति के ज्ञान सबके प्राप्त करबाक चाही,राजनीति मे कूटनीति आवश्यक अछि ।

उर्वशी मणि खचित सोनाक पर्यंक पर कतेको दिन सँऽ विरह-व्यथा भोगि रहल छलीह,कानैत-कानैत हुनकर आँखि प्रातः कालीन आकाश जकाँ लाल भ' गेल छलनि,हुनका अपन देह केर बोध तक नहि छलनि।
हुनक सखी चित्रलेखा हुनका सान्त्वना देबाक बहुत प्रयास केलकनि,मुदा सब किछु व्यर्थ साबित भेल। कतेको अप्सरा उर्वशीक बीमारीक बात जानि हुनकर कोठली मे आबि गेलीह आ हुनकर बीमारीक कोनो कारण नहि जनैत वापस चलि गेलीह, सूचनाक अभाव मे हुनका लोकनिक लेल निदान संभव नहि छलनि।
चित्ररथ, विश्ववसु आदि गंधर्व सेहो दुखी छलाह।उपचार करवा में व्यस्त सखी रम्भा कतेको बेर उर्वशीक हृदयक स्थिति जानबाक प्रयास केलनि,मुदा ओहो किछु नहि बूझि सकलीह । मिश्रित औषधिक लेप आ पारिजात फूलक बिछान सेहो हुनक शरीर कैँ शीतलता प्रदान करबा मे असमर्थ छल।.
एहि डर सँऽ जे कतहु रहस्य नहि खुलि जाय,उर्वशी दू दिनक बाद उठि गेलीह,मुदा हुनका कोनो काज मे कोनो रुचि नहि छलनि। जहिया सँ पुरूरवा हुनकर आँखि सँ ओझल भऽ गेल छलाह,तहिया सँऽ ओ अपना के अत्यंत नि:सहाय शक्तिहीन अनुभव करऽ लागल छलीह। ओ ककरो अपन दर्द के विषय मे कहि तक नहि सकलीह। ओ अपन हृदय के पहिने कठोर कऽ स्वयं पीड़ा के अनुभूति सहन करवाक प्रयास करैत छलीह,आ सहन करवा में असमर्थ भेलापर हुनक चेतना विलुप्त भऽ जाइत छलनि। ई हालत कतेको दिन धरि चलैत रहल।अंत मे ओ अपन ह्रदय के दृढ़ कऽ निर्णय लेलनि। अपन प्रेम के संपूर्ण जानकारी दैत ओ अपन हृदय केर स्थिति चित्रलेखा आ रम्भा कैँ कहलनि। भविष्य के विषय में अपन संपूर्ण योजना हुनका दुनू के बतेला के बाद एकटा वचन लेलनि दुनू गोटेसँ " 'ई योजना ककरो सोझाँ प्रगट नहि होमय देबाक लेल। दुनू गोटे उर्वशीक मानसिक स्थिति,हुनक करुणा आ विरहक पीड़ाकैँ सेहो बूझि एहि बातक वचन देलखिन। ओ सभ हुनकर तड़प,विरहजन्य पीड़ा में हुनका तिल-तिल घुलैत,नहि देखि सकैत छलीह। कारण!"ओ सभ हुनक प्रिय मित्र (सखी)छलीह।आ एहि कारणेँ हुनका ई वचन देमऽ के कारण स्वर्ग सऽ छल करवाक अपराधी बनय पड़लनि। ओ सभ अपन प्रिय सखी के

तड़पैत नहि देखि सकैत छलीह,ताहि सऽ ई दोष सहर्ष स्वीकार केलनि।

उर्वशी केर लेखनी स्वर्ण पत्र पर तीव्र गति सऽ चलि रहल छल। ओ अपन लेखन के माध्यम सँऽ अपन दिल के स्थिति प्रेम-संदेश के रूप में स्वर्ण पत्र पर उझलि रहल छलीह। किछु घड़ी के प्रयासक बाद प्रेम पत्र तैयार भऽ गेल छल।
ओ अपन प्रिय सखी चित्रलेखा कैँ संकेत सँऽ अपना निकट बजौलथि। तदुपरांत को प्रेम पत्र हुनका देलनि,आ कहलखिन -
"प्रिय सखी चित्रलेखा!ई प्रेम पत्र लऽ कऽ आँहा गुप्त रूप सऽ पृथ्वी पर जाऊ ! पत्र गुप्त रूप सँऽ पृथ्वी पर राजा पुरूरवा कैँ दऽ कऽ ज तुरन्त घुरि आउ"।
चित्रलेखा सहमति मे मुड़ी डोला देलथि ।
"एतुका आँहा चिन्ता जूनि करू। हम ककरो सँ अहाँक अनुपस्थिति पर चर्चा नहि करब। जौं कोनो चर्चा होयत आँहा के संबंध में अथवा केओ आँहा के विषय में पूछत तऽ हम हम बात बदलि देब। देवेन्द्र कैँ तऽ सपनहुँ में ज्ञात नहि हेतनि जे अहाँ स्वर्ग सँऽ अनुपस्थित छी। ई काज हम स्वयं करितहुँ,मुदा हम कतेको दिन सँऽ राजप्रासाद नहि गेल छी। हमरा लेल इन्द्रक मोन मे संदेह अंकुरित नहि हेबाक चाही। तैँ आइ ओतय गेनाइ आवश्यक अछि।
चित्रलेखा आश्वस्त भऽ गेलीह आ भूलोक जेबाक लेल तैयार भऽ गेलीह। तिष्करीणी विद्याक कारणेँ ओ क्षणहि मे गायब भ' गेलीह,नहि जानि ओतय सँऽ चित्रलेखा कखनि विदा भ' गेल छलीह।

"आब अहाँ ठीक छी ने? अहाँ के की भेल छल ? " इन्द्र प्रसन्न मुद्रा में उर्वशी सँऽ पुछलखिन।
"देवराज,बेसी व्यस्तताक कारणेँ थकान सऽ हम अस्वस्थ भऽ गेल छलहुँ,

मुदा आब हम स्वस्थ छी" - उर्वशी बजलीह। तत्पश्चात इन्द्रक अनुमति सँऽ ओ अपन आसन पर जा कऽ अप्सरा सभक मध्य बैसि हँसैत गप्प करऽ लगलीह। एखनि हुनक मोन कनि हल्लुक छलनि कारण ओ अपन ह्रदय के व्यथा प्रेम-संदेश के रूप में सखी के माध्यम सऽ प्रियतम तक पहुंचा चुकल छलथि । तखन ओ भावना नुकाबऽ के सेहो आवश्यक छलैक,तेँ ओ नाटक कऽ रहल छलीह जे किछु नहि भेल छैक।
सिंहासन पर बैसल इन्द्र अपन काज में व्यस्त छलाह । किछु क्षणक बाद इन्द्रक सारथी मातलि प्रवेश कएल।ओ स्वर्गाधिपति के अभिवादन केलनि। इन्द्र अभिवादन के प्रत्युत्तर दऽ पुन: अपन कार्य में व्यस्त भऽ गेलाह। किछु काल धरि मातलि ठाढ़ भऽ प्रतीक्षा केलथि,तत्पश्चात देवराज के ध्यान अपना दिस आकर्षित करवा हेतु बजलाह -
"देवेन्द्र, अहाँक काज मे क्षणिक व्यवधान लेल हम क्षमा चाहैत छी। हमरा किछु महत्वपूर्ण सलाह करबाक छल अहाँक संग"।
"ओह! मातलि कहु की बात करवाक अछि "?
"देवेन्द्र, हम अहाँक आदेश सँऽ वायु देवक संग स्वर्गक निरीक्षण करय लेल गेल छलहुँ। वायु देव चित्रलेखा केँ अदृश्य रूप सँ स्वर्गक सीमा केँ अतिक्रमण करैत देखलथि । "वायु देव" जिनका सोझाँ तिष्करिणी विद्याक कोनो प्रभाव नहि छैक तत्काल ओ चित्रलेखा केँ अदृश्य रूप मे सेहो चीन्ह गेलथि । एक तऽ चित्रलेखा स्वर्गक सीमा के अतिक्रमण करैत छलथि,ताहि के अतिरिक्त हुनका हाथ मे एकटा गुप्त संदेश छलनि। वायु देव हमरा गुप्त संदेश जे स्वर्ण पत्र पर लिखल छल दऽ कऽ चित्रलेखाक संग अहाँ के देमय हेतु पठा देने छथि। ओ स्वयं एखनो ओतहि निरीक्षणक काज में व्यस्त छथि"।
इन्द्रक आँखि क्रोध सँ जरय लागल,चित्रलेखा केँ देव-सभा मे उपस्थित हेबाक आदेश देलनि आ मातलि सँऽ स्वर्ण पत्र लऽ कऽ पुनः वायु देवक संग रहबाक अनुमति दऽ हुनका विदा कऽ देलनि।

उर्वशी आब भय सँ काँपि रहल छलीह।क्षण भरि मे हुनकर आशा बुझि गेल छलनि।आगामी परिणाम देखि ओ त्रस्त भऽ गेलीह।इन्द्र चित्रलेखा आ उर्वशी कँ सभा कक्ष में सभासद के मध्य उपस्थित होयवाक हेतु आदेश केलथि। ओ स्वर्ण पत्र पर अंकित संदेश पढ़लाक बाद पूरा स्थिति बुझि गेलाह।ओ क्रोध सऽ आवेशित भऽ गेल छलाह। क्रोधावेश सँऽ कंपित अपन आवाज के एक सीमा तक नियंत्रित केलथि, मुदा हुनक मुख मंडल के भाव क्रोध के स्पष्ट कऽ रहल छलैक।उर्वशी हुनक भाव देखि त्रस्त भऽ गेल छलथि । इन्द्र अपन दृष्टि उर्वशी पर टिकौलथि । मुख मंडल पर ध्यान केंद्रित करैत बजलथि -
"हँऽऽऽ! तऽ अहाँ पुरूरवा सँऽ प्रेम करऽ लागल छी ! उर्वशी! एक अमर प्राणी के नश्वर प्राणी सऽ प्रेम करबाक चाही! ई हास्यास्पद बात अछि!की अहाँ ई बात नहि बुझैत छी! मुदा संभवत:प्रेम एहन तत्व अछि जे ई सब नहि देखैत अछि। ओ आन्हर होइत अछि !अहाँ के सेहो ई बीमारी भऽ गेल अछि। किएक! हमर ई बात ठीक अछि?हमरा अहाँ पर बहुत तामस अछि, कारण हमर अनुमति के बिना स्वर्ग सऽ बाहर संवाद भेजब बहुत पैघ अपराध अछि। ई दंडनीय अपराध होइत अछि।आ अहाँ स्वर्ग के नियम तोड़ि देलहुं।एक तऽ अहाँ नश्वर संसार के एकटा प्राणी सँग प्रेम केलौं! आ तखन अहाँ ओकरा संदेश सेहो पठा रहल छी? आ एहि लेल अहाँ स्वर्गलोकक अप्सराक प्रयोग केलहुँ?"
आब एकर पश्चात चित्रलेखा दिस घुमि गेलाह।
"आ अहाँ सेहो हमरा सँ अनुमति लेब वा हमरा एहि विषय मे सूचना देब उचित नहि बुझलहुँ? अहाँ दुनू गोटे अपराधी छी,एहि लेल अहाँ कँ दण्ड अवश्य भेटत। तेँ हम अहाँ दुनू गोटे कँ एहन दण्ड देबय चाहैत छी जे भविष्य में स्वर्ग के नियम के विरुद्ध केयो किछु काज करवा सऽ पहिले अपराधक दण्ड स्मरण कय नियम भंग करवाक प्रयास नहि कऽ सकैथ। नियम विरुद्ध प्रथम डेग उठबै सऽ पहिने एहि दण्ड के स्मरण कऽ साहस नष्ट भऽ जाए के चाही।आ एतय के नियम के विरुद्ध कोनो काज नै करबाक चाही। आहाँ के कठोरतम दण्ड देमय चाहैत छी मुदा--"
बुझायल जेना इन्द्र बहुत कठिनाई सँऽ अपन क्रोध पर काबू करबाक प्रयास कऽ रहल होथि। किछु काल रुकलाक बाद फेर बजलाह -

"उर्वशी,अहाँ कैँ महान नर-नारायण द्वारा बनाओल गेल अछि आ स्वर्ग कैँ उपहार मे देल गेल अछि,तहिया सऽ अहाँ विश्वसनीय रहलहुँ। प्रारंभ सऽ एखनि धरि अहाँ अपन संपूर्ण निष्ठा सँऽ स्वर्गक सेवा करैत एलहुँ । एतेक दिन सँ महान नर-नारायणक सम्मान आ अहाँक निष्ठापूर्वक सेवा देखि हम अहाँ कैँ स्वर्गक समय-सारणीक अनुसार पाँच वर्ष स्वर्ग सऽ निष्कासन के दण्ड दैत छी।अहाँ कैँ निष्कासित कयल गेल अछि स्वर्ग सऽ। चित्रलेखा!अहाँ जे अपराध केलहुँ ताहि लेल हम अहाँ कैँ एक मास धरि स्वर्ग सँ वंचित कऽ रहल छी |
"स्वर्गाधिप! अहाँ हमरा जे कठोर दण्ड देब से हम स्वीकार करब,मुदा हमर मित्र चित्रलेखा कैँ ओहि अपराधक दण्ड नहि दियौक जे ओ नहि केने छथि। हम दोषी छी,ओ सम्पूर्ण निर्दोष छथि"।
"ठीक छै,हम हुनका क्षमा क दैत छी,कियेक त ओ अहाँक कहब पर आ अहाँक प्रेम में नियम तोड़ि देलथि,ताहि लेल एकर स्थान में अहाँ के हुनकर दण्ड सहय पड़त।मुदा अहाँ लेल ई अवधि 5 साल के होयत।
उर्वशी चुपचाप ओहि दण्ड कैँ स्वीकार कयलनि।अप्सरा लोकनिक बीच फुसफुसाहटि भऽ रहल छल। सब - देव, किन्नर, गंधर्व, अप्सरा आदि कैँ उर्वशीक प्रेमक ज्ञान भऽ गेल छलनि।

क्रमशः

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१०.कुन्दन कर्ण- लघुकथा रीढ आ बीहनि कथा हॉट

कुन्दन कर्ण

लघुकथा रीढ आ बीहनि कथा हॉट
१
लघुकथा- रीढ़

कनॉट प्लेस में आगू चलैत एकटा चनैल (गंजा) व्यक्ति के हरिश्चन्द्र बाबू पाछू स' पजिया क' पकड़लखिन
"यओ जनार्दन बाबू, कहाँ गायब भय गेल छलहुँ अहाँ !!"
ओ चनैल आदमी देह झटकैत कहलकैन , "पागल हो क्या, कौन हो तुम ?"
तखन हरिश्चंद्र बाबू के अखियास भेलैन्ह जे कोनो अनजान आदमी के जनार्दन बाबू बुझि पकैड़नेने छलाह, ओहि अनभुआर आदमी सँ क्षमा माँगि आगू बढ़लाह।

जहियासँ दिल्ली के साहित्यकार सब हरिश्चंद्र बाबू के बाइर (प्रतिबंधित) देलकैन अछि तहियासँ ओ विक्षिप्त भय गेलाह अछि।

कोनो चनैल आदमी हुनका जनार्दन बाबू बुझाइ छथिन, त कोनो भुट्ट आदमी हुनका शिवचंद्र जी बुझाइत छथिन, साड़ीवाली महिला हुनका

कवियित्री कामिनी जी बुझाइत छथिन।

कोनो बियाह-दानक मंच हुनका कविगोष्ठी के मंच देखाइ पड़ैत छन्हि।

जखन मंच पर हुनका पाग डोपटा पहिरायल जाइत छलैन त हुनका नैसर्गिक सुख भेटैत छलनि।

एकदिन मंचसँ ओ सरकार के प्रशंसा में कविता पढ़ि देलखिन, मंचेपरसँ सब साहित्यकार हुनका दुरदुरा देलकैन्ह।

सब साहित्यकार के कहब छलै, साहित्यकार में सरकारक आलोचना करबाक साहस हेबाक चाही, हरिश्चंद्र बाबू सरकारी पुरस्कार लेबाक फ़िराक में सरकारक गुणगान केलाह अछि ताएँ हिनका सब साहित्यिक मंचसँ बारल जाय !!

हरिश्चंद्र बाबू हाथ जोड़ि सब मठाधीश लोकैन के सफाई देलखिन, हम सभदिनसँ अहि पार्टी के पक्षधर रहल छी , हम एकर विचारधारा आ निर्णयसँ सहमति रहैत छी ताएँ प्रशंसामे कविता पाठ कएलहुँ , जँ कोनो न्यूनता देखाइ पड़त त ओहो कहब।

मुदा सब मठाधीश एक स्वर में कहलखिन "साहित्यकार वएह जे सरकारक आलोचना करबाक बुत्ता राखय , अहाँक शरीरमे रीढ़क हड्डी नहि अछि!!"

तहियासँ हरिश्चंद्र बाबूके आब कोनो मंच पर नओत नहि भेटैत छन्हि।

सबदिन अपन कनिया के पाग डोपटाद' कहैत छथिन, हमर स्वागत करू। घ'र आयल पाहुन परख के गंजी उठाक' देखबैत छथिन, देखियौत' हमरा देहमें रीढ़ के हड्डी छै ??

२

बीहनि कथा- हॉट

गुणाकर बाबू बड़का ठड़की छलाह। गामक बेटी पुतोहु होउ कि ज'न-मजुरनी स'ब पर नज़रि गड़ौने रहैत छलाह। हुनके घ'र में काज लेल आयल फुलकी के असगर पाबि कान्ह पर हाथ राखि देलखिन।
"हाथ हटाउ नहि त थाना पुलिस देखा देब।" फुलकी बाजि उठल!

"थाना के काज पड़ैत छौक त तोहर टोलक लोक हमरा लग अबैत छौ आ तों हमरे थाना सिखबैत छएं ?"
"नबका कानून SC/ST के नाम सुनलियैक अछि कि नहि जे थाना वला रिपोर्ट लिखैसँ छीह कटतै तकरो नोकरी जेतै!"
गुणाकर बाबू के लगलैन जे कोनो धिप्पल चीज छुआ गेलैन अछि, तुरत फुलकी के कान्ह परसँ हाथ हटा लेलाह, आइ पहिल बेर हुनका "हॉट" के अर्थ बुझि में एलैन !
(स्वतंत्रताक अमृत महोत्सव पर विशेष)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.११.नन्द विलास राय-वैष्णवे छी

नन्द विलास राय
वैष्णवे छी

विनयजीक बेटाक बिआह छिऐन। आइ भोरमे चौकपर चाहक दोकानपर विनयजी भेँट भेला। कुशल-समाचारक बाद कहलैन-
“नन्द भायजी, बरियाती जाए पड़त। से तैयार रहब। कपड़ा-लत्ता धोइ कऽ ओइपर लोहा करबा लेब।“
आगाँ बजला-
“माछ खाइ छी किने आकि वैष्णव छी? “
हम कहलयैन-
“वैष्णवे बुझू।“
हमर बात सुनि विनयजी बजला- “बुझू..! बुझूक की मतलब? “
हम कहलयैन-
“यौ विनयजी, माछ तेतेक ने महग भऽ गेल हेन जे कीनले नहि होइए, तखन खाएब केतएसँ, तँए कहलौं वैष्णवे बुझू।“
विनयजी बजला-
“अच्छा तँ से बात छै।“
विनयजी हँसए लगला। मुदा अपना मुहसँ हँसी नहि निकैल सकल।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१२.जगदीश प्रसाद मण्डल- सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)

जगदीश प्रसाद मण्डल

सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)

'सुचिता' धारावाहिक रूपेँ छपब प्रारम्भ भेल 'मिथिला दर्शन'मे, जे पहिने प्रिंटमे छपब बन्द भेल आ मात्र पी.डी.एफ. मे ई-प्रकाशित हुअय लागल आ फेर सेहो बन्द भऽ गेल। आ तेँ 'सुचिता'क सेहो छपब/ ई-प्रकाशित हएब बन्द भऽ गेल। अही आलोकमे ई उपन्यास धारावाहिक रूपेँ ई-प्रकाशित कएल जा रहल अछि।- सम्पादक।

चारिम पड़ाव

तेसर साँझ। राधारमण अपन कोठरीमे बैस अपना जीवन दिस देखि रहल छला। आजुक जे क्रिया-कलाप रहल माने हिम्मतलाल ऐठामक जे सम्बन्ध रहल ओ जीवनक एक अभिनव अमूल्य उपलब्धि रहल। ऐ उपलब्धिकेँ केना जीवित रखैत प्रगाढ़ बनाएब, ई तँ अपने केने हएत। दुनियाँमे सात अरबसँ बेसी लोक अछि, सभ मनुखकेँ हाथ-पएर, मुँह-आँखिक संग बुधि, विचार-विवेक अछि मुदा सभ किछु एक रहितो एक-दोसरसँ अपरिचित केना अछि..?

राधारमणक मनमे विराट प्रश्न उठि कऽ ठाढ़ तँ भऽ गेलैन मुदा जवाब किछु भेटिये ने रहल छेलैन। तैबीच खेलैत-खेलैत सुचिता लगमे एलैन। सुचिताकेँ देखिते राधारमण बजला-
"बुच्ची, हिम्मत चाचा ऐठाम की सभ देखलहक?"
पतिक बोली अकानि सुवासिनी सेहो राधारमण लग पहुँच बजली-
"धोखा-धोखीमे चाह बनाएबे बिसैर गेलौं। भानसक बेर भऽ गेल। की चाह बना कऽ नेने आएब?"
चाहक इच्छा जेते राधारमणकेँ प्रभावित नहि केलकैन तइसँ बेसी प्रभावित केलकैन सुवासिनीक अपन भूलक कबूल। स्त्रीगणक बीच कोनो काज नहि करैक बहन्ना जे घर केने अछि, ओ सुवासिनीमे सेहो छेलैन्हे, मुदा सुवासिनीक अखनुक रूप तइसँ भिन्न बुझि पड़लैन। किए तँ कोनो काज नइ केलाक पछाइत जखन सुवासिनीकेँ राधारमण नइ करैक कारण पुछै छेलखिन तँ सुवासिनी अपन गलती कबूल नहि करैत बहन्नाक बीच बहन्ना ताधैर ठाढ़ करैत रहै छेली जाधैर खगल काज देखि राधारमण बिगैड़ कऽ नहि बजैथ। से आइ अपना मुहेँ अपन भूलक कबूल करैत सुवासिनीकेँ देखि राधारमणक मनमे प्रीतक एक नव रीति उदित भेलैन। बजला-
"ओना, हिम्मतलाल ऐठाम तेते खा नेने छेलौं आ तैपर सँ चाहो पीलौं से मन गदगरले अछि। अखन चाह पीबैक मन नइ होइए।"
हिम्मतलालक चर्च सुनिते सुवासिनी बजली-
"जहिना हिम्मतलालक सोभाव छै तहिना घरोवाली आ माइयोक छै। बाल-बच्चा तँ सहजे पशुधन जकाँ दूधमुहेँ अछि।"
ओना, सुवासिनीक बात सुनि राधारमणक मनक विचार गहराए लगलैन, मुदा तइ गहराइकेँ उत्थर बनबैत बजला-
"एकटा चीज गौर केलिऐ?"
सुवासिनी-
"की?"
राधारमण-
"अपना सभ जकाँ हजार चिन्तामे हिम्मतलालक परिवार नइ अछि।"
पतिक बात सुनि सुवासिनी ठमकली। मोन पड़लैन, जेतेकाल हम सभ दरबज्जापर छेलौं तेतेकाल हिम्मतलाल सबतूर अपना-अपनीकेँ आदर-

सत्कारमे लगल छल। आन कोनो काजक भूत सवार नइ छेलै...।
पत्नीकेँ ठकमकाएल देखि राधारमण पुन: बजला-
"हिम्मतलालक परिवार एकाकी अछि। अपन जेतेटा जीवन छै तइमे सभ तूर जुटल रहैए जइसँ ने बाहरी कोनो दबाव पड़ै छै आ ने अपन समटल जिनगीमे केतौ कोनो बाधा उपस्थित होइ छै। परिवारक सभ अपन-अपन जिम्माक काज बुझैए आ तइ हिसाबे अपनाकेँ लगौने रहैए।"
पतिक बात सुनि जहिना कपड़ामे लागल कोनो दागकेँ पानिमे लोक साफ करैए तहिना सुवासिनी सेहो मने-मन अपन विचारकेँ धुअ लगली। मुदा परिवारमे जे जीवन स्तर बनि जाइए ओहो तँ साधारण रोग नहियेँ छी जे लगले धुआ जाएत। ओना, मनुक्ख अद्भुत जीव छी। असीम शक्ति मनुखक भीतर छिपल अछि। जँ ओ अपन छिपल शक्तिकेँ जगा अपनाकेँ जागरितक प्रणपन करैत दृढ़ संकल्पक संग समर्पित भऽ जाए, तँ जीवनक कोनौं संकट असानीसँ अपने दूर भऽ सकैत अछि। मुदा से निर्भर करैए ओकर जीवनक दिशापर।
सुवासिनीक मन जेना विचारसँ भरि रहल छेलैन जइसँ रंग-रंगक विचारमे मन औनाए लगलैन। बजली-
"अखन भानसक बेर भऽ गेल अछि, जाए दिअ।"
व्यंग्यवाण छोड़ैत राधारमण बजला-
"हम कोनो कि अहाँकेँ पकड़ने छी। पकड़ैबलाकेँ चिन्हबे-देखबे ने करै छी आ जे नइ पकड़ने अछि तेकरा कहै छिऐ..!"
ओना, पतिक विचार सुवासिनी नीक जकाँ नहि बुझि पेली मुदा हिम्मतलाल-ऐठामक आदरपूर्ण बेवहार मनमे नाचिये रहल छेलैन। आह्लादित होइत बजली-
"सुर्जमे सात रंग अछि, सबहक चमक-दमक एक-दोसरसँ सटलो आ हटलो तँ अछिए।"
सुवासिनीक विचारक प्रवाहमे तेज गतिये प्रवाहित होइत राधारमण बजला-
"हँ, से तँ अछिए।"
सुवासिनीक विचारक धार दोसर दिस मोड़ा गेलैन। आगू बढ़िते सुवासिनी बजली- हमरो माए ओहिना अछि जहिना हिम्मतलालक माए अछि। पिताजीक एवजपर जहिना हमरा माएकेँ नोकरी भेल तहिना

हिम्मतलालकेँ सेहो भेल, मुदा दुनू परानीक लगन जे परिवारक प्रति अछि ओ अद्वितीय अछि। कहाँ अपन परिवार ओहन अछि..?

लगले सुवासिनीक नजैर आगू बढ़ि पतिपर आबि अँटैक गेलैन। अपन घरक काज माने पिताक एवजमे माइक नोकरीमे राधारमणकेँ विवाहसँ पूर्व ओहिना ने भेल हेतैन जेना हिम्मतलालकेँ भेल। हमहूँ कौलेजमे पढ़ै छेलौं, कहाँ किछु बुझि पेलौं। जहिना हिम्मतलालक मन पजेबाक घर बनबैपर छल, जइ हिसाबसँ रूपैआ भेटल छेलै, पिताक क्षतिपूर्तिसँ घरक अदहो काज नहि भेलै आ पाइ चल गेल खर्च-बर्चमे, तहिना तँ राधारमणकेँ सेहो भेल हेतैन, भऽ सकैए केतौ-केतौ नहियोँ भेल होइन। कोन तरहक सम्बन्ध दुनू गोरेक परिवारमे छल। कनी-मनी पिताजीक पढ़ौल छेलैन, से सम्बन्ध छेलैन, तहूमे राधारमण तँ अपन पढ़ैक फीस तँ दइते छल, जइ बदलामे पढ़लैन। आखिर कोन एहेन शक्तिक आकर्षण छल जे राधारमणकेँ एते आकर्षित केलकैन? समाजक जे परिवेश नारी जगतक प्रति बनि गेल अछि ओ दर्दनीय अछिए, मुदा निवरबाक जे दिशा अछि वएह भकुआएल-मन्हुआएल अछि जइसँ दर्द-पीड़ा घटैक जगह बढ़िये जाइए। समाजोक आ पितोक पढ़ल-लिखल बेटी तँ अपनो छी, अपनो परिवारक भार उठबैक दम अपनामे कहाँ अछि। कहियो मनमे उठल जे समाजमे विधवाक फँसरी अखनो किए जीवित अछि, जँ अपने भऽ जाए तँ समाजक अंग नहि कलंक बनि जीवित रहैक अछि। कहाँ अखन तक मनमे उठल जे अपन दुखक रातिसँ नमहर केना सुखक दिनकेँ बढ़ाबी माने श्रमहीनतासँ श्रमशीलता दिस केना बढ़ी..? एकाएक सिनेहासिक्त भऽ सुवासिनी लजहँसी हँसि बजली-

"की खाइक इच्छा होइए?"

गहिंराएल मन राधारमणक छेलैन, तँए सुवासिनीक विचारपर पलोभरि ले नहि एलैन। जेकरा बक-बकी बुझि राधारमण बजला-

"जोगीकेँ कुत्ता बलाए। अनेरे...।"

पतिक विचारकेँ महत्वहीन बनबैत सुवासिनी बजली-

"बीरबलक, अकबरक दरबारसँ पहिलुका जीवन की अछि?"

जान छोड़बैक परियास करैत राधारमण बजला-

"खा-पीकऽ जखन निचेन हएब तखन जेते मन हुअए से सभटा जीवन अकबर-बीरवलक सुना देब।"

पत्नीक बरहबटिया गीत सुनि राधारमणक मन अकैछ गेलैन। मनमे उठलैन कुत्ता भागे तँ भागे नहि तँ अपने भागि। पेशाबक बहन्ना बनबैत राधारमण पेशाब-घर दिस बढ़ि गेला। पेशाब करैमे तेना देरी लगा देलैन जे सुवासिनीकेँ बुझि पड़लैन जे भरिसक पैखाना चल गेला। ओना, देरी लगौने पैछला विचार सेहो राधारमणक अगुआइत आगू आबि गेलैन। सीतोनाथ आ गीतोनाथसँ आइ गप-सप्प करबे करब।

सुवासिनी आ राधारमणक बीच गप-सप्पक शुरूआत होइते सुचिता असगरे खेलाइले भनसा घर दिस बढ़ि गेल। जे सुवासिनीकेँ पहुँचते (भनसाघर) सुचिताकेँ पिताक पुछल बात माने "हिम्मत चाचा ऐठाम की सभ देखलक" मोन पड़लै। मोन पड़िते सुचिता निछोहे दौड़ैत कोठरीमे, जइ कोठरीमे राधारमण छला, पहुँच बाजल-

"बाबूजी, हिम्मतलाल चाचा ऐठाम फेर जाएब। रेखासँ हमरा बहिना लगि गेल।"

दू-अढ़ाइ बर्खक बेटीक बात सुनि राधारमणक मन ओहिना लड़गुजा गेलैन जेना कठोर-सँ-कठोर पातबला वृक्षक मुड़ी परक पात लड़-गुजाएल रहैए। जइसँ मनमे उपकलैन जे सुचिताकेँ आरो किए ने नव जीवनक प्रभात वेलामे बहलाबी। किए तँ चेतन हुअ कि बूढ़, चेतनावस्था वा वृद्धावस्थामे सीखल बहुत बात लोक बिसैर जाइ छैथ मुदा जन्मक पछाइत माने जीवनक शुरू होइक अवस्थामे जे "अ-आ" सीखलैन से कि मृत्युसँ पहिने कियो बिसरै छैथ, भलेँ किछु गोरे एहनो तँ होइते छैथ जिनका मुइला पछातिक जे स्वर्ग-नर्कक लोक अछि तइमे ठीकेदारक अनुशंसापर जँ कहीं मास्टरी भेलैन तँ ऐ लोकसँ ओइ लोक तक सेहो नहियेँ बिसरै छैथ। सुचिताक मनकेँ बहलबैत राधारमण बजला-

"रेखासँ जखन बहिना लागि गेल तखन तँ बहिनाबला गीतो सीखने हएब?"

"बहिनाबला गीत" सुनि सुचिताक मनमे एकटा नव शब्दक जागरण भेल। जागरण होइते सुचिताक मन लपैक कऽ ओइ शब्दकेँ पकैड़ बाजल-

"बाबूजी, बहिनेकेँ ने बहिना कहैए?"

सुचिताक मन बहलबैत-बहलबैत राधारमण अपने बहलाए लगला। बहलाइत राधारमण सुचिताकेँ कहलखिन-

"बुच्ची, मम्मी तँ कहनहि हेथुन किने, सएह हमहूँ कहै छिअ।"
मम्मीक बात सुनि सी.बी.आई. जकाँ सुचिता पिताक बात सुनि चोटे मम्मी लग माने सुवासिनी लग पहुँच बाजल-
"मम्मी, बहिना केकरा कहैए?"
बेवहारमे जे चलैन अछि तइ अनुकूल सुवासिनी सुचिताकेँ कहलखिन-
"बुच्ची, जहिना बालकमे दोस्ती होइए तहिना बालिकामे बहिना होइए।"
अपन विचारकेँ सत्यापित करैक खियालसँ पिता लग आबि सुचिता बाजल-
"बाबूजी, बालक-बालिका की भेल?"
ओना, राधारमणक मन बहिन-बहिनासँ उठैत भवजुआरमे अनेको शब्दकेँ पकैड़ विचार करए लगलैन जे ”बहीन” की भेल? ”भाए” की भेल? ”भैयारी” की भेल? ”दोस्ती” की भेल? ”भजार” की भेल आ ”भजारी” की भेल? ”मीत” की भेल? आ ”मित्रपण” की भेल? ”संगी” की भेल आ ”संगपन” की भेल? मुदा तइ बिच्चेमे पुन: बाल-बोधक प्रश्न ”बालक” की भेल आ ”बालिका” की भेल? राधारमणक मनमे आबि गेलैन। बजला-
"बुच्ची, अखन बच्चा छह, अखन अ-ओ-आ ने सीखलह हेन, तइमे बालक-बालिकाक लिंग-भेद व्याकरणक बात केना बुझबहक। हिम्मतलाल चाचा ऐठाम जे बहिना भेटलह उ की सभ कहलकह?"
माइक मुँहक सुनल बालक-बालिका शब्द मनसँ तत्काल क्षीण भऽ गेलै आ बहिनाक विचार मनमे प्रवल भऽ गेलइ। पल्लवित होइत सुचिता बाजल- "बाबूजी! बहिना कहलक अहिना आएल-जाएल करब।"
अपन गोटी फेकैत राधारमण बजला- "बुच्ची, आएब-जाएब की भेल?"
जहिना राधारमण गोटी फेकलैन तहिना सुतरबो केलैन। सुतरलैन ई जे राधारमणक मनमे गड़ि चुकल छैन जे आइ ओ सीतोनाथ आ गीतोनाथसँ गप-सप्प करबे करता मुदा समय तेना राँइ-बाँइ भऽ छिड़िया रहल छैन जे अपन काज गरपर चढ़िये ने रहल छेलैन। से चढ़लैन, चढ़लैन ई जे सुचिता आएब-जाएबक माने बुझैले माए लग बढ़ल। सुचिताकेँ आगू बढ़िते पाछूसँ राधारमण बजला-
"बुच्ची, भानसो देखि लेब। सबेरे सुतैक इच्छा अछि।"
”सबेरे सुतैक इच्छा अछि” भनसाधरसँ सुवासिनी सेहो सुनली। सुनिते

एकाएक मनमे झड़क उठलैन। झड़क उठैक कारण भेलैन जे अपने मुहेँ माने पति, बजल छला जे खेला-पीला पछाइत अकबरोक आ दाराशिकोहोक कथाक वृतान्त सुनाएब। से खाइयोसँ पहिने सुतैयेक विचार कऽ रहला अछि। ओना, सुतबाक नामपर राधारमण ओहन चिन्तनक गहराइमे जाए चाहै छला जैठामक अवस्था नीनभेर सुतल मनुख जकाँ होइत अछि, जइमे दुनियाँक सभ किछु हेरा जाइए आ बँचि जाइए स्वप्न स्वरूप चेतन।

झड़कसँ झड़कैत सुवासिनीक मनमे उठलैन जे जहिना खाइसँ पहिने, पति सुतैक ओरियान करए चाहि रहला अछि तहिना ने अपनो चाह अछि। तेँ किए ने तेहेन चाह पीआ दिऐन जे सुतले-सुतल सुतब मरि जेतैन। माने भानसेमे तेते देरी कऽ देब जे नियारल नीन अपने सुखा कऽ सुखि जेतैन। मुदा लगले जेना विवेक जगलैन, विवेक जगिते सुवासिनीक मनमे उठलैन जे भानसमे देरी करब नारीक नारीपनक कमजोरी भेल, जइ कमजोरीसँ लोक ई निर्णय नहि कऽ पबै छैथ जे समाजमे किनका मुहेँ केहेन कान कानल जाए। मुदा से तँ होइत अछि नहि, सभ तरहक मृत्युकेँ एक मानि एक्के कान सबहक मुइला पछाइत कानल जाइए वा शोक प्रकट कएल जाइए। जइसँ विवेक धोखामे पड़िये जाइए। विवेकक धोखा तँ तखन ने निधोख हएत जखन गाम-समाजक लोकक नीक जकाँ चीन-पहचीन हएत। नीक जकाँ चीन-पहचीनक माने भेल जे हर मनुक्खक चित्रांकनक चरित्रांकन नीक जकाँ भऽ जाए। जखन मनुखक चरित्रांकन भऽ जाएत तखने ने आँकि सकब जे चोरक घर चोइर भेल आकि इमानदारक घर। आकि चोइर केनिहारक गलती एक्के रंग भेल। मुदा दुनूक दूरी तँ सोझे-सोझी बनल अछि। जँ कियो चोर अछि ओ कहियो केकरो घरमे चोइर केने रहल आ कियो इमानदार अछि जे चोइर करबकेँ कोन बात जे चोरीक नामपर थूक फेकैए, ओहन लोकक घरमे जँ चोइर होइए तँ हमरा केतए केहेन वेदना हएत जइसँ अपन संवेदना व्यक्त करब।

विचारमे ओझराएल सुवासिनीक मनमे उठलैन जे जखन दुइये परानीक बीचक बात अछि तखन अनेरे किए ऐ खिड़की देने आकि ओइ खिड़की देने मुड़ियारी देब जे सुतल छैथ कि सुतैक क्रममे छैथ कि बाल-बोधकेँ अपना लग अबैसँ टाट लगबै छैथ आकि मनमे की छैन से पुछिये किए ने

लेबैन। यएह सोचि सुवासिनी पतिक कोठरीमे पहुँचली।

कोठरीमे सुवासिनीकेँ देखिते राधारमणक मनमे उठलैन जे भेल फेर पाकल जौ मे पाथर खसत। ठीके लोक कहै छै जे खगल घरमे बेसी खगलेक बास होइ छै। जेकरा हाथमे पाइ नहि रहै छै तेकर हाथ तरहत्थीसँ ससैर आँगुरमे जोड़ा जाइ छै जइसँ सैयोक कोन बात जे हजारो भूर फुटिते अछि आ फुटलो तँ अछिए। राधारमणक मन असथिर होइते रहैन कि पत्नीकेँ कोठरीमे देख, दुनू हाथ जोड़ि बजला-
"किम्हर-किम्हर, श्रीमतीजीक आगमन भेलैन अछि?"
अखन तक माने हिम्मतलाल ऐठाम जाइसँ पूर्व तक जे सुवासिनीक सुभाव छेलैन जे जहिना आन-आन स्त्रीगणकेँ ठोरेपर बरी पकैए तहिना पकै छेलैन मुदा आब तइमे कमी एलैन। नव विचारक दौड़मे एतेक चेतन क्रिया प्रवल भइये गेल छेलैन जे किए ने जखन दुनू परानियेँक बीचक कोनो समस्या छी तँ ओकरा दुनू गोरे मिलि समाधान कऽ ली। तइ ले मुँह फुलबैक कोन खगता छै। किए ने दुनू परानी पौरुकी जकाँ मेद-मेदीनक लोलक-बोलमे एकरूपता आनि ली। अचताइत-पछाइत सुवासिनीक मन थीर भेलैन। थीर होइते बजली- "मनमे केहन थकान बुझि पड़ैए जे खाइसँ पहिने सुतैक विचार कए रहल छी?"
अपन पेटक विचारकेँ छिपबैत राधारमण विचारमे विचार जोड़ैत बजला-
"दिनेसँ मन भरियाएल जकाँ बुझि पड़ैए तँए सोचै छी जे भरियाएल मनकेँ आराम देब बेसी नीक हएत।"
पतिक बात सुनि सुवासिनीकेँ सेहो गर सुतरलैन। गर सुतैरते बजली-
"जखन दिनेसँ मन भरियाएल छल तखन एते दौड़-बड़हाक कोन खगता, दोसरे-तेसरे दिन हिम्मतलाल ऐठाम जइतौं।"
जहिना कठघरामे झुट्ठा फँसि जाइए तखन जहिना ओकर गति होइ छै तहिना राधारमणोकेँ भेलैन। मुदा पानिक गैंची माछ जकाँ, जेकरा आन माछसँ जीबैक बेसी लूरि छै, पानिसँ थालमे घोंसियाइत राधारमण बजला-
"जखन हिम्मतलाल ऐठाम जेबाक मन बना लेलौं तखन नइ जाएब नीक होएत?"
बदलल जीवनक पद्धतिसँ सुवासिनीक विचार पद्धति सेहो बदलए लगल

छेलैन जइ कारणेँ मुहसँ फुटलैन-
"जहिना हिम्मतलाल ऐठाम जेबाक मन बनल तहिना ने दोसरो-ले मन बनबए पड़त।"
जइ विचारपर सँ राधारमणक मन हटि चुकल छेलैन सएह बात सुवासिनी रखि देलखिन जइसँ राधारमण समुचित ढंगसँ विचार नहि कऽ सकला, तँए बजा गेलैन-
"उचिते ने बनाएब।"
मोन पाड़ि सुवासिनी बजली-
"हमरो ने कहने छेलौं जे खेला-पीला पछाइत ओछाइनपर बीरबलो-अकबर आ अकबरो-दाराशिकोहक कथा वृतान्त कहब।"
अपनाकेँ फँसैत देखि राधारमण गौंची माछक गैंचिआह चालि पकैड़ बजला-
"अहाँ कि बुझै छिऐ जे हम बिसैर गेलौं। मुदा ई तँ दुनू गोरेक बीचक छी, जखन दुनू गोरे निचेन हएब तखन ठठैत-हँसैत कहैत-सुनैत रहब। तइ ले एते धड़फड़ी कोन अछि। एतबो ने बुझै छिऐ जे इतिहासक बात छी केना बीरबल कुत्तेकेँ सवारी बना जारैन उघै छल आ वएह कुत्ता अखन एन.एच.पर गाड़ी-सवारीक तर पड़ि मरैए। तँए एकबेर किताब उनटा देखि लेब तखन जे कहब-सुनब हएत से आ अखन जे धड़फड़ाएलमे किछु कहि देब से, अहीं कहू जे एक्केरंग हएत?"
पतिक विचारमे सुवासिनी तेना बोहिया गेली जे बजैक होशे ने रहलैन। बेहोशेमे बजली-
"हँ, से एक रंग केना हएत।"
नहलापर दहला फेकैत राधारमण बजला-
"कोन रंग-केहेन होइए से धड़फड़ेने बुझबै। अहींकेँ एते औगताइ किए अछि। आइये कि कोनो मरि जाएब। जखन जीबैक अछि तँ निचेनसँ किए ने जीब। जाउ, अहूँ भानस करू आ हमहूँ कनी देह-हाथ मोड़ि लइ छी।"

बदलल सोभाव सुवासिनीक, तँए मनमे विचार जगि गेलैन, किछु छैथ तँ पति छैथ, ओ केना झूठ बजता। घरमे जँ हमहीं हजार बेर बाजी जे ई काज नहि भेल, अहाँ झुट्ठे बजलौं, तखन दुनियाँ की कहतैन। अपनो

बुधिक मशीन ओते भङ्गठले अछि जे पतिकेँ तँ पति मानै छिऐन मुदा हुनका जीवनकेँ पनिपतसँ बेसी नहि बुझै छिऐन। विचार मगन भऽ सुवासिनी बिना किछु बजने राधारमण लगसँ निकैल गेली। नमहर साँस छोड़ैत राधारमण गुण-गुणा कऽ बजला-

"जान छुटल।"

भीतरक हवा निकैलते राधारमणक मनमे उठलैन। सीतेनाथ आकि गीतेनाथसँ सम्पर्क कऽ किए ने ओकरे समयानुसार समय बनाबी। काजक समय अनुकूले बनलासँ ने काज नीक जकाँ होइए। जैठाम सम्बन्ध गढ़ैक प्रश्न अछि तैठाम तँ ई बुझए पड़त जे मनुखकेँ माल-जाल जकाँ छान-बान्ह नइ लगैए मुदा वौधिक भेने बुइधिक छान-बान्ह नहि लगैए सेहो बात नहियेँ अछि। ओकरा छाने-बान्हटा नहि जाल-महजाल सेहो कहि सकै छिऐ।

राधारमण सीतानाथकेँ फोनसँ सम्पर्क कए बजला-

"बौआ सीतानाथ..?"

सीतानाथ बाजल-

"हँ भैया, राधारमण।"

सीतानाथक मुँहक ”भैया” सुनि राधारमणक शरीर पसीज गेलैन। भाय दोस्तियारेमे दुनू गोरे बरबरि भेलौं, तँए दुनू एक्केरंग बुधियार भेलौं। मुदा ”बौआ” आ ”भैया” तँ से नहि छी। राधारमण बजला-

"बौआ, की कहबह! जहियासँ ऐठाम एलौं तहियासँ बुझह जे मरैयोक छुट्टी नहि भेटल। मुदा काल्हि तक सभ सम्हारैत आइ निचेन भेलौं। नीक हएत जे आगूक गप करैसँ पहिने गीतोनाथकेँ बजा, चाहे ओहीठाम जा तीनू गोरे संगे गप करितह।"

सीतानाथ बाजल-

"तइमे कनी देरी हएत।"

अपन निसचिन्ती देखबैत राधारमण बजला-

"बौआ, तोरे समये हमरो समय भेल। तोहीं कहह जे कखन गप-सप्प हएत?"

सीतानाथ बाजल-

"भैया, घड़ी दिस सेहो देखै छिऐ, अहाँ शहर-बजारमे रहै छी तँए अबेर कऽ खाइ छी, हमसभ गमैया लोक नअ बजेसँ पहिने खा लइ छी। खाइते

काल पौने नअ बजेबला समाचारो सुनै छी।"
सीतानाथक मुँहक सुनल व्यस्तता माने खेबो करै छी आ रेडियोसँ समाचारो सुनै छी, सुनि राधारमण मने-मन मुस्कुरेला। मुदा बाल-बोधक बोल बुझि बजला-
"बौआ, जहियासँ गामसँ निकललौं तहियासँ बुझह जे निचेने-निचेन रहै छी। बीचमे काज बढ़ि गेने थोड़े व्यस्तता बढ़ल मुदा आब असथिर भऽ गेलौं। तँए जखुनका समय बनेबह हम तैयार छिअ।"
सीतानाथ बाजल-
"अखन हम सभ खाइ-पीबै छी, पछाइत अहाँ सभ, माने समय भेने खाएब-पीअब, तँए तेकर पछातिक समय भेल जखन सुतैक ओछाइनपर रहब।"
सीतानाथ मुँहक ”सुतैक ओछाइनपर रहब, संयोगसँ सुवासिनी सेहो सुनि गेली, किए तँ तइकाल भानसक कोठरीसँ निकैल ओसारपर आएल छेली। ”सुतैक ओछाइन” सुनि सुवासिनीक मनमे अनेको प्रश्न एक संग उठि गेलैन। उठबो केना ने करितैन, चरित्रोक तँ अपन घाट-बाट छै। एकचलिया लेल जहिना सुगम घाट अछि तहिना बहुचलिया ले दुर्गम घाट सेहो बनियेँ जाइए। किए तँ बहुचलिया लोक हुअ आकि बहुचलिया विचार, जखने बहुचलिया हएत तखने चौक-चौराहा बेसी भेने बाटो-घाट दुर्गम भइये जाइए। सुवासिनीक चरित्रक विचारानुसार जे परिवर्तित भऽ रहल छेलैन तइसँ अनेको विचार मनमे उठि गेलैन। ओना, अपनो विचार माने पतिक संग निचेनसँ गप करब छेलैन, मुदा केकरोसँ सुतबकालक समय बना रहला अछि ओ केहेन जिज्ञासु छैथ जे सुतब छोड़ि विचार-विमर्श करए चाहि रहला अछि। विचारक जिज्ञासा तेते उत्कण्ठा सुवासिनीकेँ बढ़ा देलकैन जे अपन भनसा घर बिसैर पतिक कोठरीमे पहुँच बजली-
"किनकासँ सुतली रातिक समय बनेलिऐन अछि?"
पत्नीक विचारकेँ जहिना बकरी चरौनिहार बेदरा साँझू पहरकेँ बकरीकेँ बहटारि घरपर आनैए तहिना राधारमण पत्नीकेँ बहटारैत बजला-
"की कहब, गाम-घर मोन पड़ि गेल तँए गौंआँ-घरूआसँ किछु गप-सप्प करए चाहलौं, सएह सुतली रातिक समय बनेलौं हेन?"
पतिक विचारक प्रवाहमे सुवासिनी भँसिया गेली। भँसियाइत बजली-

"हमर गाम-घर तँ उपैटिये गेल..!"
पत्नीक विचार सुनि राधारमणकेँ हँसी लगि गेलैन जइसँ तेना हँसा गेलैन जे हँसिते बजला-
"गाम-घर उपैट गेल आकि अपने उपैट गेलौं, से कहाँ कहलिऐ?"
निरुत्तर होइत सुवासिनी, पतिक विचार बुझैले केवाड़क पट्टा लग आबि ठाढ़ भऽ अकानए लगली।
राधारमण बजला-
"जहिना सभ महिला सासुर बसला पछाइत अपन माता-पिताक गाम-घर बिसैर जाइ छैथ तहिना अहूँ बिसैर जाउ। आजुक परिवेशमे नव परिस्थिति सेहो बनल अछि, जइसँ सम्बन्धक एक नव सूत्र सेहो पनपल अछि। जँ तइ सूत्रकेँ पकैड़ पुन: बसबए चाहब तँ किए उपटल रहत।"
पतिक विचारमे, जहिना निआसमे आस झँपाएल रहैए मुदा समयक गति ओकरा चेतबैत पकड़ा दइए तहिना सुवासिनीकेँ सेहो भेलैन मुदा पकड़ाएत केना से बुझिमे एबे ने केलैन। जइसँ मारि खाएल साँप जकाँ सुवासिनीक मन तँ उनटए-पुनटए लगलैन मुदा निरुत्तर भेने असथिर होइत चुपे रहली। राधारमण बजला-
"एकठाम बैसने-उठने, गप-सप्प भेने आ जिनगीक गतिक चर्च-बर्च केने लोकक मनमे लोक बसैए आ नइ भेने उपटैए।"
अपना जनैत राधारमण सभ बात बाजि गेला मुदा सुवासिनीक उदिग्न मनमे नीक जकाँ बैसबे ने केलैन। बजली-
"से केना हएत?"
तैबीच अपन समय राधारमणक मनमे नाचि उठलैन। नाचि ई उठलैन जे सीतानाथ कहलक अखन हम सभ खाइ-पीबै छी पछाइत अहाँ सभ खाएब, तेकर पछाइत ने ओछाइनपर जाएब। हमरा नइ कोनो काज अछि तँए गप-सप्प करैक इच्छा अछि, मुदा सीतानाथक कान तँ ठाढ़े हएत किने। गीतानाथसँ सम्पर्क केने हएत, तैबीच ईहो सोचैत हएत जे साढ़े नअ बजे, ओ सभ माने हम सभ खाएब, तेकर माने भेल जे दस बजे ओछाइनपर जाएबक समय भेल, तँए दस बजे ओछाइनपर पहुँच जाएब अछि। ईहो तँ उचित नहियेँ हएत जे दुनू गोरे-सीतानाथ आ गीतानाथ तैयार भऽ ”हेलो-हेलो” करए आ अपने खाएकेपर बैसल रही...।
राधारमणक मनमे अपन क्रियमान विचार जगलैन। जगिते विचार उठलैन

जे जहिना अपने खाएब टा बीचमे अछि तहिना हुनको माने पत्नियोकेँ भानस करब सेहो तइ बिच्चेमे छैन। तैबीच जँ गप-सप्प करी से बुड़िबकी हएत। गप-सप्पकेँ समटैत राधारमण बजला-

"केना हएत से कोनो हेराएल अछि जे अहाँ देखबे ने करै छी। मोबाइल अछिए, जेते सखी-बहीनपा छैथ तिनको आ अपनो परिवारक सभकेँ हकार दऽ दियौन जे जगरनाथ बाबासँ थोड़बे हटल, बिच्चे रस्तापर हम छी, किछु दिनक पछाइत ”रथ यात्रा” माने जगरनाथ बाबाक रथयात्रा चलत, ओही देखए सभ कियो अबै जाइ जाउ। ऐठाम औती, सम्बन्धक एकटा नवसूत्र पनपत। काल्हि दिन जँ बैजनाथ बाबा ऐठाम जेबाक प्रोग्राम बनत, तँ इम्हरसँ अपना सभ चलब, ओम्हरसँ माने गामसँ ओ सभ औती, अपनो पुजेगरीक माने पण्डाक धरमशाला छैन्हे, सभ कियो एकठाम रहबो करब आ गपो-सप्प करब।"

दस बाजिकऽ पाँच मिनटपर सीतानाथक मोबाइलसँ घन्टी राधारमणक मोबाइलमे भेलैन, उठबैत राधारमण बजला-

"बौआ, सीतानाथ, दुनू भाँइ छह किने?"

ओना, जखने राधारमण फोन रिसिभ केलैन कि दुनू गोरे माने सीतोनाथ आ गीतोनाथ एक्केबेर बाजल-

"गोड़ लगी छी भाय। आब तँ अपने ओहन भाय भऽ गेलिऐ जे अपनेक जँ बरदहस्त रहत तँ हम सभ निर्भये नहि अभय सेहो भऽ सकै छी।"

अपन-अपन बात सभ बजला मुदा सुननिहार किनको कियो ने। झोहैर शान्त होइते राधारमण बजला-

"गौंआँ तँ तीनू गोरे छी, तहूमे भैयारीक सम्बन्ध सेहो अछिए, गामक किछु दशा किए ने भऽ गेल होइ, मुदा जन्मक धरती तँ वएह छी, तइ ले..?"

”तइ ले” तक अबैत-अबैत राधारमणक बाक् हरण भऽ गेलैन।

गीतानाथ कौलेजमे पढ़ैत नवयुवक, तँए मनमे उत्साह जगले रहइ। तहूमे मिथिलासँ लऽ कऽ बंगालक रवीन्द्र बाबू तकक मातृभूमिक गीत सुनि आरो बेसी प्रभावित जन्मभूमिसँ रहबे करए। बाजल-

"भाय साहैब, अपने बहुत आगूक रस्ता देखि चुकल छिऐ तँए सुझेबै तँ अहीं ने।"

गीतानाथक मनमे कोनो तेहेन विचार नहि छल जे कोनो तरहक बाधा उपस्थित करैत मुदा अपनासँ आगू बढ़ल लोकक विचारमे आगू बढ़ैक

प्रेरणा छिपल रहैए, मुदा उसकबैक जे जिज्ञासा अछि ओ सजग होइत जगैबते अछि। राधारमण, अपना ऊपर आएल भारकेँ टुकड़ी-टुकड़ी करैत माने खण्ड-खण्ड करैत बजला-

"बौआ, अपन जे परिवार अछि से केकरोसँ छिपल अछि। अपने ग्लानिसँ गलल जाइ छी। अपना कि लाज नइ होइए जे जइ परिवारमे हमरा सन मेहनती अछि तइ परिवारक भैयारीक की गति अछि..!"

ओना, अधा-छिधा गीतानाथ राधारमणक विचार बुझबो केलक। मुदा केकरो (आनक) परिवारक कोनो विचारमे लगले हस्तक्षेप करबकेँ उचित नहि बुझि बाजल-

"भाय साहैब, अहाँ कोन हिसाबे बजै छी आ हम कोन हिसाबे बुझै छी से लगले केना..?"

गीतानाथक विचारकेँ राधारमणक मन मानि लेलकैन जे गीतानाथ बिल्कुल सत्य बात बाजल अछि। कोनो परिवार तीन रूपेँ ठाढ़ होइए। पहिल होइए जे पाछूसँ अबैत धारामे धड़ जोड़ि आरो तेज गतिये प्रवाहित करैए। दोसर भेल जे जही गतिये प्रवाहित होइत आबि रहल अछि ओही गतिकेँ पकैड़ आगूमुहेँ बढ़ब आ तेसर भेल जे धाराक बिल्कुल विपरीत दिशामे बढ़ैत जाएब। अपन तँ तेहने धारा परिवारक बनि गेल अछि। बाबाक अमलदारीमे परिवार श्रमशील छल, जेकर फलाफल परिवार सुभ्यस्त भेल मुदा पिताजीक अमलदारीमे एतेक ह्रास भेल अछि जइसँ आगूक पीढ़ी बिल्कुल निकम्मा-जाहिल बनि गेल अछि। अपन सोच, समझ अछि तँए ऐ बातकेँ बुझि पेब रहल छी। मुदा गीतानाथ तँ अखन बच्चा अछि, बच्चाक माने जन्मक आयुसँ नहि, अध्ययन-मननक विचारसँ, तँए नीक हएत जे ओकरे विचारमे किए ने गतिशीलतो आ भविस-रूपोक दृश्य देखबैत चली। अपने मन मानि जेतै जे की नीक की अधला अछि। एते विचार मनमे अबैत-अबैत रधारमणक विचार मोड़ लेलकैन। मोड़ ई लेलकैन जे अपन परिवारक समस्या अपन भेल, ओइ परिवारक कर्ता पुरुष अपने भेलौं। परिवारमे जे दुर्गुण प्रवेश कऽ चुकल अछि ओकरा नीक बनाएब माने सुधारब अपन दायित्व भेल। जँ अनका लग बाजब आ परिवारक लोक बुझता तँ कहबे करता जे एहने बेटा वंश उजाड़न होइए। तैसंग आन जे आनक किछु कहौ चाहता तँ अपनो परिवार सहए छैन, तैबीच अनेरे सबहक बीच रक्का-टोकी ठाढ़ हएत

मुदा ओइसँ लाभ थोड़े हएत। रक्का-टोकी विवाद बढ़बैए जखन कि सोच-विचार प्रेमक समाज गढ़ैए। अपन पूर्ण पाशा बदलैत राधारमण बजला-

"बौआ, तोंहू दुनू गोरे समाजमे किछु करए चाहै छह आ अपनो मनमे जिज्ञासा छल, मुदा अपने तँ अपन गामसँ हजारो किलोमीटर दूरपर छी। जैठाम धरती अपन अधिकार मंगैए तैठाम एते दूर हटि केना किछु कऽ सकै छी।"

जहिना सीतानाथक तहिना गीतानाथक मन गदगरले छल जे राधारमण सन आइ.ए.एस. जँ पीठपर रहता तँ कतौ कोनो भय नहि अछि। दुनूक मनकेँ कोट-कचहरीक विचार माने सरकारी सहायता समाएल छेलैन। मुदा राधारमण समाजकेँ खूब नीक जकाँ तँ नहि, मुदा नीक जकाँ जरूर बुझि रहल छैथ जे समाज की छी आ केतए बोहियाल अछि। ओइ बोहिपनकेँ सुधारि धड़पन बनबैक अछि...। तैबीच दुनू बाल-बोध, माने सीतोनाथ आ गीतोनाथ अछि, तँए अपन पूर्व संस्कारकेँ जगबैत सम्मिलित रूपेँ बाजल-

"भाय साहैब, अपने सभ तरहेँ श्रेष्ठ भेलिऐ तँए अपनेक विचार बेसी नीक हेबे करत। अपने जे विचार देबइ, से शिरोधार्य अछि।"

ओना, दुनू गोरेक विचारकेँ नीक जकाँ राधारमण सुनलैन मुदा अपने-आपकेँ सेहो जानि रहल छैथ जे परिवार एते विपरीत भऽ गेल अछि जे जँ किछु बाजब तँ आनसँ पहिने अपने परिवारक लोक मुँह नोचि लेत। तखन समाजमे आन के सुनता। सभ अपन परिवार कहि टारि देता। राधारमण बजला-

"बौआ, समाजमे जखनेसँ कोनो काज करैक संकल्प मनमे लेबह, तखनेसँ ओइमे विरोध सेहो ठाढ़ हेतह। विरोधक कोनो सीमा नहि अछि, तैठाम तूँ दुइये गोरे एक भाग भऽ जेबह आ समाज दोसर भागसँ थोपड़ा देतह। पछाइत तँ कहबे करबह ने जे राधारमण फाँटिपर चढ़ा मारि खुआ देलैन। तोहीं कहह जे एहेन दोखी बनैमे अपन की गल्ती हएत?"

राधारमणक विचार सुनि सीतानाथ बाजल-

"भैया, ओंघीसँ देह भँसियाइए। अहाँ ने दिन-रातिक दरमाहा पबै छी तँ काजक भेलौं, मुदा हमसभ तँ से नहि छी, तँए हमरा सभकेँ की भेटत। जखन विचार करए सभ बैसलौं तँ किछु विचारिये कऽ ने अन्त करब।"

राधारमण बजला-

"बौआ, आमक गाछी जखन आमक मासमे जेबहक आ आम जँ भरखैर पकैत रहतह, तँ देखबहक जे एकटा एम्हरसँ भट-दे खसल कि दोसर ओम्हरसँ। केम्हर दौड़ कऽ लेबह। तँए पहिने देखि लिअ पड़तह जे कियो दोसरो ने ते दौड़ रहल अछि। जखन नहि अछि तखन असथिरसँ ओहन काज करह जे जीवनकेँ उर्जवान बनबै।"

ओंघाएल सीतानाथ बाजल-

"भाय साहैब, आखिरी विचार अपन दियौ। नीनसँ कान बन्न भेल जा रहल अछि।"

राधारमण बजला-

"बौआ, तोहू दुनू गोरे अखन कौलेजेमे छह आ हमहूँ हालेमे छोड़लौं अछि। तँए पहिने ”गामक इतिहास” तीनू गोरे मिलि लिखह। अखन अपना सभ पढ़ै-लिखैक धारमे चलि रहल छी, तँए पहिने समाजकेँ चिन्हैक खगता अछि।"

गीतानाथ बाजल-

"भाय साहैब, नीक विचार अछि।"

(जारी---)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१३.जगदीश प्रसाद मण्डल-आब नइ जीब (लघुकथा)

जगदीश प्रसाद मण्डल

आब नइ जीब

आने दिन आ अनके सभ जकाँ चारि बजे भोरेसँ सड़कपर दौड़ लगा आएले रही कि दरबज्जापर युगिया भौजीकेँ मुँह लटकौने बैसल देखलयैन। बहुत आश्चर्य नइ भेल मुदा कहब जे आश्चर्य नहियेँ भेल, से आश्चर्य जेते हेबा चाही से भेबे कएल। बहुत आश्चर्य नइ हेबाक कारण छल जे सभ दिनक ई लीला छीहे, कहियो जगिया भौजी तँ कहियो रूसनी काकी, कहियो फुलनी दादी तँ कहियो मुसरी दीदी.. माने कियो ने कियो अप्पन बेथा-कथा नेने आबिये जाइ छैथ जे दिन-दिनक क्रिया भऽ गेल अछि तँए आश्चर्य किए हएत। मुदा जँ कहब जे युगिया भौजीकेँ मुँह लटकौने देखि आश्चर्य नहियेँ भेल सेहो बात नहि, से भेबे कएल।
बिना किछु बजने कल दिस आगू बढ़लौं कि मोन पड़ल नल, माने पानिक टंकीबला नल, नलक मनकेँ कलक विचार रोकलक। आगू बढ़ि कलपर जा हेण्डिल चलेलौं कि शुद्ध पानिक लहैर निकलल। पानि देखि मन पनियाइत पवित्र भऽ गेल। बुझल बात अछिए जे जेते गहींरक पानि रहत, माने परतदार धरतीक गहराइक पानि, तेते बेसी पवित्रो आ शुद्धो होइते अछि। कहब जे गाम-गाम आ घर-घरमे कल भइये गेल अछि। तहूमे जे

एकोबेर मुखिया कि पंचायत समिति आकि जिला परिषदक सदस्य भेला ओ अप्पन अगुआर-पछुआर लगा सत्तरह-सत्तरह टा कल गड़ाइये नेने छैथ मुदा से नहि, अप्पन कलक बात कहै छी। पिताजी जखन मरए लगला तखन कहलैन, ”बौआ, जिनगी भरि ओतबे कमेलौं जेतेसँ जिनगी चलल। जीवनमे पँच-पँचटा कन्यादान, चरि-चरिटा श्राद्ध कर्म, माने अप्पन माता-पिताक संग काका-काकीक सेहो केलौं। काका-काकीक ऐ दुआरे केलौं जे नि:सन्तान रहैथ। अप्पन जिनगी भरिक कमाइमे जे शेष बँचल अछि तइसँ एकटा कल दरबज्जापर गड़ा लएह।” आ तखने रूपैआ सेहो देलैन जइसँ पाँच साए फुट गहींरक कल गड़ेलौं, सएह कल छी। एकर माने ई नइ बुझब जे अखन जे टंकी सभ गामे-गाम भऽ रहल अछि तेकर गहराइक बात कहलौं हेन। अप्पन चापाकलक गप कहलौं अछि।

कलपर मुँह-कानमे पानि लेला पछाइत दरबज्जापर आबि युगिया भौजीकेँ कहलयैन-

"थुथुन बड़ खसल देखै छी भौजी.!"

ओना, फागुन महीना अन्तिम उतार-उतैर फगुआक करीब पहुँचिये गेल अछि जइसँ सभ उत्साहित भइये गेल छैथ मुदा तइसँ भिन्न उत्साह युगिया भौजीकेँ देखलयैन। लऽ दऽ कऽ गाममे दुइये टा भौजी बँचल छैथ, आर सभ जहिना एकतीस साए वेदक व्याख्याकारमे पनरहेटा बँचल छैथ बाँकी मरि गेला, तहिना मरि गेली।

लजकोटर रहितैथ तखन ने, से तँ सभ दिनसँ फरहर बोली युगिया भौजीक छैन्हे, बजली-

"आब हम नइ जीब।"

एक तँ भौजीक अन्ने मे छैथ युगिया भौजी आ दोसर एकउमेरिया सेहो छथिए, तँए बजै-भुकैमे सेहो आड़ि-धुर नहियेँ अछि। बजलौं-

"भौजी, जीबी वा मरी से अप्पन मनक विचार भेल, मरैबला कर्म करब तँ मरब आ जीबैबला कर्म करब तँ जीअब। मुदा, नइ जीब तेकरो तँ किछु कारण हेबे करत किने?"

युगिया भौजीकेँ जहिना हमर बात सुनैमे नीक लगलैन तहिना अप्पन बेथा-कथा सुननिहारो तँ सोझेमे भेटलैन, तँए मन मधुआ गेले छैलैन। बजली-

"बौआ, एना लोके तेहेन भवडाह भऽ गेल अछि जे कियो अप्पन पूजी लगा अनकर पोखरिक माछ नष्ट करैए, तँ कियो अप्पन ढौआ लगा केकरो घर जरबैए। तँए भगवानोसँ बेसी दोखी मनुक्ख अछिए। ओना, भगवानो दोखी छथिए, मुदा ओ कम-सम छैथ, लोक बेसी अछि। अनचोकेमे ठनका किए खसा दइ छैथ। बरखोक तँ अप्पन हिसाब राखक चाहिऐन किने, सेहो नइ रखै छैथ। जखन सभ बुझै छी जे सूर्य अपना धुरीमे नचै छैथ तहिना तँ चानो आ आनो-आन पृथ्वी सहित ग्रह अपना-अपना धुरीमे नचैए, तखन कम-बेसी किए करै छैथ? गोटे साल बेसी बरखे दऽ दइ छैथ तँ गोटे साल नहियेँ बरिस रौदी कऽ दइ छैथ।"

भूगोलक वर्णन युगिया भौजीक मुहसँ सुनि पुछि देलिऐन-

"भौजी, स्कूलो देखने छिऐ?"

भौजी बजली-

"इस्कूलक-तिस्कुलक मुँह नइ देखने छी, मुदा साले-साल जे बरहम स्थानमे भागवत कथा पनरह दिन कातिकमे होइए से तँ सब साल सुनबे करै छी। तइमे जे सुनलौं सएह बजलौं।"

निश्चल, निष्कपट भौजीक मुँहक बात सुनि, बिसवास नइ करितौं से अहीं कहू जे केहेन होइत। बजलौं-

"भौजी, छोड़ू दुनियाँदारीक गप, जानए पृथ्वी आ जानए सुरुज। कखन ग्रहसँ ग्रहण बनि जाइए तेकर कि ठेकान अछि। कखन माटिक ढेरी आकि आगिक ढेरी बनत कि कखन पार्वती आकि प्रकाशित ज्ञान बनि जाएत तेकरो कोनो ठेकान अछि। अहाँक मन किए खसल अछि, से बाजू।"

युगिया भौजी बजली-

"बौआ, जीवन मरि रहल अछि.!"

”जीवन मरि रहल अछि” युगिया भौजीक मुँहक बात कोनो भाँजेपर ने चढ़ल। भाँजोपर केना चढ़ैत, अखनो जीवन माने जीनाइ बुझै छी, चाहे जे जीवन हुअए। मुदा ई नइ बुझै छी जे जीवन वृत्ति (कर्म) पर ठाढ़ अछि। ओना, गामक लोक कियो युगिया भौजीकेँ "तरकारीवाली दादी" तँ कियो "तरकारीवाली काकी" कहिते छैन मुदा अपने परहेज केने रहलौं जे कहियो "युगिया भौजी"केँ "तरकारीवाली भौजी" नइ कहलयैन। अखनो

नइ कहै छिऐन आ मरियो जेती तैयो ने कहबैन। वृत्ति-वृत्तिक बिर्त (खेल) छीहे। कर्म आधारित मान-अपमान सेहो अछिए। कर्म-कर्म छी, जे जीवने करत, मुदा कर्मक मान कम भेने जीवनक मान कम हुअए ई केतौसँ उचित नहि अछि। कबीरदास कपड़ा बुनकर छला आ केतेको महापुरुष (साधक) आसन पकैड़ साधना करै छैथ, तँए सिद्धिमे कमी-बेसी कहल जाए सेहो तँ उचित नहियेँ अछि। हँ, एते जरूर अछि जे सिद्धि-सिद्धमे अन्तर हेबे करत। बाघ-सिंह हुअ आकि नढ़िया-गीदर, ओकरा सभकेँ एकरंग बन-जंगल भेटै छै मुदा मनुक्खमे से बात नइ ने अछि। अगुआएल-पछुआएल अनेको खाढ़ीमे मनुक्ख बाँटल अछिए।

ओना, फागुन मासक फगुआक लहैरिक जुआरि बुझियौ आकि मनक आवेग, मुहसँ बजा गेल-

"जीवन ने मरि रहल अछि भौजी, अपने नइ ने अखन मरब।"

जहिना कोनो हँसी-चौलकेँ कियो गम्भीर रूप पकैड़ अड़िकऽ ठाढ़ होइए तहिना युगिया भौजी अड़िकऽ ठाढ़ होइत बजली- "बौआ, साठिम बरख पैछले साल पूरि गेल, ऐबेर एकसैठिम छी, अखन तक जहियासँ अपना ऊपर परिवारक भार पड़ल तहियासँ माथपर तरकारीएक पथिया लऽ समाजमे अँगने-अँगने बेचबो करै छेलौं जइसँ दू पाइक कमाइयो होइ छल आ परिवारक नीक-बेजाए गप-सप्प सेहो करै छेलौं, मुदा आइ ओ सभ मरि रहल अछि। आब अहीं कहू जे केना जीब?"

युगिया भौजीक गम्भीर प्रश्न सुनि मन ठर्ड़ा गेल। शरीरक क्रियासँ मनक क्रिया धरिक विचार युगिया भौजी एक्के पाँतीमे बाजि गेली। आगू-पाछू देखए लगलौं, माने सोचए-विचारए लगलौं तँ देखि पड़ल जे समयकेँ आगू बढ़ने आइ नव-नव तरकारी बेचनिहारक जन्म भेल अछि। माथपर जैठाम एक पथिया तरकारीक लाभसँ माने दस-पनरह किलो तरकारी बेचिकऽ परिवार चलै छल, उपजौनिहार अलग भेला, हुनकर मूल्य अलग भेलैन, मुदा तइसँ युगिया भौजीक पाँच गोरेक परिवार तँ ओहीसँ चलै छेलैन, जखन कि तेहने परिवारमे ठेलाक वेपारी बनने आइ दस-पनरह किलोक लाभक जगह क्विन्टल-दू-क्विन्टलमे बढ़ि गेल अछि। दोसर दिस, युगिया भौजी दिस देखी तँ स्पष्ट देखि पड़ए जे दोसर कोनो लूरि-बुधि तँ छैन नहि। जेहो छैन से खटबसँ लऽ कऽ अप्पन हिसाब-बारी जोड़ै धरिमे समटा गेल छैन, तैठाम लगले केना दोसर जीवन ठाढ़ हएत।

मौसम दिस, माने समयक अनुकूलता दिस तकलापर देखिऐ जे लोके जकाँ समयो बँटाएल अछि। जहिना गरीब लोककेँ जीवनक आवश्यकते कम अछि, जेहो अछि ओ अभावेमे खगि जाइए आ धनीक लोककेँ बेसी सम्पदो अछि आ बेसी पुरतियो तँ होइते अछि, तहिना समयोक अछिए। कहब जे समय तँ अजन्मा छी, ओ अपन धुरीपर सालो भरि अपना गतिये चलबे करैए आ आगूओ चलिते रहत। समयक प्रभाव जीवनपर की पड़ैए, सेहो तँ सबहक सोझेमे अछि। देखिते छी जे जाड़क मासमे पानिक तृष्णा कम होइए आ अन्नक (भोजनक) बेसी होइए। जैठाम अन्नक तृष्णा बढ़त तैठाम अन्नक खगतो ने बेसी हएत। गरमी मासमे एकाध दिन लोक पानियोँ पीब जीवन चला लइए, से जाड़क मासमे थोड़े हएत। जँ पानिसँ काज चलबए चाहब तँ एक दिस अन्नक गरमी कमत, ठंढपन औत आ दोसर दिस पानिक ठंढपन सेहो शरीरकेँ ठंढे बनाएत, तैपर सँ शीतलहरीक प्रकोप भिन्न, तखन कहू जे एहेन समयमे लोकक जीवन केना चलत। तहिना वस्त्रक सेहो अछि, गरमी मौसममे कमो कपड़ासँ जीवन चलि सकैए मुदा जाड़ तँ से नहि छी। जाड़क जेते कनकनी रहत ओते वस्त्रक खगता हेबे करत। तहिना घरक सेहो अछि। जाड़क मुकाबला करैले नीक घरक खगता होइते अछि। नीक घरक माने ई नइ बुझब जे अपन जीवनक श्रमकेँ दोसराक हाथे बेचि, स्वतंत्र श्रमण जीवनसँ लाखो कोस दूर हटि, जीवन-यापन करी मुदा घर मजगूतो आ सुनरो बनाबी। जीवनक स्तरक हिसाबसँ घर जँ होइ तँ उचित भेबे कएल। जँ से नहि तँ जीवन रस्ता परक धूरा जकाँ अधूरा बनियेँ जाइए। कहब की अधूरा? जीवनक जे मूल तत्त्व अछि तइमे परिवेशक हिसाबसँ बदलाउ सेहो अबैए, तेकर सर्वांगीण स्तर एक सीमामे हेबा चाही। अपनो सभकियो जनिते छी जे जैठाम जन्म नेने छी माने जइ देश वा समाजमे, ओकर जे आमद खर्च अछि माने आय-व्यय, तेकरो तँ एक सीमा छइ। कुबेरक भण्डार जकाँ नहि ने अछि जे आमदक हिसाबे ने बुझल रहत आ मन कहत केतबो खर्च हएत तैयो ओ सठत थोड़े। एकाएक विचार मोड़ लेलक। मोड़ ई लेलक जे समयकेँ जखन अपने पकैड़ चलब तखन ने जीब। जँ समयक आशा देखैत रहब तँ केना समय ससैर कऽ ससारए लगत तेकर कोनो ठेकान अछि। एक तँ ओहुना एक घटना रहितो गरमी मौसममे जेते बोलीमे टाँस रहैए तेते जाड़क मासमे नहियेँ रहैए। ..अपने

मने-मन विचारिये रहल छेलौं आ तँए मुहोँ बन्ने छल। मुदा युगिया भौजी तँ बजन्ता लोक छथिए। हुनका अपना मनमे जे रहल हौन मुदा अपना बुझि पड़ल जे भौजी बेसी चिन्तित छैथ। चिन्ताक हाल-चाल आ कुशल-समाचार आकि बिआहे-दुरागमनक हाल-चाल चाहे कोनो पावनिये-तिहारक हाल-चालमे तँ अन्तर होइते अछि। तैबीच अपने फुरने युगिया भौजी टोकि देली-

"चुप किए छी बौआ, लोको देखत तँ की कहत.!"

बिनु विचार केनहि भौजीक प्रश्नक उत्तर देलिऐन-

"लोक की कहत.! लोक पहिने अप्पन बेथा-कथा बुझि लिअ तखन दोसरकेँ कहत।"

हमर विचार सुनि जेना भौजीक मनमे शीतलपन एलैन तहिना बजली-

"तेहेन ने जाड़ आबि गेल अछि जे केते बुढ़-पुरानक श्राद्ध हएत।"

अपना बुझि पड़ल जे भरिसक भौजीक मनसँ अप्पन बेथा मेटा अनका दिस बढ़ैत आब मृत्युपर आबि गेलैन अछि। ऐठाम मृत्युक माने ई जे जँ मनुक्ख अपन अन्तिम सीमा, मृत्युक रहस्य बुझि जाए तँ अनेरे मनसँ राग मेटा जाएत आ विराग आबि जाएत। जखने विराग तखने जीवन। बजलौं-

"भौजी, अहाँक मनमे अप्पन श्राद्धक भोज ने तँ आबि गेल अछि। अच्छा जे अछि आकि जे आबि गेल हेन, तेकरा अखन कात-के ताबे राखि पहिने एकबेर चाह पीब?"

जइ तरहक युगिया भौजीक संग अप्पन सम्बन्ध अछि तइमे आइ तक युगिया भौजी अपना लगमे बैस चाह नइ पीलैन अछि, से बिसैर गेलौं आ दरबज्जाक मान रखैत बाजल छेलौं।

युगिया भौजी बजली- "अहाँकेँ कोनो गत्तरमे लाज नइ अछि.!"

युगिया भौजीक विचार मनकेँ चौंकेलक। बुझि पड़ल जे युगिया भौजी पछारि देलैन। उन्टा दाँव लगा अपने तरसँ ऊपर अबैक गर लगबैत बजलौं-

"भौजी, दुनियाँदारीक बात छोड़ू, बड़ीटा दुनियाँ अछि, अनेरे केतए वौआइले जाएब। अप्पन जे बेथा अछि तैपर विचार करू।"

युगिया भौजीकेँ विचार नीक लगलैन, जइसँ मनमे थीरपन एलैन। बजली-

"बौआ, अखन तकक जे जीवन रहल, माने माथपर पथिया लऽ कऽ तरकारी बेचब, ओ आब जेना मेटा रहल अछि। ओही घट्टा-नफ्फामे अपने पड़िकऽ पछैड़ रहल छी।"
एक्के मुहेँ युगिया भौजी घट्टा आ नफ्फा दुनू बात बजली तँए बीचमे सोन्हि देखि गर भेटल। बजलौं-
"की घट्टा-नफ्फा, भौजी?"
युगिया भौजी तरे-तर मनसँ विचारि बजली-
"बौआ, घट्टा ई भेल अछि जे बिकरी बन्न भेने समाजमे आबा-जाही कम भऽ गेल, जइसँ जे उधारी लागल अछि ओहो डुइम जाएत। आ नफ्फा ई देखि रहल छी जे अपने दस सेरक कमाइ करै छेलौं आ आब जँ बेटा-पुतोहु वएह कारोबार करत आ ठेलाक सहारा लेत तँ बोरा-दू-बोराक कारोबार करत जइसँ परिवारक आमदनी बढ़बे करत किने।"
युगिया भौजीक विचार मनमे बंशी लागल माछ जकाँ घाव केलक। सोभाविके अछि जे कामगारकेँ जीवनक अनुकूल काम भेटने सफलताक आशा बढ़िये जाइए। जखन छेहा किसानी जीवन रहैए वा हाथक कोनो दोसरे काजक जीवन रहल, तखन स्वचालित तेज मशीन नहि, हथकरघा बेसी उपयोगी होइए। मुदा जेना-जेना जीवनमे उन्नति होइत जाइए तेना-तेना मशीनक गतिक अनुरूप अभ्यास सेहो बनैए। मुदा से बजलौं नहि। बजलौं- "भौजी, केते गोरेक परिवार अछि?"
परिवारक नाओं सुनिते, माने परिवारक जिज्ञासा सुनिते युगिया भौजीक मन खुशीसँ दहैल गेलैन। दहलाइत बजली-
"बौआ, खाइकाल भनसाघर भरि जाइए मुदा काज करैकाल सोल्होअना अपनेपर रहि जाइए।"
युगिया भौजीक बात सुनि बजलौं-
"बेटा-पुतोहु सभ किछु ने करैए?"
अप्पन बड़प्पनक मर्यादा बँचबैत युगिया भौजी बजली-
"बौआ, जाबे अपने जीबै छी ताबे बेटा-पुतोहुकेँ कमाइले केना कहबै।"
युगिया भौजीक विचार सुनि मने-मन हँसियो लगए जे ई तँ ओहने नवयुवकक पइर भऽ गेल अछि जे बैंकक लोन लइक पाछू सालक-साल वौआइए आ अप्पन पूर्वजक देल लाख-लाख रूपैआ कट्ठाक दामक पँच-पँच-दस-दस बीघा जमीन, इज्जतक नामपर ट्रान्सफर नइ करता। भाय

जखन जीवन बदैल रहल अछि, तखन सम्पैतिक स्वरूप सेहो बदलबे करत किने। जे सम्पैत किसानी जीवनमे खेबाक वस्तु उपजबै छल वएह सम्पैत मशीनी जीवनमे मशीनक रूपानुकूल जीवनक अधिकतर खगताक पूर्ति करैमे उपयोग हएत। जे पूर्वजक मान-प्रतिष्ठा बुझि, अपने बेरोजगारक रूप बना बैसल छी। ..धरतीपर ठाढ़ होइत बजलौं-
"भौजी, अखन कने दोसर काजक बेगरता भऽ गेल अछि, ने तँ नीक जकाँ कहितौं जे युग बदलने केना लोक जगैए आ केना लोक सुतैए।"
"केना लोक जगैए आ केना लोक सुतैए" से बात सुनि आकि युगिया भौजीक मनमे अपने कोनो बात उठि गेलैन, से तँ युगिया भौजी अपने जनती मुदा एतबे बजली-
"बौआ, अखन जाइ छी, अहूँ अप्पन ताक सम्हारू, मुदा पहिल साँझ तँ नइ आबि हएत, दोसरि-तेसरि साँझ धरि एबे करब। जाबे मन नइ भरिकऽ मानत ताबे थीर केना हएत।"
बहाना बनबैत बजलौं-
"बेर-मे अनतए जाएब, तँए वापस अबैक कोनो ठेकान नइ अछि। अहाँ आबी आ अपने नइ रही तखन फेर ने अहाँ गरिऐबिते घुमब।"
युगिया भौजी बजली-
"काल्हि भोरमे आएब।"
की कहितिऐन, बजलौं-
"आएब।"

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१४.रबीन्द्र नारायण मिश्र-बदलि रहल अछि सभकिछु (उपन्यास)- धारावाहिक

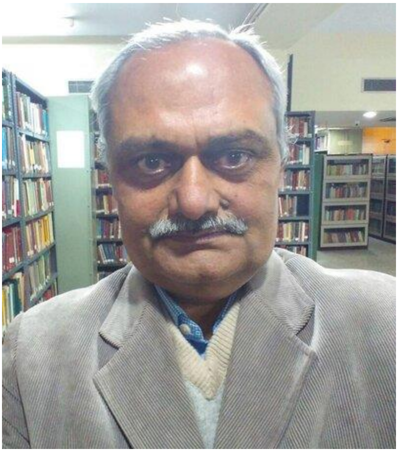

<u>रबीन्द्र नारायण मिश्र</u>

बदलि रहल अछि सभकिछु (उपन्यास)- धारावाहिक

<u>खण्ड १-५</u>

बदलि रहल अछि सभकिछु

चारूकात अफरा-तफरीक माहौल छल । सामिआना लागल छल । मंचपर श्रीमान् लोकनिक हेतु मसलंग लगा देल गेल छल । माइकसँ बेर-बेर घोषणा कएल जा रहल छल-"माइक टेस्टींग,माइक टेस्टींग"। एकटा नवयुवक बीच-बीचमे बाजि रहल छलाह- "अपन-अपन स्थान शीघ्र ग्रहण कए लिअ । नेताजी पहुँचहि बला छथि ।" लोकक मनोरंजन हेतु रहि-रहि कए रंग-विरंगक गीतसभ बजाओल जा रहल छल । सामिआनाक गेटेपर प्रमुख-प्रमुख लोकनि गेनाक माला हाथमे लेने ठाढ़ छलाह। सभ एक-दोसरसँ उपरौज केने । हम आगू रहब तँ हम ।

मंचपर नेताजीक अतिरिक्त मात्र चारिएगोटेक बैसबाक ओरिआन छल । बीचमे नेताजी,आ हुनकर दुनूकात दू-दूगोटे । मंच आ ओकर लगपासमे इत्रक छिड़काव कएल गेल छल जाहिसँ ओहिठामक हवा सुगंधित लागि रहल छल । नीचाँमे आठ-दसटा कन्यासभ स्वागत गानक हेतु तैयार छलीह । ओ सभ स्थानीय उच्च विद्यालयक छात्रा रहथि । कैकदिनसँ ओ सभ स्वागत गानक पूर्वाभ्यास कए रहल छलीह। अधिक सँ अधिक लोक एहि कार्यक्रममे भाग लेथि ताहि हेतु कैकदिन पहिनहिसँ लाउडस्पीकरसँ गामे-गाम प्रचार कएल जा रहल छल । रिक्सापर राखल टेपरेकार्डर बजैत रहैत छल । गेलै आब ओ जमाना जखन रिक्सापर बैसल आदमी माइकपर बाजत आ लाउडस्पीकरसँ तकर विन्यास होएत। आब तँ एकबेर उद्घोषक अपन बात टेप करबा दैत छथि आ टेपरेकार्डर पर ओ बेर-बेर बजैत रहैत अछि । सएह एतहु भए रहल छल ।

"बिसरब नहि । अवश्य आएब । इलाकाक जानल मानल जननायक, हमरसभक महान शुभचिंतक, दुनिआमे मिथिलाक नाम चमकाबए बला नेताजीक आगमन भए रहल अछि। उच्च विद्यालयक प्रांगणमे आयोजित भए रहल कार्यक्रममे अवश्य आउ। संगे अपन हित-मीत, संबंधीसभकेँ लेने अबिअनु।"

बैसारक बाद भरिपोष उत्तम भोजनक प्रवंध सेहो कएल गेल छल । से बात सेहो कहल जा रहल छल । कैकदिनसँ निरंतर भए रहल प्रचारक परिणाम सकारात्मक भेल छल । मंचक लगपासमे सभटा स्थान भरि गेल छल । इसकूलक आगूक मैदानक सभटा जगह भरि गेल छल । लगेमे आमक कलम छलैक । लोकसभ खास कए युवकसभ ओकरो डारिपर अपन-अपन स्थान बना चुकल छल ।

नेताजीकेँ अएबामे देरी भए रहल छलनि । लोकसभ अगुता नहि जाए ताहि हेतु मनोरंजन तँ भइए रहल छल,बीच-बीचमे चाह-पानक वितरण सेहो कएल जा रहल छल । लोकसभ बाजए "

"बहुत बैसार देखलहुँ मुदा एहन ओरिआन बिरलैके देखल जाइत अछि ।"

नेताजीकेँ अतिथिगृहसँ अनबाक हेतु हम स्वयं गेल रही। हमरा संगे वाहन चालक आ युवानेता संदीप छल। नेताजी अतिथिगृहमे आगन्तुकसभसँ भेंट करबामे व्यस्त छलाह । मौका पाबि कए हम एकबेर हुनका नमस्कार

कए आएल रही। ओ हमरा देखितहु हँसि कए जबाब सेहो दए देलथि । हमसभ ताबे स्वागत कक्षमे चाह पीबि रहल छलहुँ । चाहक चुस्कीक संग ओतहि राखल अखबारक पन्नाकेँ उल्टा-पुल्टा रहल छलहुँ ।
नेताजीक आगमनमे देरी देखि मंच संचालक स्वयं किछु-किछु बजैत रहलाह । फेर लगपासक प्रमुख-प्रमुख लोकसभकेँ किछु-किछु कहबाक अवसर देलखिन । तखनहु नेताजी नहि अएलाह । गर्मीक मौसम छलैक । दस बजेसँ बारह बाजि गेल । लोकसभ घामे-पसीने परेसान छल । बहुत गोटे तँ उठि -उठि कए मोन हल्लुक करैत छल । एक मोन होइक जे चलि जाइ । मुदा बैसारक बाद भोजनोक जोगार छलैक ।
"आब जखन आएले छी तँ भोजन छोड़ि कए कोना जाएब ।"
ओहो कोनो मामुली भोजन नहि रहैक । तरह-तरहक पकवानसभक सुगंधसँ वातावरण मह-मह कए रहल छल । कुलमिला कए एहिसभक प्रभाव भेलैक आ लोकसभ अड़ल रहल। केओ वापस नहि गेल ।

2

आखिर नेताजीक काफिला सभास्थलपर पहुँचल । नेताजीक स्वागतमे चारूकातसँ लोकसभ मंच लगमे पहुँचि गेल ।
"इनकिलाब! जिंदाबाद !!नेताजीक जय! हमर नेता केहन हो, देबन बाबू सन हो! "
नाना प्रकारक नारासँ संपूर्ण आकाश गुंजायमान भए रहल छल । नेताजीक सुरक्षामे लागल पुलिससभक हेतु ई बहुत कठिन क्षण छलैक । ककरो रोकि नहि पाबि रहल छलैक । जे से नेताजीक गरामे माला पहिराबए हेतु उताहुल छल । नेताजी शनैः शनै मंच दिस बढ़ि रहल छलाह । करमान लागल लोक आ ओकरसभ उत्साह देखि नेताजी बहुत आनंदमे छलाह । सुरक्षामे लागल पुलिससभ कैकबेर हुनका आगू-पाछू घेरबाक प्रयास करैत छल जाहिसँ ओ सुरक्षित रहथि । मुदा नेताजीकेँ से नीक नहि लागनि । एकबेर ओ बहुत जोरसँ पुलिसकेँ डांटि देलखिन । ओहि सभ की करितए? पाछू भए गेल । नेताजी आगू बढ़ि रहल छलाह। हुनकर आगू-पाछू ओहिना करमान लागल लोक चलि रहल छल ।
आब नेताजी मंचपर चढ़बाक हेतु अग्रसर भए रहल छलाह की बड़ी

जोरसँ धमाका भेल । मंच आ ओकर आस-पासक लोकसभ कतए-कहाँ उड़िआ गेलाह । ककरो हाथ कतहु फेकाएल तँ ककरो टांग कटि कए चारि लग्गा फटकी जा कए खसि पड़ल । मंचक तँ नामो-निसान नहि रहि गेल । मंचक स्थानपर बेस पैघ खधिआ बनि गेल छल । चारूकात प्रलयक दृश्य छल। देखिते-देखिते ओहिठाम चारूकात हाकरोस करैत लोकसभ अपन-अपन परिचित,इष्ट-मित्र,संबंधीकेँ ताकि रहल छलाह । नेताजीक पाछू ठाढ़ पुलिससभ तुरंत सचेत भेल आ विद्युत गतिसँ आगू बढ़ैत हुनका उठा कए पाछू फेकलक । अपना भरि जानपर खेलि कए नेताजीक जानक रक्षा करबाक प्रयास केलक । तकर फएदो भेलैक। नेताजीक जान बँचि गेलनि । मुदा दहिना टांगमे चोट लागि गेल रहनि। पीठपर सेहो घाव भए गेल छलनि । कष्टसँ ओ कुहरि रहल छलाह । पुलिससभ तुरंत हुनका रोगी वाहनमे राखि अस्पताल बिदा होइत गेल । केओ सोचिओ नहि सकल छल जे कनीके काल एहन आनंदपूर्ण वातावरण एतेक दुखद दृश्यमे परिवर्तित भए जाएत । मुदा सएह भेल । मंचक लग-पासमे बहुत रास लोकसभ घायल बफारि तोड़ि रहल छल । किछु लास सभ छिन्न-भिन्न भेल एमहर-ओमहर पड़ल छल । गामक इसकूलक मैदान एकटा रणभूमिक भाग बनि गेल छल ।

थोड़बे कालमे पुलिस महकमामे ई समाचार ऊपर धरि पहुँचि गेल। जिलाक कलक्टर,एसपी कमिश्नर पर्यंत घटनास्थलपर पहुँचि गेलाह । दुर्घटनाक समयमे हम नेताजीक कारसँ हुनकर बैग निकालबाक हेतु वापस कार धरि गेल रही । संयोगे कहबाक चाही जे एहि कांडमे बँचि गेल रही । हमरासंगे नेताजीक अनबाक हेतु गेल युवक संदीपक कोनो अता-पता नहि छलैक । पुलिससभसँ पहिने हमरा पकड़लक,जीपपर बैसेलक आ थाना लेने चलि गेल ।

थाना पहुँचि भयावह दृश्य देखलहुँ । कैकटा घायल लोकसभ ओतए बिना कोनो प्राथमिक उपचारकेँ पड़ल छल । पुलिसबलासभ अपनामे गप्प करैत छल-

"पता नहि रोगी वाहनकेँ अएबामे एतेक देरी किएक भए रहल छैक? "

"एनामे तँ ई सभ बिना कोनो इलाजेकेँ मारल जाएत ।"

"एतेक भारी दुर्घटना आखिर भेल कोना? "

"जरूर कोनो षड़यंत्र भेल अछि ।"

एहि तरहें तरह-तरहक बातसभ पुलिससभ अपनामे कए रहल छल । कलक्टर साहेब नेताजीक संगे आगू बढ़ि गेल छलाह। हुनके संगे-संगे कमिश्नरक गाड़ी सेहो चलि रहल छल । जखन नेताजी गेलाह तँ एसपी साहेब कोना नहि जइतथि? एसपीक पाछू-पाछू डीएसपीक गाड़ी कोना नहि जाइत । जहिना बड़का अधिकारी सभ ओतए अएलाह तहिना नेताजीक कारक संगे-संगे वापस चलि गेलाह। ओमहर थानामे पड़ल घायल लोकसभक परेसानी बढ़िए रहल छल । ओहिठामसँ अस्पताल जेबाक हेतु रोगी वाहन जरूरी छल,से आबिए नहि रहल छल । हारि कए गौंवासभ अपन-अपन ओरिआन केलाह आ जेना-तेना घायल व्यक्तिसभकेँ लादि-फादि अस्पताल पहुँचलाह । हुनकासभक पाछू-पाछू पुलिसक जीप सेहो पहुँचल ।

हमरा लेने-देने पुलिस एसपी साहेब लग पहुँचि गेल । ओ बेर-बेर संदीपकेँ ताकि रहल छल । मुदा ओकर कोनो अता-पता नहि छल । ओ कतए गेल? कहीं ओ कतहु घायल पड़ल तँ नहि अछि? कहीं अपन जान तँ नहि गमा बैसल । मुदा पुलिसकेँ ओकर कोनो थाह नहि लागि रहल छल । हमही ओकरा बारेमे की कहितिऐक? सभगोटे संगे छलहुँ । मुदा क्षणेमे छनाक की-कोना भेलैक जे एहन घटना घटि गेल । पुलिसकेँ एहू बातसँ बहुत चिंता होइत छलैक जे हम कोना बँचि गेलहुँ,संदीप कतए चलि गेल? नीचाँसँ ऊपर धरि सभ परेसान छल । आखिर ई सभ भेल कोना? एकर पाछू ककर-ककर हाथ अछि ? एहि प्रश्नक जबाब किछु नहि फुरा रहल छलैक ।

3

चुनाओक मौसममे भेल एहन भारी दुर्घटनाक बहुत प्रभाव पड़ि सकैत छल । ताहि बातसँ सभ चिंतित छलाह । पक्ष-विपक्षक लोकसभ तरह-तरहसँ एकर विश्लेषण कए रहल छलाह।

लोकसभक मोनमे एकहिटा बात बेर-बेर घुमि रहल छलैक-एतेक भारी बिस्फोट भेल आ नेताजी ओतहि छलाह । तथापि हुनकका मामुली चोट लागल आ ओ बँचिओ गेलाह । जखन की लगपासमे ठाढ़ बँकिए लोकसभ भयानक रूपसँ आहत भए गेल । हम कोना बँचि गेलहुँ ?

संदीप कतए बिला गेल? प्रशासन एहन घटनाकेँ पहिने किएक नहि पता लगा सकल? सीआइडी विभाग की कए रहल छल?

चिकित्साक बाद नेताजीकेँ अस्पतालसँ छुट्टी दए देल गेल। ओ रातिमे शक्तिपुरम अपन डेरापर वापस पहुँचि गेलाह । हमरा राति भरि थानामे बंद केने रहल । भोर भेने कोनो फोन थानेदारकेँ अएलैक । तकर बाद ओ हमरा बजा कए कहलाह-

"अहाँकेँ शक्तिपुरम जाए पड़त । एहि मामिलाक तहकीकात सीआइडी विभाग करतैक । तेँ अहाँ ओतए एसपी सीआइडीसँ भेंट करिअनु । ओना अहाँक खिलाफ कोनो सबूत नहि छैक । मुदा एतेक भारी घटना घटलैक अछि आ अहाँ ओहिठाम रही, नेताजीक संगे सेहो रहिअनि तेँ अहाँसँ गप्प-सप्प करब हुनका जरूरी बुझाइत छनि ।"

"कोनो बात नहि । हमरा जेना कहब, हम सहयोग करबाक हेतु तैयार छी।"

"थोड़ेकालमे पुलिसक गाड़ीसँ अहाँ शक्तिपुरम बिदा भए जाएब । सुरक्षा कारणसँ अहाँक संगे पुलिस सेहो जाएत । आगूक निर्णय ओहीठाम कएल जाएत। कहबाक माने जे अहाँकेँ छोड़ि देल जाएत की किछु दिन पुलिसेक हिरासतमे राखल जाएत से ओतहि पता लागत।"

"सएह कहू। हमरा तँ अहाँसभ अनेरे पिरओटनमे रखने छी।"

"आब एहिसभपर गप्प-केलासँ कोनो फएदा होमए बला नहि थिक । अपने सभबात स्वयं बूझि रहल छी ।"

"ठीक छैक । हम स्नान कए लैत छी । फेर जेना-जे कहब, हम सएह करब ।"

हम स्नान-ध्यान कए लैत छी । थानेदार साहेब किछु जलखै,चाहक ओरिआन सेहो केने छथि । तकरबाद हम पुलिसक गाड़ीसँ शक्तिपुरमक हेतु बिदा होइत छी । हमरा संगे हमर रक्षार्थ किछु पुलिस सेहो छथि । शक्तिपुरम पहुँचतहि हमरा पुलिसक गाड़ी नेताजीक डेरापर लेने चलि गेल । ओहिठाम संदीप पहिनहिसँ सोफासीटपर बैसल चाह पीबि रहल छल । ओकरा देखितहि हमरा बजा गेल-

"तू एहिठाम? "

"से की? "

तोरा तँ पुलिस तकैत-तकैत परेसान भेल अछि आ तूँ एहिठाम चाह पीबि

रहल छह ।”
हमर बात सुनि कए नेताजी भभा कए हँसि दैत छथि। संदिप सेहो नेताजीक संग दैत अछि । हम बूझि नहि पाबि रहल छी जे बात की छैक? हमर परेसानी नेताजी बूझैत छथि ।
”अहाँ परेसान नहि रहू । जे भेलैक, जेना भेलैक सभ बात अपने परिछा जाएत । अखन चुनाओक मौसम छैक । तेँ अहाँकेँ किछुदिन जहल जाए पड़त जाहिसँ जनतामे गलत धारणा नहि बनए । भोटमे हम जीतबे करब । सरकार हमरे बनत । तकर बाद अहूँ बाहर आएब आ बदमाससभक इलाज तँ हेबे करतैक ।”
नेताजीक बात हम नहि बूझि सकलहुँ । ओ संदीप संगे अंदरक कोठरीमे चलि गेलाह । हम चाह पीबिते रही की पुलिसक एकटा अधिकारी हमरा बाहर अएबाक इसारा करैत छथि । हम हुनका संगे नेताजीक कोठरीसँ बाहर होइत छी । पुलिसक जीपमे बैसि जाइत छी। पुलिस हमरा लेने अज्ञात स्थान पर चलि जाइत अछि ।
तकर बाद कैकदिन धरि हम जहलमे बंद रहलहुँ । हमरा खिलाफ तरह-तरहक धाराक अधीन मोकदमा काएम कए देल छल। हम कोनो प्रतिवाद करबाक स्थितिमे नहि रही। भोर-साँझ केओ अज्ञात व्यक्ति हमरा सामनेमे आबए आ तरह-तरहक इसारा कए किछु कहि जाए । किछु नहि बाजए । चुपचाप अपन काज करए आ चलि जाए । एहि तरहें कैक दिन बीति गेल ।
4

हमर बएस सत्ताइस साल अछि । हम दूसाल पूर्व एमए पास केलहुँ । शुरुएसँ आदर्शबादी छलहुँ । असलमे विद्यार्थी सभकेँ मोनमे सामान्यतः देश,समाजक हेतु किछु करबाक भावना जागल रहैक । कालेजमे एहिसभ विषयपर वारंबार चर्चा होइत रहैत छल। देश-विदेशक जानल-मानल विद्वान,नेता,कवि ,गायक अबैत-जाइत रहैत छलाह । हम आ संदीप एकहि बएसक रही । एकहि किलासमे पढ़ैत रही । हमसभ संगे-संगे एहन बैसारसभमे अरबधि कए जाएल करी । युवावस्था,किछु करबाक उमंग आ संगी सभक संगोर सभ मिलि कए हमर मोनकेँ ततेक प्रभावित कए देलक जे एमए पास केलाक बाद नौकरी तकनाइ छोड़ि

नेताजीक पाछू-पाछू घुमए लगलहुँ । संदीप एहि मामिलामे हमरासँ आगूए छल। ओ कालेजेक समयमे नेताजीक अनुगामी भए गेल। हुनका संगे-संगे बैसारसभमे जाए लागल । परिणामस्वरूप,ओ एमए परीक्षा पास नहि कए सकल। लटकि गेल। दोसरो साल सएह हाल रहलैक। तेसर प्रयासमे ओ जेना-तेना तृतीय श्रेणींमे एमए पास कए सकल। ताबे हम एमए पास कए पुरान भए गेल रही । माता-पिताक असगर संतान रही। तेँ बहुत दुलरुआ रही। हुनका लोकनिकेँ हमरासँ बहुत उमीद रहनि। हम हुनकर सभक भावना आ इच्छाकेँ बुझैत पढ़ाइ करैत रहलहुँ। सभदिन औअल अबैत रहलहुँ। मुदा एमए पास करैत-करैत हमर बुद्धि बदलि गेल। परिवारसँ बढ़ि कए देशक चिंता होमए लागल। ओही क्रममे हमहु नेताजीक संपर्कमे अएलहुँ।

कालेजमे पढ़बाक समय हम आ संदीप कैकबेर संगे ओकर गाम सरिआ गेल रही । ओकर वयोबृद्ध पितासँ भेंट केने रही । ओकर माए बहुत पहिनहि मरि गेल रहथि । ओहि समयमे संदीप चारिए वर्षक रहए । तखनेसँ ओकर पिता माएक भार सहो सम्हारि रहल छलाह। हमरे जकाँ ओहो असगरे रहए । पढ़बामे साधारण। ओकर पिता सदिखन हमर उदाहरण दैत रहथिन। कहथिन जे तूँ अंकुरसँ ओकर गुण लेल करह। संगे रहबाक किछु फएदा उठाबह। ओ सुनि लिएह आ हँसि दैक। कखनहु काल कहिओ दैक-

”अहाँ एतेक चिंता नहि करू । हम बहुत किछु करब । अहाँक यश-प्रतिष्ठामे बृद्धि करब। अहाँ धैर्य राखू।”

बूढ़ा की बजितथि? चुप्प भए जाथि । काजसभ तँ किछु तेहन नहि देखथिन। दिन-राति नेताजीक पाछू-पाछू घुमैत रहैत छलाह। असलमे ओहि समयमे नेताजीक नाम गाम-गाम पसरल छलैक । लोकसभकेँ हुनकासँ बहुत उमीद रहैक। भाषणमे बहुत नीक-नीक गप्प-सप्प करैक। मुदा ककरो किछु फएदा होइत नहि देखाइक । तेँ किछु दिनक बाद आम जनतासभ हुनकासँ निराश होमए लागल आ एहि बेरक चुनाओमे हुनका हरेबाक मोन बना लेने छल। नेताजीकेँ एहिबातक अनुमान भए गेल रहनि । तेँ ओ कनी बेसीए सतर्क छलाह । जेना-तेना चुनाओ जीतबाक हेतु प्रयत्नशील छलाह।

नेताजीक तँ ओ धंधा छलनि। इलाकाक युवकसभकेँ झूठ आदर्शवादक

झुनझुना पकरबितथि । दिन-राति अपना-अपना पाछू घुमबैत रहितथि। ओहिमे सँ किछु चलाक-चुस्तसभ किछु फएदो उठा लैत छल । मुदा अधिकांश ओहिनाक-ओहिना रहि जाइत । नीक समय अनबाक प्रयासमे संघर्ष करैत-करैत अनिश्चित भविष्यक गर्त्तमे पड़ल रहि जाइत। नेताजीक आश्वासन भेटैत रहितैक । ओ सभ हुनकर झंडाकेँ लेने नारा बुलंद करैत रहैत । एहि तरहें बहुत समय बीति गेल । नेताजी कैक बेर चुनाओ जीतलाह । सलाहकार सेहो बनलाह । किछुगोटेक भविष्य सेहो सचमुचमे बदलि गेलैक । मुदा अधिकांश जस-के-तस रहि गेल । चुनाओक समयमे नेताजीक चुनाओ दलक सक्रिय सदस्य बनि जाइत । किछु आमदनी सेहो कए लैत । चुनाओ खतम,बात खतम । संदीपो एही तरहक छल । ने नौकरी कए सकल,ने नेता बनि सकल । तथापि,नेताजीमे ओकर अटूट विश्वास बनल रहलैक । सालक -साल हुनका पाछू-पाछू घुमैत रहल । हुनकर हुकुम बजबैत रहल।

5

असलमे ओहिबेर नेताजीक स्थिति ठीक नहि छलैक । पछिला पाँच साल हिसाब चुकता करबाक हेतु इलाकाक जनतासभ प्रतिबद्ध छल । जकरे देखू सएह एतबे गप्प करैत सुनाइत-
"आओर जे होएत से होएत मुदा एही नेताकेँ हरेबाक अछि।"
"जरूर । परिवर्तन हेबाक चाही । जनतंत्रक माने सएह ने भेल । जे जनताक नहि सुनए, अपनेमे लागल रहए तकरा हटा दिअ। दोसरकेँ आनू, ओहो जँ ठीक नहि केलक तँ तेसरकेँ आनू । मतदाताकेँ एतेक शक्ति संविधानसँ प्राप्त छैहे ।"
"बात एतेक आसान नहि छैक जतेक बूझा रहल अछि । ई सभ बदमासक खान थिक । आब ओ समय नहि रहि गेल छैक। गुंडासभ नेताक पाछू-पाछू घुमैत छैक । एकटा इसारा चाही आ साफ । तखन की करब? कोट/ कचहरी दौड़िते रहि जाएब । नेताजीक खिलाफ केओ गबाह नहि भेटि सकत ।"
लोकसभ आपसमे एहि तरहें गप्प कइए रहल छल की कारसँ किछुगोटे ओतए पहुँचल । लोकक गप्प सुनि कार रूकल । कारसँ चारि-पाँचटा

मोचंड सन लोक बाहर निकलल आ बिना किछु कहने-सुनने लोकसभकेँ पिटनाइ शुरु कए देलक । कहि नहि ओ सभ अपन चाबुक कतए नुका कए रखने छल । कहबी छैक "मारिक डरे भूत पड़ाए ।" बात सएह भेल। दू-चारि सटका लगितहि सभ यत्र-तत्र भागल । केओ किछु नहि देखलक । ककरो ई साहस नहि भेलैक जे ओकरासभक हाथ पकड़ि लिअए ,किछु पूछि सकए ? मारि खाइत-खाइत ओ सभ बस जान बँचबएमे लागि गेल । भागल..। ओकरासभकेँ एना भागैत देखि सड़कपर एमहर-ओमहर ठाढ़ लोकसभ सेहो भागल । लगपाससँ अएनहिार लोकसभ सेहो भागल । केओ किछु नहि बूझि सकल,केओ किछु नहि पूछि सकल । बस आँखि मुनि कए भागैत रहल । किछुगोटेकेँ सक भेलैक जे भूकंप भए रहल अछि । ओ सभ चिकरए लागल-

"भूकंप. भूकंप ...भागू..!भागू...! "

ओ बदमाससभ हँसैत कार पर फेरसँ सबार भए गेल। संगमे एक-दूगोटेकेँ पकड़ने गेल । कार खुजल आ फुर्तीसँ ओहिठामसँ निकलि गेल ।

बदमाससभ दुनू गोटेकेँ लेने-देने नेताजी लग पहुँचि गेल । नेताजीकेँ देखितहि ओकरसभक सीटी-पीटी गुम्म पड़ि गेलैक ।

"की बात छैक? तोरासभकेँ कथीक परेसानी छह? "

"किछु नहि सरकार! "

"तखन जे अड़बड़ बाजि रहल छह तकर की हेबाक चाही? "

"गलती भए गेल सरकार! "

"मुदा आगू फेर तूँ सभ एना नहि करबह तकर कोन ठेकान? "

"कान पकड़ैत छी, घटी मंगैत छी। आब एहन नहि होएत।"

नेताजी इसारा केलखिन । बदमासभ दुनूगोटेकेँ तहखानामे लेने गेल । धराधर चमेटा लगबैत रहल । बाहर धरि ओकर प्रतिध्वनि सुना रहल छल । तकरबाद ओकरासभकेँ ओहीठाम हाथ-पैर बान्हि कए राखि देलक । बदमासभ बाहर निकलल आ तहखानामे ताला ठोकि देलक ।

नेताजी छलाह अनुभवी लोक । कोनो पहिल बेर चुनाओ नहि लड़ए जा रहल छलाह । घाट-घाटक पानि पीने छलाह । साम-दाम दंड,भेद जेना जे काबूमे आबए तेना तकरसँ निपटए जनैत छलाह। साँझमे जखन वापस घर अएलाह तँ ओ बदमाससभक संगे चोट्टे तहखाना दिस बढ़ि गेलाह ।

"चलह ओमहर। देखिऐक ओकर सभक आखिर की कहब छैक? "
"हमहु सएह कहए बला रही ।"
सभगोटे तहखानामे पैर रखैत छथि । नेताजीकेँ देखितहि ओ दुनूगोटे बफारि तोड़ए लागल । हाथ-पैर जोड़ि माफी मांगए लागल।
"आब एहन गलती नहि होएत । हमसभ सभदिन अहीं संगे रहलहुँ, अहीं बले जीलहुँ । एकटा मौका दिअ । हमसभ अहाँकेँ जीतेबाक हेतु फेरसँ जानक बाजी लगा देब । दिन-राति एक कए देब ।"
नेताजी ओकरसभक बात सुनि बदमाससभकेँ इसारा केलखिन ।
"रे! हिनका सभकेँ एहिठाम किएक अनलहुन? ई सभ तँ अपन खासम-खास छथिन । खबरदार! आगूसँ फेर एहन गलती करबैं तँ हमरासँ बेसी खराब आदमी केओ नहि होएत।"
"जी सरकार!"
बदमाससभ दुनूगोटेकेँ खोलि देलकैक । ओसभ बाहर आएल । बाहर अबितहि ओकरासभक जान मे जान आएल । तहखानासँ बाहर आएल तँ एकगोटे पुरी-तरकारी आ लड्डू लेने ठाढ़ रहैक । ओ सभ भुखल तँ छलहें । हाँइ-हाँइ खेलक,पानि पिलक आ चुपचाप अपन घरक रस्ता पकड़ि लेलक । नेताजी कहि नहि कोन बाटे निकलि कए निपत्ता भए गेलाह ।

-रबीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, बएस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: अड़ेर डीह, मातृक: सिन्घिआ ड्योढ़ी, वृति: भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्ष:२०१७ १.भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा),२. प्रसंगवश (निवंध), ३.स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्ष:२०१८ ४. फसाद (कथा संग्रह) ५. नमस्तस्यै (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०१९ ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२०

१३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)१५.ढहैत देबाल(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२१ १६.पाथेय(संस्मरण) १७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२२ १९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास) २१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास) २२.राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३.संयोग(कथा संग्रह) २४.नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास) २५.दीप जरैत रहए (उपन्यास)।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.पद्य खण्ड

३.१.राज किशोर मिश्र-फेर आएल जाढ़

३.१.राज किशोर मिश्र-फेर आएल जाढ़

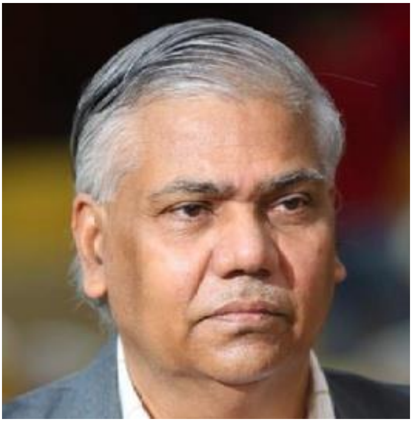

राज किशोर मिश्र, रिटायर्ड चीफ जेनरल मैनेजर (ई), बी.एस.एन.एल.(मुख्यालय), दिल्ली,गाम- अरेर डीह, पो. अरेर हाट, मधुबनी

फेर आएल जाढ़

फेरो गमकतै, गा छ
सि ङरहा र फूलक,
चम्पा , केओला ,किं वा
आनो एहि मूलक।

नेना -भुटका सभ गाँ ती बन्हतै,
नवका चा उरक भा त लो क रन्हतै।
भो र -साँ झ ओरि आओन घूरक ,
गप -छड़ा का बच्चा -बूढ़क।

गअओता बूढ़ा सभ, भो र परा ती ,
साँ झ, सका ले ,जरतै बा ती ।

ओढ़ना -सी रक सँ, झाँ पल देह,
जा ढ़क' ति क्तता सँ को न नेह?

शि शि रक' समर्थन मे धो न्हि आएल,
रौ दो ,ओहि मे जा कऽ सन्हि आएल।

बरखा मे ,रवि केँ झाँ पय लेल,
नभ मे मेघ सभ छल उगल,
मुदा , भेला ह मुक्त नहि , जा ढ़ो मे,
पृथ्वी क धो न्हि मे, छथि दुबकल।

रौ द कँपैत अछि जा ढ़ सँ,
का ॅं पि रहल अछि बसा त,
पा नि दुबकि क' सटल, जमल,
कँपैत अछि गा छ पर पा त।

ठंढ लगअओलक अपन जो र,
थरथरी धरो अओलक धरती के ॅं,
नि कलल अका सक' नो र , जा ढ़ सँ ,
भि जल तरु ,दूभि परती के ॅं।

धो न्हि अड़ल अछि बा ट पर,
रो कने लो कक अबरजा त,
दि न लगैछ अन्हा र सन,
बड़ी का ल बि तल ,भेला परा त।

पा नि मे नहि अछि बचल गर्मी ,
जा ढ़क डढ़ सँ ओहो जमत,
प्रकृति क सि नेह -उष्णता भेटतै,
तखन, अकड़पन ओकर कमत।

टङटुट्टा कुकुर रा ति मे कुहरै,
पड़ि रहल घूरक छा उर पर,
शी त कतेक तेज खसैत अछि ,
टप -टप खसैछ खम्हा उर पर।

साँ झे सँ नढ़ि आ भूकि रहल अछि ,
सुनैत अछि सभ ओकर गद्दह,
जा ढ़ कँपअओने छै ओकरा ,
हुआँ -हुआँ छै, ओकरे सद्यः ।

धा ह लेल ,चि ड़ै- चुनमुन सभ,
धुआँक करैछ ति रपेच्छन,
दुबकि जा इत अछि , जा ढ़क डऽढ़े,
खोँ ता मे, साँ झ पड़ैछ जखन।

नि र्धनक रा ति तऽ भेल पहा ड़,
ओढ़ना -बि स्तर, ना र -पो आर।

ओहि मे जँ सि हकल कनि को बसा त,
तऽ, तकैछ बा ट, हो उ को हुना परा त।

थरथरा इत छै ,देह गरी बक,
नि ष्ठुरे जा ढ़ संग छै मुदा जी बक'।

टि कटि कि आ सेहो भेल नि पत्ता ,
गेल ओ शय्या वि श्रा म पर,
तेआगल चलब -फि रब बेसी ,
ने देबा ल पर, ने खा म्ह पर।

थेथर जा ढ़क ,ता गति कँ,

बढ़ा रहल अछि रजनी ,
ने जा एत ता धरि , भेटतैक नहि ,
भो रहरबा सँ, मुहबजनी ।

शि शि र -रा ति आ धो न्हि कैँ ,
को नो सुरभि संधि छै सा इत,
शी तक पुरुषा र्थ बढ़ा बए लेल,
कऽ बैसा र , हो एत बति आइत।

कि ओक ने आएल अछि , मुदा
मर्त्य भुवन मे ,भऽ कऽ अमर,
जा ढ़ो जा एत, ओहो पड़ा एत,
करैत रहत ,एम्हर सँ ओम्हर।

फेर अओतैक जा ढ़ तकर,
एखने सँ कि ए, चि न्ता करू?
कँपकँपा रहल अछि ,ठंढ एखन ,
पहि ने तऽ ,ओहि सँ लड़ू।

चलि ते रहतैक एहि ना क',गरमी -बरखा -जा ढ़क क्रम,
जी तक जन्म, परा जय सँ, आ' बंधन मे , मो क्षक' जनम।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

४. अनुलग्नक (पृ. १-४३०)

१.विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक Videha e journal's all old issues (पृ. १-२९)

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download (पृ. ३०-८४)

३. मैथिली ऑडियो-वीडियोक संकलन Maithili Audios-Videos (पृ. ८५-९८)

४.मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्य Maithili Children Literature (पृ. ९९-११२)

५.विदेह स्त्री कोना (पृ. ११३-१२१)

६. विदेह ई-लर्निङ्ग (पृ. १२२-१३५)

७.विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण (including Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement) (पृ. १३६-२५८)

८.विदेह मिथिलाक खोज (पृ. २५९-२८५)

९.विदेह मिथिला रत्न (पृ. २८६-४३०)

१.विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक Videha e journal's all old issues

वि दे ह विदेह Videha विदेह http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search within Old Issues of Videha

https://books.google.com/

Videha Archive of Old Issues विदेह पुरान अंकक आर्काइव (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल) विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंकपर उपलब्ध अछि। All the old issues of Videha e journal are available for pdf download at the respective links below.

....

तिरहुता, नेवाड़ी आ कैथी फॉण्ट डाउनलोड Google’s Noto Fonts project/ GitHub

तिरहुता नोटो फॉण्ट	कैथी ओटीएफ	कैथी टीटीएफ	नेवाड़ी ओ.टी.एफ.	नेवाड़ी टी.टी.एफ.

https://fonts.google.com/ (Google Open Fonts download)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

https://malarproject.gitlab.io/tirhuta (Tirhuta Keyboard Online)

....

१

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

विदेह-सदेह १-२५ www.videha.co.in *विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३५० सँ- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन*	
देवनागरी	मिथिलाक्षर
विदेह:सदेह १	विदेह: सदेह १ तिरहुता
विदेह:सदेह २ मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना	विदेह: सदेह २ तिरहुता
विदेह:सदेह ३ मैथिली पद्य	विदेह: सदेह ३ तिरहुता
विदेह:सदेह ४ मैथिली कथा	विदेह: सदेह ४ तिरहुता
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]	विदेह: सदेह ५ तिरहुता
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]- संस्करण-२	विदेह: सदेह ५ संस्करण-२ तिरहुता
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]	विदेह: सदेह ६ तिरहुता
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]	विदेह: सदेह ७ तिरहुता
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]	विदेह: सदेह ८ तिरहुता

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]	विदेह: सदेह ९ तिरहुता
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]	विदेह: सदेह १० तिरहुता
विदेह:सदेह ११	विदेह: सदेह ११ तिरहुता
विदेह:सदेह १२	विदेह: सदेह १२ तिरहुता
विदेह:सदेह १३	विदेह: सदेह १३ तिरहुता
विदेह:सदेह १४	विदेह: सदेह १४ तिरहुता
विदेह:सदेह १५	विदेह: सदेह १५ तिरहुता
विदेह:सदेह १६	विदेह: सदेह १६ तिरहुता
विदेह:सदेह १७	विदेह: सदेह १७ तिरहुता
विदेह:सदेह १८	विदेह: सदेह १८ तिरहुता
विदेह:सदेह १९	विदेह: सदेह १९ तिरहुता
विदेह:सदेह २०	विदेह: सदेह २० तिरहुता
विदेह:सदेह २१	विदेह: सदेह २१ तिरहुता
विदेह:सदेह २२	विदेह: सदेह २२ तिरहुता
विदेह:सदेह २३	विदेह: सदेह २३ तिरहुता
विदेह:सदेह २४	विदेह: सदेह २४ तिरहुता
विदेह:सदेह २५	विदेह: सदेह २५ तिरहुता
विदेह-सदेह २६-३६ www.videha.co.in *विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३५०*	

सँ- थीम आधारित मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ मूल आ अनूदित गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन	
विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अरुण कुमार सिंह अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २६ तिरहुता
विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २७ तिरहुता
विदेह:सदेह २८ (अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २८ तिरहुता
विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २९ तिरहुता
विदेह:सदेह ३० (स्कूल-कॉलेजक विद्यार्थी लेल- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३० तिरहुता
विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३१ तिरहुता
विदेह:सदेह ३२ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३२ तिरहुता

विदेह:सदेह ३३ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-२- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३३ तिरहुता
विदेह:सदेह ३४ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-३- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३४ तिरहुता
विदेह:सदेह ३५ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-४- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३५ तिरहुता
विदेह:सदेह ३६ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३६ तिरहुता

....

यू.पी.एस.सी. आ आन प्रतियोगिता परीक्षा लेल देखू:

विदेह:सदेह १७	विदेह:सदेह २१	विदेह:सदेह २३	विदेह:सदेह २६	विदेह:सदेह २९
विदेह:सदेह ३०	विदेह:सदेह ३२	विदेह:सदेह ३३	विदेह:सदेह ३४	विदेह:सदेह ३५

....

२

विदेहक सभटा पुरान अंक (अंक १ सँ ३५४ आ आगाँ)

विदेहक अंक १-१४९ (देवनागरी, मिथिलाक्षर आ ब्रेलमे)

देवनागरी	मिथिलाक्षर	ब्रेल
Videha_01_01_08	Videha_01_01_08_Tirhuta	1

Videha_15_01_08	Videha_15_01_08_Tirhuta	2
Videha_01_02_08	Videha_01_02_08_Tirhuta	3
Videha_15_02_08	Videha_15_02_08_Tirhuta	4
Videha_01_03_08	Videha_01_03_08_Tirhuta	5
Videha_15_03_08	Videha_15_03_08_Tirhuta	6
Videha_01_04_2008	Videha_01_04_2008_Tirhuta	7
Videha_15_04_2008	Videha_15_04_2008_Tirhuta	8
Videha_01_05_2008	Videha_01_05_2008_Tirhuta	9
Videha_15_05_2008	Videha_15_05_2008_Tirhuta	10
Videha_01_06_2008	Videha_01_06_2008_Tirhuta	11
Videha_15_06_2008	Videha_15_06_2008_Tirhuta	12
Videha_01_07_2008	Videha_01_07_2008_Tirhuta	13
Videha_15_07_2008	Videha_15_07_2008_Tirhuta	14
Videha_01_08_2008	Videha_01_08_2008_Tirhuta	15
Videha_15_08_2008	Videha_15_08_2008_Tirhuta	16
Videha_01_09_2008	Videha_01_09_2008_Tirhuta	17
Videha_15_09_2008	Videha_15_09_2008_Tirhuta	18
Videha_01_10_2008	Videha_01_10_2008_Tirhuta	19
Videha_15_10_2008	Videha_15_10_2008_Tirhuta	20

Videha_01_11_2008	Videha_01_11_2008_Tirhuta	21
Videha_15_11_2008	Videha_15_11_2008_Tirhuta	22
Videha_01_12_2008	Videha_01_12_2008_Tirhuta	23
Videha_15_12_2008	Videha_15_12_2008_Tirhuta	24
Videha_01_01_2009	Videha_01_01_2009_Tirhuta	25
Videha_15_01_2009	Videha_15_01_2009_Tirhuta	26
Videha_01_02_2009	Videha_01_02_2009_Tirhuta	27
Videha_15_02_2009	Videha_15_02_2009_Tirhuta	28
Videha_01_03_2009	Videha_01_03_2009_Tirhuta	29
Videha_15_03_2009	Videha_15_03_2009_Tirhuta	30
Videha_01_04_2009	Videha_01_04_2009_Tirhuta	31
Videha_15_04_2009	Videha_15_04_2009_Tirhuta	32
Videha_01_05_2009	Videha_01_05_2009_Tirhuta	33
Videha_15_05_2009	Videha_15_05_2009_Tirhuta	34
Videha_01_06_2009	Videha_01_06_2009_Tirhuta	35
Videha_15_06_2009	Videha_15_06_2009_Tirhuta	36
Videha_01_07_2009	Videha_01_07_2009_Tirhuta	37
Videha_15_07_2009	Videha_15_07_2009_Tirhuta	38
videha_01_08_2009	videha_01_08_2009_tirhuta	39

videha_15_08_2009	videha_15_08_2009_tirhuta	40
videha_01_09_2009	videha_01_09_2009_tirhuta	41
videha_15_09_2009	videha_15_09_2009_tirhuta	42
videha_01_10_2009	videha_01_10_2009_tirhuta	43
videha_15_10_2009	videha_15_10_2009_tirhuta	44
videha_01_11_2009	videha_01_11_2009_tirhuta	45
videha_15_11_2009	videha_15_11_2009_tirhuta	46
videha_01_12_2009	videha_01_12_2009_tirhuta	47
videha_15_12_2009	videha_15_12_2009_tirhuta	48
videha_01_01_2010	videha_01_01_2010_tirhuta	49
videha_15_01_2010	videha_15_01_2010_tirhuta	50
videha_01_02_2010	videha_01_02_2010_tirhuta	51
videha_15_02_2010	videha_15_02_2010_tirhuta	52
videha_01_03_2010	videha_01_03_2010_tirhuta	53
videha_15_03_2010	videha_15_03_2010_tirhuta	54
videha_01_04_2010	videha_01_04_2010_tirhuta	55
videha_15_04_2010	videha_15_04_2010_tirhuta	56
videha_01_05_2010	videha_01_05_2010_tirhuta	57
videha_15_05_2010	videha_15_05_2010_tirhuta	58

videha_01_06_2010	videha_01_06_2010_tirhuta	59
videha_15_06_2010	videha_15_06_2010_tirhuta	60
videha_01_07_2010	videha_01_07_2010_tirhuta	61
videha_15_07_2010	videha_15_07_2010_tirhuta	62
videha_01_08_2010	videha_01_08_2010_tirhuta	63
videha_15_08_2010	videha_15_08_2010_tirhuta	64
videha_01_09_2010	videha_01_09_2010_tirhuta	65
videha_15_09_2010	videha_15_09_2010_tirhuta	66
videha_01_10_2010	videha_01_10_2010_tirhuta	67
videha_15_10_2010	videha_15_10_2010_tirhuta	68
videha_01_11_2010	videha_01_11_2010_tirhuta	69
videha_15_11_2010	videha_15_11_2010_tirhuta	70
videha_01_12_2010	videha_01_12_2010_tirhuta	71
videha_15_12_2010	videha_15_12_2010_tirhuta	72
videha_01_01_2011	videha_01_01_2011_tirhuta	73
videha_15_01_2011	videha_15_01_2011_tirhuta	74
videha_01_02_2011	videha_01_02_2011_tirhuta	75
videha_15_02_2011	videha_15_02_2011_tirhuta	76
videha_01_03_2011	videha_01_03_2011_tirhuta	77

videha_15_03_2011	videha_15_03_2011_tirhuta	78
videha_01_04_2011	videha_01_04_2011_tirhuta	79
videha_15_04_2011	videha_15_04_2011_tirhuta	80
videha_01_05_2011	videha_01_05_2011_tirhuta	81
videha_15_05_2011	videha_15_05_2011_tirhuta	82
videha_01_06_2011	videha_01_06_2011_tirhuta	83
videha_15_06_2011	videha_15_06_2011_tirhuta	84
videha_01_07_2011	videha_01_07_2011_tirhuta	85
videha_15_07_2011	videha_15_07_2011_tirhuta	86
videha_01_08_2011	videha_01_08_2011_tirhuta	87
videha_15_08_2011	videha_15_08_2011_tirhuta	88
videha_01_09_2011	videha_01_09_2011_tirhuta	89
videha_15_09_2011	videha_15_09_2011_tirhuta	90
videha_01_10_2011	videha_01_10_2011_tirhuta	91
videha_15_10_2011	videha_15_10_2011_tirhuta	92
videha_01_11_2011	videha_01_11_2011_tirhuta	93
videha_15_11_2011	videha_15_11_2011_tirhuta	94
videha_01_12_2011	videha_01_12_2011_tirhuta	95
videha_15_12_2011	videha_15_12_2011_tirhuta	96

videha_01_01_2012	videha_01_01_2012_tirhuta	97
videha_15_01_2012	videha_15_01_2012_tirhuta	98
videha_01_02_2012	videha_01_02_2012_tirhuta	99
videha_15_02_2012	videha_15_02_2012_tirhuta	100
videha_01_03_2012	videha_01_03_2012_tirhuta	101
videha_15_03_2012	videha_15_03_2012_tirhuta	102
videha_01_04_2012	videha_01_04_2012_tirhuta	103
videha_15_04_2012	videha_15_04_2012_tirhuta	104
videha_01_05_2012	videha_01_05_2012_tirhuta	105
videha_15_05_2012	videha_15_05_2012_tirhuta	106
videha_01_06_2012	videha_01_06_2012_tirhuta	107
videha_15_06_2012	videha_15_06_2012_tirhuta	108
videha_01_07_2012	videha_01_07_2012_tirhuta	109
videha_15_07_2012	videha_15_07_2012_tirhuta	110
videha_01_08_2012	videha_01_08_2012_tirhuta	111
videha_15_08_2012	videha_15_08_2012_tirhuta	112
videha_01_09_2012	videha_01_09_2012_tirhuta	113
videha_15_09_2012	videha_15_09_2012_tirhuta	114
videha_01_10_2012	videha_01_10_2012_tirhuta	115

videha_15_10_2012	videha_15_10_2012_tirhuta	116
videha_01_11_2012	videha_01_11_2012_tirhuta	117
videha_15_11_2012	videha_15_11_2012_tirhuta	118
videha_01_12_2012	videha_01_12_2012_tirhuta	119
videha_15_12_2012	videha_15_12_2012_tirhuta	120
videha_01_01_2013	videha_01_01_2013_tirhuta	121
videha_15_01_2013	videha_15_01_2013_tirhuta	122
videha_01_02_2013	videha_01_02_2013_tirhuta	123
videha_15_02_2013	videha_15_02_2013_tirhuta	124
videha_01_03_2013	videha_01_03_2013_tirhuta	125
videha_15_03_2013	videha_15_03_2013_tirhuta	126
videha_01_04_2013	videha_01_04_2013_tirhuta	127
videha_15_04_2013	videha_15_04_2013_tirhuta	128
videha_01_05_2013	videha_01_05_2013_tirhuta	129
videha_15_05_2013	videha_15_05_2013_tirhuta	130
videha_01_06_2013	videha_01_06_2013_tirhuta	131
videha_15_06_2013	videha_15_06_2013_tirhuta	132
videha_01_07_2013	videha_01_07_2013_tirhuta	133
videha_15_07_2013	videha_15_07_2013_tirhuta	134

videha_01_08_2013	videha_01_08_2013_tirhuta	135
videha_15_08_2013	videha_15_08_2013_tirhuta	136
videha_01_09_2013	videha_01_09_2013_tirhuta	137
videha_15_09_2013	videha_15_09_2013_tirhuta	138
videha_01_10_2013	videha_01_10_2013_tirhuta	139
videha_15_10_2013	videha_15_10_2013_tirhuta	140
videha_01_11_2013	videha_01_11_2013_tirhuta	141
videha_15_11_2013	videha_15_11_2013_tirhuta	142
videha_01_12_2013	videha_01_12_2013_tirhuta	143
videha_15_12_2013	videha_15_12_2013_tirhuta	144
videha_01_01_2014	videha_01_01_2014_tirhuta	145
videha_15_01_2014	videha_15_01_2014_tirhuta	146
videha_01_02_2014	videha_01_02_2014_tirhuta	147
videha_15_02_2014	videha_15_02_2014_tirhuta	148
videha_01_03_2014	videha_01_03_2014_tirhuta	149

विदेहक अंक १५०-३४४

VIDEHA_150	VIDEHA_151	VIDEHA_152	VIDEHA_153	VIDEHA_154
VIDEHA_155	VIDEHA_156	VIDEHA_157	VIDEHA_158	VIDEHA_159
VIDEHA_160	VIDEHA_161	VIDEHA_162	VIDEHA_163	VIDEHA_164

VIDEHA_165	VIDEHA_166	VIDEHA_167	VIDEHA_168	VIDEHA_169
VIDEHA_170	VIDEHA_171	VIDEHA_172	VIDEHA_173	VIDEHA_174
VIDEHA_175	VIDEHA_176	VIDEHA_177	VIDEHA_178	VIDEHA_179
VIDEHA_180	VIDEHA_181	VIDEHA_182	VIDEHA_183	VIDEHA_184
VIDEHA_185	VIDEHA_186	VIDEHA_187	VIDEHA_188	VIDEHA_189
VIDEHA_190	VIDEHA_191	VIDEHA_192	VIDEHA_193	VIDEHA_194
VIDEHA_195	VIDEHA_196	VIDEHA_197	VIDEHA_198	VIDEHA_199
VIDEHA_200	VIDEHA_201	VIDEHA_202	VIDEHA_203	VIDEHA_204
VIDEHA_205	VIDEHA_206	VIDEHA_207	VIDEHA_208	VIDEHA_209
VIDEHA_210	VIDEHA_211	VIDEHA_212	VIDEHA_213	VIDEHA_214
VIDEHA_215	VIDEHA_216	VIDEHA_217	VIDEHA_218	VIDEHA_219
VIDEHA_220	VIDEHA_221	VIDEHA_222	VIDEHA_223	VIDEHA_224
VIDEHA_225	VIDEHA_226	VIDEHA_227	VIDEHA_228	VIDEHA_229
VIDEHA_230	VIDEHA_231	VIDEHA_232	VIDEHA_233	VIDEHA_234
VIDEHA_235	VIDEHA_236	VIDEHA_237	VIDEHA_238	VIDEHA_239
VIDEHA_240	VIDEHA_241	VIDEHA_242	VIDEHA_243	VIDEHA_244
VIDEHA_245	VIDEHA_246	VIDEHA_247	VIDEHA_248	VIDEHA_249
VIDEHA_250	VIDEHA_251	VIDEHA_252	VIDEHA_253	VIDEHA_254
VIDEHA_255	VIDEHA_256	VIDEHA_257	VIDEHA_258	VIDEHA_259
VIDEHA_260	VIDEHA_261	VIDEHA_262	VIDEHA_263	VIDEHA_264
VIDEHA_265	VIDEHA_266	VIDEHA_267	VIDEHA_268	VIDEHA_269

VIDEHA_270	VIDEHA_271	VIDEHA_272	VIDEHA_273	VIDEHA_274
VIDEHA_275	VIDEHA_276	VIDEHA_277	VIDEHA_278	VIDEHA_279
VIDEHA_280	VIDEHA_281	VIDEHA_282	VIDEHA_283	VIDEHA_284
VIDEHA_285	VIDEHA_286	VIDEHA_287	VIDEHA_288	VIDEHA_289
VIDEHA_290	VIDEHA_291	VIDEHA_292	VIDEHA_293	VIDEHA_294
VIDEHA_295	VIDEHA_296	VIDEHA_297	VIDEHA_298	VIDEHA_299
VIDEHA_300	VIDEHA_301	VIDEHA_302	VIDEHA_303	VIDEHA_304
VIDEHA_305	VIDEHA_306	VIDEHA_307	VIDEHA_308	VIDEHA_309
VIDEHA_310	VIDEHA_311	VIDEHA_312	VIDEHA_313	VIDEHA_314
VIDEHA_315	VIDEHA_316	VIDEHA_317	VIDEHA_318	VIDEHA_319
VIDEHA_320	VIDEHA_321	VIDEHA_322	VIDEHA_323	VIDEHA_324
VIDEHA_325	VIDEHA_326	VIDEHA_327	VIDEHA_328	VIDEHA_329
VIDEHA_330	VIDEHA_331	VIDEHA_332	VIDEHA_333	VIDEHA_334
VIDEHA_335	VIDEHA_336	VIDEHA_337	VIDEHA_338	VIDEHA_339
VIDEHA_340	VIDEHA_341	VIDEHA_342	VIDEHA_343	VIDEHA_344

विदेहक सभ अंक सम्बन्धी किछु आवश्यक पोथी/ जानकारी

Learn Maithili Sign Language- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

Learn Mithilakshar- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn IPA through Mithilakshar- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Braille through Mithilakshar- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

Learn Kaithi- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

कैथी लिपि (मैथिली साहित्य संस्थान डाउनलोड लिंक)

Learn Newari- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Calligraphic Newari (Ranjana)- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Urdu Script- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Tibetan Script- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Japanese Script for Haiku- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Brahmi- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Kharoshthi- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

स्थायी स्तम्भ जेना मिथिला-रत्न, मिथिलाक खोज, विदेह ई-लर्निङ्ग, विदेह स्त्री-कोना, विदेह पेटार (विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक; विदेह पोथी डाउनलोड; विदेह मैथिली ऑडियो-वीडियोक संकलन आ विदेह शिशु, बाल आ किशोर साहित्य) आ सूचना-संपर्क-अन्वेषण (including Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement) सभ अंकमे समान अछि, तइ हेतु ई सभ स्तम्भ सभ अंकमे नै देल जाइत अछि, ई सभ स्तम्भ देखबा लेल क्लिक करू विदेहक ३४६ म, ३४७ म, ३६६ म आ ३७२ म अंक। ऐ चारू अंकमे सम्मिलित रूपेँ ई सभ स्तम्भ देल गेल अछि।

विदेहक ३४५म आ आगाँक अंक

देवनागरी	मिथिलाक्षर	आइ.पी.ए.	मैथिली ब्रेल
VIDEHA_345	VIDEHA_345_Tirhuta	VIDEHA_345_IPA	VIDEHA_345_Braille
VIDEHA_346	VIDEHA_346_Tirhuta	VIDEHA_346_IPA	VIDEHA_346_Braille
VIDEHA_347	VIDEHA_347_Tirhuta	VIDEHA_347_IPA	VIDEHA_347_Braille
VIDEHA_348	VIDEHA_348_Tirhuta	VIDEHA_348_IPA	VIDEHA_348_Braille
VIDEHA_349	VIDEHA_349_Tirhuta	VIDEHA_349_IPA	VIDEHA_349_Braille

देवनागरी	मिथिलाक्षर	आइ.पी.ए.	मैथिली ब्रेल	कैथी

VIDEHA_350	VIDEHA_350_Tirhuta	VIDEHA_350_IPA	VIDEHA_350_Braille	VIDEHA_350_KAITHI
VIDEHA_351	VIDEHA_351_Tirhuta	VIDEHA_351_IPA	VIDEHA_351_Braille	VIDEHA_351_KAITHI
VIDEHA_352	VIDEHA_352_Tirhuta	VIDEHA_352_IPA	VIDEHA_352_Braille	VIDEHA_352_KAITHI
VIDEHA_353	VIDEHA_353_Tirhuta	VIDEHA_353_IPA	VIDEHA_353_Braille	VIDEHA_353_KAITHI
VIDEHA_354	VIDEHA_354_Tirhuta	VIDEHA_354_IPA	VIDEHA_354_Braille	VIDEHA_354_KAITHI

नागरी	तिरहुता	आइपीए	ब्रेल	कैथी	रंजना	नेवाड़ी	खरोष्ठी	ब्राह्मी
355	Tirhu	IPA	Brail	KAI	Ran	Newa	Kharo	Brahmi

नागरी	तिरहुता	कैथी	रंजना	प्रचलित	ब्राह्मी	IPA	ब्रेल	खरोष्ठी	उर्दू	तिब्बती	तिब्बती-उमे
356	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	खरोष्ठी	उर्दू	Tib	Ume
357	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	खरोष्ठी	उर्दू	Tib	Ume

नागरी	तिरहुता	कैथी	रंजना	प्रचलित	ब्राह्मी	IPA	ब्रेल	तिब्बती	तिब्बती-उमे
358	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	Tib	Ume
359	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	Tib	Ume
360	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	Tib	Ume

नागरी	तिरहुता	कैथी	नेवाड़ी	आइ.पी.ए.	ब्रेल
361	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
362	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
363	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
364	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
365	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
366	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille

367	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
368	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
369	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
370	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
371	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille

....

३

विदेहक विशेषांक

१) हाइकू विशेषांक

Videha_15_06_2008	Videha_15_06_2008_Tirhuta	12

२) गजल विशेषांक

Videha_01_11_2008	Videha_01_11_2008_Tirhuta	21

३) विहनि कथा विशेषांक

videha_01_10_2010	videha_01_10_2010_tirhuta	67

४) बाल साहित्य विशेषांक

videha_15_11_2010	videha_15_11_2010_tirhuta	70

५) नाटक विशेषांक

videha_15_12_2010	videha_15_12_2010_tirhuta	72

६) समीक्षा विशेषांक

videha_15_01_2011	videha_15_01_2011_tirhuta	74

७) नारी विशेषांक

videha_01_03_2011	videha_01_03_2011_tirhuta	77

८) अनुवाद विशेषांक (गद्य-पद्य भारती)

videha_01_01_2012	videha_01_01_2012_tirhuta	97

९) बाल गजल विशेषांक

videha_01_08_2012	videha_01_08_2012_tirhuta	111

१०) भक्ति गजल विशेषांक

videha_15_03_2013	videha_15_03_2013_tirhuta	126

११) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक

videha_15_11_2013	videha_15_11_2013_tirhuta	142

१२) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक

Videha_01_01_2015

१३) अरविन्द ठाकुर विशेषांक

Videha_01_11_2015

स्वतंत्रचेता- अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (सम्पादक आशीष अनचिन्हार) [विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांकक प्रिण्ट रूप]

१४) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

Videha_01_12_2015

१५) विदेह सम्मान विशेषांक

विदेह सम्मान: सम्मान-सूची (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

साक्षात्कार/ समारोह

साक्षात्कार	videha_15_12_2011	videha_15_01_2012	videha_01_02_2012	videha_01_03_2012
videha_01_09_2012	videha_15_01_2013	videha_01_03_2013	Videha_15_04_2016	Videha_01_07_2016

१६) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक

Videha_01_01_2017

१७) मैथिली वेब पत्रकारिता विशेषांक

VIDEHA_313

१८) मैथिली बीहनि कथा विशेषांक-२

VIDEHA_317

१९) रामलोचन ठाकुर विशेषांक

VIDEHA_319

२०) रामलोचन ठाकुर श्रद्धांजलि विशेषांक

VIDEHA_320

२१) राजनन्दन लाल दास विशेषांक

VIDEHA_333

२२) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

VIDEHA_348	VIDEHA_348_Tirhuta	VIDEHA_348_IPA	VIDEHA_348_Braille

२३) केदार नाथ चौधरी विशेषांक

VIDEHA_352	VIDEHA_352_Tirhuta	VIDEHA_352_IPA	VIDEHA_352_Braille	VIDEHA_352_KAITHI

२४) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक

Videha_357	Videha_357_Tirhuta

२५) शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

Videha_358	Videha_358_Tirhuta

२६) कला-विमर्श विशेषांक (सन्दर्भ- संजू दास, कृष्ण कुमार कश्यप, शशिबाला, एस.सी.सुमन आ श्वेता झा चौधरी)

Videha_368	Videha_368_Tirhuta

२७) रचनाकार अशोक विशेषांक

Videha_369	Videha_369_Tirhuta

२७) राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक

Videha_370	Videha_370_Tirhuta

२८) मिथिला स्टूडेण्ट यूनियन (एम.एस.यू.) विशेषांक

Videha_371	Videha_371_Tirhuta

....

४

लेखकक आमंत्रित रचना आ ओइपर आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीज

१.कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

२.जगदानन्द झा "मनु"क "माटिक बासन"पर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_353

३.मुन्नी कामतक एकांकी "जिन्दगीक मोल" आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_354

४.कपिलेश्वर राउतक ५ टा कथा आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_356

५.उमेश मण्डलक ५ टा कथा आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Videha_357

६.राम विलास साहुक ५ टा कथा आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Videha_358

७.नित नवल सुभाष चन्द्र यादव- सुभाष चन्द्र यादवक समस्त साहित्य आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

नित_नवल_सुभाष_चन्द्र_यादव

नित_नवल_सुभाष_चन्द्र_यादव_(मिथिलाक्षर)

८.राजदेव मण्डलक साहित्यपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Rajdeo Mandal- Maithili Writer

९.आचार्य रामानन्द मण्डलक ५ टा कथा आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Videha_360

१०.नन्द विलास रायक चारिटा कथा आ एकटा एकांकी आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Videha_361

११.जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

JAGDISH PRASAD MANDAL- Maithili Writer

१२.दुर्गानन्द मण्डलक पाँचटा कथा आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Videha_363

१३.नारायण यादवक पाँचटा कथा आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Videha_364

१४. नित नवल दिनेश कुमार मिश्र- दिनेश कुमार मिश्रक समस्त लेखन आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (जारी)

१५. नित नवल सुशील- सुशीलक समस्त साहित्य आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

नित नवल सुशील (जारी)

....

५

"पाठक हमर पोथी किए पढ़थि"- लेखक द्वारा अप्पन पोथी/ रचनाक समीक्षा सीरीज

१. आशीष अनचिन्हार ०१ अगस्त २०२१

१.(a) आशीष अनचिन्हार ०१ मार्च २०२३

२. गजेन्द्र ठाकुर ०१ सितम्बर २०२२

....

६

एडिटर्स चोइस सीरीज

एडिटर्स चोइस सीरीज-१

विदेहमे बलात्कारपर मैथिलीमे पहिल कविता प्रकाशित भेल छल। ई दिसम्बर २०१२ क दिल्लीक निर्भया बलात्कार काण्डक बादक समय छल। ओना ई अनूदित रचना छल, तेलुगुमे पसुपुलेटी गीताक कविताक हिन्दी अनुवाद केने छलीह आर. शांता सुन्दरी आ हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद केने छलाह विनीत उत्पल। हमर जानकारीमे ऐसँ बेशी सिहराबैबला कविता ऐ विषयपर कोनो भाषामे नै रचल गेल अछि। कताक सालक बादो ई समस्या ओहने अछि। ई कविता सभकेँ पढ़बाक चाही, खास कऽ सभ बेटीक बापकेँ, सभ बहिनक भाएकेँ आ सभ पत्नीक पतिकेँ। आ विचारबाक चाही जे हम सभ अपना बच्चा सभ लेल केहन समाज बनेने छी।

एडिटर्स चोइस सीरीज-१ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-२

विदेहमे ब्रेस्ट कैसरक समस्यापर विदेह मे मीना झा केर एकटा लघु कथा प्रकाशित भेल। ई मैथिलीक पहिल कथा छल जे ब्रेस्ट कैसर पर लिखल गेल। हिन्दीमे सेहो ताधरि ऐ विषयपर कथा नै लिखल गेल छल, कारण ऐ कथाक ई-प्रकाशित भेलाक १-२ सालक बाद हिन्दीमे दू गोटेमे घोंघाउज भऽ रहल छल कि पहिल हम आकि हम, मुदा दुनूक तिथि मैथिलीक कथाक परवर्ती छल। बादमे ई विदेह लघु कथामे सेहो संकलित भेल।

एडिटर्स चोइस सीरीज-२ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-३

विदेहमे जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक किछु बाल कविता प्रकाशित भेल। बादमे हुनकर ३ टा बाल कविता विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल जइमे २ टा कविता बेबी चाइल्डपर छल। पढ़ू ई तीनू कविता, बादक दुनू बेबी चाइल्डपर लिखल कविता पढ़बे टा करू से आग्रह।

एडिटर्स चोइस सीरीज-३ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-४

विदेहमे जगदानन्द झा "मनु"क एकटा दीर्घ बाल कथा कहि लिअ बा उपन्यास प्रकाशित भेल, नाम छल चोनहा। बादमे ई रचना विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल, ई रचना बाल मनोविज्ञानपर आधारित मैथिलीक पहिल रचना छी, मैथिली बाल साहित्य कोना लिखी तकर ट्रेनिंग कोर्समे ऐ उपन्यासकेँ राखल जेबाक चाही। कोना मॉडर्न उपन्यास आगाँ बढ़ै छै, स्टेप बाइ स्टेप आ सेहो बाल उपन्यास। पढ़बे टा करू से आग्रह।

एडिटर्स चोइस सीरीज-४ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-५

एडिटर्स चोइस ५ मे मैथिलीक "उसने कहा था" माने कुमार पवनक दीर्घकथा "पइठ" (साभार अंतिका) । हिन्दीक पाठक, जे "उसने कहा था" पढ़ने हेता, कैँ बुझल छन्हि जे कोना अहि कथाकैँ रचि चन्द्रधर शर्मा "गुलेरी" अमर भऽ गेलाह। हम चर्चा कऽ रहल छी, कुमार पवनक "पइठ" दीर्घकथाक। एकरा पढ़लाक बाद अहाँकैँ एकटा विचित्र, सुखद आ मोन हौल करैबला अनुभव भेटत, जे सेक्सपीरिअन ट्रेजेडी सँ मिलितो लागत आ फराको। मुदा ऐ रचनाकैँ पढ़लाक बाद तामस, घृणा सभपर नियंत्रणकैँ आ सामाजिक/ पारिवारिक दायित्वकैँ सेहो अहाँ आर गंभीरतासँ लेबै, से धरि पक्का अछि। मुदा एकर एकटा शर्त अछि जे एकरा समै निकालि कऽ एक्के उखड़ाहामे पढ़ि जाइ।

एडिटर्स चोइस सीरीज-५ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-६

जगदीश प्रसाद मण्डलक लघुकथा "बिसाँढ़": १९४२-४३ क अकालमे बंगालमे १५ लाख लोक मुइला, मुदा अमर्त्य सेन लिखैत छथि जे हुनकर कोनो सर-सम्बन्धी ऐ अकालमे नै मरलन्हि। मिथिलोमे अकाल आएल १९६७ ई. मे आ इन्दिरा गाँधी जखन ऐ क्षेत्र अएली तँ हुनका देखाओल गेल जे कोना मुसहर जातिक लोक बिसाँढ़ खा कऽ ऐ अकालकैँ जीति लेलन्हि। मैथिलीमे लेखनक एकभगाह स्थिति विदेहक आगमनसँ पहिने छल। मैथिलीक लेखक लोकनि सेहो अमर्त्य सेन जेकाँ ओहि महाविभीषिकासँ प्रभावित नै छला आ तेँ बिसाँढ़पर कथा नै लिखि सकला। जगदीश प्रसाद मण्डल ऐपर कथा लिखलन्हि जे प्रकाशित भेल चेतना

समितिक पत्रिकामे, मुदा कार्यकारी सम्पादक द्वारा वर्तनी परिवर्तनक कारण ओ मैथिलीमे नै वरण् अवहट्ठमे लिखल बुझा पड़ल, आ ओतेक प्रभावी नै भऽ सकल कारण विषय रहै खाँटी आ वर्तनी कृत्रिम। से एकर पुनः ई-प्रकाशन अपन असली रूपमे भेल विदेहमे आ ई संकलित भेल "गामक जिनगी" लघुकथा संग्रहमे। ऐ पोथीपर जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ टैगोर लिटरेचर अवार्ड भेटलनि। जगदीश प्रसाद मण्डलक लेखनी मैथिली कथाधाराकेँ एकभगाह हेबासँ बचा लेलक, आ मैथिलीक समानान्तर इतिहासमे मैथिली साहित्यकेँ दू कालखण्डमे बाँटि कऽ पढ़ए जाए लागल- जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व आ जगदीश प्रसाद मण्डल आगमनक बाद। तँ प्रस्तुत अछि लघुकथा बिसाँढ़- अपन सुच्चा स्वरूपमे।

<u>एडिटर्स चोइस सीरीज-६</u> (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-७

मैथिलीक पहिल आ एकमात्र दलित आत्मकथा: सन्दीप कुमार साफी। सन्दीप कुमार साफीक दलित आत्मकथा जे अहाँकेँ अपन लघु आकाराक अछैत हिलोड़ि देत आ अहाँक ई स्थिति कऽ देत जे समानान्तर मैथिली साहित्य कतबो पढ़ू अहाँकेँ अछौं नै हएत। ई आत्मकथा विदेहमे ई-प्रकाशित भेलाक बाद लेखकक पोथी "बैशाखमे दलानपर"मे संकलित भेल आ ई मैथिलीक अखन धरिक एकमात्र दलित आत्मकथा थिक। तँ प्रस्तुत अछि मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा: सन्दीप कुमार साफीक कलमसँ।

<u>एडिटर्स चोइस सीरीज-७</u> (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-८

नेना भुटकाकेँ रातिमे सुनेबा लेल किछु लोककथा (विदेह पेटारसँ)।

एडिटर्स चोइस सीरीज-८ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-९

मैथिली गजलपर परिचर्चा (विदेह पेटारसँ)।

एडिटर्स चोइस सीरीज-९ (डाउनलोड लिंक)

....

विदेह सम्मान: सम्मान-सूची (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा

एक उखड़ाहामे उनटा-पुनटा दियौ, ततबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीडिंग दोसर-उखड़ाहामे करथि|

IGNOU इग्नू BMAF-001

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

विदेह पोथी

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search for Books (including Audio-Visual & Sign Language) relating to Mithila/ Maithili

https://books.google.com/

Videha Archive of Maithili Books विदेह मैथिली पोथीक आर्काइव (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल) सभ पोथी पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंक सभपर उपलब्ध अछि। All the books are available for pdf download at the respective links below

....

तिरहुता, नेवाड़ी आ कैथी फॉण्ट डाउनलोड Google’s Noto Fonts project/ GitHub

तिरहुता नोटो फॉण्ट	कैथी ओटीएफ	कैथी टीटीएफ	नेवाड़ी ओ.टी.एफ.	नेवाड़ी टी.टी.एफ.

https://fonts.google.com/ (Google Open Fonts download)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

https://malarproject.gitlab.io/tirhuta (Tirhuta Keyboard Online)

....

बौद्ध चर्यापद

चर्यापद

महाकवि डाक

डाकवचन

ज्योतिरीश्वर ठाकुर

मैथिली धूर्तसमागम

विद्यापति

व्याडीभक्ति तरङ्गिणी

गोरक्षविजयम्

शंकरदेव

पारिजातहरण

रामविजय

दैत्यारि ठाकुर

श्यामंत हरण यात्रा (अंकिया नाट)

लक्ष्मीदेव

कुमारहरण नाट शत स्कंध रावण वध (अंकिया नाट)

जगत्प्रकाशमल्ल

प्रभावतीहरण नाटक

सिद्ध नरसिंहमल्ल

गीतावली सिद्धि

जगत्ज्योतिर्मल्ल

हरगौरी विवाह नाटक कुञ्जविहार नाटक

हर्षनाथ झा

माधवानन्द नाटक

उषाहरण

हर्षनाथ काव्यग्रन्थावली (संकलन अमरनाथ झा १८९७-१९५५)

रत्नपाणि

उषाहरण नाटक

श्रीकांत

श्रीकृष्ण जन्म रहस्य

नन्दीपति

कृष्णकेलिमाला

गीतमाला

कान्हा रामदास

गौरीस्वयंवर

लाल

गौरीस्वयंवर नाटक

उमापति

पारिजात हरण

भानुनाथ

प्रभावती हरण

देवानन्द

उषाहरण

रमापति

रुक्मणी परिचय

उपाध्याय रामदास

आनन्द विजयाभिदान नाटिका

शिवदत्त

गौरीपरिणय सीतास्वयंवर दुर्गाविजय

पारिजात नाटक

....

कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा (बाल साहित्य केन्द्रित) मेंहथमे भेल ८२ म सगर राति दीप जरयमे पठित कथा सभक संकलन

कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा

सखुआवाली (नारी विमर्श केन्द्रित) भपटियाहीमे भेल ८३ म सगर राति दीप जरयमे पठित कथा सभक संकलन

सखुआवाली

सर जी. ए. ग्रियर्सन (१८५१-१९४१)

मैथिली ग्रामर

मैथिली क्रेस्टोमेथी एण्ड वोकाबुलेरी

मुंशी रघुनन्दन दास (१८६०-१९४५) (सौजन्य- राधाकृष्णन् दास)

सुभद्रा हरण

रासबिहारी लाल दास (१८७२-१९४०) (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

सुमति

हरिनन्दन दास (सौजन्य- राधाकृष्णन् दास)

सुदामा चरित

पं रामजी चौधरी (१८७८-१९५२) (सौजन्य- श्री श्रीमोहन चौधरी)

विविध भजनावली

आचार्य रामलोचन शरण (१८८९-१९७१) (सौजन्य- मैथिली साहित्य संस्थान)

जयन्ती-स्मारक ग्रन्थ

धनुषधारी दास (१८९५-१९६५) (सौजन्य- पञ्जीकार विद्यानन्द झा)

मैथिली में बिहारी

हरिमोहन झा (१९०८-१९८४) (सौजन्य- मैथिली साहित्य संस्थान/ गौरीनाथ)

अभिनन्दन ग्रन्थ

अंतिका (हरिमोहन झा विशेषांक)

....

डॉ. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (सौजन्य- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर')

महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक (१९९७)

लोक नाट्य: जट जटिन (२००७) (शोध)

हुगली ऊपर बहैत गंगा आ आन कथा (कथा संग्रह) (२००८)

भ्रमर मैथिली दीर्घ कविता (हिन्दी अनुवाद-अब बस नहीं) (२००९)

मैथिली लोक संस्कृति (नेपाली भाषामे) (२००९)

भैया अएलै अपन सोराज (नाटक संग्रह) (२०१०)

घरमुहाँ (उपन्यास) (२०१२)- ई बुक वर्जन

घरमुँहा (उपन्यास) (२०१२)- प्रिंट वर्जन

अनहरियाक चान (गजल संग्रह) (२०१३)

चीन जे हम देखल (यात्रा संस्मरण) (२०१४)

सूली पर इजोत एवं अन्य नाटक (२०१५)

सीमाके आर-पार (यात्रा संस्मरण) (२०१६)

युद्धभूमिक एसगर योद्धा (कविता संग्रह) (२०१७)

एंटीवायरस (कथा संग्रह) (२०१९)

कोरोनाक संत्रासमे ओझरायल जिनगी (लकडाउन डायरी) (२०२०)

मिथिलाक लोकजीवन लोकसन्दर्भ (२०२२)

सोन्हगर गन्धक अन्वेषी डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'

मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी

स्मारिका (२०१०)

आंगन अंक-४ (२०१२) सलहेस विशेषांक

आँजुर (अंक वर्ष ३६, अंक ३) सोमदेव विशेष

गामघर-३०-०८-२०१८

गामघर-०४-१०-२०१८

गामघर-१६-०५-२०१९

गामघर-२७-०६-२०१९

रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"क किछु नाटक

मुन्नाजी द्वारा साक्षात्कार पृ. ३२१-३२८

देसिल बयनाक बहन्ने रामलोचन ठाकुर प्रसंग पृ. ३४७-३५७

हमर ज्ञान-पिपाशाक स्त्रोत: शरदिन्दु चौधरी पृ. ३१-३४

जट जटिन पृ. ५६८-७०५

भैया, अएलै अपन सोराज पृ. ५६८-७०५

आलेख कथा-फ्लैशबैक पृ. ८४-८८

आलेख पृ. पृ. ११७-१२५

आलेख पृ. १२७६-१२९०

आलेख पृ. ९७-९८

रायपुर यात्रा प्रसंग पृ. १५०-१५४

सलहेस परिचर्चा रिपोर्ट पृ. ४१-४५

रिपोर्ट पृ. २३१-२४३

रिपोर्ट पृ. ४४५

रिपोर्ट पृ ५६८-६०५

रिपोर्ट पृ. ५८३-५८५

गंगा प्रसादक स्वायत्तता आ हुगलीपर बहैत गंगा पृ. २२३-२२६

गीत पृ. १४४९-१४५०

गजल गीत पृ. २११

अन्हारक विरुद्ध आ आजाद गजल पृ. ६१९-६२१)

विदेह राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक

बृषेश चन्द्र लाल (सौजन्य- बृषेश चन्द्र लाल)

आन्दोलन (कविता संग्रह)

ढोलक (बाल कविता संग्रह)

सुम्निमा (अनूदित उपन्यास)

मोदिआइन (बी.पी.कोइरालाक कथा)

माल्हो (कथा संग्रह)

गोलबा (कथा संग्रह)

परमेश्वर कापड़ि (सौजन्य- परमेश्वर कापड़ि)

धूआ-धजा

अंक ७

अंक १४

अंक १५

अंक १६

अंक १८

अंक १० जून २०१२

अंक २४ जून २०१२

२५ जुलाइ २०१२

०५ अगस्त २०१२

२३ फरबरी २०१६

आसिन २०७३

सुजीत कुमार झा (सौजन्य- सुजीत कुमार झा)

रिपोर्टर डायरी (रिपोर्ताज)

चिड़ै (लघुकथा-संग्रह)

जिद्दी (लघुकथा संग्रह)

कोइली घूरि आउ (बाल लघु-विहनि कथा संग्रह)

गन्ध (लघु कथा संग्रह)

खजुरीबाली (लघु कथा संग्रह)

बुलबुल (कथा संग्रह)

दूधमती- (नेपाली आ मैथिलीमे)

अंक ३१ अंक ३२ अंक ३३ अंक ३४ अंक 35 अंक 36 अंक 37 अंक 38 अंक 39 अंक 40 अंक 41

विन्देश्वर ठाकुर

नेपालक नोर मरुभूमिमे

विनीत ठाकुर (सौजन्य- विनीत ठाकुर)

बाँकी अछि हम्मर दूधक कर्ज

संतोष मिश्र (सौजन्य- संतोष मिश्र)

पोसपुत (लघुकथा-संग्रह)

उदास मोन (लघुकथा-संग्रह)

एना-किए (कविता-संग्रह)

अएना (संपादन- कविता-संग्रह)

कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद रूपा धीरू आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि, बाल साहित्य) (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

भगता बेङक देश-भ्रमण

Ayodhyanath Choudhary (Courtesy- Ayodhyanath Choudhary)

Varied Verses (Maithili Verses in English Translation)

...

डॉ शशिधर कुमर आ सुप्रिया बेबी कुमारी

भूकम्प (पृ. ६३८-६७४)

अणिमा सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

शिशु गीत खेल

इलारानी सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

प्रेम- एक कविता (अनूदित नाटक)

अरुन्धती देवी (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मिथिलाक विदुषी महिला

डॉ. कमला चौधरी (सौजन्य- कमला चौधरी)

मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८

समय-संकेत (कथा-संग्रह) २०१०

डॉ. ललिता झा (सौजन्य- ललिता झा)

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११

सुस्मिता पाठक (सौजन्य- केदार कानन)

परिचिति (कविता संग्रह)

कनोजड़ि (कथा संग्रह)

नन्दिनी पाठक (सौजन्य- केदार कानन)

पाथरक शहर (कविता संग्रह)

पन्ना झा (सौजन्य- नरेन्द्र झा)

अनुभूति (लघुकथा संग्रह)

कल्पना झा (सौजन्य- कल्पना झा)

गोसाउनिक गीत

नशामुक्ति हित गाबी गीत

निनियाँ

यायावरी- शेफालिका वर्मा (हिन्दी अनुवाद कल्पना झा)

मुन्नी कामत (सौजन्य- मुन्नी कामत)

सुखल मन तरसल आँखि (पद्य आ गद्य)

सुखल मन तरसल आँखि (कविता)

अंततः (कविता संग्रह)

चुक्का (बाल कथा संग्रह)

नीता झा (सौजन्य- नीता झा)

बिलाइ मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)

शेफालिका वर्मा (सौजन्य- शेफालिका वर्मा)

यायावरी (यात्रावृत्तान्त)

यायावरी (हिन्दी अनुवाद- कल्पना झा)

अर्थयुग (लघुकथा संग्रह)

एकटा अकास (लघुकथा संग्रह)

भावांजलि (गद्य गीत)

किस्त-किस्त जीवन (आत्म कथा)

आखर-आखर प्रीत

नागफांस (उपन्यास)

Naagphans (In English)

विभा रानी

विभा रानीक दूटा नाटक (भाग रौ आ बलचन्दा)

सुशीला झा (सौजन्य- प्रभा खेतान/ सुशीला झा)

छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक मैथिली अनुवाद

कुसुम ठाकुर

प्रत्यावर्तन (आत्मकथा)(पृ. ४५९-५७२)

डॉ. कामिनी कामायनी

विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३५० सँ)

प्रीति ठाकुर

गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा -पहिल मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मिथिलाक लोकदेवता (बाल साहित्य)

विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य)

रेस (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

ए बी सी डी- प्रकृति अक्षर पोथी (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

सभ खाइत अछि (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बो म्याउ बाह (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

रङ सभ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०६) छोट आ पैघ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०७) माल-जाल आ जानवर दिस देखू (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(१७) हमर परिवार (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

जानवर (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

पोथी १३: १...२...३... (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बाजाक अबाज (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

पंजी (११००० मूल मिथिलाक्षर ताड़पत्र)

11000 PALM LEAF PANJI INSCRIPTIONS (VOLUME I TO XXII) Compiled, Scanned & Catalogued by Preeti Thakur

गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर (समालोचना)

नीतू कुमारी

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

किरण चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर बाल-वाड़ी

आर्या कॉकपिट मे

दीपा करमाकर- सही संतुलन मे

जंगल मे अहाँक स्वागत अछि

व्हेल छथि आकाश मे

भैया के मुस्कान के चोरौलक

बीज संचयक

अचंभित करय "फिबोनाची"

शौचालयक खिस्सा

लाल बरसाती

गुल्लीक जादुई पेटी

समीराक विकठ भोजन

विवाह मे जाई छी

प्रियंका झा (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर माँछ! नै हमर माँछ!

रश्मि प्रिया (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

कैयो सकै छी, नहियो कऽ सकै छी

सुनीता ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

बण्टी आ बबली

नीलिमा चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर सभसँ नीक संगी

स्वास्तिका ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

गप्पू बुते नाचल नै होइ छै

तूलिका (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमरा ओ चाही!

मधूलिका मिश्र (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

ओंघाइत भीमा

लक्ष्मी ठाकुर

जानवर सभ संगे भेँट-घाँट

पूनम मण्डल

सुतै कालक खिस्सा

....

राम इकबाल सिंह 'राकेश' (१९१२-१९९४) (सौजन्य- ई-पुस्तकालय)

मैथिली लोकगीत

तेज नारायण लाल 'शास्त्री' (सौजन्य- ई-पुस्तकालय)

मैथिली लोकगीतों का अध्ययन

डॉ शंकर कुमार झा (सौजन्य- कीर्तिनाथ झा/ आर्काइव डॉट ओआरजी)

Vidyapati A Political Analysis

राधाकृष्ण चौधरी (१९२१-१९८५) (सौजन्य- प्रभात कुमार चौधरी/ IGNCA)

मिथिलाक इतिहास

A Survey of Maithili Literature

The Political and Cultural Heritage of Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

श्रीजयकान्त मिश्र (१९२२-२००९) (सौजन्य- काश्मीर रिसर्च इंस्टीट्यूट लाइब्रेरी, आर्काइव डॉट ओआरजी, इण्डियन कल्चर डॉट जीओवी डॉट इन, साहित्य-अकादेमी डॉट जीओवी डॉट इन)

बृहद मैथिली शब्दकोश भाग-१

A History of Maithili Literature Vol. I

Introduction to the Folk Literature of Mithila

Meet the Author

सोमदेव (१९३४-२०२२) (सौजन्य- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर')

आँजुर सोमदेव विशेष

प्रभास कुमार चौधरी (१९४१-१९९८) (सौजन्य- अशोक)

सन्धान प्रभास विशेष

लल्लन प्रसाद ठाकुर (१९५३-१९९५) (सौजन्य- कुसुम ठाकुर)

लौंगिया मिरचाइ

नाटककार लल्लन प्रसाद ठाकुर समग्र रचनावली (५ टा नाटक, ४ टा एकांकी आ ३ टा गीति नाटिका सहित)

सुभाष चन्द्र यादव (सौजन्य- सुभाष चन्द्र यादव)

राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ

नित नवल राजकमल

बनैत बिगड़ैत (लघुकथा संग्रह)

गुलो

गुलो (हिन्दी अनुवाद- रमण कुमार सिंह)

रमता जोगी

मडर

भोट

गुलो: कला आ भाषा (सम्पादक तारानन्द वियोगी आ केदार कानन)

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

अशोक (सौजन्य- अशोक आ शिवशंकर श्रीनिवास)

चक्रव्यूह (कविता संग्रह) (१९८६)

त्रिकोण (कथा संग्रह) (१९८६)

ओहि रातिक भोर (कथा संग्रह) (१९९१)

मातबर (कथा संग्रह) (२००१)

संवाद (साक्षात्कार संग्रह) (२००७)

आँखिमे बसल (यात्रा कथा) (२०१३)

बात-विचार (आलोचना) (२०१५)

डैडीगाम (कथा संग्रह) (२०१७)

अशोक-सेलेक्शन्स (विविध)

अशोक-नव कविता

नीक दिनक बाइस्कोप (व्यंग्य संग्रह) (२०१८)

कथा-पाठ (मैथिली कथाक आलोचनात्मक अध्ययन) (२०२२)

प्रतिमान (सम्पादन)

किरण (प्रतिमान गोष्ठी- सम्पादक मोहन भारद्वाज)

सन्धान १ (सम्पादन)

सन्धान २ (सम्पादन)

सन्धान ३ (सम्पादन) प्रभास विशेष

सन्धान ४ (सम्पादन)

मुन्ना जी द्वारा साक्षात्कार (पृ. ३८२-३८५)

बनैत कम बिगड़ैत बेसी (पृ. २०२३-२०३१)

सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कर्णामृत (पृ. ११९-१२२)

रामलोचन ठाकुरक कविता पढ़ैत (पृ. ३२७-३४१)

केदार नाथ चौधरीक उपन्यास (पृ. १०१-१०६)

शरदिन्दुजी (पृ. ७०-७३)

विदेह रचनाकार अशोक विशेषांक

रामदेव झा (सौजन्य- शंकरदेव झा/ योगानन्द झा)

सव्यसाची (अभिनन्दन ग्रन्थ)

मैथिली शब्द संचय

दत्त-वतीक वस्तु कौशल

संकल्प अंक-५ (सम्पादक डॉ रामदेव झा, सहायक सम्पादक डॉ योगानन्द झा) १९८८

कीर्तिनाथ झा (सौजन्य- कीर्तिनाथ झा/ आर्काइव डॉट ओआरजी)

कुरल: मैथिली भावानुवाद (मूल तमिल आदि-कवि तिरुवल्लुवर)

टूटल पाँखि (खलील जिब्रानक उपन्यास 'द ब्रोकन विंग्स'क मैथिली अनुवाद)

किछु पुरान गप्प, किछु नव गप्प (कथा संग्रह)

अनुपम मिश्र पॉडकास्ट एपीसोड ४० कीर्तिनाथ झा

आशीष अनचिन्हार

संदर्भ सहित (गजल-आलोचना)

कुमारि इच्छा (गजल संग्रह)

जंघाजोड़ी (गजल संग्रह)

अनचिन्हार आखर (गजल, रुबाइ आ कताक संग्रह)

मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास

मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास (अनुलग्नक: अंतिका आलेख:अंतर्जाल आ मैथिली: गजेन्द्र ठाकुर)

मैथिली गजलक रेडी रेकोनर

शब्द-अर्थ-शक्ति

स्वतंत्रचेता- अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांकक प्रिण्ट रूप)[सम्पादन]

डॉ योगानन्द झा (सौजन्य- योगानन्द झा)

लोकजीवन ओ लोकसाहित्य १९८६

संकल्प अंक-५ (सम्पादक डॉ रामदेव झा, सहायक सम्पादक डॉ योगानन्द झा) १९८८

आलेख सञ्चयन २००२

मैथिली शाक्त साहित्य- शास्त्रीय भगवती गीत (सम्पादन) २००२

मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष २००६

लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा २००७

गहबर गीत (संकलन-सम्पादन) २००७

मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली २००९

कथा-लोककथा २०१०

कपिलदेव ठाकुर 'स्नेहलता' कृत सीतावतरण (सम्पादन) २०११

मंगल-प्रभात गाँधीजी (अनुवाद) २०१३

भोरे-भोर (डॉ ए. कीर्तिवर्द्धनक हिन्दी कविता संग्रहक अनुवाद) २०१४

तारानन्द वियोगी (सौजन्य- तारानन्द वियोगी/ सुभाष चन्द्र यादव)

प्रलय रहस्य (कविता संग्रह)

अतिक्रमण (कथा संग्रह)

Between the Two Dams (English Translation by Prabhat Jha)

जैसे अँधेरे में चाँद (हिन्दी अनुवाद- अरुणाभ सौरभ)

बचाने का यत्न (जीवकान्त)- (अतिथि सम्पादक तारानन्द वियोगी)

राजकमल-जीवन क्या जिया (पृ. १६४-२७४)

महिषी की तारा

बुद्ध का दुख और मेरा (हिन्दी अनुवाद- अविनाश)

तुमि चिर सारथि (हिन्दी अनुवाद- केदार कानन/ अविनाश)

तारा-चालीसा

ई भेटल तँ की भेटल

साखी (मैथिली दलित-कविता)

कबीर आ हुनक मैथिली पदावली

धराशायी हेबाक समय (कविता मे कोरोना काल)

दुनिया घर मेहमान (प्रेम कविता)

अपन युद्धक साक्ष्य (गजल संग्रह)

छियानत (कथा संग्रह)

बहुवचन (आलोचना)

गुलो: कला आ भाषा (सम्पादन)

सुधांशु शेखर चौधरी (सौजन्य- शरदिन्दु चौधरी)

शेखर रचित गजल ओ गीत

शरदिन्दु चौधरी (सौजन्य- शरदिन्दु चौधरी)

जँ हम जनितहुँ (२००२)

बड़ अजगुत देखल (२००५)

गोबरगणेश (२०११)

करिया कक्काक कोरामिन (२०१६)

बात-बातपर बात खण्ड-१ (२०१९)

मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२) (२०२०)

हमर अभाग: हुनक नहि दोष (बात-बातपर बात-३) (२०२१)

साक्षात् (बात-बातपर बात-४) (२०२१)

विदेह शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

काशीकान्त मिश्र मधुप

विदेह काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक

राजनन्दन लाल दास

विदेह राजनन्दन लाल दास विशेषांक

प्रेमलता मिश्र प्रेम

विदेह प्रेमलता मिश्र प्रेम विशेषांक

रवीन्द्र नाथ ठाकुर

विदेह रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

मायानन्द मिश्र (सौजन्य- केदार कानन)

अवांतर (गजल-गीतल)

कलानन्द भट्ट (सौजन्य- केदार कानन)

कान्ह पर लहास हमर मैथिली गजल संग्रह

अनुलग्नक-कोसी कॉलोनी सँ किशन कुटीर धरि

रामकृष्ण झा 'किसुन' (सौजन्य- केदार कानन)

किसुन समग्र-१ (सम्पादक केदार कानन आ रमण कुमार सिंह)

किसुन समग्र-२ (सम्पादक केदार कानन आ रमण कुमार सिंह)

मैथिलीक नव कविता (सम्पादन)

बहुआयामी किसुनजी (सम्पादक महेन्द्र आ केदार कानन)

केदार कानन (सौजन्य केदार कानन/ CIIL/ सुभाष चन्द्र यादव)

अक्ष पर नचैत (संस्मरण: जीवकान्तक पत्रक बहाने)

बहुआयामी किसुनजी (सम्पादन)

गुलो: कला आ भाषा (सम्पादन)

किसुन समग्र-१ (सम्पादन)

किसुन समग्र-२ (सम्पादन)

अपना नजरि मे (सम्पादन)

सृजन केर दीप पर्व (सम्पादन)

भारती मंडन अंक-१६ (सम्पादन)

महेन्द्र (CIIL/ केदार कानन)

जुआयल कनकनी

बहुआयामी किसुनजी (सम्पादन)

बाबा बैद्यनाथ (सौजन्य- बाबा बैद्यनाथ)

पहरा इमानपर (गजल संग्रह)

अरविन्द ठाकुर (सौजन्य- अरविन्द ठाकुर/ CIIL)

परती टूटि रहल अछि (कविता संग्रह)

अन्हारक विरोध मे (लघु कथा संग्रह)

बहुरुपिया प्रदेश मे (गजल संग्रह)

सबद मितारथ धाय्या

रोशनाइक लोकपक्ष (कथेतर गद्य)

जड़ताक प्रतिवाद मे (सोल्हकन-दीठक आरोहण गाथा- दीर्घ कविता)

सृजन केर दीप पर्व (सम्पादन)

विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक

स्वतंत्रचेता- अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (सम्पादक आशीष अनचिन्हार) [विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांकक प्रिण्ट रूप]

नरेन्द्र झा (सौजन्य- नरेन्द्र झा)

चपल चरन चित चंचल भान

विकास ओ अर्थतंत्र

राजेश्वर झा (मैथिली साहित्य संस्थान आर्काइव)

मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास

सुरेन्द्र झा सुमन (आर्काइव डॊट कॊम)

दत्त-वती (मूल)

गोविंद झा ((IGNCA Site आर्काइव)

Maithili-English Dictionary

डॉ शैलेन्द्र मोहन झा (आर्काइव डॊट कॊम/ CIIL)

परिचय निचय

मैथिली गद्य संग्रह- सं

रमानाथ झा (CIIL Site आर्काइव)

प्रबन्ध संग्रह

रमानाथ मिश्र "मिहिर" (आर्काइव डॊट कॊम)

मैथिली मुहावरा एवम् लोकोक्ति प्रकाश

आनन्द मिश्र (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मिथिला भाषाक सुबोध व्याकरण

श्यामानन्द झा (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मैथिली गीत चन्द्रिका

मैथिली संदेश (विभिन्न कविक कविता-सम्पादित)

पं लक्ष्मीपति सिंह (सौजन्य रमानन्द झा "रमण")

हिन्दी-मैथिली-शिक्षक

भवप्रीतानन्द ओझा (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

पदावली

गणनाथ-विन्ध्यनाथ पदावली (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

गणनाथ-विन्ध्यनाथ पदावली

रूपनारायण झा "राकेश" (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मनमोहन लड्डू

भोला लाल दास (आर्काइव डॉट कॉम)

मैथिली सुबोध व्याकरण

खड्ग वल्लभ दास 'स्वजन' (सौजन्य- हेमन्त दास "हिम")

सीता-शील

डॉ. मदनेश्वर मिश्र (सौजन्य- पञ्जीकार विद्यानन्द झा)

एक छलीह महारानी

यात्री (नागार्जुन) (सौजन्य- मिथिला सांस्कृतिक परिषद)

बलचनमा

कालीकान्त झा "बूच"

कलानिधि- कविता-संग्रह

उपेन्द्रनाथ झा "व्यास" (सौजन्य- मयंक झा)

रूबाइयात-ए-ओमर खैयाम (मैथिली पद्यानुवाद)

प्रतीक (कविता संग्रह)

संन्यासी (काव्य)

रमेश नारायण (सौजन्य- शेफालिका वर्मा)

पाथरक नाव (लघुकथा संग्रह)

गोपालजी झा "गोपेश" (सौजन्य- गोपालजी झा "गोपेश")

गुम्म भेल ठाढ़ छी

विजय नाथ झा (सौजन्य- विजय नाथ झा)

अहींक लेल (गीत-गजल संग्रह)

कामायनी (अनुवाद)

नगेन्द्र कुमर (सौजन्य- प्रसन्न कुमार झा)

ससरफानी

प्रबोध नारायण सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

अन्हेर नगरी (अनुवाद)

चयनिका (सम्पादन)

वैजयन्ती (कविता)

हाथीक दाँत

टटका गप (सम्पादित कथा संकलन)

प्रेमक रोग (नाटक)

मानक मैथिली (हिन्दी शोध प्रबन्ध)

अमरनाथ (सौजन्य- अमरनाथ)

क्षणिका- विहनि कथा संग्रह

प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'

पंचदेवोपासक भूमि मिथिला पृ. १००१-१०८०

डॉ. गंगेश गुंजन (सौजन्य- गंगेश गुंजन)

राधा (१-३०) पृ. १३७३-१५८०

प्रथम-चौबटिया-नाटक *(बुधिबधिया)*

नाटक आइ भोर

कथा-संग्रह उचितवक्ता

गीत-गजल दुखक दुपहरिया

कमलधर दास (सौजन्य- कमलधर दास)

मैथिल कर्ण कायस्थक गोत्र, प्रवर, मूल आ वैवाहिक सम्बन्ध

कीर्तिनारायण मिश्र (सौजन्य- कीर्तिनारायण मिश्र)

ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप

सीमान्त

आदमीकेँ जोहैत

अपन एकान्त मे

स्मृतियात्राक एकान्तमे

राजनाथ मिश्र

Mithila_Painting-Modern Art-Photos

प्रेमशंकर सिंह (सौजन्य- प्रेमशंकर सिंह/ मिथिला दर्पण प्रकाशन)

मैथिली भाषा साहित्य:बीसम शताब्दी (आलोचना)

विद्यापति कृत व्याडीभक्तितरङ्गिनी (सम्पादन)

डॉ. रमण झा (सौजन्य- रमण झा)

मैथिली काव्यमे अलङ्कार

अलङ्कार-भास्कर

मैथिली काव्यमे ज्योतिष

भिन्न-अभिन्न

अहिरावण-वध (खण्ड काव्य)

पारिजात-मञ्जरी

डॉ. रमानन्द झा ’रमण’ (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण"/ CIIL Site आर्काइव)

हिआओल

सगर राति दीप जरय

राजू आ टाकाक गाछ (अनुवाद)

अखियासल

केदार नाथ चौधरी (सौजन्य- केदार नाथ चौधरी)

चमेलीरानी

माहुर

करार

अबारा नहितन

अयना

हीना

विदेह केदार नाथ चौधरी विशेषांक

योगेन्द्र पाठक "वियोगी" (सौजन्य- योगेन्द्र पाठक "वियोगी")

विज्ञानक बतकही

विज्ञानक बतकही भाग-२

नरक विजय (सम्पूर्ण)

नरक विजय (संशोधित)

हमर गाम (बाल उपन्यास)

पिरामिडक देशमे

अकटा मिसिया (कथा संग्रह)

रोबोट (अनूदित साइंस-फिक्शन नाटक)

किछु तीत मधुर (यात्रा वृत्तांत)

सुशील (सौजन्य- सुशील)

घराड़ी (उपन्यास) (१९७३)

गामबाली (उपन्यास) (१९८२)

भामती (नाटक) (पहिल मंचन १९९१, प्रकाशन २०१३)

अस्मिता (लघुकथा संग्रह) (२०१६)

कामेश्वर झा 'कमल' (सौजन्य- नबोनारायण मिश्र)

कमल-ताल (गीत संग्रह)

रामलोचन ठाकुर (सौजन्य- रामलोचन ठाकुर)

जे कहब साँच कहब

आँखि मुनने आँखि खोलने (संस्मरण)

स्मृतिक धोखरल रंग (संस्मरण)

अपूर्वा (कविता संग्रह)

इतिहासहन्ता (कविता संग्रह)

देशक नाम छलै सोन चिड़ैया (कविता संग्रह)

लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता संग्रह)

प्रतिध्वनि (विदेशी भाषाक कविताक मैथिली रूपान्तरण)

पद्मानदीक माझी (अनूदित उपन्यास)

मैथिली लोककथा

आजुक कविता (सम्पादित कविता संग्रह)

बेताल कथा (हास्य-व्यंग)

देसिल बयना (अख़बार)

विदेह रामलोचन ठाकुर विशेषांक

डॉ. देवशंकर नवीन (सौजन्य- देवशंकर नवीन)

आधुनिक साहित्यक परिदृश्य

डॉ बचेश्वर झा

निवन्ध-निकुञ्ज

जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" (सौजन्य- जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल")

आँखिमे चित्र हो मैथिली केर (आत्मकथा- जारी)

धारक ओइ पार (दीर्घ कविता)

गीत गंगा (गीत संग्रह)

गजल गंगा (गजल संग्रह)

तोरा अंगना मे (गीत संग्रह)

तोरा अंगना मे (गीत संग्रह)- मूल

विदेह जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

राज किशोर मिश्र

चाननि (कविता संग्रह)

सप्तपर्ण (कविता संग्रह)

रबीन्द्र नारायण मिश्र (सौजन्य- रबीन्द्र नारायण मिश्र)

भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा)

प्रसंगवश (निवंध)

स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग)

फसाद (कथा संग्रह)

नमस्तस्यै (उपन्यास)

विविध प्रसंग (निवंध)

महराज (उपन्यास)

लजकोटर (उपन्यास)

सीमाक ओहि पार (उपन्यास)

समाधान (निवंध संग्रह)

मातृभूमि (उपन्यास)

स्वप्नलोक (उपन्यास)

शंखनाद (उपन्यास)

इएह थिक जीवन (संस्मरण)

ढहैत देबाल (उपन्यास)

पाथेय (संस्मरण)

हम आबि रहल छी (उपन्यास)

प्रलयक परात (उपन्यास)

बीति गेल समय (उपन्यास)

प्रतिबिम्ब (उपन्यास)

बदलि रहल अछि सभ किछु (उपन्यास)

राष्ट्र मंदिर (उपन्यास)

संयोग (कथा संग्रह)

नाचि रहल छलि वसुधा (उपन्यास)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' (सौजन्य- नन्द कुमार मिश्र 'नन्द')

गामघर (कथा संग्रह)

सुजाता (उपन्यास)

महारानी कैकेयी (प्रवचनात्मक निबन्ध)

गुदरीक लाल (उपन्यास)

अनठिया कुकुर (उपन्यास)

आडम्बर (कथा संग्रह)

दिल्लीक पार्क (शब्द चित्र)

सुकन्या (उपन्यास)

स्वर्ण कमल (बाल उपन्यास)

काव्य सरिता (मैथिली काव्य संग्रह)

परिवार (संस्मरणात्मक उपन्यास)

याचक के नञि (मैथिली शब्द-चित्र)

सत्यानन्द पाठक (सौजन्य- सत्यानन्द पाठक)

हमर गाम (उपन्यास)

डॉ. उदय नारायण सिंह "नचिकेता" (सौजन्य- नचिकेता)

नो एण्ट्री : मा प्रविश

आन्दोलन

एक छल राजा

जनक आ' अन्यान्य एकांकी

नाटक क लेल

नायक क नाम जीवन

प्रत्यावर्त्तन

रामलीला

प्रियंवदा (एकांकी)

नचिकेता विविध (मैथिली, बांग्ला, हिन्दी आ अंग्रेजी)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (अप्रैल १९६९)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (जुलाइ १९६९)

मिथिला दर्शन मार्च २०२१

मिथिला दर्शन नवम्बर २०२१

रवि भूषण पाठक

रिहर्सल (नाटक)

विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३५० सँ)

विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३५० सँ)

कुमार मनोज कश्यप

विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३५० सँ)

डॉ. शम्भु कुमार सिंह

(तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद डॉ शम्भु कुमार सिंह द्वारा) पाखलो

विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अरुण कुमार सिंह अंक १-३५० सँ)

डॉ. अरुण कुमार सिंह

विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अरुण कुमार सिंह अंक १-३५० सँ)

कुमार पवन (सौजन्य- अंतिका)

पइठ (मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कथा)

डायरीक खाली पन्ना

केशव भारद्वाज

अजगुत अफ्रीका (अफ्रीका डायरी) पृ. २१४-४६६

किछु पढ़ल आ किछु सुनल- ईदी अमीन पृ. ४८८-५४८

खेलौना पृ. ४६७-४८७

पैबन्द पृ. ५४९-७९८

किछु कथा ५०-४६३

गोपाल झा 'अभिषेक' (सौजन्य- गोपाल झा 'अभिषेक')

आउ स्वप्न साझी करी (कविता संग्रह)

आमोद कुमार झा (सौजन्य- आमोद कुमार झा)

बिम्बक पथार (कविता संग्रह)

किशन कारीगर (सौजन्य- किशन कारीगर)

किछु फुरा गेल हमरा

मुन्नाजी

मोकाम दिस (बीहनि कथा संग्रह)

प्रतीक (विहनि कथा संग्रह)

माँझ आंगनमे कतिआएल छी (मैथिली गजल संग्रह)

हम पुछैत छी (साक्षात्कार)

तीन टा बाल नाटक (मैथिली बाल साहित्य)

खुरलुच्ची (मैथिली बाल कविता- बाल साहित्य)

घाह (हाइकू-टंका संग्रह)

सन्दीप कुमार साफी

बैशाखमे दलानपर (पहिल मैथिली दलित आत्मकथा सहित)

ओम प्रकाश झा

कियो बूझि नै सकल हमरा (गजल, रुबाइ आ कता संग्रह)

अमित मिश्र

नव अंशु (गजल-हजल, रुबाइ संकलन)

चन्दन कुमार झा

मोनक बात (गजल, हजल,बाल गजल, रुबाइ आ कताक संकलन)

डॉ. अनमोल झा

समय साक्षी थिक (विहनि कथा संग्रह)

ई जे समय अछि (विहनि कथा संग्रह)

बिनय भूषण (सौजन्य- आशीष अनचिन्हार)

उजरा परवाक खोज (कविता संग्रह)

आनन्द कुमार झा

टाकाक मोल (नाटक)

कलह (नाटक)

बदलैत समाज (नाटक)

धधाइत नवकी कनियाँक लहास (नाटक)

हठात् परिवर्तन (नाटक)

मुक्ति यात्रा (नाटक)

शिव कुमार झा "टिल्लू"

क्षणप्रभा-कविता-संग्रह

अंशु-समालोचना

देवांशु वत्स

नताशा -मैथिली बाल चित्रशृंखला (कौमिक्स)

डॉ. विनीत उत्पल

हम पुछैत छी (कविता संग्रह)

रेहन पर रग्घू - काशीनाथ सिंहक हिन्दी उपन्यासक विनीत उत्पल द्वारा मैथिली अनुवाद

मन्त्रद्रष्टाऋष्यश्रृङ्ग- लेखक हरिशंकरश्रीवास्तव "शलभ" (हिन्दीसं मैथिली अनुवाद विनीत उत्पल द्वारा)

मोहनदास- उदय प्रकाशक हिन्दी उपन्यासक विनीत उत्पल द्वारा मैथिली अनुवाद

मोहनदास (मैथिली-देवनागरी) मोहनदास (मैथिली-मिथिलाक्षर) मोहनदास (मैथिली-ब्रेल)

जगदानन्द झा "मनु" (सौजन्य- जगदानन्द झा "मनु")

नढ़िया भुकैए हमर घराड़ीपर (गजल संग्रह)

तोहर कतेक रंग (विहनि कथा संग्रह)

चोनहा- (बाल उपन्यास)

व्यथा- (कविता-गीत संग्रह)

राजदेव मण्डल

अम्बरा-कविता-संग्रह

हमर टोल (उपन्यास)

बसुंधरा(कविता संग्रह)

जाल (पटकथा)

लाज (एकांकी)

जल भंवर (उपन्यास)

त्रिवेणीक रंग (विहनि आ लघु कथा संग्रह)

पंचैती (लघु पटकथा)

वापसी

Rajdeo Mandal- Maithili Writer by Gajendra Thakur

दुर्गानन्द मण्डल

संचयिका

कथा कुसुम (विहनि आ लघु कथा संग्रह)

चक्षु

राम विलास साहु

अंकुर- लघुकथा संग्रह

रथक चक्का उलटि चलै बाट (कविता/ टनका संग्रह)

कर्म बिनु जग सुन्ना (दोसर कविता/ टनका संग्रह)

स्कूलक खिचड़ी (विहनि/ लघु कथा संग्रह)

दूधबेचनी (लघु कथा संग्रह)

मनक मैल

नारायण यादव (सौजन्य- उमेश मण्डल)

खाली घर

रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"

हमरा बिनु जगत सूना छै

गीतांजलि झारू

कपिलेश्वर राउत

उलहन (विहनि - लघु कथा संग्रह)

नंद विलास राय

सखारी-पेटारी(लघुकथा संग्रह)

मदन अमर (दोसर लघु कथा संग्रह)

मरजादक भोज (तेसर लघुकथा संग्रह)

भरदुतिया

छठिक डाला

हमर चारूधाम

असल पूजा

ललन कुमार कामत (सौजन्य- उमेश मण्डल)

किछु विहनि आ लघुकथा

उमेश पासवान

वर्णित रस

बेचन ठाकुर

बेटीक अपमान आ छीनरदेवी (नाटक)

बाप भेल पित्ती आ अधिकार (नाटक)

बिसवासघात (नाटक)

ऊँच-नीच (नाटक)

भोँट (नाटक)

डॉ. उमेश मण्डल

जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संसार (अनुसन्धान विश्लेषण)

अभ्यन्तर (संकलन-सम्पादन)

हेन्डबुक सँ फेसबुक धरि (संकलन-सम्पादन)

जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी (संकलन-सम्पादन)

निर्विकल्प (संकलन-सम्पादन)

समस्या सँ समाधान धरि (संकलन-सम्पादन)

निश्तुकी- कविता संग्रह

मिथिलाक संस्कार गीत, विध-व्यवहार गीत आ गीतनाद (संकलन)

मिथिलाक वनस्पति स्लाइड शो मिथिलाक जीव-जन्तु स्लाइड शो मिथिलाक जिनगी स्लाइड शो

Mithila_Painting-Modern Art-Photos

सगर राति दीप जरय- इतिहास

सगर राति दीप जरय- आरती कुमारी फाइल

दुध-पानि फराक-फराक (कथा एवं पाण्डुलिपि जगदीश प्रसाद मण्डल)-(छाया एवं सम्पादन- उमेश मण्डल)

हिन्दुस्तानी मुसलमान और हिन्दुस्तानियत - मूल हिन्दी लेख- गीतेश शर्मा, मैथिली अनुवाद- उमेश मण्डल

उमेश मण्डल द्वारा मैथिली लेखकक रचना संसारसँ बीछल विचारक पाम्फलेटक पोथी

जगदीश प्रसाद मण्डल राजदेव मण्डल डॉ. शिव कुमार प्रसाद रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार" राम विलास साहु नन्द विलास राय कपिलेश्वर राउत प्रीतम कुमार निषाद

मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक संस्कार, लोकगीत आ व्यवहार गीत (सौजन्य: उमेश मंडल)

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 4 1 42 43

अन्तर्ध्वनि (जगदीश प्रसाद मण्डलक १५ गोट बीछल कथा- चयन एवम् सम्पादन- उमेश मण्डल)

....

जगदीश प्रसाद मण्डल

गामक जिनगी (लघुकथा संग्रह)

मिथिलाक बेटी (नाटक)

मौलाइल गाछक फूल (उपन्यास)

जिनगीक जीत (उपन्यास)

उत्थान-पतन (उपन्यास)

जीबन-मरन (उपन्यास)

जीवन-संघर्ष (उपन्यास)

तरेगन (बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह)

पंचवटी (एकांकी-संचयन)

अर्द्धांगिनी..सरोजनी.. सुभद्रा.. भाइक सिनेह इत्यादि (लघुकथा संग्रह)

कम्प्रोमाइज (नाटक)

झमेलिया बिआह (नाटक)

इन्द्रधनुषी अकास (पद्य संग्रह)

शंभुदास (तीनटा दीर्घ कथा मइटुग्गर, शंभुदास आ फाँसी)

गीतांजलि (गीत संग्रह)

राति-दिन (कविता संग्रह)

सतभैंया पोखरि (लघु कथा संग्रह)

तीन जेठ एगारहम माघ (गीत संग्रह)

बजन्ता-बुझन्ता (विहनि कथा संग्रह)

रत्नाकर डकैत (नाटक)

बड़की बहिन (उपन्यास)

भकमोड़ (लघुकथा संग्रह)

उलबा चाउर (लघुकथा संग्रह)

सरिता (कविता संग्रह)

सुखाएल पोखरिक जाइठ (गीत संग्रह)

नै धाड़ैए (बाल उपन्यास)

स्वयंवर (नाटक)

पतझाड़ (लघु कथा संग्रह)

फलहार (लघु कथा संग्रह)

गामक शकल सूरत (लघु कथा संग्रह)

लजबिजी (लघु कथा संग्रह)

बटेसर काका (लघु कथा संग्रह)

आमक गाछी

अप्पन गाम

दिवालीक दीप

पंचदेव सीरीज

पंचदेव-१ पंचदेव-२ पंचदेव-३ पंचदेव-४ पंचदेव-५ पंचदेव-६ पंचदेव-७ पंचदेव-८ पंचदेव-९ पंचदेव-१० पंचदेव-२० पंचदेव-३० पंचदेव-४० पंचदेव-५० पंचदेव-६० पंचदेव-७० पंचदेव-८० पंचदेव-९० पंचदेव-१००

दुध-पानि फराक-फराक (कथा एवं पाण्डुलिपि जगदीश प्रसाद मण्डल)- (छाया एवं सम्पादन- उमेश मण्डल)

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ (Videha_01_09_2017) सँ २५० (Videha_15_05_2018) धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

VIDEHA_233	VIDEHA_234	VIDEHA_235	VIDEHA_236	VIDEHA_237	VIDEHA_238
VIDEHA_239	VIDEHA_240	VIDEHA_241	VIDEHA_242	VIDEHA_243	VIDEHA_244
VIDEHA_245	VIDEHA_246	VIDEHA_247	VIDEHA_248	VIDEHA_249	VIDEHA_250

पंगु (उपन्यास)- साहित्य अकादेमी मूल पुरस्कार २०२१ सँ सम्मानित पोथी

पंगु (हिन्दी अनुवाद रामेश्वर प्रसाद मण्डल)

अप्पन साती (लघुकथा संग्रह)

मोड़पर (उपन्यास)

सुचिता (उपन्यास)

सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल (लघुकथा संग्रह)

डॉ. शशिधर कुमर

उड़ि ने सकी पर चिड़ै छी हम (भाग १-२) (पृ. १०५४-१०९५)

खिस्सा अण्टार्कटिका केर (पृ. १०५४-१०९५)

बाल कविता (पृ. ९९३-१२१५)

बाल कविता (पृ. १००४-११७३)

सचित्र बाल कविता (पृ. ७४७-८३४)

सचित्र बाल कविता (पृ. १४६८-१८५०)

....

गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर (समालोचना)

तेलुगु कथा आ ओड़िया, तेलुगु, गुजराती, भोजपुरी आ कश्मीरी कविता

तेलुगु कथा आ ओड़िया, तेलुगु, गुजराती, भोजपुरी आ कश्मीरी कविता (मिथिलाक्षर)

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)

मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुप्रयोग)

मैथिली प्रतियोगिता

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग-१

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग दू (कुरुक्षेत्रम अन्तर्मनक-२)

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना (भाग-२, कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक खण्ड-८) (संक्षिप्त)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (मिथिलाक्षर)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (कैथी)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (नेवाड़ी)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (IPA)

दूषण पञ्जी- The Black Book

दूषण पञ्जी- The Black Book (मिथिलाक्षर)

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (बीहनि, लघु आ दीर्घ कथा संग्रह)

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (मिथिलाक्षर)

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (कैथी)

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (नेवाड़ी)

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (IPA)

स्वप्नमे मिज्झर होइत

The_Science_of_Words

Rajdeo Mandal- Maithili Writer (Now with Supplement I & II)

JAGDISH PRASAD MANDAL- Maithili Writer

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी

जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी (हिन्दी अनुवाद रामेश्वर प्रसाद मण्डल)

गंगा ब्रिज (नाटक)

उल्कामुख (नाटक)

संकर्षण (नाटक)

धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ (रुबाइ, कता आ गजल संग्रह)

सहस्रजित् (पद्य संग्रह)

सहस्राब्दीक चौपड़पर (पद्य संग्रह)

त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन (दूटा गीत प्रबन्ध)

सहस्रबाढ़नि (उपन्यास)

सहस्रबाढ़नि ब्रेल-मैथिली (मैथिलीक पहिल ब्रेल पोथी)

सहस्रशीर्षा (उपन्यास)

गल्प-गुच्छ (विहनि आ लघु कथा संग्रह)

शब्दशास्त्रम् (लघुकथा संग्रह)

बाल मण्डली/ किशोर जगत (बाल नाटक, लघुकथा, कविता आदि)

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

देवनागरी वर्सन तिरहुता वर्सन ब्रेल वर्सन

Learn Maithili Sign Language

Learn Mithilakshar Script

Learn Braille through Mithilakshar Script

Learn International Phonetic Script through Mithilakshar Script

Learn Kaithi

Learn Newari

Learn Calligraphic Newari (Ranjana)

Learn Urdu Script

Learn Tibetan Script

Learn Japanese Script for Haiku

Learn Brahmi

Learn Kharoshthi

मिथिला रत्न/ मिथिला चित्रकला/ मिथिलाक पाबनि तिहार (कथा) आ मिथिलाक संगीत

जलोदीप (बाल-नाटक संग्रह)

अक्षरमुष्टिका (बाल-लघुकथा संग्रह)

बाङक बड़ौरा (बाल-पद्य संग्रह)

नाराशंसी (गीत-प्रबन्ध)

मचण्ड (नाटक)

बाल साहित्य (मूल)- गजेन्द्र ठाकुर

भऽ जाएब छू*(मैथिलीक २०१२ मे प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन प्ले- Maithili's first climate-fiction play originally published in 2012)*

कमलाक भगता

तरहरिमे परीलोक

बेसी छुट्टी कम इसकूल

बड़द करैए दाउन ने यौ

बाल गजल

फिनिश लाइन

अनूदित साहित्य (आन भाषासँ)- गजेन्द्र ठाकुर

विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)

बाल साहित्य (अनुवाद- द्विभाषिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गजेन्द्र ठाकुर

मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका

शेष ४० टा बाल चित्र-पोथी नीचाँक लिंकपर:-

सुनू	घर सभ	एकटा नीक दिन	चलू हम तँ ठीक छी ने!	की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?
टोस्ट	बड़ीटा! कनियेटा!	एतऽ हम सभ रहै छी	भारतोल्लक राजकुमारी	भारतोल्लक राजकुमारी (बिनु शब्दक)
वुयो	कच-कच कचाक	चुन्नू-मुन्नूक नहेनाइ	नेना जे बैलूनसँ डेराइत छल	अद्भुत फिबोनाची अंक-शृंखला
हारू	अखन नै, अखन नै!	जन्मदिनक उत्सव भोज	मोट राजा पातर-दुब्बड कुकुड	बचिया जे अपन हँसी नै रोकि सकैत छलि

अंग्रेजी	हम सूंघि सकै छी	छोट लाल-टुहटुह डोरी	करू नीक, भोगू नीक	ई सभटा बिलाड़िक दोख अछि!
चोभा आम!	हमर टोलक बाट	जखन इकडू स्कूल गेल	माछी फेर आउ टाटा!	अमाचीक जुलुम मशीन सभ
टिंग टोंग	पाउ-म्याऊ-वाह	कुकुड़क एकटा दिन	हमरा नीक लगैए	रीताक नव-स्कूलमे पहिल दिन
कनी हँसियौ ने!	लाल बरसाती	भूत-प्रेतक नाट्यशाला	आउ पएर गानी	कतऽ अछि ई अंक ५?

विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग रीड-अलाउड ऑडियो बुक

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका)

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम तँ ठीक छी ने!)

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घर सभ)

https://bloomlibrary.org/player/dAzC0Fubt7 (की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?)

NTA-UGC/ UPSC/ BPSC Maithili Optional- गजेन्द्र ठाकुर

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)

मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुप्रयोग)

मैथिली प्रतियोगिता

[Place of Maithili in Indo-European Language Family/ Origin and development of Maithili language (Sanskrit, Prakrit, Avhatt, Maithili) भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान/ मैथिली भाषाक उद्भव ओ विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)]

(Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)

(ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददास सिलेबसमे छथि आ रसमय कवि चतुर चतुरभुज विद्यापति कालीन कवि छथि। एतय समीक्षा शृंखलाक प्रारम्भ करबासँ पूर्व चारू गोटेक शब्दावली नव शब्दक पर्याय संग देल जा रहल अछि। नव आ पुरान शब्दावलीक ज्ञानसँ ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददासक प्रश्नोत्तरमे धार आओत, संगहि शब्दकोष बढ़लासँ खाँटी मैथिलीमे प्रश्नोत्तर लिखबामे धाख आस्ते-आस्ते खतम होयत, लेखनीमे प्रवाह आयत आ सुच्चा भावक अभिव्यक्ति भय सकत।)

(बद्रीनाथ झा शब्दावली आ मिथिलाक कृषि-मत्स्य शब्दावली)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- विद्यापति)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- पद्य समीक्षा- बानगी)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोक गाथा नृत्य नाटक संगीत)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- यात्री)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली रामायण)
(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली उपन्यास)
(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- शब्द विचार)
(तिरहुता लिपिक उद्भव ओ विकास)
अनुलग्नक-१-२-३ अनुलग्नक- ४-५
(मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध (बांग्ला, असमिया आ ओड़िया) [यू.पी.एस.सी. सिलेबस, पत्र-१, भाग-"ए", क्रम-५])
[मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली- बिहार लोक सेवा आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल]
मैथिली

बांग्ला

असमिया

ओड़िया

हिन्दी

उर्दू

नेपाली

संस्कृत

संथाली

NTA_UGC_NET_Maithili_01- गजेन्द्र ठाकुर
NTA_UGC_NET_Maithili_02- गजेन्द्र ठाकुर
Test_Series-1- गजेन्द्र ठाकुर
Test_Series-2- गजेन्द्र ठाकुर
GS (Pre)
Topic_1 - गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

विदेह-सदेह १-
२५ www.videha.co.in
विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३५०

सँ- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन	
देवनागरी	मिथिलाक्षर
विदेह:सदेह १	विदेह: सदेह १ तिरहुता
विदेह:सदेह २ मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना	विदेह: सदेह २ तिरहुता
विदेह:सदेह ३ मैथिली पद्य	विदेह: सदेह ३ तिरहुता
विदेह:सदेह ४ मैथिली कथा	विदेह: सदेह ४ तिरहुता
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]	विदेह: सदेह ५ तिरहुता
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]- संस्करण-२	विदेह: सदेह ५ संस्करण-२ तिरहुता
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]	विदेह: सदेह ६ तिरहुता
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]	विदेह: सदेह ७ तिरहुता
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]	विदेह: सदेह ८ तिरहुता
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]	विदेह: सदेह ९ तिरहुता
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]	विदेह: सदेह १० तिरहुता
विदेह:सदेह ११	विदेह: सदेह ११ तिरहुता
विदेह:सदेह १२	विदेह: सदेह १२ तिरहुता
विदेह:सदेह १३	विदेह: सदेह १३ तिरहुता
विदेह:सदेह १४	विदेह: सदेह १४ तिरहुता
विदेह:सदेह १५	विदेह: सदेह १५ तिरहुता
विदेह:सदेह १६	विदेह: सदेह १६ तिरहुता

विदेह:सदेह १७	विदेह: सदेह १७ तिरहुता
विदेह:सदेह १८	विदेह: सदेह १८ तिरहुता
विदेह:सदेह १९	विदेह: सदेह १९ तिरहुता
विदेह:सदेह २०	विदेह: सदेह २० तिरहुता
विदेह:सदेह २१	विदेह: सदेह २१ तिरहुता
विदेह:सदेह २२	विदेह: सदेह २२ तिरहुता
विदेह:सदेह २३	विदेह: सदेह २३ तिरहुता
विदेह:सदेह २४	विदेह: सदेह २४ तिरहुता
विदेह:सदेह २५	विदेह: सदेह २५ तिरहुता
विदेह-सदेह २६-३६ www.videha.co.in *विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३५० सँ- थीम आधारित मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ मूल आ अनूदित गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन*	
विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अरुण कुमार सिंह अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २६ तिरहुता
विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २७ तिरहुता
विदेह:सदेह २८ (अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २८ तिरहुता
विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २९ तिरहुता
विदेह:सदेह ३० (स्कूल-कॉलेजक विद्यार्थी लेल- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३० तिरहुता

विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३१ तिरहुता
विदेह:सदेह ३२ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३२ तिरहुता
विदेह:सदेह ३३ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-२- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३३ तिरहुता
विदेह:सदेह ३४ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-३- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३४ तिरहुता
विदेह:सदेह ३५ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-४- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३५ तिरहुता
विदेह:सदेह ३६ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३६ तिरहुता

....

यू.पी.एस.सी. आ आन प्रतियोगिता परीक्षा लेल देखू:

विदेह:सदेह १७	विदेह:सदेह २१	विदेह:सदेह २३	विदेह:सदेह २६	विदेह:सदेह २९
विदेह:सदेह ३०	विदेह:सदेह ३२	विदेह:सदेह ३३	विदेह:सदेह ३४	विदेह:सदेह ३५

....

Videha-Sadeha

भाषापाक -विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

विदेह पुरान अंकक आर्काइव

Videha 1-50

Videha 51-100

Videha 101-149

Videha 150-250

Videha 251-Onwards

Audio Archive Folder

Mithila_Painting-Modern Art-Photos

Videha Old Issues Folder

Videha Classical Sites Folder

....

गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार (सम्पादन)

मैथिलीक प्रतिनिधि गजल

मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा)

....

गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा (सम्पादन)

जीनोम मैपिंग (४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध

जीनियोलोजिकल मैपिंग (४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध -भाग-२

पंजी (११००० मूल मिथिलाक्षर ताड़पत्र)

11000 PALM LEAF PANJI INSCRIPTIONS (VOLUME I TO XXII) Compiled, Scanned & Catalogued by Preeti Thakur

MAITHILI-ENGLISH DICTIONARIES

Maithili-English Dictionary Vol.I

Maithili-English Dictionary Vol.II

ENGLISH-MAITHILI DICTIONARIES

Videha English Maithili Dictionary

English-Maithili Computer Dictionary

....

दिनेश कुमार मिश्र (सौजन्य दिनेश कुमार मिश्र)

बन्दिनी महानन्दा

बागमती की सद्‌गति!

दुइ पाटन के बीच में.. (कोसी नदी की कहानी)

न घाट न घर

बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी

भुतही नदी और तकनीकी झाड़-फूंक

The Kamla River and People On Collision Course

Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft

Refugees of the Kosi Embankments

....

पत्रिका-जर्नल-स्मारिका

मिथिला मिहिर (मिथिलाङ्क) १९३६ (सौजन्य- सुरेन्द्र झा सुमन/ भीमनाथ झा)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (सौजन्य- नचिकेता)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (अप्रैल १९६९)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (जुलाइ १९६९)

कौशिकी (सौजन्य- पञ्जीकार विद्यानन्द झा)

कौशिकी (१९७१-७२)

देसिल बयना (अखबार) (सौजन्य- रामलोचन ठाकुर)

देसिल बयना (अख़बार)

मिथिला दर्शन (सौजन्य- नचिकेता)

मार्च २०२१

नवम्बर २०२१

Society Today (सौजन्य- सुमित आनन्द)

अंक ११

संकल्प (सौजन्य- योगानन्द झा)

अंक ५ १९८८

अंतिका (सौजन्य- गौरीनाथ)

जुलाइ-सितम्बर २००८ (हरिमोहन झा विशेषांक) अक्टूबर २०१०सँ मार्च २०११ अक्टूबर २०११ सँ मार्च २०१२

भारती मंडन (सौजन्य- केदार कानन)

अंक-१६

सन्धान (सौजन्य- अशोक)

सन्धान १

सन्धान २

सन्धान ३ प्रभास विशेष

सन्धान ४

मिथिलांगन (सौजन्य मुकेश दत्त)

अप्रैल-सितम्बर २०२२

मैलोरंग (सौजन्य- प्रकाश झा)

अंक२-३

धूआ-धजा (सौजन्य- परमेश्वर कापड़ि)

अंक ७ अंक १४ अंक १५ अंक १६ अंक १८ अंक १० जून २०१२ अंक २४ जून २०१२ 23February2016 २५ जुलाइ २०१२ ०५ अगस्त २०१२ आसिन २०७३

स्मारिका (सौजन्य- रामभरोस कापड़ि भ्रमर)

स्मारिका (२०१०)

आंगन (सौजन्य- रामभरोस कापड़ि भ्रमर)

आंगन अंक-४ (२०१२) सलहेस विशेषांक

आँजुर (सौजन्य- रामभरोस कापड़ि भ्रमर)

आँजुर (अंक वर्ष ३६, अंक ३) सोमदेव विशेष

गामघर (सौजन्य- रामभरोस कापड़ि "भ्रमर")

गामघर-३०-०८-२०१८

गामघर-०४-१०-२०१८

गामघर-१६-०५-२०१९

गामघर-२७-०६-२०१९

दूधमती- (नेपाली आ मैथिलीमे) (सौजन्य- सुजीत कुमार झा)

अंक ३१ अंक ३२ अंक ३३ अंक ३४ अंक 35 अंक 36 अंक 37 अंक 38 अंक 39 अंक 40 अंक 41

घर-बाहर (सौजन्य- चेतना समिति)

अप्रैल-जून २०११

रचना (सौजन्य- सुभाष चन्द्र यादव)

दिसम्बर "०५ मार्च "०६राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ

पल्लव (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

पल्लव- १ गजल अंक

पूर्वोत्तर मैथिल (सौजन्य- प्रेमकान्त चौधरी)

अप्रैल-जून 2010 जुलाइ-सितम्बर 2010 जनवरी सँ मार्च 2011 अप्रैल-जून २०११ जुलाइ-सितम्बर २०११

लालदास भावांजलि स्मारिका २०२२ (सौजन्य डॉ संजीव शमा)

....

किछु मैथिली पोथी डाउनलोड साइट (ओपन सोर्स)

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-IrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

Sahitya Akademi

प्रकाशन

डिजिटल-पोथी

CIIL

अखियासल (रमानन्द झा रमण)

जुआयल कनकनी- महेन्द्र

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस)

सृजन केर दीप पर्व- सं केदार कानन आ अरविन्द ठाकुर

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मोहन झा

Archive.Org (विजयदेव झा)

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Audio-Video Archive

IGNCA

Maithili English Dictionary

विज्ञान रत्नाकर

मिथिला दर्शन

तीरभुक्ति

OLE Nepal’s e-Pustakalaya

पोथीक लिंक

IGNCA-ASI (search keyword Mithila)

History of Navya-Nyaya in Mithila

Studies in Jainism and Buddism in Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

Cultural Heritage of Mithila

Mithila under the Karnatas

Temple Survey Project ASI- English आ Hindi

मैथिली साहित्य संस्थान

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अरिपन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली ऑडियो बुक्स

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

पोथी डॉट कॉम

I Love Mithila (पोथी डाउनलोड लिंक)

online maithili journal

owner I Love Mithila

प्यारे मैथिल चैनल- किरण चौधरी आ संगीता आनन्द

मिथिला चैप्टर

खिस्सा-पिहानी नेना भुटका लेल

जानकी एफ.एम समाचार

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

....

JNU

मैथिली

मैथिली लेक्सिकन

....

Videha e-Learning YouTube Channel

....

विदेह सम्मान: सम्मान-सूची (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उखड़ाहामे उनटा-पुनटा दियौ, ततबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीडिंग दोसर-उखड़ाहामे करथि|

IGNOU इग्नू *BMAF-001*

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

३. मैथिली ऑडियो-वीडियोक संकलन Maithili Audios-Videos

विदेह ऑडियो-वीडियो

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search for Audio-Video related information (including Print, Audio-Visual & Sign Language) relating to Mithila/ Maithili

https://books.google.com/

"Videha" Ist Maithili Fortnightly ejournal Archive of Audios-Videos 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऑडियो-वीडियो आर्काइव मैथिली ऑडियो-वीडियोक संकलन (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल)ऑडियो-वीडियो देखबाक लेल सबधित लिकर्कें क्लिक करू। For viewing audios-videos click the respective links.

....

मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक संस्कार, लोकगीत आ व्यवहार गीत (सौजन्य: उमेश मंडल)

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43

....

गुवाहाटी विद्यापति पर्व २०१०

पहिल भाग दोसर भाग तेसर भाग चारिम भाग पाँचम भाग

गुवाहाटी अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन आ विद्यापति पर्व २०११

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46

....

मैथिली फिल्म

ममता गाबय गीत (सौजन्य- Saregama)

कन्यादान (सौजन्य- BEJOD)

Maithili Movies on Rent

BEJOD

गामक घर

धुइन

चौबटिया (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

चौबटिया

सौभाग्य मिथिला

ललका पाग भाग-१

ललका पाग भाग-२

....

मिनाप-१

बुधियार छौड़ा आ राक्षस

मिनाप-२

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४

....

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

पं लक्ष्मीपति सिंह (सौजन्य रमानन्द झा "रमण")

हिन्दी-मैथिली-शिक्षक

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-IrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

प्यारे मैथिल चैनल- किरण चौधरी आ संगीता आनन्द

मिथिरंग लोक तरंग

मिथिला चैप्टर

खिस्सा-पिहानी नेना भुटका लेल

मिनाप

मैलोरंग

मिथिलांगन

भंगिमा

मैथिली रंगमंच

कोकिल मंच

मिथिला दर्शन

मिथिला मिरर

स्मृति एंटरटेनमेंट

BEJOD

अचल चित्र

नीलम मैथिली

मैथिली गंगा

मिथिला जंक्शन

मैथिली क्लास

मैथिली समाचार (जनता टेलीविजन)

मैथिली टॉक्स

अप्पन टी.वी.

टी.वी. टुडे, जनकपुर

दृश्यम मीडिया

संस्कार मिथिला

सारेगामा मैथिली

नवरस मीडिया

ज्योति एंटरटेनमेंट

इजोरिया फिल्म्स

अयोध्यानाथ चौधरी

रेडियो जनकपुर

मिथिला टी.वी.

मधुर मैथिली

मैथिली-नेपाली सीखू

अपन मैथिली

मैथिली पाठ

सुरेन्द्र राउत

मिथिलांचल

अमित झा

प्रवेश मल्लिक

आदित्य फिल्म्स एण्ड म्यूजिक

नेपाल टेलीविजन

आकाशवाणी मैथिली समाचार

आकाशवाणी अमृत महोत्सव

रश्मि दत्त

प्रिया मल्लिक

अनामिका झा

रफ कट्स, नचिकेता

कुञ्ज बिहारी

राम बाबू झा

वी. जे., विकास झा

तिरहुत मिथिला

आइ लव मिथिला

लोक कला केन्द्र

रजनी पल्लवी

पूनम मिश्र

रंजना झा

जूली झा

मैथिली ठाकुर

अनुपम मिश्र पॉडकास्ट एपीसोड ४० कीर्तिनाथ झा

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अरिपन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली ऑडियो बुक्स

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका)

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम तँ ठीक छी ने!)

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घर सभ)

https://bloomlibrary.org/player/dAzC0Fubt7 (की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?)

जानकी एफ.एम समाचार

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

I Love Mithila

online maithili journal

owner I Love Mithila

....

बृखेश चन्द्र लाल, जनकपुरक सौजन्यसँ

झिझिया

ढोल-पिपही

पवनकान्त झा (काश्यप कमल), भटसिमरि, मधुबनीक सौजन्यसँ

रसनचौकी

....

विद्यापति गीत

तूलिका

गीत-गोविन्ददास (गायन दीक्षा भारती)

गोविन्ददास-१

गोविन्ददास-२

गोविन्ददास-३

गोविन्ददास-४

गोविन्ददास-५

गोविन्ददास-६

....

मैथिली गजल (गजल- गजेन्द्र ठाकुर, गायन दीक्षा भारती)

बहरे मुतकारिब

गजल-२

गजल-३

गजल-४

....

७१म सगर राति दीप जरए (०२ अक्टूबर २०१०), गाम बेरमा , जिला मधुबनी (संयोजक- जगदीश प्रसाद मंडल)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५ भाग-६

82 म सगर राति दीप जरए, स्थान- गजेन्द्र ठाकुर जीक निज आवास, गाम- मेंहथ, जिला- मधुबनी। दिनांक- 31 मई 2014 (शनि दिन), समए- संध्या छह बजेसँ। गोष्ठीक नाओं- कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा सगर राति दीप जरए। आयोजनक खेप- ८२ म आयोजन, संयोजक- गजेन्द्र ठाकुर। विशेषता- बाल साहित्यपर केन्द्रित।

....

मैलोरंग-१ (सौजन्य- प्रकाश झा)

नचिकेताक एक छल राजा - भाग-1

नचिकेताक एक छल राजा - भाग- 2

काठक लोक- महेन्द्र मलंगिया भाग-1

काठक लोक- महेन्द्र मलंगिया भाग-2

मैलोरंग-२

कोसी सेमीनार 12 सितम्बर 2008 भाग-१

कोसी सेमीनार 12 सितम्बर 2008 भाग-२

....

मिथिलांगन

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

यू ट्यूब लिंक

विदेह मैथिली साहित्य/ नाट्य/ कविता/ परिचर्चा उत्सव

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान समारोह

जनकपुर- विद्यापति पर्व

जितेन्द्र झा, जनकपुर

रामभद्र

सामा चकेवा 1

सामा चकेवा 2

मैथिली कवि सम्मेलन (मिथिला कल्चरल ऑर्गेनाइजेशन, यू.के.)

रिपब्लिक डे 2009 (भारत)

सगर राति दीप जरए, कबिलपुर, जून २०१०

भाग-१ भाग-२

कृष्ण कुमार कश्यपसँ गजेन्द्र ठाकुर द्वारा लेल साक्षात्कार

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७

प्रबोध सम्मान: राजमोहन झा

(स्लाइडरकेँ बीचमे ल' जाउ, अदहाक बाद राजमोहन झासँ विनीत उत्पलक साक्षात्कार छन्हि।)

साहित्य अकादमी पुरस्कार: मन्त्रेश्वर झा

मिथिलाक खोज

1.गौरीशकर

भाग-१ भाग-२

2. बाइसी-बसैटी

वर्षकृत्य

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९ भाग-१०

समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटेट सेन्टर भारतीय भाषा महोत्सव

Samanvay 2-4 November 2012 IHC Indian Languages' Festival. Venue: India Habitat Centre, Lodhi Road, New Delhi -- 110 003.

3rd November 2012 Maithili- Love's Own Language/ Brahminism in Maithili/ Pre-Jyotirishwar Non-Brahmin Vidyapati

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९ भाग-१०

भाग-११ भाग-१२

2nd November 2012 Ugna Re- By Shovna Narayan (Pre-Jyotirishwar Non Brahmin Vidyapati's Life Episode)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८

७५म सगर राति दीप जरए मे मुन्नाजीक पहिल विहनि कथा पोस्टर प्रदर्शनी

मिथिलाक मूड़न- (रसनचौकीक स्वरक संग)

हृदयनारायण झा

भाग-१ भाग-२ भाग-३

रंजन चौधरी आ हनी मिश्र (तबला)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९

ललित रंग आ हनी मिश्र (तबला)

भाग-१ भाग-२ भाग-३

दीक्षा भारती

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४

सुषमा

बटगमनी

नन्द कुमार मिश्रक गजल पाठ

नन्द कुमार मिश्र जीक कविता पाठ

भाग-१ भाग-२

मैथिली- भोजपुरी अकादमी, नई दिल्ली

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

मैथिली- भोजपुरी अकादमी, नई दिल्ली सेमीनार 29 मार्च 2009

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९

मैथिली- भोजपुरी अकादमी, द्वारका, नई दिल्ली सेमीनार

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६

....

विदेह सम्मान: सम्मान-सूची (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उखड़ाहामे उनटा-पुनटा दियौ, ततबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीडिंग दोसर-उखड़ाहामे करथि|

IGNOU इग्नू BMAF-001

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

४.मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्य Maithili Children Literature

विदेह शिशु, बाल आ किशोर उत्सव

वि दे ह विदेह Videha विদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search for Children Literature (including Audio-Visual & Sign Language) relating to Mithila/ Maithili

https://books.google.com/

Videha Archive of Maithili Children Literature विदेह मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्यक आर्काइव (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल) सभ पोथी पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंक सभपर उपलब्ध अछि। All the books are available for pdf download at the respective links below

....

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

पं लक्ष्मीपति सिंह (सौजन्य रमानन्द झा "रमण")

हिन्दी-मैथिली-शिक्षक

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

विदेह मैथिली शिशु उत्सव

कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा (बाल साहित्य केन्द्रित) मेंहथमे भेल ८२ म सगर राति दीप जरयमे पठित कथा सभक संकलन

कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा

नेना भुटकाकेँ रातिमे सुनेबा लेल किछु लोककथा

भोला लाल दास (आर्काइव डौट कौम)

मैथिली सुबोध व्याकरण

डॉ. रमानन्द झा ’रमण’ (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

राजू आ टाकाक गाछ (अनुवाद)

योगेन्द्र पाठक "वियोगी" (सौजन्य- योगेन्द्र पाठक "वियोगी")

विज्ञानक बतकही

विज्ञानक बतकही भाग-२

नरक विजय (सम्पूर्ण)

नरक विजय (संशोधित)

हमर गाम (बाल उपन्यास)

पिरामिडक देशमे

रोबोट (अनूदित साइंस-फिक्शन नाटक)

रामलोचन ठाकुर (सौजन्य- रामलोचन ठाकुर)

मैथिली लोककथा

कीर्तिनाथ झा (सौजन्य- कीर्तिनाथ झा)

कुरल: मैथिली भावानुवाद

जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" (सौजन्य- जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल")

बाल कविता

मुन्नाजी

तीन टा बाल नाटक (मैथिली बाल साहित्य)

खुरलुच्ची (मैथिली बाल कविता- बाल साहित्य)

देवांशु वत्स

नताशा -मैथिली बाल चित्रशृंखला (कौमिक्स)

जगदानन्द झा "मनु" (सौजन्य- जगदानन्द झा "मनु")

चोनहा (बाल उपन्यास)

जगदीश प्रसाद मण्डल

तरेगन (बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह)

नै धाड़ैए (बाल उपन्यास)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' (सौजन्य- नन्द कुमार मिश्र 'नन्द')

स्वर्ण कमल (बाल उपन्यास)

बृषेश चन्द्र लाल (सौजन्य- बृषेश चन्द्र लाल)

ढोलक (बाल कविता संग्रह)

सुजीत कुमार झा (सौजन्य- सुजीत कुमार झा)

कोइली घूरि आउ (बाल लघु-विहनि कथा संग्रह)

डॉ. शशिधर कुमर

उड़ि ने सकी पर चिड़ै छी हम (भाग १-२) (पृ. १०५४-१०९५)

खिस्सा अण्टार्कटिका केर (पृ. १०५४-१०९५)

बाल कविता (पृ. ९९३-१२१५)

बाल कविता (पृ. १००४-११७३)

सचित्र बाल कविता (पृ. ७४७-८३४)

सचित्र बाल कविता (पृ. १४६८-१८५१)

डॉ शशिधर कुमर आ सुप्रिया बेबी कुमारी

भूकम्प (पृ. ६३८-६७४)
कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद रूपा धीरू आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि, बाल साहित्य) (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)
भगता बेङक देश-भ्रमण
अणिमा सिंह (सौजन्य- नचिकेता)
शिशु गीत खेल
कल्पना झा (सौजन्य- कल्पना झा)
नशामुक्ति हित गाबी गीत
निनियाँ
मुन्नी कामत (सौजन्य- मुन्नी कामत)
चुक्का (बाल कथा संग्रह)
प्रीति ठाकुर
गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा -पहिल मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)
मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)
मिथिलाक लोकदेवता (बाल साहित्य)
विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य)
रेस (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
ए बी सी डी- प्रकृति अक्षर पोथी (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
सभ खाइत अछि (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
बो म्याउ बाह (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
रङ सभ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
(०६) छोट आ पैघ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
(०७) माल-जाल आ जानवर दिस देखू (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(१७) हमर परिवार (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

जानवर (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

पोथी १३: १...२...३... (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बाजाक अबाज (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

नीतू कुमारी

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

नीता झा (सौजन्य- नीता झा)

बिलाइ मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)

किरण चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर बाल-वाड़ी

आर्या कॉकपिट मे

दीपा करमाकर- सही संतुलन मे

जंगल मे अहाँक स्वागत अछि

व्हेल छथि आकाश मे

भैया के मुस्कान के चोरौलक

बीज संचयक

अचंभित करय "फिबोनाची"

शौचालयक खिस्सा

लाल बरसाती

गुल्लीक जादुई पेटी

समीराक विकठ भोजन

विवाह मे जाई छी

प्रियंका झा (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर माँछ! नै हमर माँछ!

रश्मि प्रिया (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

कैयो सकै छी, नहियो कऽ सकै छी

सुनीता ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

बण्टी आ बबली

नीलिमा चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर सभसँ नीक संगी

स्वास्तिका ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

गप्पू बुते नाचल नै होइ छै

तूलिका (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमरा ओ चाही!

मधूलिका मिश्र (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

ओंघाइत भीमा

लक्ष्मी ठाकुर

जानवर सभ संगे भेँट-घाँट

पूनम मण्डल

सुतै कालक खिस्सा

गजेन्द्र ठाकुर

बाल साहित्य (मूल)- गजेन्द्र ठाकुर

बाल मण्डली/ किशोर जगत (बाल नाटक, लघुकथा, कविता आदि)

Learn Mithilakshar Script

जलोदीप (बाल-नाटक संग्रह)

अक्षरमुष्टिका (बाल-लघुकथा संग्रह)

बाङक बड़ौरा (बाल-पद्य संग्रह)

भऽ जाएब छू *(मैथिलीक २०१२ मे प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन प्ले- Maithili's first climate-fiction play originally published in 2012)*

कमलाक भगता

तरहरिमे परीलोक

बेसी छुट्टी कम इसकूल

बड़द करैए दाउन ने यौ

बाल गजल

फिनिश लाइन

बाल साहित्य (अनुवाद- द्विभाषिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गजेन्द्र ठाकुर

मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका

सुनू

घर सभ

एकटा नीक दिन

चलू हम तँ ठीक छी ने!

की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?

टोस्ट

बड़ीटा! कनियेटा!

एतऽ हम सभ रहै छी

भारतोल्लक राजकुमारी

भारतोल्लक राजकुमारी (बिनु शब्दक)

वुयो

कच-कच कचाक

चुन्नू-मुन्नूक नहेनाइ

नेना जे बैलूनसँ डेराइत छल

अद्भुत फिबोनाची अंक-शृंखला

हारू

अखन नै, अखन नै!

जन्मदिनक उत्सव भोज

मोट राजा पातर-दुब्बड़ कुकुड़

बचिया जे अपन हँसी नै रोकि सकैत छलि

अंग्रेजी

हम सूंघि सकै छी

छोट लाल-टुहटुह डोरी

करू नीक, भोगू नीक

ई सभटा बिलाड़िक दोख अछि!

चोभा आम!

हमर टोलक बाट

जखन इकड़ू स्कूल गेल

माछी फेर आउ टाटा!

अमाचीक जुलुम मशीन सभ

टिंग टोंग

पाउ-म्याऊ-वाह

कुकुड़क एकटा दिन

हमरा नीक लगैए

रीताक नव-स्कूलमे पहिल दिन

कनी हँसियौ ने!

लाल बरसाती

भूत-प्रेतक नाट्यशाला

आउ पएर गानी

कतऽ अछि ई अंक ५?

विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग रीड-अलाउड ऑडियो बुक

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका)

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम तँ ठीक छी ने!)

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घर सभ)

https://bloomlibrary.org/player/dAzC0Fubt7 (की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?)

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]

विदेह: सदेह ९ तिरहुता

गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा (सम्पादन)

English-Maithili Computer Dictionary

डॉ. कमला चौधरी (सौजन्य- कमला चौधरी)

मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८

डॉ योगानन्द झा (सौजन्य- योगानन्द झा)

मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली २००९

डॉ. ललिता झा (सौजन्य- ललिता झा)

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११

गोविंद झा ((IGNCA Site आर्काइव)

Maithili-English Dictionary

रामदेव झा (सौजन्य- शंकरदेव झा)

मैथिली शब्द संचय

....

किछु मैथिली पोथी डाउनलोड साइट (ओपन सोर्स)

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Audio-Video Archive

विज्ञान रत्नाकर

OLE Nepal's e-Pustakalaya

पोथीक लिंक

IGNCA-ASI (search keyword Mithila)

History of Navya-Nyaya in Mithila

Studies in Jainism and Buddism in Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

Cultural Heritage of Mithila

Mithila under the Karnatas

Temple Survey Project ASI- English आ Hindi

मैथिली साहित्य संस्थान

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अरिपन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली ऑडियो बुक्स

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

पोथी डॉट कॉम

खिस्सा-पिहानी नेना भुटका लेल

जानकी एफ.एम समाचार

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

....

विदेह सम्मान: सम्मान-सूची (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उखड़ाहामे उनटा-पुनटा दियौ, ततबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीडिंग दोसर-उखड़ाहामे करथि|

IGNOU इग्नू   *BMAF-001*

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur,

sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

५.विदेह स्त्री कोना

विदेह स्त्री कोना

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search for Works (including Audio-Visual & Sign Language) relating to Mithila/ Maithili by Female Writers/ Artists

https://books.google.com/

(पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल) सभ पोथी पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंक सभपर उपलब्ध अछि। All the books are available for pdf download at the respective links below.

....

सखुआवाली (नारी विमर्श केन्द्रित) भपटियाहीमे भेल ८३ म सगर राति दीप जरयमे पठित कथा सभक संकलन

सखुआवाली

अणिमा सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

शिशु गीत खेल

इलारानी सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

प्रेम- एक कविता (अनूदित नाटक)

अरुन्धती देवी (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मिथिलाक विदुषी महिला

डॉ. कमला चौधरी (सौजन्य- कमला चौधरी)

मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८

समय-संकेत (कथा-संग्रह) २०१०

डॉ. ललिता झा (सौजन्य- ललिता झा)

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११

सुस्मिता पाठक (सौजन्य- केदार कानन)

परिचिति (कविता संग्रह)

कनोजड़ि (कथा संग्रह)

नन्दिनी पाठक (सौजन्य- केदार कानन)

पाथरक शहर (कविता संग्रह)

पन्ना झा (सौजन्य- नरेन्द्र झा)

अनुभूति (लघुकथा संग्रह)

कल्पना झा (सौजन्य- कल्पना झा)

गोसाउनिक गीत

नशामुक्ति हित गाबी गीत

निनियाँ

यायावरी- शेफालिका वर्मा (हिन्दी अनुवाद कल्पना झा)

मुन्नी कामत (सौजन्य- मुन्नी कामत)

सुखल मन तरसल आँखि (पद्य आ गद्य)

सुखल मन तरसल आँखि (कविता)

अंततः (कविता संग्रह)

चुक्का (बाल कथा संग्रह)

नीता झा (सौजन्य- नीता झा)

बिलाइ मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)

शेफालिका वर्मा (सौजन्य- शेफालिका वर्मा)

यायावरी (यात्रावृत्तान्त)

यायावरी (हिन्दी अनुवाद- कल्पना झा)

अर्थयुग (लघुकथा संग्रह)

एकटा अकास (लघुकथा संग्रह)

भावांजलि (गद्य गीत)

किस्त-किस्त जीवन (आत्म कथा)

आखर-आखर प्रीत

नागफांस (उपन्यास)

Naagphans (In English)

विभा रानी

विभा रानीक दूटा नाटक (भाग रौ आ बलचन्दा)

सुशीला झा (सौजन्य- प्रभा खेतान/ सुशीला झा)

छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक मैथिली अनुवाद

कुसुम ठाकुर

प्रत्यावर्तन (आत्मकथा)(पृ. ४५९-५७२)

डॉ. कामिनी कामायनी

विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३५० सँ)

प्रीति ठाकुर

गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा -पहिल मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मिथिलाक लोकदेवता (बाल साहित्य)

विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य)

रेस (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

ए बी सी डी- प्रकृति अक्षर पोथी (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

सभ खाइत अछि (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बो म्याउ बाह (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

रङ सभ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०६) छोट आ पैघ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०७) माल-जाल आ जानवर दिस देखू (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(१७) हमर परिवार (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

जानवर (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

पोथी १३: १...२...३... (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बाजाक अबाज (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

पंजी (११००० मूल मिथिलाक्षर ताड़पत्र)
11000 PALM LEAF PANJI INSCRIPTIONS (VOLUME I TO XXII) Compiled, Scanned & Catalogued by Preeti Thakur

गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर (समालोचना)

नीतू कुमारी

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

किरण चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर बाल-वाड़ी

आर्या कॉकपिट मे

दीपा करमाकर- सही संतुलन मे

जंगल मे अहाँक स्वागत अछि

व्हेल छथि आकाश मे

भैया के मुस्कान के चोरौलक

बीज संचयक

अचंभित करय "फिबोनाची"

शौचालयक खिस्सा

लाल बरसाती

गुल्लीक जादुई पेटी

समीराक विकठ भोजन

विवाह मे जाई छी

प्रियंका झा (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर माँछ! नै हमर माँछ!

रश्मि प्रिया (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

कैयो सकै छी, नहियो कऽ सकै छी

सुनीता ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

बण्टी आ बबली

नीलिमा चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर सभसँ नीक संगी

स्वास्तिका ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

गप्पू बुते नाचल नै होइ छै

तूलिका (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमरा ओ चाही!

मधूलिका मिश्र (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

ओंघाइत भीमा

लक्ष्मी ठाकुर

जानवर सभ संगे भेँट-घाँट

पूनम मण्डल

सुतै कालक खिस्सा

कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद रूपा धीरू आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि, बाल साहित्य) (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

भगता बेङक देश-भ्रमण

डॉ शशिधर कुमर आ सुप्रिया बेबी कुमारी

भूकम्प (पृ. ६३८-६७४)

....

लेखकक आमंत्रित रचना आ ओइपर आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीज

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

३. मुन्नी कामतक एकांकी "जिन्दगीक मोल" आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_354

पसुपुलेटी गीता

एडिटर्स चोइस सीरीज-१

मीना झा

एडिटर्स चोइस सीरीज-२

जगदीश चन्द्र ठाकुर (३ टा बाल कविता जइमे २ टा कविता बेबी चाइल्डपर)

एडिटर्स चोइस सीरीज-३

....

विद्यापति गीत

तूलिका

गीत-गोविन्ददास (गायन दीक्षा भारती)

गोविन्ददास-१

गोविन्ददास-२

गोविन्ददास-३

गोविन्ददास-४

गोविन्ददास-५

गोविन्ददास-६

मैथिली गजल (गजल- गजेन्द्र ठाकुर, गायन दीक्षा भारती)

बहरे मुतकारिब

गजल-२

गजल-३

गजल-४

प्यारे मैथिल चैनल- किरण चौधरी आ संगीता आनन्द

सौम्या झा

रश्मि दत्त

प्रिया मल्लिक

अनामिका झा

रजनी पल्लवी

पूनम मिश्र

रंजना झा

जूली झा

दीपशिखा झा

मैथिली ठाकुर

अनुपम मिश्र पॉडकास्ट

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

६. विदेह ई-लर्निङ्ग

विदेह ई-लर्निङ्ग

[संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामिग्री] [एन.टी.ए.- यू.जी.सी.-नेट-मैथिली लेल सेहो]

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उखड़ाहामे उनटा-पुनटा दियौ, ततबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी.क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी

मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीडिंग दोसर-उखड़ाहामे करथि|

IGNOU इग्नू BMAF-001

....

Maithili (Compulsory & Optional)

UPSC Maithili Optional Syllabus

BPSC Maithili Optional Syllabus

मैथिली प्रश्नपत्र- यू.पी.एस.सी. (ऐच्छिक)

मैथिली प्रश्नपत्र- यू.पी.एस.सी. (अनिवार्य)

मैथिली प्रश्नपत्र- बी.पी.एस.सी.(ऐच्छिक)

....

यू. पी. एस. सी. (मेन्स) ऑप्शनल: मैथिली साहित्य विषयक टेस्ट सीरीज

यू.पी.एस.सी. क प्रिलिमिनरी परीक्षा सम्पन्न भऽ गेल अछि। जे परीक्षार्थी एहि परीक्षामे उत्तीर्ण करताह आ जँ मेन्समे हुनकर ऑप्शनल विषय मैथिली साहित्य हेतन्हि तँ ओ एहि टेस्ट-सीरीजमे सम्मिलित भऽ सकैत छथि। टेस्ट सीरीजक प्रारम्भ प्रिलिम्सक रिजल्टक तत्काल बाद होयत। टेस्ट-सीरीजक उत्तर विद्यार्थी स्कैन कऽ editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकैत छथि, जँ मेलसँ पठेबामे असोकर्ज होइन्हि तँ ओ हमर ह्वाट्सएप नम्बर

9560960721 पर सेहो प्रश्नोत्तर पठा सकैत छथि। संगमे ओ अपन प्रिलिम्सक एडमिट कार्डक स्कैन कएल कॉपी सेहो वेरीफिकेशन लेल पठाबथि। परीक्षामे सभ प्रश्नक उत्तर नहि देमय पड़ैत छैक मुदा जँ टेस्ट सीरीजमे विद्यार्थी सभ प्रश्नक उत्तर देताह तँ हुनका लेल श्रेयस्कर रहतन्हि। विदेहक सभ स्कीम जेकाँ ईहो पूर्णतः निःशुल्क अछि।- गजेन्द्र ठाकुर

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज (मुख्य) परीक्षा, मैथिली (ऐच्छिक) लेल टेस्ट सीरीज/ प्रश्न-पत्र- १ आ २

Test Series-1- गजेन्द्र ठाकुर

Test Series-2- गजेन्द्र ठाकुर

....

NTA-UGC/ UPSC/ BPSC Maithili Optional- गजेन्द्र ठाकुर

मैथिली समीक्षाशास्त्र
मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)
मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुप्रयोग)
मैथिली प्रतियोगिता

[Place of Maithili in Indo-European Language Family/ Origin and development of Maithili language (Sanskrit, Prakrit, Avhatt, Maithili) भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान/ मैथिली भाषाक उद्भव ओ विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)]

(Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)

(ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददास सिलेबसमे छथि आ रसमय कवि चतुर चतुरभुज विद्यापति कालीन कवि छथि। एतय समीक्षा शृंखलाक प्रारम्भ करबासँ पूर्व चारू गोटेक शब्दावली नव शब्दक पर्याय संग देल जा रहल अछि। नव आ पुरान शब्दावलीक ज्ञानसँ ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददासक प्रश्नोत्तरमे धार आओत, संगहि शब्दकोष बढ़लासँ खाँटी मैथिलीमे प्रश्नोत्तर लिखबामे धाख आस्ते-आस्ते खतम होयत, लेखनीमे प्रवाह आयत आ सुच्चा भावक अभिव्यक्ति भय सकत।)

(बद्रीनाथ झा शब्दावली आ मिथिलाक कृषि-मत्स्य शब्दावली)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- विद्यापति)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- पद्य समीक्षा- बानगी)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोक गाथा नृत्य नाटक संगीत)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- यात्री)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली रामायण)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली उपन्यास)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- शब्द विचार)

(तिरहुता लिपिक उद्भव ओ विकास)

अनुलग्नक-१-२-३ अनुलग्नक- ४-५

(मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध (बांग्ला, असमिया आ ओड़िया) [यू.पी.एस.सी. सिलेबस, पत्र-१, भाग-'ए', क्रम-५])

[मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली- बिहार लोक सेवा आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल]

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली

बांग्ला

असमिया

ओड़िया

हिन्दी

उर्दू

नेपाली

संस्कृत

संथाली

NTA_UGC_NET_Maithili_01

NTA_UGC_NET_Maithili_02

GS (Pre)

Topic 1

....

यू.पी.एस.सी. आ आन प्रतियोगिता परीक्षा लेल देखू:

विदेह:सदेह १७	विदेह:सदेह २१	विदेह:सदेह २३	विदेह:सदेह २६	विदेह:सदेह २९
विदेह:सदेह ३०	विदेह:सदेह ३२	विदेह:सदेह ३३	विदेह:सदेह ३४	विदेह:सदेह ३५

....

General Studies

NCERT-Environment Class XI-XII

NCERT PDF I-XII

Sansad TV

http://prasarbharati.gov.in/

http://newsonair.com/

………………..

Other Optionals

IGNOU eGyankosh

………………..

पेटार (रिसोर्स सेन्टर)

………………

मैथिली मुहावरा एवम् लोकोक्ति प्रकाश- रमानाथ मिश्र मिहिर (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

डॉ. कमला चौधरी-मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

डॉ योगानन्द झा- मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

डॉ. ललिता झा- मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

मैथिली शब्द संचय- डॉ श्रीरामदेव झा (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

दत्त-वतीक वस्तु कौशल- डॉ. श्रीरामदेवझा

परिचय निचय- डॊ शैलेन्द्र मोहन झा

English Maithili Computer Dictionary (Complete)- Gajendra Thakur

Maithili English Dictionary- गोविंद झा

अणिमा सिंह -शिशु गीत खेल

आनन्द मिश्र (सौजन्य श्री रमानन्द झा 'रमण')- मिथिला भाषाक सुबोध व्याकरण

मैथिली सुबोध व्याकरण- भोला लाल दास

राधाकृष्ण चौधरी- A Survey of Maithili Literature

राधाकृष्ण चौधरी- मिथिलाक इतिहास

जयकान्त मिश्र- A History of Maithili Literature Vol. I

राजेश्वर झा- मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास (मैथिली साहित्य संस्थान आर्काइव) (यू.पी.एस.सी. सिलेबस)

दत्त-वती (मूल)- श्री सुरेन्द्र झा सुमन (यू.पी.एस.सी. सिलेबस)

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस) CIIL Site

सुभाष चन्द्र यादव-राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ

शिव कुमार झा 'टिल्लू' अंशु-समालोचना

डॉ बचेश्वर झा- निवन्ध-निकुञ्ज

डॉ. देवशंकर नवीन- आधुनिक साहित्यक परिदृश्य

प्रेमशंकर सिंह- मैथिली भाषा साहित्य:बीसम शताब्दी (आलोचना)

डॉ. रमानन्द झा 'रमण'

हिआओल

अखियासल CIIL Site

दुर्गानन्द मण्डल-चक्षु

फेर एहि मनलग्गू फाइल सभकेँ सेहो पढ़ू:-

रामलोचन ठाकुर- मैथिली लोककथा

कुमार पवन (साभार अंतिका)

पइठ (मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कथा)

डायरीक खाली पन्ना

केदारनाथ चौधरी

अबारा नहितन	चमेलीरानी	माहुर	करार	अयना	हीना

डॉ. रमण झा

भिन्न-अभिन्न	मैथिली काव्यमे अलङ्कार	अलङ्कार-भास्कर	मैथिली काव्यमे ज्योतिष	अहिरावण-वध	पारिजात-मञ्जरी

योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

विज्ञानक बतकही	विज्ञानक बतकही भाग-२	अकटा मिसिया (कथा संग्रह)
नरक विजय (सम्पूर्ण)	नरक विजय (संशोधित)	किछु तीत मधुर (यात्रा वृत्तांत)
हमर गाम	पिरामिडक देशमे	रोबोट (अनूदित साइंस-फिक्शन नाटक)

अनूदित साहित्य (आन भाषासँ)- गजेन्द्र ठाकुर

विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)

बाल साहित्य (अनुवाद- द्विभाषिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गजेन्द्र ठाकुर

मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका

शेष ४० टा बाल चित्र-पोथी नीचाँक लिंकपर:-

सुनू	घर सभ	एकटा नीक दिन	चलू हम तँ ठीक छी ने!	की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?
टोस्ट	बडीटा! कनियेटा!	एतऽ हम सभ रहै छी	भारतोल्लक राजकुमारी	भारतोल्लक राजकुमारी (बिनु शब्दक)
वुयो	कच-कच कचाक	चुन्नू-मुन्नूक नहेनाइ	नेना जे बैलूनसँ डेराइत छल	अद्भुत फिबोनाची अंक-शृंखला
हारू	अखन नै, अखन नै!	जन्मदिनक उत्सव भोज	मोट राजा पातर-दुब्बड़ कुकुड़	बचिया जे अपन हँसी नै रोकि सकैत छलि
अंग्रेजी	हम सूंघि सकै छी	छोट लाल-टुहटुह डोरी	करू नीक, भोगू नीक	ई सभटा बिलाड़िक दोख अछि!
चोभा आम!	हमर टोलक बाट	जखन इकडू स्कूल गेल	माछी फेर आउ टाटा!	अमाचीक जुलुम मशीन सभ
टिंग टोंग	पाउ-म्याऊ-वाह	कुकुड़क एकटा दिन	हमरा नीक लगैए	रीताक नव-स्कूलमे पहिल दिन
कनी हँसियौ ने!	लाल बरसाती	भूत-प्रेतक नाट्यशाला	आउ पएर गानी	कतऽ अछि ई अंक ५?

विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग रीड-अलाउड ऑडियो बुक

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका)

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम तँ ठीक छी ने!)

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घर सभ)

https://bloomlibrary.org/player/dAzC0Fubt7 (की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?)

....

किछु मैथिली पोथी डाउनलोड साइट (ओपन सोर्स)

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

पं लक्ष्मीपति सिंह (सौजन्य रमानन्द झा "रमण")

हिन्दी-मैथिली-शिक्षक

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-IrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

Sahitya Akademi

प्रकाशन

डिजिटल-पोथी

CIIL

अखियासल (रमानन्द झा रमण)

जुआयल कनकनी- महेन्द्र

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस)

सृजन केर दीप पर्व- सं केदार कानन आ अरविन्द ठाकुर

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मोहन झा

Archive.Org (विजयदेव झा)

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Audio-Video Archive

IGNCA

Maithili English Dictionary

विज्ञान रत्नाकर

मिथिला दर्शन

तीरभुक्ति

OLE Nepal’s e-Pustakalaya

पोथीक लिंक

IGNCA-ASI (search keyword Mithila)

History of Navya-Nyaya in Mithila

Studies in Jainism and Buddism in Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

Cultural Heritage of Mithila

Mithila under the Karnatas

Temple Survey Project ASI- English आ Hindi

मैथिली साहित्य संस्थान

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अरिपन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली ऑडियो बुक्स

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

पोथी डॉट कॉम

I Love Mithila (पोथी डाउनलोड लिंक)

online maithili journal

owner I Love Mithila

प्यारे मैथिल चैनल- किरण चौधरी आ संगीता आनन्द

मिथिला चैप्टर

खिस्सा-पिहानी नेना भुटका लेल

जानकी एफ.एम समाचार

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

आकाशवाणी मैथिली समाचार

आकाशवाणी अमृत महोत्सव

सुरेन्द्र राउत

....

JNU

मैथिली

मैथिली लेक्सिकन

....

Videha e-Learning YouTube Channel

....

विदेह सम्मान: सम्मान-सूची (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

....

Maithili eBooks/ eJournals/ Audios-Videos can be downloaded from: Maithili eBOOKS/ eJournals/ Audios-Videos

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

७.विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण (including Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement)

विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण (including Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement)

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search for Information relating to Mithila/ Maithili

https://books.google.com/

सूचना

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.

- Robert Louis Stevenson

....

Videha: Maithili Literature Movement

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes

articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

१

"विदेहक जीवित लेखक-सम्पादक, आन्दोलनी, सार्वजनिक जीवन जीनिहार, कला-संगीत-रंगमंचकर्मी आ रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखला"

विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक

स्वतंत्रचेता- अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (सम्पादक आशीष अनचिन्हार) [विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांकक प्रिण्ट रूप]

विदेह जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

विदेह रामलोचन ठाकुर विशेषांक

विदेह राजनन्दन लाल दास विशेषांक

विदेह रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

विदेह केदार नाथ चौधरी विशेषांक

विदेह प्रेमलता मिश्र प्रेम विशेषांक

विदेह शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

विदेह कला-विमर्श विशेषांक (सन्दर्भ- संजू दास, कृष्ण कुमार कश्यप, शशिबाला, एस.सी.सुमन आ श्वेता झा चौधरी)

विदेह रचनाकार अशोक विशेषांक

विदेह राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक

विदेह अपन जीवित लेखक-सम्पादक, आन्दोलनी, सार्वजनिक जीवन जीनिहार, रंगमंचकर्मी आ रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखलाक अन्तर्गत (१)अरविन्द ठाकुर, (२)जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, (३)रामलोचन ठाकुर, (४) राजनन्दन लाल दास, (५)रवीन्द्र नाथ ठाकुर, (६) केदार नाथ चौधरी, (७) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', (८) शरदिन्दु चौधरी, (९) रचनाकार अशोक आ (१०) राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक निकालने अछि। ऐ १० मे सँ रामलोचन ठाकुर, राजनन्दन लाल दास आ रवीन्द्र नाथ ठाकुर आब हमरा सभक बीच नै छथि। शेष ७ गोटे माने(१)अरविन्द ठाकुर, (२)जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, (३) केदार नाथ चौधरी, (४) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', (५) शरदिन्दु चौधरी, (६) रचनाकार अशोक आ (७) राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' केर स्टेटस विदेहमे 'लाइफटाइम फेलो' सन रहत। ओ अपन नव रचना (कथा, कविता बा कथेतर गद्य-पद्य) बा नव पोथी बा नव प्रोडक्शन [रंगमंच, सड़क नाटक बा अन्य कोनो (ऑडियो-विजुअल सहित)] जे विशेषांक निकललाक बादक हुअय बा विदेहपर नै हुअय पठा सकै छथि। ओकर हम समीक्षा सहित ई-प्रकाशन करब आ ओइपर पाठक, स्रोता, द्रष्टाक मध्य सम्वादक प्रारम्भ लेल प्रस्तुत करब।

"विदेहक जीवित लेखक-सम्पादक, आन्दोलनी, सार्वजनिक जीवन जीनिहार, कला-संगीत-रंगमंचकर्मी आ रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखला" क चयन प्रक्रियाक विधि निम्न प्रकारसँ अछि।

निअम:

१) लगभग पाँच-छह मास पहिनेसँ विदेह अपन पाठककेँ सुझाव देबा लेल लेल सूचना दैत अछि।

२) आएल सुझावमेसँ विदेह मात्र जीवित लोकक चयन करैत अछि।

३) ऐ सभ लोकक लेखन/ काज एवं आचरणक साम्यता देखल जाइत अछि। जिनकर लेखन/ काज ओ आचरणमे बेसी साम्यता (कम फाँक) भेटैए तेहन छह टा नाम चयनित होइत अछि।

४) छह नाम एलापर ई तुलना कएल जाइत छै जे ई छहो गोटेकेँ लेखन/ काजक एवजमे समाजसँ की भेटलनि।

५) जिनका सभसँ कम भेटल बुझाइत अछि तइ तीन लोककेँ अगिला चरण लेल राखि लेल जाइत अछि।

६) ऐ तीन चयनित जीवित लोकक रचना, काज आ उद्देश्य आदिक बीचमे परस्पर तुलना कएल जाइत अछि।

७) अंतिम रूपसँ विदेह द्वारा एकटा नाम चुनि सालक अंतमे घोषणा कएल जाइत अछि आ नियत समयपर ई विशेषांक निकालबाक प्रयास कएल जाइत अछि।

प्रश्न उठि सकैए जे की ऊपरका निअम एहन छै जइमे अंतिम रूपसँ सभ सुयोग्य जीवित लोक केर चयन समयपर भ़ऽ जेतनि? तऽ एकर उत्तर छै नै। विदेहक पाठक लग सेहो अपन सीमा छनि। मुदा अही सीमाक संगे हमरा सभकेँ अपन बेस्ट देबाक अछि आ मैथिली लेल एकटा एहन रस्ता

बना देबाक छै जइसँ आबय बला ५००-६०० बर्खक साहित्य विदेहक लीकसँ प्रेरणा पाबय।

अही विचारक संग विदेह ओहन संस्था, पत्रिका, लेखक, कलाकार, स्वयंसेवी बा सार्वजनिक जीवन जीनिहारपर अपन धेआन सेहो केंद्रित कऽ रहल अछि जे सुयोग्य छथि मुदा जिनकापर विदेहक विशेषांक कोनो कारणवश नै प्रकाशित भऽ सकल। एकर नाम भेल विदेहक "नित नवल सिरीज", जकर विवरण नीचाँ "नित नवल सिरीज"मे देल जा रहल अछि।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

२

"विदेह द्वारा एक बेरमे कोनो एकटा जीवित संस्था, पत्रिका बा संस्था-पोथी-पत्रिकासँ जुड़ल स्वयंसेवीक समग्र मूल्याकंन शृंखला"

विदेह अंक ३७१ (०१ जून २०२३) "मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम.एस.यू.)" विशेषांक

निअम:

१) संस्था कैटेगरी- संस्थाक काज माला आदि पहिरेनाइ, पत्रिका-स्मारिका आदि छपेनाइ, जे मात्र रेकॉर्ड बनेबाले हुअय, नै हुअय। संस्था द्वारा जातिवादी कट्टरता नै बढ़ाओल जेबाक शर्त रहत, संस्था पॉकेट संस्था नै हेबाक चाही आ जीवित हेबाक चाही।

२) संस्था-पोथी-पत्रिकासँ जुड़ल स्वयंसेवी कैटेगरी- लेखक-प्रकाशकसँ इतर आन जे लोक पोथी-पत्रिका केर बिक्री कऽ अपन जीवय-यापनक संग मैथिलीक प्रचारमे सहायक छथि, संगमे संस्था (रंगमंच संस्था सहित) सभसँ सम्बन्धित स्वयंसेवी, तिनको मूल्यांकन विदेह विशेषांक निकालि कऽ करत।

३) पत्रिका कैटेगरी- मैथिलीक कोनो पत्रिकाक ऊपर विदेह विशेषांक प्रकाशित करत। मुदा ऐलेल ओइ पत्रिकाक सभ अंक विदेहपर डाउनलोड लेल ओइ पत्रिकाक संपादक बा कॉपीराइट धारक देता, से शर्त अछि।

चयन प्रक्रियाक निअम "विदेहक जीवित लेखक-सम्पादक, आन्दोलनी, सार्वजनिक जीवन जीनिहार, कला-संगीत-रंगमंचकर्मी आ रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखला"क चयन प्रक्रियाक निअम सन रहत।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

३

"विदेह मोनोग्राफ" शृंखला

विदेह अपन जीवित लेखक-सम्पादक, आन्दोलनी, सार्वजनिक जीवन जीनिहार, रंगमंचकर्मी आ रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखलाक अन्तर्गत (१)अरविन्द ठाकुर, (२)जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, (३)रामलोचन ठाकुर, (४) राजनन्दन लाल दास, (५)रवीन्द्र नाथ ठाकुर, (६) केदार नाथ चौधरी, (७) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', (८) शरदिन्दु चौधरी, (९) रचनाकार अशोक आ (१०) राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक निकालने अछि।

अही सन्दर्भमे हिनका सभपर "विदेह मोनोग्राफ" शृंखला अन्तर्गत "मोनोग्राफ" आमंत्रित कयल जा रहल अछि।
"विदेह मोनोग्राफ" शृंखलाक विवरण निम्न प्रकार अछि:
(१) इच्छुक लेखक ऊपरमे कोनो एक गोटेपर अपन मोनोग्राफ लिखबाक इच्छा editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकै छथि।
(२) विदेह लेखकक नाम मोनोग्राफ लिखबाक लेल चयनित कऽ ओकर सार्वजनिक घोषणा करत।
"विदेह मोनोग्राफ" लिखबाक निअम:
(१) मोनोग्राफ पूर्ण रूपेँ सम्बन्धित लोकपर केन्द्रित हुअय। साहित्य अकादेमी, एन.बी.टी. आ किछु व्यक्तिगत रूपेँ लिखल मोनोग्राफ/ बायोग्राफीमे लेखक संस्मरण आ व्यक्तिगत प्रसंग जोड़ि कय सम्बन्धित लोकक बहन्ने अपन-आत्म-प्रशंसा लिखै छथि। "विदेह मोनोग्राफ" फीफा वर्ल्ड कप फुटबाल सन रहत। फीफा वर्ल्ड कप फुटबाल एहेन एकमात्र टूर्नामेण्ट अछि जतय कोनो "ओपेनिंग" बा "क्लोजिंग" सेरीमनी अलगसँ नै होइ छै, पहिल आ अन्तिम मैचक सङे होइ छै आ तकर कारण छै जे अलगसँ कएल "ओपेनिंग" बा "क्लोजिंग" मे टूर्नामेण्टमे नै खेला रहल लोक मुख्य अतिथि/ अतिथि होइ छथि आ फोकस खिलाड़ी सँ दूर चलि जाइ छै। फीफा मात्र आ मात्र फुटबाल खिलाड़ीपर केन्द्रित रहैत अछि से ओकर टूर्नामेण्ट "ओपेनिंग सेरीमनी" नै वरन् सोझे "ओपेनिंग मैच" सँ आरम्भ होइत अछि आ ओकर समापन "क्लोजिंग सेरीमनी"सँ नै वरन् "फाइनल मैच आ ट्राफी"सँ खतम होइत अछि आ फोकस मात्र आ मात्र खिलाड़ी रहैत छथि। तहिना "विदेह मोनोग्राफ" मात्र आ मात्र सम्बन्धित लोकपर केन्द्रित रहत आ कोनो संस्मरण आदि जोड़ि कऽ फोकस अपनापर केन्द्रित करबाक अनुमति नै रहत।

(२) मोनोग्राफ लेल "विदेह पेटार"मे उपलब्ध सामग्रीक सन्दर्भ सहित उपयोग कएल जा सकैए।
(३) विदेहमे ई-प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादक 'विदेह' ई-पत्रिकामे प्रकाशित रचनाक प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनूदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ ई-पत्रिकामे कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै।
(४) "विदेह मोनोग्राफ"क फॉर्मेट: सम्बन्धित लोकक परिचय (सम्बन्धित लोकक जन्म, निवास-स्थान आ कार्यस्थलक भौगोलिक-सांस्कृतिक विवेचना सहित) आ रचना/ काजक विवरण (समीक्षा सहित)।

घोषणा: "विदेह मोनोग्राफ" शृंखला अन्तर्गत (१) राजनन्दन लाल दास जी पर मोनोग्राफ निर्मला कर्ण, (२) रवीन्द्र नाथ ठाकुर पर मुन्नी कामत आ (३) केदार नाथ चौधरी पर प्रेम मोहन मिश्र द्वारा लिखल जायत। शेष ७ गोटेपर निर्णय शीघ्र कएल जायत।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४ (१)
विदेहक "नित नवल सिरीज"

विदेह द्वारा जे विशेषांक प्रकाशित होइ छै तकर संगे विदेह ओहन संस्था, पत्रिका, लेखक, कलाकार, स्वयंसेवी बा सार्वजनिक जीवन जीनिहारपर अपन धेआन सेहो केंद्रित करत जिनकापर विदेहक विशेषांक कोनो

कारणवश नै प्रकाशित भऽ सकल। एकर प्रक्रिया आ कार्यान्वयनक विवरण एना अछि।

निअम आ कार्यान्वयन:

१) हम एकटा कोनो संस्था, पत्रिका, लेखक, कलाकार, स्वयंसेवी बा सार्वजनिक जीवन जीनिहारपर समग्र आलोचना करब जकर भाषा मैथिली अथवा अंग्रेजी रहत। ऐ पोथीक पहिल रूप ई-बुक केर रूपमे ऐत आ प्रयास रहत जे एकर प्रिंट सेहो आबय जे परिस्थितिपर निर्भर करत।

२) ऐ शृंखलामे:-

(i) सुभाष चंद्र यादवपर केंद्रित "नित नवल सुभाष चंद्र यादव",

(ii) राजदेव मंडलपर केंद्रित "Rajdeo Mandal- Maithili Writer" आ

(iii) जगदीश प्रसाद मण्डल केन्द्रित "Jagdish Prasad Mandal-Maithili Writer" प्रकाशित भेल अछि।

पहिल दुनू पोथीक लोकार्पण ३१ दिसम्बर २०२२ कें १११म सगर राति दीप जरय मे कएल गेल। तेसर पोथीक लोकार्पण २५ मार्च २०२३ कें ११२ म सगर राति दीप जरय मे कएल गेल।

(iv) "नित नवल दिनेश कुमार मिश्र" आ

(v) "नित नवल सुशील" जारी अछि।

आगाँक घोषणा लेल http://videha.co.in/investigation.htm देखैत रही।

पूर्वपीठिका: कमलानन्द झाक पोथी "मैथिली उपन्यास: समय समाज आ सवाल" (२०२१) क शीर्षक भ्रामक अछि। ई हुनकर किछु सवर्ण उपन्यासकारपर किछु सिण्डिकेटेड कथित समीक्षात्मक आलेखक संग्रह अछि, २६३ पन्नाक ई पोथी हार्डबाउण्डमे लाइब्रेरीकेँ मात्र बेचल जा सकत, जतऽ ई सड़ि जायत, अमेजनसँ हम ई चारि सय पाँच टाकामे किनलौं मुदा ऐमे पाँचो पाइक सामिग्री नै अछि।

एतऽ एकटा भूल सुधार अछि, एकटा गएर सवर्ण लेखक सुभाष चन्द्र यादवक उपन्यास 'गुलो'केँ बिनु पढ़ने ओ दू पाँति लिखलन्हि आ निपटा देलन्हि, ओ दुनू पाँति हम एतऽ अहाँक मनोरंजनार्थ प्रस्तुत कऽ रहल छी। अहाँ गुलो पढ़नहिये हएब, जँ नै पढ़ने छी तँ पहिने पढ़ि लिअ, कारण तखन बेशी मनोरंजक अनुभव हएत, गुलो सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवपर ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

"उपन्यासक कमजोरी अछि लेखकक राजनीतिक पूर्वाग्रह। राजनीति विशेषक पक्षधरता रचनाक संग न्याय नहि कऽ पबैत अछि।"

जइ उपन्यासमे राजनीति दूर-दूर धरि नै छै ओतऽ 'राजनैतिक पूर्वाग्रह' आ 'राजनीति विशेषक पक्षधरता'क तँ प्रश्ने नै छै। राजनीतिक पूर्वाग्रह बा पक्षधरताक सोङर धूमकेतु आ यात्री प्रयुक्त केलन्हि। सुभाष चन्द्र यादव जीक 'भोट' जे २०२२मे आयल जे सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवपर ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर, से राजनीतिपर अछि मुदा ओतहुओ सुभाषजीक भगता शैलीकेँ राजनीतिक पूर्वाग्रह बा पक्षधरताक

सोङरक आवश्यकता नै पड़लै। पढ़ू हमर पोथी 'नित नवल सुभाष चन्द्र यादव' जे उपलब्ध अछि ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

कमलानन्द झाक बिनु पढ़ने सुभाष चन्द्र यादवक विरुद्ध ब्राह्मणवादी जातिगत पूर्वाग्रह एकटा खतराक घण्टी अछि। जइ हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैले कमलानन्द झा वामपंथक सोङर पकड़ै छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सचेत अछि। ई अपन बायोडाटामे गएर सवर्णसँ छीनि कऽ, समानान्तर धाराक लोकक हककेँ मारि कऽ लेल साहित्य अकादेमीक मैथिल अनुवाद असाइनमेण्टक गर्वसँ चर्चा करैत छथि। आ ई असाइनमेण्ट हिनका मेरिटसँ नै जातिगत टाइटिलसँ भेटल छन्हि, अही सभ किरदानीक एवजमे भेटल छन्हि। हिनका सन लोक लेल मैथिली बायोडेटाक एकटा पाँति अछि, समानान्तर धारा लेल जीवन-मरणक प्रश्न।

आब अहाँ पुछब जे तकर प्रतिकार समानान्तर धारा केना केलक, ओ तँ कन्नारोहट नै करैए, तँ तकर उत्तर अछि हमर ३ टा पोथी जे १११म सगर राति दीप जरय मे लोकार्पित भेल ३१ दिसम्बर २०२२ केँ, वएह सगर राति दीप जरय जकरा साहित्य अकादेमी गत दस बर्खसँ गीड़ि लेबाक प्रयास कऽ रहल अछि। अहाँसँ ऐ तीनू पोथीपर टिप्पणी ई-पत्र सङ्केत editorial.staff.videha@gmail.com पर आमंत्रित अछि। पहिल दू पोथी मे राजदेव मण्डल आ सुभाष चन्द्र यादवक साहित्यक समीक्षा अछि जे हमर तेसर पोथी मैथिली समीक्षशास्त्रक सिद्धांतक आधारपर कएल गेल अछि। तकरा बाद जगदीश प्रसाद मण्डल जी पर पोथी लिखल गेल (११२ सगर राति दीप जरय मे लोकार्पण) सभटा

पोथीक लिंक नीचाँ देल गेल अछि। 'नित नवल दिनेश कुमार मिश्र' आ 'नित नवल सुशील' जारी अछि।

Rajdeo Mandal- Maithili Writer (Now with Supplement I & II)

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

JAGDISH PRASAD MANDAL- Maithili Writer

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (जारी)

नित नवल सुशील (जारी)

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)

संगमे पढ़ू कमलानन्द झा क ब्राह्मणवादपर प्रहार:

दूषण पञ्जी- The Black Book

दूषण पञ्जी- The Black Book (मिथिलाक्षर)

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४(२)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

दिनेश कुमार मिश्रक 'दुइ पाटन के बीच मे' कोसी नदीक ऐतिहासिक आत्मकथा थीक, ओ मिथिलाक आन धार सभक ऐतिहासिक आत्मकथा सेहो लिखने छथि जेना बन्दिनी महानन्दा, बागमती की सद्गति!, दुइ पाटन के बीच में.. (कोसी नदी की कहानी), न घाट न घर, बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी, भुतही नदी और तकनीकी झाड़-फूंक, The Kamla River and People On Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments। साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य पंकज झा पराशर द्वारा हिनकर पोथी सभसँ पैराक पैरा मैथिली अनुवाद कऽ अपना नामे उपन्यास छपबाओल गेल अछि, जकरा छद्म समीक्षक कमलानन्द झा ऐ चोर लेखकक रिसर्च कहै छथि! एतऽ स्पष्ट कऽ दी जे ई चोर लेखक आ छद्म समीक्षक दुनू अलीगढ़ मुस्लिम विद्यालयक हिन्दी विभागमे छथि। ई रिसर्च दिनेश कुमार मिश्रक थीक, जे आइ.आइ.टी. खड़गपुरसँ सिविल इन्जीनियरिङ मे बी. टेक. १९६८मे आ स्ट्रक्चरल इन्जीनियरिङमे एम.टेक. १९७०मे केने छथि, आ ओइ रिसर्च लेल क्वालिफाइड छथि। जखन कोनो विषयमे नामांकन नै होइ छै तखन लोक हारि-थाकि हिन्दीमे नामांकन लइए, नै तँ कमलानन्द झा कें बुझऽ मे आबि जइतन्हि जे ई रिसर्च कोनो सिविल इन्जीनियरेक भऽ सकैत अछि, भऽ सकैए बुझलो होइन्ह। हिन्दी मूल आ मैथिलीक स्क्रीनशॉट आँगा संलग्न अछि।

दिनेश कुमार मिश्र मिथिलाक नै छथि मुदा मिथिलाक सभ धारक कथा ओ लिखने छथि, हम सभ हुनका प्रति कृतज्ञ छी आ हुनकर ऋणसँ मिथिलावासी कहियो उऋण नै भऽ सकता, मुदा मूलधाराक पुरस्कार आ

पाइ लोलुप लोकसँ कृतघ्नते भेटत से फेर सिद्ध भेल। ऐ लेखककेँ दस बारह बर्ख पहिने सेहो तारानन्द वियोगी उद्धारक भेटल छलखिन्ह जे लिखने रहथिन्ह जे ओ कवितामे प्रभावित भऽ अनायासे अपन रचनामे दोसरक सामिग्री चोरि कऽ लइ छथि, एहने सन। आब ऐ कमलानन्द झा क आश्रय तकलन्हि मुदा दुर्भाग्य! जइ हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैले कमलानन्द झा वामपंथक सोङर पकड़ै छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सचेत अछि। सीलिंगसँ बचबा लेल जमीन-जत्थाबला लोक कम्यूनिस्ट बनला आ आब ब्राह्मणवाद बचेबालेल वामपंथक शरण, एहेन लोक सभसँ कम्यूनिज्मकेँ बहुत नुकसान भेल छै।

दिनेश क़ुमार मिश्रक सभटा पोथी आब हुनकर अनुमतिसँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमेः
http://videha.co.in/pothi.htm
एतऽ एकटा गप मोन पाड़ि दी जे जखन बिल गेट्सकेँ पूछल गेलन्हि जे की ओ एक्स बॉक्स भारतमे पाइरेशीक डरसँ देरीसँ आनि रहल छथि? तँ हुनकर उत्तर रहन्हि जे माइक्रोसॉफ्ट पाइरेशीक डरे कोनो उत्पाद देरीसँ नै उतारने अछि। से विदेह पेटारमे हम सभ ऐ तरहक रिस्क रहितो एकरा आर समृद्ध करैत रहब, कारण समानान्तर धारामे सड़ल माँछ द्वारे पोखरिक सभ माँछ नै सड़ैए, एतुक्का मलाह गोट-गोट कऽ सड़ल माँछ निकालैत रहल छथि, निकालैत रहता।

सिण्डीकेटेड समीक्षापर अन्तिम प्रहार।

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): यह ध्यान देने की बात है कि 1923 से 1946 के बीच कोसी क्षेत्र में मलेरिया से 5,10,000, कालाजार से 2,10,000, हैजे से 60,000 तथा चेचक से 3,000 मौतें (कुल 7,83,000) हुईं।

चोर पंकज झा पराशर (साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०१७ (पृ. १०३)]:

ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से कोई 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को

पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

छद्म समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा चोर उपन्यासकारक पीठ ठोकब, देखू छद्म समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा उद्धृत चोर पंकज झा पराशर (मैथिली उपन्यास, समय, समाज आ सवाल पृ. २५७-२५८):

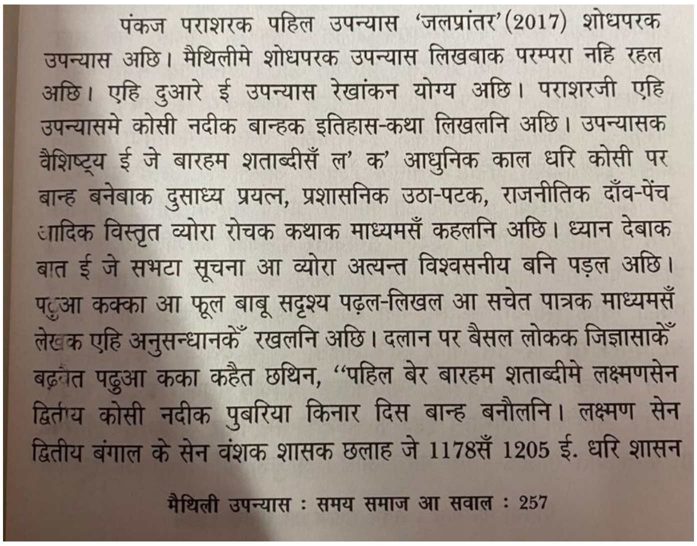
पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

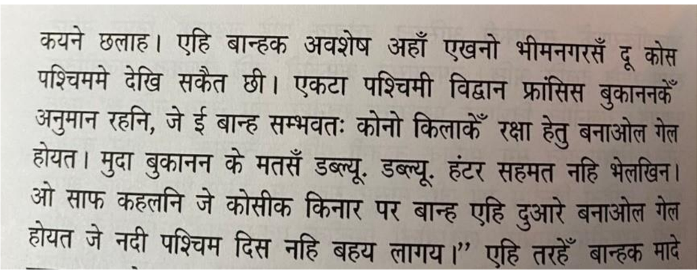
कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

चोर पंकज झा पराशर (साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०१७ (पृ. ३१)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप कैँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा कैँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनैँ छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवत: कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक कैँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका कैँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): कोसी के प्रवाह कि भयावहता की एक झलकफिरोजशाह तुगलक की फौज के सन् 1354 में बंगाल से दिल्ली लौटने के समय मिलती है। बताया जाता है कि जब सुल्तान की फौजें कोसी के किनारे पहुँचीं तो देखा कि नदी के दूसरे किनारे पर हाजी शम्सुद्दीन इलियास की फौजें मुकाबले के लिए तैयार खड़ी हैं। यह वही हाजी शम्सुद्दीन थे जिन्होंने हाजीपुर तथा समस्तीपुर शहर बसाये थे। फिरोज की फौजें शायद कुरसेला के आस-पास किसी जगह पर कोसी के किनारे सोच में पड़ गईं। नदी की रफ्तार उन्हें आगे बढ़ने से रोक रही थी। आखिरकार फैसला हुआ कि नदी के साथ-साथ उत्तर की ओर बढ़ा जाय और जहाँ नदी पार करने लायक हो जाय वहाँ पानी की थाह ली जाये। सुल्तान की फौजें प्रायः सौ कोस ऊपर गईं और जियारन के पास, जो कि उसी स्थान पर अवस्थित था जहाँ नदी पहाड़ों से मैदानों में उतरती थी, नदी को पार किया। नदी की धारा तो यहाँ पतली जरूर थी पर प्रवाह इतना

तेज था कि पाँच-पाँच सौ मन के भारी पत्थर नदी में तिनकों की तरह बह रहे थे। जहाँ नदी को पार करना मुमकिन लगा उसके दोनों ओर सुल्तान ने हाथियों की कतार खड़ी कर दी और नीचे वाली कतार में रस्से लटकाये गये जिससे कि यदि कोई आदमी बहता हुआ हो तो इस रस्सों की मदद से उसे बचाया जा सके। शम्सुद्दीन ने कभी सोचा भी न था कि सुल्तान की फौजें कोसी को पार कर लेंगी और जब उस को इस बात का पता लगा कि सुलतान की फौजों ने कोसी को पार करने में कामयाबी पा ली है तो वह भाग निकला।

चोर पंकज झा पराशर (साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०१७ (पृ. १०५)]:

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनैं रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवत: कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना कैँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंतत: तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनैं कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनैं शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति कैँ जतय नदी पार करब कनैं आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी कैँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहैँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनैं छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन कैँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

(... शीघ्र अही लिंकपर आर स्क्रीनशॉट अपडेट कएल जायत।)

विदेहक ३६३ म अंक दिनांक ०१ फरबरी २०२३ सँ प्रारम्भ... नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

http://videha.co.in/ विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) पर।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४ (३)

नित नवल सुशील

कमलानन्द झाकेँ हम किए छद्म समीक्षक कहलियनि?

कारण ओ छद्म समीक्षक छथि।

ओ लिखै छथि- "मैथिली उपन्यास-यात्राक लगभग सय वर्षक बाद मैथिल अन्तरजातीय विवाहक सपना, संघर्ष आ विडम्बना पर गरिमायुक्त उपन्यास लिखबाक श्रेय गौरीनाथकेँ जाइत छनि।"

तँ की कमलानन्द झा सुशीलसँ ई श्रेय छीनि लेलनि? की ई हुनकर ब्राह्मणवादी संस्कारक अहंकार- जे हम ककरो चढ़ा सकै छिऐ आ ककरो उतारि सकै छिऐ- केर पराकाष्ठा थीक, आकि हुनकर अध्ययनक अभावक प्रमाण?

चलू अहाँकेँ लऽ चली कमलानन्द झा केर स्वार्थी दुनियाँसँ दूर, छल-छद्मसँ दूर सुशीलक जादूबला साहित्यक निश्छल दुनियाँमे।

अहाँक स्वागत अछि सुशीलक साहित्यक दुनियाँमे।

प्रस्तुत अछि सुशीलक 'गामबाली' (१९८२) जे आब उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे लिंक http://videha.co.in/pothi.htm पर।

पहिल पाँतीमे उपन्यास आरम्भसँ पहिनहिये 'गामबाली' उपन्यासक सम्बन्धमे सुशील लिखै छथि-

"विधवा विवाह आ अन्तर्जातीय विवाहक समर्थनमे।"

आ उपन्यास आरम्भ।

गामबालीक मृत्यु आ तखने झमेला, गामबालीक दाह संस्कार के करतै? ब्राह्मण समाज कि जादव समाज?

मैथिलीक सिण्डीकेटेड समीक्षापर अन्तिम प्रहार।

विदेहक ३६३ म अंक दिनांक ०१ फरबरी २०२३ सँ प्रारम्भ... नित नवल सुशील

http://videha.co.in/ विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) पर।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

५

विदेहक "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक"

विदेह "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक" लेल निम्नलिखित विषयपर आलेख ई-मेल editorial.staff.videha@gmail.com पर आमंत्रित अछि।

१. साहित्य, कला आ सरकारी अकादमीः-
(क) पुरस्कारक राजनीति
(ख) सरकारी अकादेमीमे पैसबाक गएर-लोकतांत्रिक विधान
(ग) सत्तागुट आ अकादमी केर काज करबाक तरीका
(घ) सरकारी सत्ताक छद्म विरोधमे उपजल तात्कालिक समानांतर सत्ताक कार्यपद्धति
(ङ) अकादेमी पुरस्कारमे पाइ फैक्टरः मिथक बा यथार्थ
२. व्यक्तिगत साहित्य संस्थान आ पुरस्कारक राजनीति
३. प्रकाशन जगतमे पसरल भ्रष्टाचार आ लेखक
४. मैथिलीक छद्म लेखक संगठन आ ओकर पदाधिकारी सबहक आचरण
५. स्कूल-कॉलेजक मैथिली विभागमे पसरल साहित्यिक भ्रष्टाचारक विविध रूप-
(क) पाठ्यक्रम
(ख) अध्ययन-अध्यापन
(ग) नियुक्ति
६. साहित्यिक पत्रकारिता, रिव्यू, मंच-माला-माइक आ लोकार्पणक खेल-तमाशा
७. लेखक सबहक जन्म-मरण शताब्दी केर चुनाव , कैलेंडरवाद आ तकरा पाछूक राजनीति
८. दलित एवं लेखिका सबहक संगे भेद-भाव आ ओकर शोषणक विविध तरीका
९. कोनो आन विषय।

६

विदेह ब्रॉडकास्ट लिस्ट

विदेह WWW.VIDEHA.CO.IN सम्बन्धी सूचना लेल अपन whatsapp नम्बर हमर whatsapp no +919560960721 पर पठाउ, ओकर प्रयोग मात्र विदेह सम्बन्धी समाचार देबाक लेल कएल जाएत।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

....

मैथिली आ मिथिलासँ संबंधित किछु मुख्य साइट:- आन लिंकक विषयमे सूचना editorial.staff.videha@gmail.com केँ ई मेलसँ पठाबी।

http://www.videha.co.in/ ("विदेह" प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका)

http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (इंटरनेटपर मैथिली भाषाक प्राचीनतम उपस्थिति/ मैथिलीक पहिल ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर, ५ जुलाइ २००४)

http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (इंटरनेटपर मैथिली भाषाक प्राचीनतम उपस्थिति/ मैथिलीक पहिल ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर, ५ जुलाइ २००४)

भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html, http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)* केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्रचीनतम उपस्थितिक रूपमे विद्यमान अछि। ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ "विदेह" पड़लै।इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA पल्लवमिथिला (धीरेन्द्र प्रेमर्षि) २०५९ माघे संक्रान्ति- २००३ जनवरी मैथिलीक दोसर इंटरनेट पत्रिका अछि जे ऐ लिंक www.pallavmithila.mainpage.net पर छल मुदा आब ई उपलब्ध नै अछि। ई टिप्पणी मात्र इतिहास शुद्धता लेल अछि।

....

http://videha-aggregator.blogspot.com/ (मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर)

http://www.videha.com/ (इंटरनेटपर मैथिली भाषाक सभसँ पुरान उपलब्ध उपस्थिति/ लोकप्रिय ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर ५ जुलाइ २००४ www.gajendrathakur.blogspot.com)

http://esamaad.blogspot.com/ (पूनम मंडल आ प्रियंका झाक पहिल मैथिली न्यूज पोर्टल, ९ अगस्त २००४ सँ)

http://prakarantar.blogspot.com/ (प्रकारांतर मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, फरबरी २००५)

http://vidyapati.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, अगस्त २००५)

http://www.vidyapati.org/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, अगस्त २००५)

http://hellomithila.blogspot.com/ (हेलो मिथिला- धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सम्पादक-प्रकाशक, रूपा झा, सम्पादन सहयोग, पल्लव, मैथिली साहित्यिक, ३ मइ २००६)

http://pallav.blogsome.com/ (हेलो मिथिला- धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सम्पादक-प्रकाशक, रूपा झा, सम्पादन सहयोग, पल्लव, मैथिली साहित्यिक, १७ मइ २००६)

http://hellomithilaa.blogspot.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, सितम्बर २००७)

http://www.hellomithila.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, सितम्बर २००७)

http://shampadak.wordpress.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, जनवरी-फरबरी २००८)

http://www.esamaad.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, जनवरी-फरबरी २००८)

http://hellomithilaa.wordpress.com/

http://premarshi.wordpress.com/ (धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

....

http://anchinharakharkolkata.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय गजलक ब्लॉग)

https://mithilastudentunion.com/ (Mithila Student Union)

....

https://vigyanprasar.gov.in/vigyan-ratnakar/ (विज्ञान रत्नाकर)

JNU

http://sanskrit.jnu.ac.in/maithili/index.jsp

http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=maithili

....

ALL INDIA RADIO DOORDARSHAN आकाशवाणी दूरदर्शन

http://prasarbharati.gov.in/

http://newsonair.com/

https://doordarshan.gov.in/

आकाशवाणी मैथिली पोडकास्ट http://prasarbharati.gov.in/podcast.php?filterlang=Maithili&from=1947-08-15&fromwp=2020-08-29&to=2050-12-31&search=GO

आकाशवाणी पटना/ दरभंगा मैथिली रेजनल न्यूज टेक्स्ट डाउनलोड-1 http://newsonair.com/RNU-NSD-Audio-Archive-Search.aspx

आकाशवाणी पटना/ दरभंगा मैथिली रेजनल न्यूज टेक्स्ट डाउनलोड-2 http://newsonair.com/Regional-Text.aspx

आकाशवाणी दरभंगा http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=282

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल https://www.youtube.com/channel/UCGdNveEFmv4pPolWiTEMxVA

आकाशवाणी भागलपुर http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=359

आकाशवाणी पूर्णियाँ http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=256

आकाशवाणी पटना http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=122

ALL INDIA RADIO ENGLISH NEWS

ALL INDIA RADIO NEWS ARCHIVE

ALL INDIA RADIO TALKS AND CURRENT AFFAIRS

RAJYA SABHA TV NEWS DISCUSSIONS

SANSAD TV

VIDEHA e-LEARNING YOUTUBE CHANNEL

https://www.youtube.com/@videha-elearning

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

....

http://bramhanews.blogspot.com/ (मैथिली समाचार)

http://www.mithilakhabar.com/ (नेपालक मैथिली ई पत्रिका)

http://mithilanews.com/

http://www.maithilinews.blogspot.com/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

http://www.hamargam.in/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

http://mithiladotcom.blogspot.com/ (मैथिली राष्ट्रीय दैनिक)

https://mppdainik.com/ (मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश, मैथिली दैनिक)

http://mithilasamad.blogspot.com/ (मिथिला समाद, मैथिली दैनिक)

http://janakpurnews.blogspot.com/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

http://www.mithilalok.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

http://mithimedia.blogspot.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

http://www.mithimedia.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

https://mithiladharohar.blogspot.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

https://simanchal.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

https://maithilijindabaad.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

....

https://kirtinath.blogspot.com/ (कीर्तिनाथ झा ब्लॊग)

http://jct27novmaithili.blogspot.com/ (जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" क ब्लॉग)

http://brikhesh.blogspot.com/ (बृषेश चन्द्र लाल)

http://www.chetnasamiti.org/ (चेतना समिति, पटनाक वेबसाइट)

http://shiva-pustak-bhandar.blogspot.com/ (मैथिली पोथी कीनू)

https://mishrarn.blogspot.com/ (भोरसँ साँझ धरि)

https://rjanakpuri.blogspot.com/ (साहित्यपुरी)

http://bataahmaithil.in/

http://maithilpravahika.org/

http://ganeshbawra.blogspot.com/

http://maithilinews.com/

http://anandjhakavitakahani.blogspot.com/

http://chaaywala.blogspot.com/

http://maithilputr.blogspot.com/

http://maithilputramanu.blogspot.com/

http://mithilanchalpatrika.blogspot.com/

http://mithilakbat.blogspot.com/

http://maithilitimesonline.blogspot.com/

http://mithilavidehavajjitirhut.blogspot.com/

http://samadiya.blogspot.com/

http://jitumaithili.blogspot.com/

http://pratipadamaithili.blogspot.com/

http://bhatsimar.blogspot.com/

http://maithilirangmanch.blogspot.com/

http://www.mithilavaani.blogspot.com/

http://www.maithilisongsjagat.co.in/

http://mithilablog.com/

http://www.lahakchahak.com/

http://www.jaimithila.com/

http://www.dahejmuktmithila.org/

http://mithilavaani.blogspot.com/

http://www.chamundanagarpachahi.com/

http://kisunsankalplok.wordpress.com/

http://www.kisunsankalplok.co.nr/

http://maithilisongshub.blogspot.com/

http://www.rajnipallavi.com/

https://maithilinewsnetwork.com/

https://mithilamirror.com/

https://www.emithila.in/

http://csts.org.in/ (CSTS)

http://www.samaysaal.com/ (समय साल)

https://www.maithili.org.in/ (रोशन चौधरी)

https://doorvaksata.org/ (मिशन दूर्वाक्षत)

http://mithilaksharshikshaabhiyan.in.net/ (मिथिलाक्षर शिक्षा अभियान)

http://mithilakshar.in/ (मिथिलाक्षर शिक्षा अभियान)

https://missionmithilakshar.blogspot.com/ (सिद्धिरस्तु- मिशन मिथिलाक्षर लिपि)

https://mithilani.in/ (मिथिलानी)

https://www.maithilmanch.in/ (मैथिल मंच)

http://madhubani.co.in/

http://www.premkumarmallik.com

http://apandalan.wordpress.com/

http://www.mithilaworld.tk/

http://www.mithilachowk.com/

http://maithilisongsgeet.blogspot.com/

http://rayprabhatbhatt.blogspot.com/

http://amitmohanjha83.blogspot.com/

https://maithiliswasthyaparicharcha.blogspot.com/ (मैथिली स्वास्थ्य परिचर्चा- रमाकर चौधरीक ब्लॉग)

http://maithili-darpan.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://mithilatol.blogspot.com (मिथिलाटोल मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://maithilicinema.blogspot.com/ (मैथिली फिल्म्स)

http://maithilifilms.blogspot.com/ (मैथिली फिल्म्स)

http://maithili-drama.blogspot.com/ (विदेह मैथिली नाट्य उत्सव- बेचन ठाकुरक ब्लॉग)

http://mjnk.co.cc/ (ई जनकपुर न्यूज़, तराई मॉडल, मिथिला इन्फोर्मेशन)

http://www.TeraiNepal.co.cc/ (तराई नेपाल मिथिला जनकपुर मधेश हालचाल Anytime Anywhere see)

http://maithilaurmithila.blogspot.com/ (मैथिलक आ मिथिलाक लोकप्रिय ब्लॉग)

https://www.mithiladainik.in/ (मिथिला दैनिक)

http://www.mithilaamanch.blogspot.com (मिथिला मंच)

http://maithilisong.blogspot.com/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक ब्लॉग)

http://maithilifoundation.blogspot.com/ (मैथिली फाउन्डेशन)

http://maithilibhasha.blogspot.com/ (काश्यप कमलक ब्लॉग)

http://rkjteoth.blogspot.com/ (रूपेश कुमार झा "त्योंथ"क ब्लॉग)

http://paraati.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://singarhaar.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://vaachik.wordpress.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://mithilainfo.blogspot.com (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://mithlasamachaar.blogspot.com (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://pilakhwar.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://desilbayna.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://maithilynjha.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://gaam-ghar.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://mithila-mihir.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://www.maithililekhaksangh.blogspot.com/ (मैथिली लेखक संघक जालस्थल)

http://www.maithili.co.uk/ (मिथिला कल्चरल ऑर्गेनाइजेशन, यू.के.)

http://minapjanakpur.org/ (मिनाप, जनकपुर)

http://www.airdarbhanga.org/ (आकाशवाणी दरभंगाक साइट)

http://mithilangan.org/ (मिथिलांगनक साइट)

http://www.desilbayana.com/ (देसिल बयना, हैदराबाद)

http://www.vmym.in/ (विद्यपति मैथिल युवा मंच)

http://www.jaimithila.com/ (मिथिलाक सभ्यता, संस्कृति, विभूति, गीत-संगीत आ बहुत रास जानकारीक लेल)

http://sobhagyamithilatv.com/ (सौभाग्य मिथिला- पहिल मैथिली चैनल)

http://kashyap-mithila.blogspot.com/

https://kashyapartschool.wordpress.com/ (कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबालाक साइट)

http://mithilapaintingtraining.blogspot.com/

http://dularuababumaithilifilm.blogspot.com/

http://senuraklaajmaithilifilm.blogspot.com/

http://maithlivideosongs.blogspot.com/

http://kalikantjhabuch.org/ (काली कांत झा "बूच")

http://saketanands.blogspot.com/ (साकेतानन्दजीक जालवृत्त)

http://gunjang.blogspot.com/ (गुंजनजीक जालवृत्त)

http://darihare.blogspot.com/ (श्याम दरिहरेक जालवृत्त)

http://deoshankarnavin.blogspot.com/ (देवशंकर नवीनक जालवृत्त)

http://www.udayanarayana.com/ (नचिकेताक साइट)

http://www.indianembassy.org.np/ (भारतीय दूतावास नेपाल)

http://www.purvottarmaithilsamaj.com/ (पूर्वोत्तर मैथिल समाज)

http://www.purvottarmaithil.blogspot.com/ (मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक त्रैमासिक पत्रिका)

http://apanmithladhaam.blogspot.com/

http://maithilikavita.blogspot.com/

http://pankajjha23.blogspot.com/

http://maithili-haiku.blogspot.com/

http://manak-maithili.blogspot.com/

http://mithilauday.org/

http://dsal.uchicago.edu/lsi/ (Linguistic Survey of India, Gramophone recordings)

http://dsal.uchicago.edu/lsi/taxonomy/term/1718 (Linguistic Survey of India, Gramophone recordings, Maithili)

http://music2.cooltoad.com/music/category.php?id=10576

http://maithiliacademy.org/

https://maithiliacademybihar.org/ (मैथिली अकादमी, पटना)

मैथिली भोजपुरी अकादमी, दिल्ली

http://artandculture.delhigovt.nic.in/wps/wcm/connect/doit_art/Art+Culture+and+Language/Home/Maithili-Bhojpuri+Academy/

http://maithili.sourceforge.net/

http://ansiss.org/

http://fedoraproject.org/

https://fedorahosted.org/fuel/wiki/fuel-maithili

http://l10n.gnome.org/teams/mai

http://translate.fedoraproject.org/languages/mai

http://www.biharlokmanch.org/ (मिथिला-मैथिली पोथी ऑनलाइन कीनू)

http://www.biharlokmanch.org/mithila_products_online.php (Buy Mithila-Maithili books online)

http://mithila-haat.com/ (Buy Mithila-Maithili books/ other materials online)

http://www.antikaprakashan.com/ (अंतिका प्रकाशनक साइट- मैथिली प्रकाशक)

https://shashiprakashan.blogspot.com/ (शशि प्रकाशन- - मैथिली प्रकाशक)

https://pallavipublication.blogspot.com/ (पल्लवी प्रकाशन- - मैथिली प्रकाशक)

http://www.navarambh.com/ (नवारम्भ- - मैथिली प्रकाशक)

http://www.gorkhapatra.org.np/

http://www.sajha.org.np/

http://www.kantipuronline.com/

http://mithilahyd.org/

http://www.jyoticonsultant.com/ (मैथिलक नौकरी डॉट कॉम)

http://www.mithilamanthan.com/

http://www.brandbihar.com/

http://www.biharbrains.org/

http://maithilijokes.blogspot.com/

http://www.rdo91fm.blogspot.com/

http://www.kfm961.com/ (हेल्लो मिथिला कार्यक्रम प्रत्येक शनिकेँ नेपाली समयानुसार राति ९.३० बजेसँ ११ बजेधरि आ राजनीतिक विषयवस्तुपर केन्द्रित चौबटिया कार्यक्रम प्रत्येक सोमकेँ राति १० सँ ११ बजेधरि प्रसारण)

http://www.radiokantipur.com/ (हेल्लो मिथिला कार्यक्रम प्रत्येक शनिकेँ नेपाली समयानुसार राति ९.३० बजेसँ ११ बजेधरि आ राजनीतिक विषयवस्तुपर केन्द्रित चौबटिया कार्यक्रम प्रत्येक सोमकेँ राति १० सँ ११ बजेधरि प्रसारण)

http://www.jumptv.com/en/channel/nepal1/ (नेपाल1 टी.वी.-जम्प टी.वी. मैथिली कार्यक्रम सूचना)

http://janakifm.org.np/ (जानकी एफ.एम., मैथिली समाचार रेडियो)

http://www.mithilaradio.com/ (मैथिली रेडियो)

http://www.youtube.com/user/Janakifm (जानकी एफ.एम., मैथिली समाचार रेडियो Youtube channel)

http://www.radiomithila.org/ (मैथिली रेडियो)

http://www.appanmithila.org/ (रेडियो अप्पन मिथिला ९४.४ MHZ)

http://www.janakpurtoday.com.np/

http://madanpuraskar.org/

http://www.madheshuk.org/ (एसोशिएशन ऑफ नेपाली मधेसीज इन यू.के.)

http://www.mithilaart.com/ (श्रीमति प्रभा झाक साइट)

http://www.mithilavihar.com/

http://www.sugatisopan.com/

http://www.maithilsamaj.org.in/

http://www.maithilsamaj.com/

http://www.janakpurcity.com/

http://www.janakpur.com.np/

http://home.att.net/~maithils/

http://shyamprakashjha.com/

http://ramanathjha.com/

http://www.ramajha.com/

http://sudhakar.co.in/maithili

http://www.maithils.net/

http://www.getpredictiononline.com/

http://www.bihartimes.com/

http://www.bihar.ws/

http://www.patnadaily.com/

http://www.krraman.blogspot.com/

http://www.adi-maithili-kavita.blogspot.com/

http://www.mithilasevasamiti.blogspot.com/

http://www.jankitoday.blogspot.com/

http://opjha.blogspot.com/

http://chitthajagat.in/ (देवनागरी लिपिक ब्लॉगक एग्रीगेटर)

http://mailorang.blogspot.com/ (मैलोरंग नाट्य संस्थाक ब्लॉग)

http://mailorang.in/ (मैलोरंग)

http://mailorang.com/ (मैलोरंग)

http://vandanasgeet.blogspot.com/

http://www.darbhangaraj.blogspot.com/

http://mithila_samachar.tripod.com/mithilasamachar/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

http://www.ciilcorpora.net/maisam.htm

http://www.ildc.in/Maithili/MIindex.aspx (मैथिली अओजार आ फॉन्ट)

http://www.mithilaarts.com/

http://www.mithilapainting.org/

http://www.maithili.net/ (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

http://www.mithilaonline.com/ (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

http://www.onlinemithila.in/ (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

http://www.nnl.gov.np/

http://www.nepalacademy.org.np/

http://www.karnagoshthi.org/

http://surmasti.com/

http://www.maithiliworld.com/

http://www.mithila-museum.com/aboutMM/Eindex.html

http://www.tribhuvan-university.edu.np/

http://www.swastifoundation.com/ (स्वस्ति फाउन्डेशनक साइट)

http://foundationsaarcwriters.com/

http://www.opmcm.gov.np/

http://www.moe.gov.np/ (नेपाल सरकारक साइट)

http://lnmu.bih.nic.in/

http://gov.bih.nic.in/ (बिहार सरकारक साइट)

http://www.india.gov.in/

http://rajbhasha.nic.in/

http://www.hindinideshalaya.nic.in/

http://themithila.tripod.com/

http://www.mithilaconnect.com/

http://www.esabha.net/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.maithilvivah.com/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.kanyadan.net/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.maithilbrahminvivahbandhan.org/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.mithilashaadi.com/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.kalyanifoundation.org/

http://www.madhubani.com/

http://www.janakpur.org/

http://www.darbhanga-friends.com/

http://www.hindisansthan.org/

http://www.biharassociation.net/

http://www.nationallibrary.gov.in/ (नेशनल लाइब्रेरी कोलकाता)

http://dpl.gov.in/ (दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी)

http://www.connemarapubliclibrarychennai.com/ (कोनेमारा पब्लिक लाइब्रेरी)

http://rrrlf.nic.in/ (राजा राम मोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन)

http://www.sahitya-akademi.gov.in/(साहित्य अकादमीक साइट)

http://www.nbtindia.org.in/ (नेशनल बुक ट्रस्टक साइट)

http://www.csuchico.edu/anth/mithila/

http://web.mac.com/nadjagrimm/iWeb/JWDC/Mithila%20Art%20.html

http://www.southasianist.info/india/mithila/index.html

http://www.mithilalive.com/

http://www.ethnologue.com/show_language.asp?code=mai

http://linguistlist.org/forms/langs/LLDescription.cfm?code=mai

http://www.languageshome.com/English-Maithili.htm

http://www.rosettaproject.org/archive/mai

http://www.nepalgov.gov.np/

http://maithili-mp3-songs.folkmusicindia.com/

http://www.ciil.org/ (भारतीय भाषा संस्थानक साइट)

http://www.ciillibrary.org/

http://www.lisindia.net/Maithili/Maithili.html

http://www.ntm.org.in/languages/maithili/default_maithili.asp (राष्ट्रीय अनुवाद मिशन)

http://www.samsung.com/in/news/localnews/2012/tagore-literature-awards-bring-together-india-best-literary-talent (TAGORE LITERATURE AWARD)

http://www.samsung.com/in/news/localnews/2011/samsung-felicitates-the-winners-of-tagore-literature-awards-2010 (TAGORE LITERATURE AWARD)

http://www.samsung.com/in/Tagore-Awards/index.html (TAGORE LITERATURE AWARD)

http://jnanpith.net/ (भारतीय ज्ञानपीठक साइट)

http://bparishad.in/ (भारतीय भाषा परिषद, कोलकाताक साइट)

http://www.bharatiyabhashaparishad.com/ (भारतीय भाषा परिषद, कोलकाताक वागर्थ)

http://www.themanbookerprize.com/ (मैन-बुकर पुरस्कारक साइट)

http://www.commonwealthfoundation.com/ (कॉमनवेल्थ फाउन्डेशनक साइट)

http://www.crossword.in/ (वोडाफोन-क्रॉसवर्डक साइट)

http://www.pulitzer.org/ (पुलित्जर पुरस्कारक साइट)

http://nobelprize.org/ (नोबेल पुरस्कारक साइट)

http://www.goakonkaniakademi.org/akademi/aims.htm (गोवा कोंकणी अकादमीक साइट)

http://www.museindia.com/

http://www.asiawrites.org

http://indianorway.wordpress.com/

http://samanvayindianlanguagesfestival.org/

http://jaipurliteraturefestival.org/

http://dscprize.com/

http://www.hindu.com/lr/2011/04/03/stories/2011040350010100.htm

http://southasianlitfest.com/

http://www.varnamala.org/

http://india.poetryinternationalweb.org/

http://www.fortunecity.com/victorian/charcoal/49/

http://www.tarainews.com.np/

VIDEHA IST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

http://videha-archive.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

http://videha-pothi.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऑडियो आर्काइव

http://videha-audio.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका वीडियो आर्काइव

http://videha-video.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

http://videha-paintings-photos.blogspot.com/

विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक Videha e journal's all old issues

http://sites.google.com/a/videha.com/videha/

विदेह ई-पत्रिकाक पहिल ५० अंक

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-i/

विदेह ई-पत्रिकाक ५०म सँ १४९ म अंक

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-ii/

विदेह ई-पत्रिकाक १५०म आ आगाँक अंक

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-iii/

मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi

मैथिली ऑडियो संकलन Maithili Audio Downloads

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio

मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-video

मिथिला चित्रकला/ आधुनिक चित्रकला आ चित्र Mithila Painting/ Modern Art and Photos

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/

सगर राति दीप जरय

http://sagarraatideepjaray.blogspot.com/

http://sagarraatideepjaray.wordpress.com/

विदेह मैथिली क्विज :

http://videhaquiz.blogspot.com/

विदेह मैथिली जालवृत्त एग्रीगेटर :

http://videha-aggregator.blogspot.com/

विदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनूदित

http://madhubani-art.blogspot.com/

विदेहक पूर्व-रूप "भालसरिक गाछ" :

http://gajendrathakur.blogspot.com/

विदेह इंडेक्स :

http://videha123.blogspot.com/

विदेह फाइल :

http://videha123.wordpress.com/

Maithili Sign Language- पहिल मैथिली संकेत लिपि ब्लॉग

https://maithili-sign-language.blogspot.com/

विदेह ब्राह्मी- ब्राह्मी लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-brahmi.blogspot.com/

विदेह खरोष्ठी- खरोष्ठी लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-kharoshthi.blogspot.com/

विदेह कैथी लिपिमे- मैथिलीक कैथी लिपिमे पहिल ब्लॉग

https://maithili-kaithi.blogspot.com/

विदेह नेवाड़ी लिपिमे- मैथिलीक नेवाड़ी लिपिमे पहिल ब्लॉग

https://maithili-newari.blogspot.com/

विदेह आइ.पी.ए. लिपिमे- मैथिलीक आइ.पी.ए.मे पहिल ब्लॉग

https://maithili-ipa.blogspot.com/

विदेह- उर्दू नस्तालिक लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-urdu.blogspot.com/

विदेह- तिब्बती लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-tibetan.blogspot.com/

विदेह: सदेह : पहिल तिरहुता (मिथिलाक्षर) जालवृत्त (ब्लॉग)

http://videha-sadeha.blogspot.com/

विदेह:ब्रेल: मैथिली ब्रेलमे: पहिल बेर विदेह द्वारा

http://videha-braille.blogspot.com/

विदेह गूगल-ग्रुप

https://groups.google.com/g/videha

विदेह फेसबुक ग्रुप

https://www.facebook.com/groups/7436498043

https://www.facebook.com/groups/10299304978

https://www.facebook.com/groups/videha

गजेन्द्र ठाकुर इडेक्स

http://gajendrathakur123.blogspot.com

नेना भुटका

http://mangan-khabas.blogspot.com/

Videha Radio विदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पोडकास्ट साइट

http://videha123radio.wordpress.com/

http://videha.listen2myradio.com/

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

http://maithili-drama.blogspot.com/

समदिया

http://esamaad.blogspot.com/

मैथिली फिल्म्स

http://maithilifilms.blogspot.com/

मैथिली हाइकू

http://maithili-haiku.blogspot.com/

मानक मैथिली

http://manak-maithili.blogspot.com/

विहनि कथा

http://bihanikatha.blogspot.com/

मैथिली कविता

http://maithili-kavita.blogspot.com/

मैथिली कथा

http://maithili-katha.blogspot.com/

मैथिली समालोचना

http://maithili-samalochna.blogspot.com/

Maithili Literature in English

http://madhubani-art.blogspot.com/

तिरहुता- कैथी फॉण्ट/ मैथिल ब्राह्मणक पञ्जी आधारित इतिहास

https://deepblue.lib.umich.edu/bitstream/handle/2027.42/110341/pandey_1.pdf?sequence=1 (उत्तर-बिहारक मैथिल ब्राह्मणमे जाति)

https://www.unicode.org/L2/L2009/09329-maithili.pdf (यूनीकोड तिरहुता फॉण्ट लेल आवेदन ३० सितम्बर २००९- विदेहक सहयोग)

https://www.unicode.org/L2/L2011/11175r-tirhuta.pdf (यूनीकोड तिरहुता फॉण्ट लेल आवेदन ५ मई २०११- विदेहक सहयोग)

http://www.tirhutalipi.4t.com/ (देवनागरी-तिरहुता फॉण्ट- वेस्टर्न आधारित)

http://www.anujha.co.cc/ (देवनागरी यूनीकोड आधारित तिरहुता फॉन्ट-मिथिला)

"विकीपीडिया"मे मैथिली

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

अंतिम पाँचू साइट विकी मैथिली प्रोजेक्टक अछि। एहि लिंक सभ पर जा कय प्रोजेक्टकेँ आगाँ बढ़ाऊ।

यूनीकोड तिरहुता फॉण्ट, "विकीपीडिया"मे मैथिली आ आब मैथिली "गूगल ट्रान्सलेट"मे सेहो। अगिला लक्ष्य "अमेजन अलेक्सा"

गूगल ट्रान्सलेट

गूगल ट्रान्सलेटक लिंक

https://translate.google.com/?sl=en&tl=mai&op=translate

गूगल ट्रान्सलेटकेँ आर पुष्ट करबाक खगता छै तइ लेल अगिला काज अढ़ा रहल छी:

https://translate.google.com/about/contribute/

Crowdsource Maithili Community

Please fill the form

Next Step

Download the Crowdsource app from android play store and start contributing

or go to web on the following link for contributing:

https://crowdsource.google.com/about/

Crowdsource by Google is a gamified platform that empowers users to directly train Google’s artificial intelligence systems and make Google products work equally well for everyone, everywhere.

प्रारम्भ:

विकीपीडिया ०१ फरबरी २००८ लिंक

https://books.google.co.in/books?id=VC-BD5Ad6z4C&lpg=PA1&pg=PA1#v=onepage&q&f=false (मैथिली देवनागरी)

https://books.google.co.in/books?id=cTezCU59bJwC&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false (मैथिली तिरहुता)

https://books.google.co.in/books?id=3zKudz6wAO8C&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false (मैथिली ब्रेल)

गूगल ट्रन्सलेट २३ जून २०११क लिंक

https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/138489416229195/

गूगल ट्रांसलेशन टूलमे

"बिहारी" भाषाक बदलामे मैथिली लेल अलग ट्रांसलेशन टूल बनेबाक आवेदन विदेहक सदस्यगण द्वारा देल गेल अछि। अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा करू। ऐ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंटसँ लॉग इन केलाक बाद ।

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh (link closed)

मिथिलाक्षर (तिरहुता) फॉण्ट लेल आवेदन ३० सितम्बर २००९ आ फेर संशोधित आवेदन ५ मई २०११ कें श्री अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल गेल आ दुनू बेर ऐमे विदेहक सहयोगक वर्णन भेल। ११ जूनकें श्री अंशुमन पाण्डेय एकर स्वीकृतिक सूचना विदेहक फेसबुक ग्रुपपर देलनि। आब ई फॉण्ट बनि कऽ तैयार अछि आ नीचाँक लिकपर डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि।

तिरहुता, नेवाड़ी आ कैथी फॉण्ट डाउनलोड Google's Noto Fonts project/ GitHub

तिरहुता नोटो फॉण्ट	कैथी ओटीएफ	कैथी टीटीएफ	नेवाड़ी ओ.टी.एफ.	नेवाड़ी टी.टी.एफ.

https://fonts.google.com/ (Google Open Fonts download)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

https://malarproject.gitlab.io/tirhuta (Tirhuta Keyboard Online)

https://keymanweb.com/?_ga=2.7155890.1818820209.1675749426-2042013574.1675749426#mai-tirh,Keyboard_tirhuta

https://keymanweb.com/?_ga=2.241635586.1818820209.1675749426-2042013574.1675749426#mai-tirh,Keyboard_malar_tirhuta

https://aksharamukha.appspot.com/converter (Script/ Website Convertor)

https://aksharamukha.appspot.com/keyboards [Input (IME]

https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts (fonts- opensource)

https://www.cdac.in/ (Tirhuta/ Unicode Typing Tool)

अमेजन अलेक्सा मैथिली (शीघ्र....)

किछु मैथिली विकिपिडिया पेजक लिंक:

विदेह (पत्रिका) https://mai.wikipedia.org/s/kgv

इन्टरनेटक संसारमे मैथिली भाषा https://mai.wikipedia.org/s/s6h

भालसरिक गाछ https://mai.wikipedia.org/s/ipm

विदेह https://mai.wikipedia.org/s/ie1

विदेहक फेसबुक भर्सन https://mai.wikipedia.org/s/iu1

विदेह सम्मान https://mai.wikipedia.org/s/jc2

विदेह आर्काइभ https://mai.wikipedia.org/s/jc0

विदेह मिथिला रत्न https://mai.wikipedia.org/s/jc3

विदेह मिथिलाक खोज https://mai.wikipedia.org/s/jc4

विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण https://mai.wikipedia.org/s/jc5

श्रुति प्रकाशन https://mai.wikipedia.org/s/iu7

अनचिन्हार आखर https://mai.wikipedia.org/s/ion

मैथिली गजल https://mai.wikipedia.org/s/idz

मैथिली बाल गजल https://mai.wikipedia.org/s/iex

मैथिली भक्ति गजल https://mai.wikipedia.org/s/if1

....

किछु मैथिल पोथी, ऑडियो-वीडियो, कलाकृति/ यू ट्यूब चैनल डाउनलोड साइट (ओपन सोर्स)

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

SAHITYA AKADEMI

http://sahitya-akademi.gov.in/publications/e-books.jsp

http://sahitya-akademi.gov.in/general/Digitalbooks.jsp

CIIL

http://corpora.ciil.org/maisam.htm

अखियासल (रमानन्द झा रमण)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI1.pdf

जुआयल कनकनी- महेन्द्र

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI2.pdf

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI3.pdf

सृजन केर दीप पर्व- सं केदार कानन आ अरविन्द ठाकुर

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI4.pdf

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मोहन झा

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI5.pdf

ARCHIVE.ORG (विजयदेव झा)

https://archive.org/details/vijay_deo_jha

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Audio-Video Archive

http://videha.co.in/archive.htm

IGNCA

http://ignca.nic.in/coilnet/mithila.htm

http://ignca.nic.in/coilnet/kalyani.htm (MAITHILI ENGLISH DICTIONARY)

मिथिला दर्शन

https://mithiladarshan.com/ (online pdf of Maithili journal)

तीरभुक्ति

https://archive.org/details/@teerbhukti_journal

OLE NEPAL's E-PUSTAKALAYA (https://pustakalaya.org/en/)

पोथीक लिंक

आइ.जी.एन.सी.ए.- ए.एस.आइ. https://ignca.gov.in/divisionss/asi-books/

https://ignca.gov.in/Asi_data/16612.pdf (History of Navya-Nyaya in Mithila)

https://ignca.gov.in/Asi_data/42365.pdf (Studies in Jainism and Buddism in Mithila)

https://ignca.gov.in/Asi_data/63227.pdf (Mithila in the Age of Vidyapati)

https://ignca.gov.in/Asi_data/64994.pdf (Cultural Heritage of Mithila)

https://ignca.gov.in/Asi_data/72754.pdf (Mithila under the Karnatas)

ए.एस.आइ.अंग्रेजी https://tspasibhopal.nic.in/assets/pdf/publication/temples_of_mithila_english.pdf

ए.एस.आइ.हिन्दी https://tspasibhopal.nic.in/assets/pdf/publication/temple_of_mithila_hindi.pdf

मैथिली साहित्य संस्थान https://www.maithilisahityasansthan.org/resources

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

https://bloomlibrary.org/language:mai (ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली)

अरिपन फाउण्डेशन (http://www.aripanafoundation.org/)

PRATHAM BOOKS MAITHILI STORYWEAVER

https://www.youtube.com/playlist?list=PLAT74nNc2fmYaW29mRVAIgzRq63_9zWbl (मैथिली ऑडियो बुक्स)

https://www.youtube.com/channel/UCE1HEUJEzc-NUbMsHzklHLw (विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग रीड-अलाउड ऑडियो बुक आ संगमे मैथिली संकेत भाषा- दुनू मैथिलीमे पहिल बेर)

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका)

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम तँ ठीक छी ने!)

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घर सभ)

https://bloomlibrary.org/player/dAzC0Fubt7 (की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?)

पोथी डॉट कॉम

https://store.pothi.com/browse/free-ebooks/?language=Maithili

I LOVE MITHILA

https://www.ilovemithila.com/maithili-books-pdf-free-download/ (पोथी डाउनलोड लिंक)

https://www.ilovemithila.com/ *(online maithili journal)*

https://maithili.com.np/ *(owner I Love Mithila)*

मैथिली फिल्म

https://youtu.be/4jhaQ3Nw38I (ममता गाबय गीत, सौजन्य- Saregama)

https://youtu.be/V3KWthhB6Kg (कन्यादान, सौजन्य- BEJOD)

https://www.bejod.in/ (Maithili Movies on Rent)

https://mubi.com/films/gamak-ghar (Maithili Movies on Rent)

https://mubi.com/films/dhuin (Maithili Movies on Rent)

प्यारे मैथिल

https://www.youtube.com/channel/UCq30Llck2tNw8BI4t8jjzQg (*प्यारे मैथिल चैनल- किरण चौधरी आ संगीता आनन्द)*

https://www.youtube.com/@mithiranglоktarang677 (मिथिरंग लोक तरंग)

https://www.youtube.com/MithilaChapter (मिथिला चैप्टर)

https://www.youtube.com/soumyajha (खिस्सा-पिहानी नेना भुटका लेल)

https://www.youtube.com/@maithilirangmanch9536 (मैथिली रंगमंच)

https://www.youtube.com/@kokilmanch4330 (कोकिल मंच)

https://www.youtube.com/@mithilanatyakalaparishadmi5636 (MINAP)

https://www.youtube.com/@mlrmedia3097 (मैलोरंग)

http://www.youtube.com/user/mailorang (मैलोरंग)

https://www.youtube.com/@praakshjha (मैलोरंग)

https://www.youtube.com/@mithilangan109 (मिथिलांगन)

https://www.youtube.com/@bhangimamaithilitheatre9509 (भंगिमा)

https://www.youtube.com/@MithilaDarshan (मिथिला दर्शन)

https://www.youtube.com/@MithilaMirror (मिथिला मिरर)

https://www.youtube.com/@SmritiEntertainmentMaithili (स्मृति एंटरटेनमेंट)

https://www.youtube.com/@achalchitra (अचल चित्र)

https://www.youtube.com/@Bejod (BEJOD)

https://www.youtube.com/@neelammaithili (नीलम मैथिली)

https://www.youtube.com/@maithiliganga4714 (मैथिली गंगा)

https://www.youtube.com/@MithilaJunction (मिथिला जंक्शन)

https://www.youtube.com/playlist?list=PLgmIEgU89nhRIGV-rG2SXY3uuhnXGT-j5 (दीपशिखा झा)

https://www.youtube.com/playlist?list=PLT8LMrml4tPHxM64K8Iov_Arr_3uPaPgf [मैथिली समाचार (जनता टेलीविजन)]

https://www.youtube.com/@maithilitalks (Maithili Talks)

https://www.youtube.com/@AppanTV (Appan TV)

https://www.youtube.com/@TVTODAYJANAKPUR (TV Today, Janakpur)

https://www.youtube.com/@drishyambiharlok7552 (Drishyam Media)

https://www.youtube.com/@sanskarmithila (संस्कार मिथिला)

https://www.youtube.com/@saregamaapanmaithili3522 (सरेगामा मैथिली)

https://www.youtube.com/@NavrassMedia (नवरस मीडिया)

https://www.youtube.com/@jyotient778 (ज्योति एंटरटेनमेंट)

https://www.youtube.com/@RKSMAITHILIPRODUCTION (इजोरिया फिल्म्स)

https://www.youtube.com/@ayodhyanathchoudhary345 (अयोध्यानाथ चौधरी)

https://www.youtube.com/@RadioJanakpur97MhzOfficial (रेडियो जनकपुर)

https://www.youtube.com/@mithilatv1 (मिथिला टी.वी.)

https://www.youtube.com/@Madhurmaithilichannel (मधुर मैथिली)

https://www.youtube.com/@sktutorials8921 (मैथिली-नेपाली सीखू)

https://www.youtube.com/playlist?list=PL_HQDKXbaRKq3YTS7-Pkks1Y-UIL33fiD (अपन मैथिली)

https://www.youtube.com/playlist?list=PLH1UiGl69_SLRhxZMZ1TSxUi-JXcHhAZr (मैथिली पाठ)

https://www.youtube.com/@maithiliforiassurendraraut1589 (सुरेन्द्र राउत)

https://www.youtube.com/@UdayaSingh (रफ कट्स, नचिकेता)

https://www.youtube.com/@kunjbiharimithilaratna (कुञ्ज बिहारी)

https://www.youtube.com/@RAMBABUJHA (राम बाबू झा)

https://www.youtube.com/@VJEntertainments008 (वी. जे., विकास झा)

https://www.youtube.com/@user-ib7pn3li5q (तिरहुत मिथिला)

https://www.youtube.com/c/ilovemithila (आइ लव मिथिला)

https://www.youtube.com/@LokKalaKendra (लोक कला केन्द्र)

https://www.youtube.com/@rajnipallavi (रजनी पल्लवी)

https://www.youtube.com/@PoonamMishra (पूनम मिश्र)

https://www.youtube.com/@ranjanajhasangeetdivyam2908 (रंजना झा)

https://www.youtube.com/@julijhaofficial8057 (जूली झा)

https://www.youtube.com/@maithilithakur (मैथिली ठाकुर)

https://podcasters.spotify.com/pod/show/anupam-mishra04/episodes/Episode-40-e135mlu/a-a5uoe0r (अनुपम मिश्र पॉडकास्ट)

जानकी एफ.एम समाचार

https://www.youtube.com/user/Janakifm/videos (जानकी एफ.एम समाचार)

https://www.youtube.com/@AmitJhaOfficial (Amit Jha)

https://www.youtube.com/@PMPCORNER (Pravesh Mallick)

https://www.youtube.com/@AdityaFilmsandmusic (Aditya Films & Music)

https://www.youtube.com/@NepalTelevision (Nepal Television)

https://www.youtube.com/playlist?list=PLEqde8-nxNTHL78RKSiuTGeeTJXot3YrY (AIR MAITHILI NEWS)

https://www.youtube.com/playlist?list=PLJuuojdiqz3NMKxKUbbcO7cT3sPrgRejS (AIR AMRIT MAHOTSAV)

https://www.youtube.com/@Mithilanchal (Mithilanchal)

https://www.youtube.com/channel/UCsB8UkEYLZe471GrcAlcG1A (Rashmi Dutt)

https://www.youtube.com/channel/UCVYE4fcasReMXTpbXWgp2mg (Priya Mallick)

https://www.youtube.com/@AnamikaJhaOfficial (Anamika Jha)

Videha e-Learning

https://www.youtube.com/@videha-elearning

संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामिग्री [एन.टी.ए.- यू.जी.सी.-नेट-मैथिली लेल सेहो]

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

....

http://www.youtube.com/user/ggajendra71 (विदेह)

https://www.youtube.com/gunjanshree

http://www.youtube.com/user/Maithilinews

http://www.youtube.com/user/jitumaithil (जितेन्द्र झा, जनकपुर)

http://www.youtube.com/user/sobhagya8 (सौभाग्य मिथिला)

http://www.youtube.com/user/bhaskaranjha (भाष्कर झा)

http://www.youtube.com/user/mahakalijha

http://www.youtube.com/user/karia1885

http://www.youtube.com/user/omuniv

http://www.youtube.com/user/sumankumar137

http://www.youtube.com/user/gyansjha

http://www.youtube.com/user/bclalan

http://www.youtube.com/user/gareri1986

http://www.youtube.com/user/avinashjha84

http://www.youtube.com/user/chandankumarjha1

http://www.youtube.com/user/chandanmishra2010

http://www.youtube.com/user/nirmaana

http://www.youtube.com/user/Janakifm1

http://www.youtube.com/watch?v=XpSuVHtbaQ8&feature=mfu_in_order&list=UL

http://www.youtube.com/user/gxcng

http://www.youtube.com/user/gautamkrishna85

http://youtu.be/3i3OG5Nf3y8

http://youtu.be/sJnxSe-ckmo

http://www.youtube.com/user/jitmohanjha

http://www.youtube.com/user/MiTJnPNN

http://www.youtube.com/watch?v=-9KaC8ji9t4

http://www.youtube.com/user/luvvivek2k7

http://www.youtube.com/user/bindassatyandra

http://www.youtube.com/user/rustymind1

http://www.youtube.com/user/MrDeveshKarna

http://www.youtube.com/user/rambabushah

http://www.youtube.com/user/mukeshjha84

http://www.youtube.com/user/Mauahi

www.youtube.com/user/MrBasantjha

http://www.youtube.com/user/themadan

http://www.youtube.com/user/sentukhu

http://www.youtube.com/user/yarowjha

http://www.youtube.com/user/mkoxp

http://www.youtube.com/user/luvvick21

http://www.youtube.com/user/njyclubashok

http://www.youtube.com/user/MrRamkisor

http://www.youtube.com/user/pratyushsangita/

http://www.youtube.com/user/hellomithilaa

http://www.youtube.com/user/mariyoshj

http://www.youtube.com/user/dearshantanu/

www.youtube.com/user/RajuPrasadRajbanshi

www.youtube.com/user/premarshi

http://www.youtube.com/user/Dhipre (धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

http://www.youtube.com/user/TheShubhaprabhat

http://www.youtube.com/user/njyclubashok

http://www.youtube.com/user/mithilaconnect

http://www.youtube.com/user/NAYAKSAURABH80

http://www.youtube.com/user/Rabindra888

http://www.youtube.com/user/uday88mandal

http://www.youtube.com/user/nimesdeath

http://www.youtube.com/user/pawanks6102

http://www.youtube.com/user/sahayogee

http://www.youtube.com/user/sunilkumarpawan

http://www.youtube.com/user/videhuk

http://www.dailymotion.com/video/xjophq_documentary-kosi-katha_shortfilms#from=embed

http://blackbuddhas.com/

http://youtu.be/CPwpkn5YI1I

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement

Issue No. 88 (November-December 2019) of Muse India at http://museindia.com/ displays Maithili literature in an extremely poor light. Moreover, it wrongly claims to be a representative review of Maithili Literature, whereas it was only in line with the Sahitya Akademi, Delhi; a mere representation of the so-called "dried main drain". It is expected that Muse India will correct itself by announcing an issue exclusively devoted to the parallel tradition of Maithili literature.

T.K. Oommen writes in the "Linguistic Diversity" Chapter of "Sociology", 1988, page 291, National Law School of India University/ Bar Council of India Trust book: "... the Maithili region is found to be economically and culturally dominated by Brahmins and if a separate Maithili State is formed, they may easily get entrenched as the political elite also. This may not be to the liking and advantage of several other castes, the traditionally entrenched or currently ascendant castes. Therefore, in all possibility the latter groups may oppose the formation of a separate Maithili state although they also belong to the Maithili speech community. This type of opposition adversely affects the development of several languages."

T.K. Oomen further writes: "... even when a language is pronounced to be distinct from Hindi, it may be

treated as a dialect of Hindi. For example, both Grierson who undertook the classic linguistic survey of India and S. K. Chatterjee, the national professor of linguistics, stated that Maithili is a distinct language. But yet it is treated as a dialect of Hindi". (Ibid, page 293)

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. - Robert Louis Stevenson

...

Videha: Maithili Literature Movement

Parallel Literature

The references to parallel literature are found in Vedas, where Narashanshi is referred to as parallel literature.

Parallel Literature in Maithili

The need for parallel literature in Maithili arose due to the constant onslaught on literature and dignity by the Public and Private Academies, for example, Maithili-Bhojpuri Akademi of Delhi, Maithili Akademi of Patna, Sahitya Akademi of Delhi, Nepal's Prajna Pratishthan, all of which are government Academies. In addition to these Academies, the onslaught on Maithili Literature and dignity was constantly done by the so-called literary associations which were recognised by the Sahitya Akademi and were the main

tool for usurping all the literary space meant for this language. Besides these, the funding to these and other parochial associations and organisations led to the presentation of an interface in the name of Maithili, which was mediocre and non-representative.

The Book of Bihari Literature (Abhay K. Editor)

This book contains five translations from non-representative Maithili short stories into English by Vidyanand Jha. Nagarjun (Maithili's Yatri) and Usha Kiran Khan are from the Hindi quota though both got the Sahitya Akademi prize from the Maithili quota. Vibha Rani and Rajkamal Chaudhary are from the Maithili quota though both wrote in Hindi also.

This book is edited by Abhay K. who has read Samskrit only up to high school. Yet he pretends to translate Arthashastra directly from Samskrit into English. I am Kovid in Samskrit and from the quality of the translation, I can presume that he has used some intermediary language in translating Samskrit texts into English. It is a matter of ethics to acknowledge the source.

Vidyanand Jha's translation is below par, for example, he has no inkling what would be the English word for 'olak sanna', and there are plenty of such instances. I have some suggestions for him: First, read A Bird's Eye View on Mithila by Rajnath Mishra, it mentions all the terms for which you could not find English

equivalents. Then go to the Videha archive (www.videha.co.in) and look for Umesh Mandal's Picture Dictionary containing vegetation, animals and skill sets of Mithila, here you will find the actual photographs too. Further, under A Parallel History of Maithili Literature (Videha www.videha.co.in), you will find sample English translations of some Maithili short stories. Therefore, what Vidyanand Jha is presenting as exotic is the original thing of the Maithili Language (but not that of Maithili literature, as was two decades ago). Interestingly his choice of short stories reminds me of Contemporary Maithili Short Stories (Maithili short stories translated into English) edited by Murari Madhusudan Thakur and published by the Sahitya Akademi in 2005. It seems that the stories in this selection are leftover material from that collection. Rip Van Winkle awoke after two decades but Vidyanand Jha is still in slumber not realizing the changes that have happened during the period.

If you compare the translation of this selection vis-a-vis the English translation of Latin American Spanish literature, you would be able to understand the difference.

But these types of selections are not known for their literary excellence, Harper Collins publishes these types of selections for five-star hotels and Airport lounges. The publishers announced this book on

March 22, 2022. So, in 6-7 months, you will get old materials only.

The Bride: The Maithili Classic Kanyadan by Harimohan Jha (1908-1984) translated into English by Lalit Kumar (Assistant Professor, Department of English, Deen Dayal Upadhyaya College, University of Delhi)- Harper Perennial (Harper Collins Publishers)

I had pre-ordered the book, which was scheduled to be delivered to my kindle account on the 1st of December 2022, but the delivery date was postponed, and it was delivered to my account on the 14th of December 2022.

When Maithili was recognised by the Sahitya Akademi (National Academy of Letters- of India) way back in 1965, Late Ramanath Jha stated that his Maithili language is saved now (Maithilik Vartman Samasya, Ramanath Jha).

Sh. Harish Trivedi has committed the same mistake. In his foreword Harish Trivedi writes- "In Hindi, the language to which Maithili is the closest (and of which it was indeed an integral part until it was granted recognition as a separate language by the constitution in 1993) ..."

Harish Trivedi refers to the inclusion of Maithili in the eighth schedule of the constitution of India. Here the year mentioned should be 2003 instead of 1993.

Moreover, Maithili was a separate language in 2003, 1993, and 1965 and during the time of pre-Jyotirishwara Vidyapati. The status granted to Maithili by Sahitya Akademi and the Constitution of India, on the other hand, strengthened the hands of the obscurantist elements like Ramanath Jha, Shardananda Jha (he is not a famous person but why I have taken his name, I will explain it later) and others who gaslighted Harimohan Jha. Harimohan Jha's Khattar Kakak Tarang, Pranamya Devata, Rangshala and Charchari all these books were eligible for the Sahitya Akademi Award initiated in 1966 for Maithili (because of recognition given to Maithili by Sahitya Akademi in 1965. But a philosophy treatise was awarded the prize in 1966, this philosophy book itself is a horrific one, and if one has read the book to understand the nuances of Indian Philosophy, then he will have to unlearn first to be able to grasp the philosophical concepts from a new book on Indian Philosophy. In 1967 no award was given for the Maithili Language.

Ramanath Jha's obscurantism vis-a-vis Panji is evident from one example (because Lalit Kumar also seems to have followed in his footstep, though he gives credit for his ignorance to some other writers). He was casteist, conservative and confused. The inter-caste marriage in Panji was well known to him (but he chose to keep the Dooshan Panji secret- which has been released by us on google books in 2009), and it was

apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married a "Charmkarini" and was born five years after the death of his father (see our Panji Books Vol I & II available at http://videha.co.in/pothi.htm). Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya writes in the "History of Navya-Nyaya in Mithila"-

"The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila- Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his father's name.", which is a total falsehood. He writes further that all this information was given to him by Prof. R. Jha. So how would this casteist-conservative-confused allow the award to be given to Sh Harimohan Jha? So, the Sahitya Akademi saved the Maithili Language by recognizing it, as asserted by Prof. R. Jha, is wrong and so is the assertion made by Sh. Harish Trivedi.

Mr Lalit Kumar is a young person, but he is being misused by some obscurantist elements, who gaslighted Harimohan Jha. Harimohan Jha stopped writing in Maithili following the recognition of it by Sahitya Akademi and was awarded the Sahitya Akademi prize for his autobiography in 1985, after his death, which means nothing.

Mr Lalit Kumar writes- "Yoganand Jha's Bhalmanusha (1944) and Shardananda Jha's Jayabara (1946) attack such social divisions that played a decisive role in

marriages." Yoganand Jha's Bhalmanusha (1944) was indeed a pathbreaking novel, but Shardananda Jha's novel was reactionary. Prof Radha Krishna Choudhary rightly observes- "Yoganand Jha's 'Bhalamanusa' deals with the social problems connected with the problem of marriage. As a reply to this novel, Shardanand Jha wrote a second-rate novel 'Jayabara,' having little literary merit. (RADHAKRISHNA CHOUDHARY A Survey of Maithili Literature)

Mr Lalit Kumar for his Panji-related ignorance gives credit to Mm. Parmeshwar Jha's ''Mithila Tattva-Vimarsha." Prof Radha Krishna Choudhary rightly observes- "Mm. Parmeshwar Jha's 'Mithila Tattva-Vimarsha' is the history of Mithila in Maithili prose and is based mainly on tradition. Mm. Mukunda Jha Bakshi's 'Mithilabhashamaya Itihas' gives an account of the Khandawala dynasty. From the point of view of modern Maithili prose, these two works are important, though from the historical point of view, are unreliable. (RADHAKRISHNA CHOUDHARY A Survey of Maithili Literature)

The following excerprt from Our Panji Paband ((part I&II) is being reproduced below for ready-reference: -

महाराज हरसिंहदेव- मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1 307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल

ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक प्रेरणासँ- आ ई हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकेमे स्थापना केने रहथि- नन्दैद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाके) ... मिथिलाक पण्डित लोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे थोडे बुद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाके माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई.क आसपास) श्रोत्रिय नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।

So, the Srotriyas as a sub-caste arose around 1800 CE as per authentic panji files.

<u>Sh. Anshuman Pandey</u> [Gajendra Thakur of New Delhi provided me with digitized copies of the genealogical records of the Maithil Brahmins. The panjīkara-s whose families have maintained these records for generations are often reluctant to allow others to pursue their records. It is a matter of 'intellectual property' to them. I was fortunate enough to receive a complete digitized set of panjī records from Gajendra Thakur of New Delhi in 2007. [Recasting the Brahmin in Medieval Mithila: Origins of Caste Identity among the Maithil Brahmins of North Bihar by Anshuman Pandey, A dissertation submitted in partial fulfilment of the requirements for the degree of Doctor of Philosophy (History) in the University of

Michigan 2014]. Later these Panji Manuscripts were uploaded to google books in 2009).

The so-called Maharajas of Darbhanga were permanent settlement zamindars of Cornwallis, and there were so many in British India, but in Nepal there were none. In the annexure of our book (Panji Prabandh vol I&II), we have attached copies of genealogy-based upgradation orders (proof of upgradation for cash). So, before 1800 CE, there was no srotriya sub-caste in British India and there is no such sub-caste within Maithil Brahmins in Nepal part of Mithila even today. Srotriya before that referred to following some education stream in British India, in Nepal it still has that meaning.

Mr Lalit Kumar further tries to put his agenda by writing- "Harimohan choose a middle ground in his reformist agenda." He gives laughable reasons for his contention viz. "he espouses the significance of local traditions, languages, scripts, education system, and moral values" thereby meaning that these are conservative values!

(All the referred books are available for free pdf download from the link http://videha.co.in/pothi.htm)

VIDEHA MAITHILI LITERATURE MOVEMENT AND A PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE

Therefore, the missing portions, the ignored and non-represented aspects of society, started to be chronicled. It led to the depiction marked by the richness of vocabulary and experiences and was a revolution in literature and art as far as people speaking Maithili are concerned. The quality now has not remained mediocre. The real power of the Maithili language was realised by the native speakers, mediocrity was replaced by excellence. This attempt at the writing of History of Parallel Literature for the Maithili Language arose as the mediocre agency (private and governmental) funded so-called mainstream literature, which has no readership, and no acceptance among the speakers of Maithili continued to be presented by these Akademies as representative literature. The mediocre interface of Maithili literature was presented by the government radio and television stations also. Literary journals like Museindia (www.museindia.com) & Publishers like Harper Collins were also used for their sinister design.

Pseudo-criticism in Maithili and the case of Kamalananda Jha

The title of Kamalanand Jha's book "Maithili Novel: Time, Society and Questions" (2021) is misleading. It is a collection of some syndicated so-called critical articles on some of his caste novelists. The 263-page book can only be sold in hardbound to libraries where it will rot. Here is a correction, a non-caste writer's

work, i.e., Subhash Chandra Yadav's novel 'Gulo', has been dealt with by him in two lines, of course without reading it. I am presenting those two lines here for your entertainment. You must have read *Gulo*, if you haven't already, read it first because then you will have a more entertaining experience. Gulo is available on Videha Archive with the permission of Subhash Chandra Yadav at this link http://videha.co.in/pothi.htm.

"The weakness of the novel is the author's political bias. The partisanship towards a particular politics does not do justice to the work."

In a novel where politics is not remotely involved, there is no question of 'political bias and partisanship of a particular politics'. Dhumketu and Yatri used political bias or partisanship. Subhash Chandra Yadav's 'Vote' which came out in 2022 and is available with permission of Subhash Chandra Yadav on Videha Archive at this link http://videha.co.in/pothi.htm, is on politics but even there Subhashji's enchanting style obviates the need of any political bias... Read my book 'Nit Naval Subhash Chandra Yadav' which is available at this link http://videha.co.in/pothi.htm. On the other hand, Mr Kamlanand Jha sounds like a spokesperson of some political party or a casteist organisation rather than a literary critic. Kamalananda Jha's Brahministic bias against Subhash Chandra Yadav is an alarm bell. The parallel stream is

conscious of how Kamalananda Jha takes the leftist stance to promote Brahminism and wants to sacrifice social justice. In his biodata, he proudly mentions the Maithili translation assignment bestowed on him by the Sahitya Akademi, and this assignment was allotted to him not on account of merit but solely on the ground of his caste title and in lieu of these deeds. For people like him, Maithili-related work is merely a line in their *curriculum vitae*, but it is a question of life and death for the people of the parallel stream. Why did I call Kamalananda Jha a pseudo-critic? Because he is a pseudo-critic. He writes: "After nearly a hundred years of journey, Gaurinath is credited with writing a dignified novel on the dreams, struggles and ironies of inter-caste marriage. So, did Kamalananda Jha take away this credit from Sushil? Is this the culmination of the arrogance of his Brahministic upbringing ("*Through my whims and fancies I can place some literature on top and can downgrade some to the bottom*") or is this the evidence of his lack of study? Let me take you away from the selfish world of Kamalananda Jha, away from deception and disguise to the sincere world of Sushil's magical literature. Welcome to the world of Sushil's literature. Here is Sushil's 'Gambali' (1982) which is now available in the Videha Archive at the link http://videha.co.in/pothi.htm. In the first line of this novel, even before the novel begins, Sushil writes about the novel 'Gambali': "In support of widow

marriage and inter-caste marriage" and here begins the novel. The death of a village woman and then the trouble ensues, who will cremate this village woman? Brahmin community or Yadav community of the village? Dinesh Kumar Mishra's 'Dui Patan Ke Bich Me' is a historical biography of the Kosi River. He has also written historical biographies of other rivers of Mithila like 'Bandini Mahananda,' 'Bagmati Ki Sadgati!', 'Dui Patan Ke Bich Me... (Story of the Kosi River)', Na Ghat Na Ghar, Kamla River, 'Bhutahi River and Technical Herbalism', The Kamla River and People on Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a Ghost River and Engineering Witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments. Pankaj Jha Parashar, a member of the Maithili Advisory Committee of the Sahitya Akademi, Delhi has plagiarised paragraph after paragraph from his books and has published a novel in Maithili in his name, which pseudo-critic Kamalananda Jha mentions as research of this thief author Pankaj Jha Parashar! Let me clarify here that both the thief writer and the pseudo-critic are in the Hindi department of Aligarh Muslim University. This research is done by Dinesh Kumar Mishra, who is a graduate of IIT, Kharagpur in Civil Engineering (in 1968) and M. Tech in Structural Engineering (in 1970) and is qualified for that research. In Hindi, the cut-off for admission is the lowest across universities, otherwise, Kamalananda Jha would have known that this research could be done by a civil engineer only.

The Hindi original and Maithili screenshots are attached below. Dinesh Kumar Mishra is not from Mithila, but he has authored the story of all the streams of Mithila. We are grateful to him, and the people of Mithila will remain indebted to him for this. This thief writer Pankaj Jha Parashar is a habitual offender. More than a decade ago he found a saviour in Mr Taranand Viyogi who wrote that he (thief writer Pankaj Jha Parashar) gets influenced involuntarily stole others' material in his works. Now he has found another saviour in Kamalananda Jha. The parallel stream is conscious of how Kamalananda Jha takes the leftist side to promote Brahminism and wants to sacrifice social justice. Communism has suffered a lot from people who became communists to escape the land ceiling.

All books by Dinesh Kumar Mishra are now available in the Videha Archive with his permission:

http://videha.co.in/pothi.htm

Let us recall here that when Bill Gates was asked whether he was delaying the introduction of the X-Box in India for fear of piracy. His answer was Microsoft never delays the launch of products for fear of piracy. We will continue enriching Videha Archive (http://www.videha.co.in/archive.htm), despite such risks because not all the fish in the pond rot by some rotten fish in parallel streams. The fishermen here

have been and will continue to remove such rotten fish.

The final blow to syndicated pseudo-literary criticism in Maithili.

Original Dinesh Kumar Mishra (Dui Patan Ke Beech Me... 2006): It is noteworthy that between 1923 and 1946, 5,10,000 people died of malaria, 2,10,000 from Kala Azar, 60,000 of Cholera and 3,000 of smallpox in the Kosi region (783,000 total deaths). Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi) [Jalpranthar 2017 (p. 103)]:

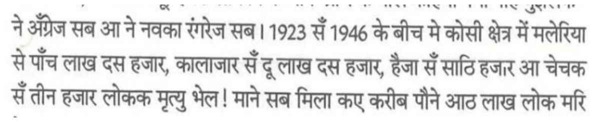
ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

Original Dinesh Kumar Mishra (Dui Patan Ke Beech Me... 2006): On the Kosi River in Bihar, India, a dam was built by King Laxman II in the 12th century and for this, he received the title of 'Bir' from the people and the embankment of the river was called 'Bir Dam' The remains of this embankment are still visible in Supaul district, about 5 km south of Bhim Nagar. Dr Francis Buchanan (1810-11) speculated that the dam must have been an outer wall built to protect a fort as it stretched over a distance of 32 kilometres from Tilyuga to its confluence on the western bank of the Dhaus river. Dr W.W. Hunter (1877) did not agree with Buchanan's contention that the dam was the protective wall of a fort. Quoting locals, Hunter

believed that most people did not consider it a fortress wall and according to him it was something else but he was not in a position to say anything. Yet the common impression is that it must have been an embankment built along the Kosi River to prevent the river's current from sliding westwards. People also said that it seemed that the construction of the embankment had suddenly stopped.

The pseudo-critic Kamalananda Jha's saviour of the habitual offender thief Pankaj Jha Parashar quoted the plagiarised work as follows: (Maithili Novel, Time, Society and Questions pp. 257-258):

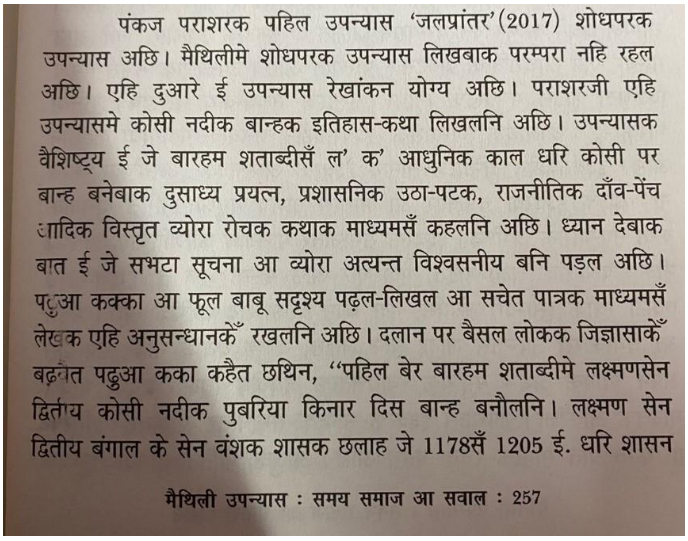

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

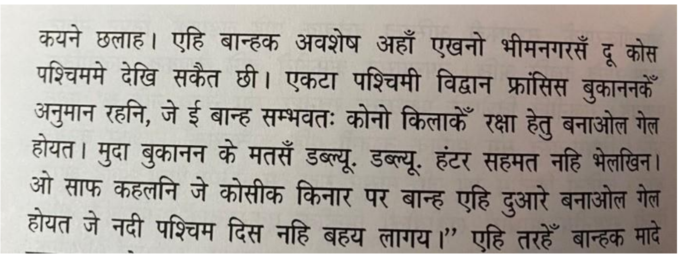

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi) [Jalpranthar 2017 (p. 31)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप कें आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा कें लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनें छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवतः कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन ? लोक कें बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका कें आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

Original Dinesh Kumar Mishra (Dui Patan Ke Beech Me… 2006): A glimpse of the horrors of the Kosi River can be seen in the event when the army of Feroz Shah Tughlaq returned to Delhi from Bengal. It is said that when the troops of the Sultan reached the banks of the Kosi, they saw that on the other side of the river, the troops of Haji Shamsuddin Ilyas were waiting, ready for a battle. This was the same Haji Shamsuddin who founded the cities of Hajipur and Samastipur. Feroze's troops were stranded on the banks of the Kosi somewhere around Kursela. The speed of the river was preventing them from moving forward. It was finally decided to proceed northward along the river and to locate the water where it was navigable.

The troops of the Sultan went up about a hundred *kos* and crossed the river near Ziaran, situated at the same place where the river descended from the mountains into the plains. The river was thin, but the flow was so fast that heavy stones weighing five hundred *manas* were floating like straws in the river. On either side of the river where it was found possible to cross it the Sultan erected a row of elephants, and ropes were hung in the bottom row so that if a man loses control he could be rescued with the help of these ropes. Shamsuddin never thought that Sultan's troops would be able to cross the Kosi and when he came to know that Sultan's troops had managed to cross the Kosi, he fled.

Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi) [Jalpranthar 2017 (p. 105)]:

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र–शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनैं रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस–पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना कैँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे–किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनैं कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनैं शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच–पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति कैँ जतय नदी पार करब कनैं आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी कैँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का–बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनैं छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन कैँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

A Parallel History of Maithili Literature

I

Introduction

FESTIVAL OF LETTERS OR FESTIVAL OF SHAME

SAHITYA AKADEMI AND the DOWNFALL OF INDIAN LANGUAGES (IN SPECIAL CONTEXT OF MAITHILI LANGUAGE)

When Maithili was recognised by the Sahitya Akademi (National Academy of Letters- of India) way back in 1965, Late Ramanath Jha stated that his Maithili language is saved now (Maithilik Vartman Samasya, Ramanath Jha).

He was wrong on this on two counts. What he referred to as applicable, if it applied at all, only to the part of Maithili speaking area, geographically located in India. Maithili is spoken, natively, in India and Nepal.

After the treaty of sugauli (ratified in 1816), which was in the aftermath of the Anlo-Nepalese war of 1814-16, the hilly regions were incorporated in British India, including the Nepalese-speaking Darjeeling Area. Similarly in 1816 and 1860, the Britishers ceded some Terai region to Nepal. As a result, part of Maithili speaking Area, which was earlier ruled by Malla Kings (when Maithili was an official language of the region), was ceded to Nepal. Even today some Maithili scholars (!!) refer to the golden period of Maithili as the period of "Nepali (!!)" Malla Kings (Ramanath Jha, Introduction to Maithili Sahityak Itihas by Dr Durganath Jha "Shreesh").

Ramanath Jha himself admits that during his visit to "Vir Library" of Nepal (Kathmandu) he came to know about the Nepal legacy (his monograph on kirtaniya Natak, which he wrongly presents as Kirtaniya Nach) in respect of Maithili. So, he cannot be blamed for his lack of knowledge in this respect. He was wrong on the second count also, and this second count was an artificial creation. He began a tradition of elitism and conservatism in Sahitya Akademi, as the first convener of the Maithili language. The tradition got stronger and stronger in the last 55 years of the Existence of Maithili in that Akademi. So, he ensured that liberal writers, like Sh. Harimohan Jha, attacking casteism and conservatism did not get the award, even though the year 1967 went unrewarded and the

Ist award in 1966 was given to a non-literary book in Maithili (academic book of Philosophy!!!).

He was casteist, conservative and confused. The inter-caste marriage in Panji was well known to him, and it was apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married a "Charmkarini" and was born five years after the death of his father. But he informed Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya in a distorted way. Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya writes in the "History of Navya-Nyaya in Mithila".

"The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila-Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his father's name.", and he writes further that all this information was given to him by Prof. R. Jha. So how would this casteist-conservative-confused allow the award to be given to Sh? Harimohan Jha. So, the Sahitya Akademi saved the Maithili Language by recognizing it, as asserted by Prof. R. Jha, was wrong on those two counts.

Now come to Nepal, the Prajna Pratisthan and other organizations often recognize Indian Maithili writers, but Sahitya Akademi of India does not recognize Nepalese Maithili writers, be it the Seminars or the poets meet, be it an anthology of poems or prose published by the Akademi. Regarding the treatment of Nepalese Maithili writers by Sahitya Akademi Sh. Ram Bharos Kapari "Bhramar" laments that there is

demand in Nepal that they should also not award Indian Maithili writers/ publish them in their anthologies as reciprocity demands this.

The narrow-mindedness of the Maithili advisory board of the Indian Sahitya Akademi has its origin in the organizations that are recognized by the Sahitya Akademi, the basis of which is extra-literary credentials. These are pseudo-organizations running on paper, political organizations or casteist organizations pocket-run by a few. The complete list is:

MAITHILI LITERARY ASSOCIATIONs (!!!) RECOGNIZED by SAHITYA AKADEMI

1. The Secretary, All India Maithili Sahitya Samiti, Tirbhukti, 1/1B, Sir P.C. Banerjee Road, Allahabad-211 002.

2. The General Secretary, Akhil Bharatiya Maithili Sahitya Parishad, C/o Dr. Ganapati Mishra, Lalbag, Darbhanga-846 004.

3. The Secretary, Chetna Samity, Vidyapati Bhawan, Vidyapati Marg, Patna-800 001.

4. The Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, 6 B, Kailash Saha Lane, Kolkata-700 007.

5. The Secretary, Vidyapati Seva Sansthan, Mithila Bhavan Parishar, Darbhanga-846 004.

6. The Secretary, Centre for the Study of Indian Traditions, Tantrabati Geeta Bhavan; Ranti House, Ranti, Madhubani-847 211

Now the Literary Association lists read as under. Serial no. 1 & 6 above have been derecognised and has been replaced by other non-literary associations at sr no 5, 6 & 7 below.

(1) The General Secretary, Akhil Bharatiya Maithili Sahitya Parishad, Professors' Colony, Digahi West, Opp. of Primary School, Darbhanga-846 004, (Bihar)

2) The Secretary, Chetna Samiti, Vidhya Pati Bhavan, Vidyapati Marg, Patna-800 001 (Bihar)

3) The Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, 6B, Kailash Saha Lane, Kolkata-700 007, (West Bengal)

4) The Secretary, Vidhya Pati Sewa Sansthan, Mithila Bhavan Parishar, Darbhanga-846 004, (Bihar)

5) The Secretary, Anand, Samajik Sanskritik Sahityik Manch, Rajkumarganj (Mirzapur Chowk), Darbhanga-846 004, (Bihar)

6) The General Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, Rosebery 5032, Sahara Garden City, Adityapur-2, Jamshedpur-831 014, (Jharkhand)

7) The General Secretary, Akhil Bharatiya Mithila Sangh, G-6, Hans Bhavan, Wing 2 I.T.O., Bahadurshah Zafar Marg, New Delhi-110 002, (Delhi)

What is the literary credential of the Centre for the Study of Indian Traditions (now recognised and replaced by another pocket association)? Chetna Samiti and Vidyapati Seva Sansthan are casteist political outfits, vehemently displaying the casteist attire of a great ancient poet, whose caste is still uncertain (VIDYAPATI), but who was certainly not Brahmin. All India Maithili Sahitya Samiti (now derecognised and replaced by a non-literary association) became non-existent even during the lifetime of the Late Jaykant Mishra, same is the case with Akhil Bhartiya Maithili Sahitya Parishad. Mithila Sanskritik Parishad has done a crime through an investiture ceremony of the great Vidyapati, they tried to convert Vidyapati and "Maithili" language to the language of only the Brahmins (the name of the artist who sketched the Vidyapati has still not been disclosed by this organisation). When these non-existent organizations exercise voting powers granted by Sahitya Akademi and chose a convener, it is not a coincidence that for successive times only conservative people among the Maithil Brahmin caste, are chosen. The complete list is:

1. Ramanath Jha, 2. Jaykant Mishra, 3. Surendra Jha Suman, 4. Sureshwar Jha, 5. Ramdeo Jha, 6. Chandranath Mishra Amar, 7. Vidyanath Jha Vidit, 8. Veena Thakur, 9. Prem Mohan Mishra, 10. Ashok Avichal.

The result is now for everybody to see. The complete list of Sahitya Akademi awards (till 2019) is:

Total booty distribution- 50 times, Maithil Brahmins- 42 times, Kayasthas- 6 times, Rajpoots- 3 times; Others- 0 times!!! (Now in 2021 Sh. Jagdish Prasad Mandal has been awarded this prize for his novel "Pangu", so the count is now not zero but one.

The result is not based on the quality of the books but solely upon the caste-based other considerations and the disease has its root in the faulty seedling that the Sahitya Akademi of India found through the faulty literary associations.

What were the objectives of the setting of this Akademi?

Sahitya Akademi was established (National Academy of Letters to be called Sahitya Akademi) by Government of India resolution No F-6-4/51G2(A) dated December 1952 "to set high literary standards, to foster and co-ordinate literary activities in all the Indian languages and to promote through them all the cultural unity of the country; to promote good taste and healthy reading habits, to keep alive the intimate dialogue among the various linguistic and literary zones and groups through seminars, lectures, symposia, discussions, readings and performances, to increase the pace of mutual translations through workshops and individual assignments and to

develop a serious literary culture through the publications of journals, monographs, individual creative works of every genre, anthologies, encyclopedias, dictionaries, bibliographies, who's who of writers and histories of literature."

The Akademi boasts of publishing "one book every thirty hours" and holding "at least thirty seminars every year" at regional, national, and international levels, " along with the workshops and literary gatherings-about two hundred in number per year".

The Akademi recognises " Besides the twenty-two languages enumerated in the Constitution of India", English and Rajasthani as languages. Sahitya Akademi has constituted twenty-four language Advisory Boards "to render advice for implementing literary programmes in these 24 languages".

The Akademi gives prizes in twenty-four languages recognised by it for original and translated works. It gives " special awards called Bhasha Samman to a significant contribution to the languages not formally recognized by the Akademi as also for contribution to classical and medieval literature"; "It has also a system of electing eminent writers as Fellows and Honorary Fellows and has also established a fellowship in the names of Dr Anand Coomaraswamy and Premchand".

FESTIVAL OF LETTERS (SHAME)!!!!

In February every year, Sahitya Akademi "holds a week-long Festival of Letters; It begins with the ceremony to present the Akademi's Annual Awards for creative writing".

In February every year, there is a need to examine whether Sahitya Akademi is fulfilling its objective and whether Sahitya Akademi is aware of the rich cultural and linguistic variety prevalent in India.

On scrutiny it is revealed that Sahitya Akademi believes in "forced standardisation of culture through a bulldozing of levels and attitudes" and it is not "conscious of the deep inner cultural, spiritual, historical and experiential links that unify India's diverse manifestations of literature".

The Akademi boasts of publishing "one book every thirty hours" and holding "at least thirty seminars every year" at regional, national, and international levels, "along with the workshops and literary gatherings-about two hundred in number per year". If we see the data in respect of Maithili it comes out that every year around twelve books should have been published in Maithili and the Maithili writers might have attended thirty seminars every year at regional, national, and international levels and might have participated in eight literary gatherings every year. The number of Maithili books published by the Akademi is pathetically low, and when we see the assignments, through which these books get

artificially prepared (be it translation, anthology or monograph), then the people getting these assignments are often related to the members of the advisory board (as the answer to RTI application by Sh. Vinit Utpal brings forth). The quality suffers, and as a result, there is no readership.

How this Akademi failed? And why this Akademi failed? And what action should be taken against Akademi for its intentional failure?

Firstly, Akademi is not the name of a man or woman. Akademi or its member of the Advisory Board consists of persons, and if the group of persons is failing the Akademi, that language itself is to blame! But again, the language is not the name of a man or woman. So, the people speaking that language are to be blamed for the failures of the Akademi. Really!!

Even if it is partially true, the Sahitya Akademy cannot shirk its responsibilities. How an advisory committee can be considered representative of Maithili-speaking people (even that of India), when the Convener of that language is nominated by six organisations (recognised by the Sahitya Akademi for reasons best known to it), having no remote connection with literature? Sahitya Akademi sowed seeds of Acacia and expected Mango fruit. Having said that it is also true that the Akademi or any organisation can transform itself, but only when the conservative

people representing these find pressure from the literary fraternity, change themselves or are replaced.

What is the solution?

The literary fraternity has already taken initiative by establishing parallel Sahitya Akademi awards and parallel literary meets. It should be taken further. All legal means should be explored to take the Akademi to the task. On all available forums, the fact is made clear that the literature being prepared by Sahitya Akademi through assignments is not grammatically correct, that it is not up to mark and is of inferior quality. On all available forums, it should be made clear that the thin, casteist-looking (quantitatively and qualitatively) and pale Maithili literature, which is being shown by the Sahitya Akademi of India to the world, has no readership or respect in its native speaking area of India and Nepal. And that Maithili has moved not because of Sahitya Akademi but despite it.

Demand

The six organisations representing Maithili should be derecognized with immediate effect and an inquiry initiated to ascertain their genuineness. A committee should be set up to scrutinize the work done by the Sahitya Akademi (in respect of Maithili) in the last 55 years. The awards should be kept in abeyance till the

results of the inquiry are made public and corrective steps are taken.

II

THE CELEBRATION BEGINS

Videha Ist Maithili Fortnightly International e-journal has e-published more than three hundred issues to date. Meanwhile, we will enumerate the problems faced and the solutions found by us. The Journey began in the year 2000 at yahoo Geocities- the first words on the internet in Maithili were written by me on the yahoo Geocities sites (now yahoo has discontinued Geocities) towards the end of 2000 when I suffered a major accident which kept me confined to crutches for one and a half years. But that shaped my destiny. I could concentrate on my Maithili writings and my research on Tirhuta Manuscripts. On 5th July 2004, the first blog in Maithili came (gajendrathakur.blogspot.com) as "Bhalsarik Gachh", which was rechristened as Videha ejournal from 1st January 2008. From Ist January 2008 it came to be published as a fortnightly journal. The first rechristened issue brought the story of the life and creations of a forgotten Maithili poet Late Ramji Choudhary (1878-1952).

Till the eighth issue of Videha the columns on Music, Mithila Painting, Children column, learn samskrit through Maithili got strengthened. Moreover, the

projects on digitalisation of Maithili Classics and Panji Manuscript-leafs got started. The searchable dictionary (Maithili-English_Maithili) was designed and strengthened. From the eighth issue, a latest unpublished Maithili Play of Nachiketa "No Entry Maa Pravish" began its e-publication in Videha. Nachiketa, the greatest dramatist of Maithili Literature was silent for the last 25 years, as far as the drama was concerned.

Technology has two aspects, bad (its chances of misuse) and good (its effective use). It is a great leveller; it challenges status quo forces. It is applicable in all areas of knowledge. So, school-going children today have a clearer understanding of the universe and atoms than the Aryabhata or Sir Issac Newton had. After mass-scale use of printing education and literature expanded its wings, but only after the "Internet and electronic transformation of tools of knowledge", it has become universal, it has jumped geographical boundaries. All shackles unfurled, the weak links of the chain were identified, and the chain which tried to capture knowledge, which tried to thwart its expansion, started breaking down. And the greatest beneficiary became the Maithili Literature. What is Videha, nothing, it is only its commitment to the Maithili Language, which helped it expand its base, and Videha became the means that were able to bind together the Maithili-speaking areas in both parts of the boundary (India & Nepal). Videha gave

Maithili a batch of committed writers and a batch of committed readers. It challenged the status quo and casteist forces. It challenged confused writers, who were using Maithili as a tool to ride the ladder of Hindi. The lack of criticism, the lack of teeth in criticism was the reason that some writers and dramatists were using Hindi-Mix Maithili for cheap popularity, they were using derogatory language for the so-called lower castes of their society (some were finding plea in Natyashastra- when even the modern-day Samskrit Drama is not using Prakrit etc.!!), and for their mimicry, those castes started keeping distance with this kind of literature. And once the confusion of the confused thinned, a new type of awakened literature, stage, and drama (top-class) became the norm.

Videha is regularly getting some excellent brains. Since its inception, Videha, the idea factory, is dependent upon them. As far as their versatile qualities are concerned, people associated with Videha are different. All are known for their perseverance and resilience. All are known for their arduous work. All are known for their quality work. All are known for their discipline. And all are committed; committed to Maithili and the Mithila. The cumulative force resulted in a natural revolution. A revolution in the field of Maithili Literature, art, music, craft, stage, and drama. The only international e-journal in Maithili started this quality movement in Maithili. Nothing less than world standard was acceptable. The awards were

instituted to recognize the parallel field of Maithili Literature, art, music, craft, stage, and drama. Only the best was selected, there was no scope for the second best. The participation of readers in the decision-making processes was encouraged. The readers got full access to the digitalised Maithili Literature. More than five hundred Maithili books and around 11000 palm-leaf mithilakshar manuscripts were digitalised and made available online under the "Videha Archive" section of www.videha.co.in (and the number is increasing every day). The audio-video-paintings-photographs were archived, and all these archived "art and lifestyle" of the people of Mithila were then placed online. The Videha Archive is a unique gift to the world.

So, what is the ideology of people associated with Videha? Is it collective thinking? No, of course not. In Videha all are welcome. Here all are welcome to discuss their respective ideology. Having said this, it needs emphasis that there are some basic human principles where no compromise is possible. The casteists, those having genetic superiority complex (which is another name for an inferiority complex), the practitioners of plagiarism, those who are unable to take part in a healthy discussion and persons who are not able to withstand the criticism of their creation, Videha is not a platform for them. The ideology of people associated with Videha may have different tinges, not all need to toe the line taken by

any member of the editorial board. Videha believes in the individuality of ideas and the editorial board never imposes its ideology upon its members. At the same time, it is being emphasized that each member of the Videha editorial board has a strong ideological leaning, the ideology of humanism is practised by all.

Videha-Maithili Literature Movement has its roots in the year 2000 when I started making Maithili Websites on Yahoo Geocities. After Yahoo Closed Geocities these sites were automatically deleted. However, the early form of Videha "Bhalsari Gachh" was started on 5 July 2004, and it is the earliest presence of Maithili on the internet. Videha and its vibrant members did their utmost in translating lacs of words on Wikipedia, and they successfully opposed the nomenclature "Bihari Languages" (Gerard M accepted the role of Umesh Mandal, the co-editor of Videha, go to Gerard M's blog and click the Dasipat Aripan photo from Videha archive (Preeti Thakur) placed at his blog, you will reach http://videha.co.in/). In Google translate/Wikipedia localisation drive, in Tirhuta and Kaithi script research and the localisation of Braille in consonance with the Maithili Language, Videha shouldered the responsibility as a pioneer in technology viz-a-viz Maithili Language. It was a pioneer in many respects. It started for the first time a Maithili Websites Aggregator at http://videha-aggregator.blogspot.com/, the first braille site in

Maithili, the first mithilakshar site in Maithili among others (total list).

Videha has organised several dozen Maithili book fairs to date. The 16th Videha Maithili book fair was held at Sagar Rati Deep Jaray, Patna on 10-11th December 2011 and the 17th Videha Maithili book fair was held at Guwahati, on 22-23 December next year at the Vidyapati Parv organised by Mithila Sanskritik Samanvay Samiti. The detailed list of all the venues (datewise). Videha also organised a parallel Sahitya Akademi Kavi Sammelan, besides awarding parallel Sahitya Akademi prizes, as corrective measures, as the awards and Kavi Sammellans of Sahitya Akademi were awarded/ organised in a unilateral manner where merit took a beating. Videha has, thus, fulfilled its obligation by interfering in the murky affairs of government organisations. Videha cannot remain a silent spectator, be it plagiarism or copyright violations. So, the authors like Pankaj Parashar, and Ashok Sahu, who were engaged in lifting other articles/ stories/ poems were banned after verifying the sources and target writings.

Literature in translation is a major issue with Videha. Lack of translation in America resulted in Americans lagging in quality literature. We practise literature in translation in both directions- from Maithili into English and from other languages into Maithili. As far as translations from other languages into Maithili are

concerned English, Nepali, Sanskrit and Hindi function as buffer languages in the process. Direct translations into Maithili are limited; and it is done directly only from English, Sanskrit, Hindi, Nepali and Bengali, although there are some exceptions. As far as the question of translations from Maithili into other languages is concerned, directed translations are again limited; and it is again done directly only into English, Hindi, Sanskrit, Bengali and Nepali, barring some exceptions. Videha contacted some notable personalities of class literature, took permission, and translated that literature into Maithili. Most of the time English was used as a buffer language and translation work from English, Hindi, Konkani, Telugu, Gujarati, Odia, Kannada, Nepali and Telugu into Maithili was completed; and these works were regularly published in Videha. Maithili novels, poems, and short stories, on the other hand, were translated from Maithili into English and were published regularly in Videha.

VIDEHA became a Maithili Literature movement. No, VIDEHA was from day one of the Maithili Literature movement. Many established misconceptions got cleared through VIDEHA. The well-known facts, the not-so-obvious plot of some people to kill Maithili through its twin institutions the Sahitya Akademi and the CIIL was unearthed. The Right to Information came in handy. Sri Vinit Utpal asked for information from Sahitya Akademi through his RTI application

dated 23.09.2011 (file no. RTI-125) and sought information on "Assignment assigned by Maithili Advisory Board, Sahitya Akademi under the convener ship of Sri Vidyanath Jha 'Vidit'". The information included a proposal received, a proposal rejected, and a proposal kept in abeyance." The statutory mandatory information supplied by the Sahitya Akademi unearthed a vicious circle of Maithili-speaking so-called litterateurs, hell-bent upon making Maithili a language- "of the Maithil Brahmin, for the Maithil Brahmin and by the Maithil Brahmin". More than 90% of the assignments went to the friends, relatives, and acquaintances of the 10-member Maithili Advisory Board. No assignment to Sh. Jagdish Prasad Mandal, Sh. Rajdeo Mandal, Sh. Bechan Thakur (the greatest Short-story-novel writer of Maithili, the greatest living poet of Maithili and the greatest living Maithili dramatist; respectively), Sh. Umesh Paswan, Sh. Umesh Mandal, Sh. Ramdev Prasad Mandal "Jharudar", Sh. Durganand Mandal, Sh. Sandeep Kumar Safi or to Sh. Anand Kumar Jha. When every member of the Maithili advisory board is hand in glove with the Sahitya Akademi to kill the Maithili language then where lies the hope? The demand for Mithila state by these people will see that 10 Maithil Brahmin families would loot the Mithila state. Then where lies the hope? Here lies hope. Sh. Bechan Thakur has created a parallel Maithili stage and theatre, a slap on the existing slapstick humouristic

Maithili theatre. Sh. Umesh Paswan is a discovery of the Parallel Sahitya Akademi Poetry festival organised by Videha. Sh. Jagdish Prasad Mandal, Sh. Rajdeo Mandal, Sh. Jharudar, Sh. Sandeep Kumar Safi and Sh Umesh Mandal have pumped their energy, wealth, and time into our Maithili Language. This language will live...proofs are given below: -

Google Translate:

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject

then Wikipedia translate:

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator
http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai
http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

http://ultimategerardm.blogspot.com/2011/05/bihari-wikipedia-is-actually-written-in.html)

[Monday, May 09, 2011

The #Bihari #Wikipedia is written in #Bhojpuri

This is the kind of article that has many people's eyes glazed over. It is about standards and scientific documents, and it is about languages most of my readers have never heard about. For the people that do speak one of the languages that are considered Bihari, it is extremely relevant, and it has implications for Wikipedia.

This is information provided by Umesh Mandal that explains the "Bihari group of languages" with the Maithili language:

Kellogg (1876/1893) and Hoernle (1880) regarded Maithili as a dialect of Eastern Hindi; Beames (1872/reprint 1966: 84-85), regarded Maithili as a dialect of Bengali, Grierson has done a great service to the Maithili language, however, he erred when he gave a false notional term of "Bihari" language after that western linguists started categorizing Maithili as a dialect of "Bihari" language; although there is nothing known as "Bihari Language" and both Maithili and Bhojpuri are spoken in Bihar (of India) as well as in Nepal.

Umesh is working on the localisation of MediaWiki for the Maithili language and as this language is currently in the Incubator, the language committee does its due diligence and trying to understand if Maithili can have a place in the Bihari Wikipedia. The information provided by Umesh makes it quite clear: "no".

This still leaves us with the misnomer that is the Bihari Wikipedia. The language used for the localisation and the articles is Bhojpuri. Bhojpuri has the ISO-639-3 code "bho".

Are you still following all this? Ok, there is one question I am not asking: How about the Kaithi script?

Thanks, GerardM]

Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/."Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."-Anshuman Pandey.] ।

TIRHUTA UNICODE See the final UNICODE Mithilakshara Application (May 5, 2011) by Sh. Anshuman Pandey at Page 23 of the Videha 80th issue (Tirhuta version) is attached"Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22" and at Page 12 Videha is included in References Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/. and role of Videha's editor is acknowledged on Page 12 "Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."]

The Maithili Speaking area is shrinking. It is shrinking due to a conscious-subconscious policy of the

Governments of India and Nepal, and the situation became critical due to the invasion of Hindi and Nepali media and the biased educational system in Maithili-speaking areas, and due to the large-scale migration, which has happened in one single generation. The question of Hindi saw to it that Vajjika, Angika and now Thethi, Surjapuri etc. languages should get the tacit support of supporters of Hindi, first in the name of religion and second in the name of caste. Through this they did not support Vajjika, Angika, Thethi or Surjapuri; but they tried to weaken Maithili, which resulted in the weakening of Vajjika, Angika, Thethi and Surjapuri. For all this, the Maithili-speaking people, more so the officials (I will explain it later), are also responsible, as they tried to delimit Maithili within the two castes and four districts. All other people and areas, than these, were considered northern, southern, eastern, and western deviations of so-called pure Maithili, which was fictitiously considered as being spoken by these Maithil Brahmins/ Karna Kayasthas of Madhubani, Darbhanga, Saharsa and Supaul districts. For the last 45 years the officials, yes, I call them officials, the officials of the Maithili Department of Sahitya Akademi, did not try to accommodate the people outside this fictitiously delimited domain. But the major problem lies somewhere else. The slow poisoning was given in many disguises, be it the faulty top-heavy education system, which neglected primary

and middle school education through the Mother Language Maithili, or be it through the concept of dialect, which initially conveniently declared languages like Maithili as dialects. Elementary education through Maithili was a non-starter because the Maithili books published by the Bihar State Textbook Publishing Corporation Limited seemed to be in Avahatt, it was not fit for children. Further, the authors and subjects selected for these books had a casteist bias. Maithili became a tool for caste-based politics, as once Hindi had been a tool for religion-based politics. Still, these officials, of the Maithili Department of Sahitya Akademi, are residing in their own built ghetto, bereft of any thinking or vision. Another reason for the present plight of Maithili is the policy undertaken by the tax collectors of Mithila (permanent settlement Zamindars of Cornwallis), whom the sycophants call King or the great king (Raja/ Maharaja) or Mithilesh (King of Mithila) these were mere tax collectors, the right for which were given to the highest bidders permanently; and there was not one such Mithilesh (tax collectors), but many within the borders of Mithila. These tax collectors employed mostly those two castes from four districts in their merchandise venture, and as the selection was based on sycophancy, so the work suffered. So, they imported the lathiyals from outside the Mithila region. The masses of Mithila suffered a blow from the double-edged weapon. First, from their people who

did not consider them as their own and second, the outsiders looted them. Now after some time these outsiders, the non-Maithili speaking people, found it convenient to declare the masses (not belonging to the two castes from four districts) as non-Maithili speaking people, and the officials/ sycophants from those two castes from four districts tacitly agreed to it. Now these outsiders, the non-Maithili speaking people, formed a majority in many places of Mithila, and they led the rumour that Maithili, like Samskrit, is an upper-caste phenomenon, and thus they legitimized their anti-Maithili stance (all these facts have been brilliantly dealt with in the Maithili Novels of Sh. Jagdish Prasad Mandal) and they propagated the case of Hindi, first based on religion and second based on caste. But why our people fell into their trap, why these tax-collector Maharajas did not consider the masses of Mithila as their own and imported the perpetrators to loot their masses? The simple answer is that merit took a downward leap in auction-based tax collection rights allocation.

We started from one and reached number three, then thirty and now three hundred!! and we are growing-... and are three hundred not out and are creating a grand history. http://www.videha.co.in/ Videha Ist Maithili Fortnightly e-Journal ISSN 2229-547X has e-published its 300th issue recently. When I began this venture in the year 2000 with a Samsung TV net appliance, and when the existing was posted on 5th

of July 2004, I moved all alone. Then on 31st January 2007, I suddenly thought to include the public, as after some groundwork I was ready for it. I decided to e-publish Videha and did publish it, on a fortnightly basis, the first issue that came on 1st January 2008 tried to include all the previous posts.

From all corners of this planet earth, the people tried to change the destiny of Mithila and Maithili. Now Sh. Ashish Anchinhar, Sh. Munnaji (Manoj Kumar Karn), are part of our team; and together we are three hundred not out now. With three hundred plus issues, 30,000 pages of Maithili literature (one hundred lac words corpora) creation and 11000 Tirhuta manuscript transcription we maintained a 50000-word Maithili-English vocabulary database. Now we are 350 strong, with 350 authors.

Videha has faced challenges and has withstood them. We never shirk from any question and/ or problem. The question of the state of Mithila is one such question which often comes calling. We are in favour of the states of Mithila within the sovereign borders of India and Nepal. We are in favour of Mithila. But which type of Mithila, that type that we had during the Zamindari Raj, where means of sustenance and avenues of existence remained limited for a few castes? Or that culture that existed within "Aryavarta-Indian Nation newspaper" and other Industries during that Raj. A dozen families of Mithila galloped

all these mostly from a single caste!! No, we are not in support of that Mithila, that Mithila where Maithili would be swallowed, as it is being swallowed by the Sahitya Akademi and the CIIL, swallowed by another dozen families. We are not in favour of that Mithila where the proceeding of the legislative assembly would be held in a language other than Maithili. Till the misgivings of the people of Mithila are addressed, we cannot support any Mithila state movement. So the people striving hard for Mithila state should sit on a protest before the advisory board members of the Sahitya Akademi/ CIIL and sing patriotic songs in front of their houses, and pressurise them not to misuse government funds by unscrupulously awarding functions of Akademi outside Mithila and not to misuse the power of assigning translation and other rights to themselves and to those people who are hell-bent upon destroying our language. The RTI application by Sh. Vinit Utpal has thwarted an attempt to strangulate Maithili, but if the supplementary work is not done the sinister design would resurface again. We request the Maithili advisory board members of Sahitya Akademi immediately return their assignments taken in their name and the name of the members of their family. Otherwise, pressure should be mounted to force these 10-member Maithili Advisory Board members to voluntarily resign from their membership in the larger interest of Maithili. So,

what is our answer viz-a-viz demand of Mithila state: it is a categorical Yes.

The technology-centric venture called Videha became a success. The native speakers of Maithili reside in Bihar (of India) and South-East Nepal. The net connectivity had been extremely poor in these areas. Then how the authors, new and old, started using Unicode for writing for Videha. The Nepal Side of Mithila had been using Preeti, Kantipur, Himala etc. fonts, the Kolkata Maithili-speaking population had been using the Marathi fonts and the rest had been using the fonts based on the old Remington keyboard. All these three types of fonts are ASCII fonts. We researched these fonts and provided font converters to our Nepal-based authors. We also provided phonetic and Remington-based Unicode writers to all Maithili authors, who asked for them. We asked the authors if they may send their creations in any font, but at the same time, we encouraged them to use Unicode fonts. The technical support that we provided resulted in numerous receipts of typed entries from persons like Sh. Gangesh Gunjan, who in earlier stages had been sending their creations in their handwritings. As Sh. Gangesh Gunjan was well versed in Remington keyboard typing, so he made wonderful use of the Remington Unicode typewriter. He sent that software to some of his friends too and he was courteous enough to intimate about this to us, although there was no need for that. Sh. Saketanand

also used that software and sent his short story कालरात्रिश्च दारुणा in Unicode, and it was published in one of the issues of Videha. The technology-centric venture called Videha became a success because we made it simple and intelligible at a time when even the technologists were not sure about the future of this Unicode. The virtual medium was being seen with anxiety by the literary fraternity, and the copy-paste system of theft was rampant in those days. But we assured the authors that with Videha they may rest assured that the copyright thieves would not be spared, while at the same time we were firm, that only for fear of misuse of technology we should not stop our venture midway. With the internet and technology, the geographic barrier became non-existing. The end of the problem of distribution in Maithili literature became possible due to our technology-friendly attitude and it proved a boon for our Maithili language. And it made the technology-centric venture called Videha a success... It is the success of the parallel Maithili literature movement.

III

HONOUR KILLING OF GANGESH UPADHYAYA (FIRST BY RAMANATH JHA, THEN BY UDAYANATH JHA 'ASHOK' *(A PARALLEL HISTORY OF MITHILA AND MAITHILI LITERATURE, WHY TODAY ITS NEED BEING FELT MORE INTENSELY?)*

I was not surprised, though I must have been when I saw a monograph on Gangesh Upadhyaya, whose copyright is being held by Sahitya Akademi, the author of the monograph is Udayanath Jha ' Ashok'. I thought that Udayanath Jha ' Ashok', who has been given Bhasha Samman also, by the same Sahitya Akademi, would do some justice. But truth and research seem elusive in Sahitya Akademi monographs, at least that I found in this monograph.

I searched and searched through chapters, that now the author will show courage. But the author like Ramanath Jha seems ashamed of the roots and offspring of Gangesh Upadhyaya. He tries to confuse the issue, but there is no confusion now at least since 2009. But in 2016 Sahitya Akademi seems to carry out the casteist agenda. Udayanath Jha mockingly pretends to search his name, lineage etc, where nothing is there to search for, yet he could not muster the courage, to tell the truth, and ends up just repeating the facts in 2016 that Dineshchandra Bhattacharya already has published way back in 1958.

The honour killing of Gangesh Upadhyaya by Prof. Ramanath Jha is being taken forward by Sahitya Akademi, Delhi in a most hypocritical way.

Ramanath Jha's obscurantism *vis-a-vis* Panji is evident from one example. The inter-caste marriage in Panji was well known to him (but he chose to keep the Dooshan Panji secret- which has been released by us

in 2009), and it was apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married a "Charmkarini" and was born five years after the death of his father (see our Panji Books Vol I & II available at http://videha.co.in/pothi.htm). Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya writes in the "History of Navya-Nyaya in Mithila". (1958)

" *The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila----- Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his father's name-----...As there is no other reference to Gangesa we can assume that the family dwindled into insignificance again and became extinct soon after his son's death.*" [1958, Chapter III pages 96-99), which is a total falsehood. He writes further that all this information was given to him by Prof. R. Jha, and he seemed thankful to him.

The following excerpt from Our Panji Prabandh (parts I&II) is being reproduced below for ready reference:

-

महाराज हरसिंहदेव- मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक प्रेरणासँ- आ ई हरसिंहदेव

नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकेमे स्थापना केने रहथि- नन्दैद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाके)... मिथिलाक पण्डित लोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे थोडे बुद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाके माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई.क आसपास) श्रोत्रिय नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।

So, the Srotriyas as a sub-caste arose around 1800 CE as per authentic panji files. *Sh. Anshuman Pandey [Gajendra Thakur of New Delhi provided me with digitized copies of the genealogical records of the Maithil Brahmins. The panjikara-s whose families have maintained these records for generations are often reluctant to allow others to pursue their records. It is a matter of 'intellectual property' to them. I was fortunate enough to receive a complete digitized set of panji records from Gajendra Thakur of New Delhi in 2007. [Recasting the Brahmin in Medieval Mithila: Origins of Caste Identity among the Maithil Brahmins of North Bihar by Anshuman Pandey, A dissertation submitted in partial fulfilment of the requirements for the degree of Doctor of Philosophy (History) in the University of Michigan 2014].*

Later these Panji Manuscripts were uploaded to Videha Pothi at **www.videha.co.in** and google books in 2009).

The so-called Maharajas of Darbhanga were permanent settlement zamindars of Cornwallis, and there were so many in British India, but in Nepal there were none. In the annexure of our book (Panji Prabandh vol I&II), we have attached copies of genealogy-based upgradation orders (proof of upgradation for cash). So, before 1800 CE, there was no srotriya sub-caste in British India and there is no such sub-caste within Maithil Brahmins in Nepal part of Mithila even today. Srotriya before that referred to following some education stream in British India, in Nepal it still has that meaning.

ORIGINAL PANJI REFERENCES ARE PLACED BELOW:

DOOSHAN PANJI- THE BLACKBOOK

४९.

१८८/२	चर्मकारिणी	माण्डर	वभनियाम	छादन
तत्त्वचिंतामणि कारकगंगेश	छादनगंगेशक	नाँई	*रत्नाकरक-मातृक (अज्ञात)*	गंगेश
	वल्लभा	भवाइ	माहेश्वर	
			जीवे	

२१//१० छादनसँ तत्व चिन्तामणि कारक जगद्गुरु गंगेश

छादनसँ तत्व चिन्तामणि कारक

गंगेशक वल्लभा चर्मकारिणी पितृ परोक्षे पञ्च वर्ष व्यतीते तत्व चिन्तामणि कारक गंगेशोत्पत्ति- **चर्मकारिणी मेधाक सन्तानक लागिमे छलन्हि**

छादन सँ तत्व चिन्तामणि कारक म०म० गंगेश

''तत्व चिन्तामणि कारक म. म. पा. गंगेशक विषयक लेख प्राचीन पञ्जीसँ उपलब्ध�।।

पितृ परोक्षे पंच वर्ष व्यतीते गंगेशोत्पत्तिः इति प्राचीन लेखनीयः कुत्रापि

देवानन्द पञ्जी ३९-२ छादनसँ जगदगुरू गुंरू गंगेश सुताय वभनियामसँ जयादित्य सुत साधुकर पत्नी

देवानन्द पञ्जी ३३९-३ जगदगुरू गंगेश सुत सुपन दौ भण्डारिसमसँ हरादित्य दौ.।। पुत्र सुताच गोरा जजिवाल सँ जीवे पत्नी ए सुत सन्दगहि भवेश्वर। अत्रस्थाने सुपनभ्रातृ हरिशर्म्म दारिति क्वचित् जजिवाल ग्राम

देवानन्द पञ्जी ३०=५ छादनसँ उपायकारक म.म. पा. वर्द्धमान सुताच खण्डवलासँ विश्वनाथ सुत शिवनाथ पत्नी गंगेश- म.म. वर्द्धमान/ सुपन/ हरिशर्म्म

Gangesh, the author of the Tattvachintamani, wrote one text equivalent to 12,000 texts. Now come to the fact mentioned in the Panji- it clearly states that Gangesh of Tattvachintamani was born five years after the death of his father and he married a tanner, so why did Ramanath Jha hide this from Dinesh Chandra Bhattacharya? Vardhamana, son of Gangesh, calls Gangesh *sukavikairavakananenduh*. But the conspiracy under which the poems of a famous scholar like Gangesh are not available today is clear from the example given above. Vasudev of Bengal was a classmate of Pakshadhar Mishra of Mithila, he came to study in Mithila, passed the *shalaka* examination and received the title of *sarvabhaum.* Vasudeva memorised the *tattvachintamani* of Gangesh and the *nyayakusumanjali karika* of Udayana. Pakshadhar and other Mithila teachers did not allow writing

(copying) *tattvachintamani*. Raghunath Shiromani, a disciple of Vasudeva, took the right of certification after he defeated his guru Pakshadhar Mishra in a scriptural debate *(shastrartha)*. The *Navya Nyaya* school was founded in Navadvipa by Vasudeva-Raghunath. Pakshadhar Mishra was a contemporary of Vidyapati (distinct from the Padavali writer who was of the pre-Jyotirishwar period) who wrote in Sanskrit and Avahatta. And the arrival of Mithila students of Bengal from Bengal stopped after Raghunath Shiromani. Gangesh Upadhyaya enjoyed *'param guru'* as well as *'jagad guru'* titles, the highest titles of the time and as per Panji only Vacaspati Mishra II was the other person who enjoyed the title of *'param guru'.* The extinction of Navya-Nyaya School from Mithila, as described above, was a revenge of nature against the honour killing of Gangesh Upadhyaya and his family.

[Translation of the Maithili Short Story, 'Shabdashastram' (based on the true Panji records of Gangesh Upadhyaya) was done by the author Gajendra Thakur himself: published as '<u>The Science of Words</u>' Indian Literature Vol. 58, No. 2 (280) (March/April 2014), pp. 78-93 (16 pages) Published By: Sahitya Akademi]

3

Kamlanand Jha has written a book on Nagarjun (Maithili's Yatri) where he credits him with giving a

new direction to Maithili literature. Chandradhar Sharma Guleri wrote 'Usne kaha tha', a marvellous short story in Hindi, the best one of its time. But his literary corpora is very little in quantity, so if anyone tried to give him credit for giving direction to Hindi short story writing would make himself a laughing stock. And Yatri's Maithili literary corpora is even thinner than Guleri's. Moreover, Rajkamal Chaudhary calls him of the medieval age (Rajkamal Monograph, Subhash Chandra Yadav, Page no 14). He wrote Chitra (25 poems). He wrote, rather hurriedly published his 'Patrahin Nagn Gachh' (44 poems) for Sahitya Akademi Award in Maithili, which he got in 1968. After that he stopped writing in Maithili, so how can he influence anybody when after getting the award one stops writing in that language? This is one example of his instability so far as his ideology is concerned. He became a Buddhist monk when he left for Sri Lanka and became a Brahmin again when he returned after a 2nd sacred thread ceremony performed in his village. This is another example of his instability so far as his ideology is concerned. Kamlanand Jha does not know Maithili literature. His comments should be exposed, as he tries to give a bad name to the great tradition of Maithili literature. There were mainstream writers, but there were writers of parallel tradition also (see below Annexures 1 & 2). He has confused the Sanskrit and Avahatt Vidyapati Thakkurah with the Padavali writer pre-Jyotirishwar Vidyapti. He should

read the writing of Vijay Kumar Thakur, a leftist historian, who has given ample light on pre-Jyotirishwar Vidyapati. [*My article on Vidyapati in Prabandh Nibandh Samalochna Vol.II (available in Videha Archive) covers all these, the logo of Videha is the photograph of Pre-Jyotirishwar Vidyapati, sketched by Panak Lal Mandal, recipient of Videha Samman for fine arts.*]

Annexure 1

चन्दा झा (१८३१-१९०७), मूलनाम चन्द्रनाथ झा, ग्राम-पिण्डारुछ, दरभंगा। कवीश्वर, कविचन्द्र नामसँ विभूषित। ग्रिएर्सनकेँ मैथिलीक प्रसंगमे मुख्य सहायता केनिहार। कृति- मिथिला भाषा रामायण, गीति-सुधा, महेशवाणी संग्रह, चन्द्र पदावली, लक्ष्मीश्वर विलास, अहिल्याचरित आऽ विद्यापति रचित संस्कृत पुरुष-परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद।

१

न्यायक भवन कचहरी नाम।

सभ अन्याय भरल तेहि ठाम॥

सत्य वचन विरले जन भाष।

सभ मन धनक हरन अभिलाष॥

कपट भरल कत कोटिक कोटि।

ककर न कर मर्यादा छोटि॥

भन कवि 'चन्द्र' कचहरी घूस।

सभ सहमत ककरा के दूस।

२

रतिया दिन दुरगतिया हे भोला!

गैया जगतक मैया हे भोला

कटय कसैया हाथ

हाकिम भेल निरदैया हे भोला

कतय लगायब माथ

बरसा नहि भेल सरसा हे भोला

अरसा कए गेल मेह

रतिया दिन दुरगतिया हे भोला

जन तन जिवन संदेह

मुखिया बड़ बड़ सुखिया हे भोला

अन्नबक दुखिया डोल

के सह कान कनखिया हे भोला

सुखिया बिरना टोल

३

अस्त्र शस्त्र रोक आब मामिलाक मारि।

भाइ भाइकेँ पढ़ैछ नित्य नित्य गारि॥

ठक्क लोक हक्क पाब साधु कैँ उजारि।

दैव जे ललाट लेख के सकैछ टारि?

चाही नहि धन, ललितवाम, पकवान जिलेबी,

मनोविनोदक हेतु अमरपति सदन न टेबी।

ई अन्तर अभिलाष हमर करुणामयि देवी

भक्ति भाव सँ सतत अहिंक पदपंकज सेवी॥

अन्न महग, डगमग अछि भारत, हयत कोना निस्तारा

उत्तर पश्चिम भूमि अगम्या पर्वत असह तुषारा।

धर्म-विरोधी सहसह करइछ, कुमत कथा विस्तारा

करथु कृपा जगजननी देवी महिसीवाली तारा॥

मिथिला की छलि की भय गेलि,

याज्ञवल्क्य मुनि, जनक नृपतिवर

ज्ञान भक्ति सौं गेलि।

वाचस्पति मिश्रादि जगद्गुरु

निर्जित बौद्ध झमेलि

से शारदा स्वर्ग जनि गेली

बढ़ल कुविद्या केलि।

वर्णाश्रम विधि ककरहु रुचि नहि

श्रुति श्रद्धाकेँ ठेलि

पूजा पाठ ध्यान वकमुद्रा

सभटा वंचन खेलि।

कह कविचन्द्र कचहरी भरिदिन

बहुत भोग कर जेलि,

कलह कराय धर्म धन नाशे

कलिक दरिद्रा चेलि।

४

मय केहन भेल घोर हे शिव!

गोधन विपति, धरम अवनति देखि कत हिय करब कठोर॥

साधु समाज राजसँ पीड़ित अति हरषित-चित चोर।

अकुलिन लोकेँ धरणि परिपूरित कुलिन समादर थोड़॥

धरम सुनीति प्रीति ककरहु नहि, खलहिक चलइछ जोर।

कन्द-मूल-फल सेहो अब दुरलभ अन्न गेल देशक ओर॥

किछु शुभ साधन बनि नहि पड़इछ थाकल मन, मति भोर।

कह कवि चन्द्र हमर दुख मेटत होयत कृपा शिव तोर॥

५

सुमरु सुमरु मन! शंकर समय भयंकर जानि।

ककर हृदय नहि कलुषित शासन कलि नृप पानि॥

केवल शिव करुणाकर सेवयित नहि जन हानि॥

भक्ति कल्पलति जानह परम परशमनि खानि॥

कतहु विषयमे न लागह त्यागह अनुचित मानि।

सुखसौँ अन्त विलसबह 'चन्द्र' चूड़ रजधानि॥

ANNEXURE 2

१

फतुरीलालक अकाली कविताअकाली कवित्त /

फतूरीलालक फसली बर्ख १२८१ .७४ ई-१८७३)सन सालक अकाली (कविता

[ग्रियर्सन [(मैथिली क्रेस्टोमैथी एण्ड वोकाबुलेरी)

साल एकासिक वर्णन सुनूचौदिस पड़ल अकाल /
भेल बरिसात खिन्न ऐ सालककहाँ लगि वरनौं हाल /
रोहिणि आदि थीक बरिसातक /जेहिँ एला तेहिँ गेला
म्रिगिसिरा मन पुरल मनोरथदै झीसा किछु गेला /
अरदड़ा आडम्बर भारीगरजत हैं चहु ओर /
पुख रुख राखल धरती केरभेल बरखा केर ओर /
पुनर्वसु थिक बड़ पुनीताओहो बड़ा कसरेस /
बिआ बिड़ारक जे किछु उपटलधनि बरिसल असरेस /
मघा भेल मंगाहिआ कल्लरजगभरि के नै जान /
पुरबा पूर पछ नै राखलककरा करब बखान /
उत्तरा आइ जाय घर बैसलसपतौं लै नै बून /
हथिआ श्रृंग मुँड़ दै मूनलतनिकौं लागल घून /
चितरा चित मित नै राखलओहो भेल डाकू धाती /
नाक रंगौलन्हि सभै नछत्तरदोम नुकौलन्हि खाती /
जोतिष पढ़िसाधि भूगोल-साधि /पढ़ि जे जन ऐलाह-
रेखागणित बीजसौँ ओआकिफतनि कौँ कच्ची बोल /
श्रीराम कृपागति ओहो ने जानथिजाहि कृपा सभ काज /
पानिक प्रश्न कबौं जौं पुछिऐन्हिसेहो कहैत होइन्हि लाज /
जेहिखन नदी नाल नै भरलेतेहिखन रौदी सरती /
बिना जले जग किछु नै उपजलदगध भेल छथि धरती /

ते नर रौदीक आगम बूझलजे छल कृषि किसान /
दैव बेपच्छ पच्छ नै राखलजड़ि कटौलक धान /
कोदो मड़ुआ एको ने उपजलनै उपजल किछु साम /
गम्भड़ी गद्दरि खेतहि सुखाएलभेल विधाता वाम /
मर्तभुवनमे के कर रच्छाकहाँ जाइ कैँ भागि /
सुखल पताल हाल नै ओतहुँसगरहुँ लागल आगि /
धृक जीवन ओइ नृपति इन्द्रकैँजे रोकल गहि पानि /
जीवाजन्-तु विकल पुहमीमेताकैँ हो नै आनि /
रवीने खेढ़ी औ चीन /राय एको नै उपजल-
घरदुरदिन भेल अब बीन /नारी-घर सोच करै नर-
धनिक लोक सभ मनहि मगन छथिराखथि बहुतो ढेरि /
हसोथि रुपैया घर कै राखथिमहगी भेल अब सेर /
केओ कुरथी खेत मासु बेसाहलजाहि कौड़ि छल अपना /
कतेक जना हरिवासर ठानलभात बहुत कै सपना /
कतेक जना मिलि जनेर बेसाहलनिरधन बैसल तकइ /
भेल धनन्तिरि दूइ फसिल जगराहड़ि आओर मकइ /
काल पड़ल तिरहुतिमे भारीतैँ ई बहि गेल हावा /
घरफाँकि मकइ केर लावा /नारी-घर मगन करै नर-
मालिक और महाजन सभकैँघर ढेरी अन्न-घर /
लोक बुझाओन ओहो तकै छथिमूँह / गरीबक सन
समै देखि बनिआँ सभ सनकलडरैँ लगौलक टट्टी /
सुन्न दोकान सहरमे परि गेलसुन्न भेल सभ चट्टी /
सूखल गात बात भौ लटपटकतेक बात अब सहना /
नर नारी सभ सान तेआगलबिकरी भेल अब गहना /
मँगटीका खूटी औ तड़कीनकमुन्नी नै नाक /
कटसरि बिछिआ औ झिमझिमिआँबाजूबन्द औ बाक /
चन्द्रहार, हैकल औ सिकड़ीऔर घमौरिक दाना /
सूति, नवग्रह औ पचखँड़ीलशुनी भेल निदाना /
तापर दर्बजात नै बचलेकरम भेल निखट्ट /

तमघैल, अढ़ैआ औ पिकदानीनै तसला औ तटू /
बाटी, बट्टा औ पनबट्टाभोजन करैक थारी /
माधव सीहि सहित सोबरनानै बचले घर झाड़ी /
धन संपति घर किछु नै बचले/ सभटा पड़ि गेल बंधक
तैओ भूख छुटल नै ककरोएहन पेट भेल खंधक /
दैब अंश अबतरल कम्पनीजा पर राम सहाए /
मिथिलापुर बूड़न जब लागयसे सुनि पहुँचल धाए /
खरिद अनाज जहाजहिँ बोझलभरती करि करि बोरा /
सदर तिलंगा ओआ पर भरतीऔर ओलाइति गोरा /
हाजीपुरमे लाख हजारमकै लाखन हइ पटना /
बाजितपुर सुलतानपुर गोलानै जानत हौँ केतना /
गाड़ी, बैल, छकड़, ऊँट बिहारेउबहत हइ सभ दाना /
मिसर कन्हैआ केँ पोखरन मेपहिलुक अड़ी ठेकाना /
श्री लक्ष्मीश्वर सिंह नृपतिमहाराज मिथिलेश /
अचल राज दड़िभंगाश्रीपति हरहिं कलेश /
गाड़ी बैल लाखन हजारनताकेँ परे घड़ेर /
पहिलुक गोला मधुबन, भौड़ाजफरा और अड़ेर /
बेनीपट्टी, औ पचमहलाकुम्हरौल औ कमतौल /
हरिहरपुर, पिड़ारुछ बरनौंकारज केतेकाँ बरिऔल /
बारि पोखरि, बिरसायर बरनौंपण्डौल को नै जान /
नवहद, सरिसो ओ भटपुरा, ता सोँ दक्षिण उजान
झंझारपुर, महरैल, कन्हौलीमधेपुर हइ खास /
बेनीपुर, कमान, नरैहिओबरनौं फूलपरास /
झमना हइ जगजानित जगमेमहथा और बछौर /
दुहबी औ महिनाथपुरऔर जैनगर तक हइ दौर /
बलदेबपुर औ ढंगा बरनौंमिरजापुर लघु हाट /
सीबीपटी औ कपसीआसदर गोला सौराठ /
गुरबाकेँ परबरसी हाकिमकर तिरहुतमे आके /
नै तो मरते कत नर नारीबाले बचे सुखा के /

कत मुरदा गरदा मै मिलतेअसंख जीव चल जाता /
सर समधी कैं संभा ने लम्भननै बचते जलदाता /
सभकैं सभ उपछै भै गेलधुर पोखर औ सड़क /
रहि गेल ब्राह्मण सोती पण्डितकायथ पछिमा ठाकुर फरक /
केओ ओरसिअर नाम लिखाओलकेओ मोहर्रिर भैंट /
धर्म्मकार्यमे लुटथि रुपैआतैँ भेल सभ केर भैंट /
केओ जमानत दैकैं बचलाहजिनका अमला नेही /
ककरो मारि कैंत पिठि तोड़ैन्हिउतरैन्हि जन्मक ठेही /
ककरहुँ गारत गात सुखाओलबहुतो होअय चलाना /
मातुपिता घर परिजन रोवयबाबू गेलाह जहलखाना /
ककरहुँ घर भेल खानातलासीभेट मोहर्रिर घोँछ /
केओ अदालतिमे डिड़िआइ छथिककरहुँ उपरैन्हि मोँछ /
एतना सुनि हाकिम रिसिआओलतैँ लागल जन ठीका /
नाक रंगौलन्हि सभै मोहर्रिरलागल चूनक टीका /
जोग, बिकौआ,लौकिक वंशककिरिआमंत सुकूल /
गाछी, बाँस, बैल औ महिसिजगह कैल भकफूल /
ताहि रुपैआ सौँ करा गजरलै कोरट सौँ रीन /
तैँ कारन बहुतो घर झगड़ाभाइ भतीजा भीन /
आए लाट बहादुर औ /दड़िभंगा धाम
बाबू औ बबुआन सहित मिलिकीन्ह कुमैटी खान /
......
......
......
एह सभ संग बैठि कैजाय कुमैटी भेल /
अजब कार सरकार केतिरहुत पहुँचल रेल /
बाजितपुरसँ सड़क निकालैआये दौड़िह दौड़ी /
हहेया गंडक पुल बन्हाएआए चौरही चौरी /
धर्म्मधीर, बलबीर, कम्पनी जानत हइ /जगदीशन
लछमी सागर के पोखरिमेताहि कीन्ह इसटीसन /

बड़ा लाट कलकत्तेवालेश्रीदुर्गा होए संग /
आगरा के छोटा लाल बहादुरबैठे सभ एकरंग /
जुटे कमिश्नर और कलट्टरबोलहिं बात नेअंट /
एह पाचो इजलास पर बैठेसंग जात ऐह जंट /
खबरि गए अखबार मौँमैथिल के एह हाल /
सुनहु फिरंगी अवण दैकैँमेटहु दुख के जाल /
हुकुम दीन्ह दोउ लाट कोसुनहु हमारे बैन /
मदति करहु रेआआनकोक्या बैठे हौ चैन /
बड़ा लाट दोउ बीर उठाएसाहेब औ जरनैल /
मेजर मजिस्टर और कलट्टरसंगजात करनैल /
देस देससौँ अन्न मंगाओलदीन्ह सभनि के दाम /
महामूँग, गहुम औ चाउरबजड़ा और बदाम /
डोली, पटना औ भटसारेदीली औ अजमेर /
आगरा और कान्हपुर ढाकाजहाँ अन्न के ढेर /
भए रमाना अन्न तिरहुतिमेलादि गाड़ी और बैल /
गज, तुरंग, गदहा औ छकड़संग सिपाही छैल /
छत्री औ पैठान मोगल सभबाँकाबीर रजपूत /
सोभा बरनि नजात हइजैसे हनुमन्त दूत /
आगे सफर ओ मैनापलटन वीर जमान /
बरछी औ तरुआरि गहैकर गहै तीर कमान /
चढ़ि तुरंग पर करै कवाइतजमादार होए संग /
सोभा बरनि न जात हइदेखि तखनुक रंग /
करत काम सभ धाममेटूट अट सभ लूट /
ढाहि भीड़ गाछी सहितबान्धै सड़क औ पूल /
जिले पटने औ भटसारेप्रगन्ना महिसौर /
तहाँ बसहिँ एक सज्जनतेहि घर जा लक्ष्मी दौड़ /
श्री द्वारिका प्रशादितधर्म्मधीर बुद्धिमान /
तहसीलदार कोरट के खासाजानहिं सकल जहान /
बाबु इसरी प्रसाद दियौटीसो मधुबनमे आए /

हुकुम दीन्ह सुपरनडेंटकैँटोले टोले होए जाए /
मन पँचा मनगर भै लिएबहुतो लिए खैरात /
धन्य धन्य अंगरेज बहादुरसभकेँ जूटल गात /
गरिब, गनी, गुरबा, करु जै, जैब्राह्मण देत असीस /
श्री रघुनाथ बढ़ै बदसाहीगदी लाख बरीस /
फतुर लाल कवि बरनत हैँएह रौदी के हाल /
गौरमिंट गौरनल बहादुरतिरहुति राखहिँ बहाल /

२

राधाकृष्ण चौधरी (मिथिलाक इतिहास) (विदेह पेटारमे उपलब्ध(

"१७७० क अकाल मिथिलाक इतिहासमे अद्वितीय छल आ मिथिलाक जनसंख्या घटिकेँ एक दम्म कम्म भऽ गेल छल। १८७३ ७४ मे पुनः एकटा-ओहने अकाल मिथिलामे भेल छल जकर विवरण हमरा फतुरी लाल कविक अकाली कवित्तसँ भेटइयै, अकाली कवित्त अप्रकाशित अछि। अकालकेँ दूर करबाक हेतु आ मजूरकेँ रोजी देबाक हेतु ताहि काल रेलगाड़ीक योजना चलाओल गेल जकरा सम्बन्धमे फतुरीलाल लिखैत छथि-

'कम्पनी अजान जान कलनको बनाय शान।
पवन को छकाय मैदानमे धरायो है॥
छोड़त है अड़ादार बड़ा बीच धाय धाय।
सभेलोग हटाजात केताजात खड़ा है॥
तारकी अपारकार खबरि देत वार वार।
चेत गयो टिकसदार रेल की उवाई है॥
करत है अनोर शोर पीछे कत लगत छोर।
जोर की धमाक से मशीन की बड़ाई है॥
कम्पूसन पहरदार कोथी सब अजबदार।
कोइला भर करल कार धूआँसे उड़ायो है॥
बाजा एक बजन लाग हाथी अस।
पिकन लाग जैसा जो चढ़नदार वैसाधर पायो है॥

गंगाकेँ भरल धार उतरि गयो फतूर पार गाड़ीकी।
अजबकार कवित्त यह बनाया है॥' "

-Gajendra Thakur, editor, Videha (be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast List.)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

८.विदेह मिथिलाक खोज

विदेह मिथिलाक खोज

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

प्रस्तुत अछि विदेह, मिथिला, तीरभुक्ति आ तिरहुतक नामसँ विख्यात वर्त्तमान भारत आ नेपालमे पसरल माटिक प्राचीन आ नव स्थापत्य, चित्रांकित अभिलेख आ मूर्त्तिकलाक एकटा छोट संग्रह। ऐ संग्रहकेँ पूर्ण करबाक हेतु अपन बहुमूल्य संग्रह editorial.staff.videha@gmail.com कैँ पठाउ। आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार, सम्बन्धित फोटोग्राफर आ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि। फोटो सभ पठेबा लेल धन्यवाद पाठकगण। साभार। विशेष विवरण देखबा लेल क्लिक करू, ***दर्शनीय मिथिला**, **Brochure 1**, **Brochure 2**, **Brochure 3** , **Brochure 4**, **Brochure 5** (**मैथिली साहित्य संस्थान लिंक**), **IGNCA ASI** (**Cultural Heritage of Mithila-** search keyword Mithila), **Temple Survey Project ASI- English** आ **Hindi** . पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल।*

भुवनेश्वरी भगवतीपुर (Madhubani, Bihar) बौद्ध तारा सँ समानता नाकमे कुण्डल देखू

सूर्य भगवतीपुर (Madhubani Bihar)

विष्णु भगवतीपुर (Madhubani, Bihar)

दुर्गा, पोखरिसँ भेटल, ओतहि बहेरी मन्दिर (बजारसँ दक्षिण)मे स्थापित

हरद्वार मन्दिर घनश्यामपुर (दरभंगा)- चोरि भऽ गेल

गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, मधुबनी

 गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, मधुबनी	 गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, मधुबनी	 गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, मधुबनी
 गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, मधुबनी	 गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, मधुबनी	 बाइसी-बसैटी, अररिया मिथिलाक्षर ताम्रलेख
 बाइसी-बसैटी, अररिया मिथिलाक्षर ताम्रलेख	 बाइसी-बसैटी, अररिया मिथिलाक्षर ताम्रलेख	 बाइसी-बसैटी, अररिया मिथिलाक्षर ताम्रलेख
 धरहरा, बनमनखी, पूर्णियाँ, नरसिंह अवतार	 धरहरा, बनमनखी, पूर्णियाँ, नरसिंह अवतार	 पूरणदेवी, पूर्णियाँ

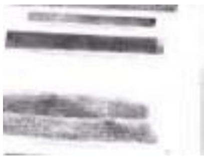 बिदेश्वर स्थान अभिलेख, मधुबनी	 अन्ध्राठाढी अभिलेख, मधुबनी	 बुद्ध अष्टधातु, सिसव बसंतपुर, ब गहा
 12 शताब्दी, कोइलख, मधुबनी	 अग्नि बिदेश्वर स्थान, मधुबनी बुद्ध , मुंगेर	 अहिल्या स्थान
 अन्ध्राठाढी, मधुबनी	 अशोक स्तंभ, बसाढ, वैशाली	 बुद्ध
 अवलोकितेश्वर तारा, भागलपुर	 बसाढ, वैशाली	 बुद्ध भूमिस्पर्श
 बुद्ध, ताम्र	 बुद्ध मस्तक, सुलतानगंज	 वैशाली मूर्त्ति

 चामुण्डा नाग-नागिनी, मुंगेर	 मुकुटधारी बुद्ध, अंतीचक, भागलपुर	 नाचैत गणेश, 10म शताब्दी, दरभंगा
 दरभंगा म्युजियम	 दरभंगा म्युजियम	 दुर्गा, कार्त्तिकेय
 10म शताब्दी, भीट भगवानपुर, अन्ध्रा ठाढी	 गणेश बुद्ध	 गौतम बुद्ध, वैशाली
 हरिहर बुद्ध	 चिड़ैकैं खुआबैत महिला, राजमहल	 लौरिया नन्दनगढ, अशोक स्तंभ
 लोमश सुदामा गुफा	 मुंगेर	 नागराज तीर्थंकर

कुमारिल भटट फेकेलाह, नालन्दा	विक्रमशिला विश्वविद्यालय, भागलपुर	ठाढ बुद्ध
पार्वती	रामायण	रामपुरवा वृषभ
रामपुरवा	बुद्धक अवशेष	संकिसा
सप्तमातृका	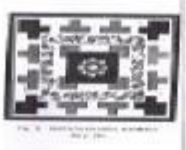 सर्वतो भद्र मण्डल	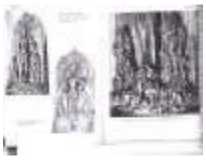 सूर्य
सूर्य	सूर्यक संगी	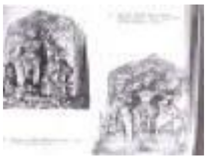 सूर्य, मधुबनी आ भागलपुर

मूर्त्ति

मूर्त्ति

मूर्त्ति, वैशाली

उमा माहेश्वर, कल्याणसुन्दर

वैशाली वृषभ शीर्ष

वैशाली, शालभंजिका भागलपुर

विष्णु बुद्धा

पाँखियुक्त महिला

अहिल्या

अष्टयोगिनी मन्दिर, सहरसा

बनगंगा

दरभंगा

दरभंगा नगर, 1934

दरभंगा मेडिकल कॉलेज

दुल्हदुल्हिन मन्दिर, जनकपुर

गण्डीश्वर

गंगासागर पोखरि, मधुबनी

हनुमान मन्दिर, मधुबनी

हरिहरस्थान

मधुबनी हॉस्पीटल

जनकपुर जानकी मन्दिर

जानकी मन्दिर

जानकी मन्दिर, सीतामढी

जानकी मन्दिर, सीतामढी

जिला स्वास्थ्य कार्यालय राजबिराज, नेपाल

कलनेश्वर बाबा

कपिलेश्वर

कोषलेखाकार्यालय, राजबिराज, नेपाल

मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

लक्ष्मीश्वर पैलेस, 1934

 माध्यमिकविद्यालय , जनकपुर	 महेन्द्र चौक, जनकपुर	 जनकपुर मंडप
 मिथिला, 1988 भूकम्प	 पगलाबाबा धर्मशाला, जनकपुर, नेपाल	 पंडौल अहल्या
 मधुबनी बस स्टैंड	 राज हेड ऑफिस, 1934	 राज हॉस्पीटल, दरभंगा, 1934
 सौराठ सभा	 शिव मन्दिर, 1934	 शिवशंकर सिनेमा, मधुबनी
 श्यामा मन्दिर	 विद्यापति मूर्त्ति, बिस्फी	 उग्रतारा, तारास्थान, महिषी, सहर सा

विद्यापति स्मारक, बिस्फी

विस्फी, उदना महादेव

बिस्फी, विश्वेश्वरी भगवती

अहल्या मन्दिर, अहियारी

अशोक स्तंभ, वैशाली

स्तूप अशोक स्तंभ, वैशाली

बलिराजपुर किला पूर्वी गेट

बलिराजपुर किला मीनार

चण्डी स्थान, बिराटपुर, सहरसा

गाँधी पोखरि, ढाका, मोतिहारी

गाँधी विद्यालय, ढाका, मोतिहारी

गिरिजा स्थान, मधुबनी

हरिहर मन्दिर, सोनपुर

जैन मन्दिर, भागलपुर

जैन मन्दिर, वैशाली

कमलादित्य स्थान

कपिलेश्वर शिव मन्दिर

लौरिया नन्दनगढ

मदनेश्वर शिव मन्दिर

मन्दार पर्वत, बाँका

मोतिहारी सत्याग्रह स्मारक

परमेश्वरी मन्दिर, ठाढी, मधुबनी

रामजानकी मन्दिर, सीतामढी

सत्याग्रह स्मारक, सीतामढी

शांति स्तूप, वैशाली

उच्चैठ भगवती

उच्चैठ मन्दिर

सिंघेश्वर स्थान, मधेपुरा

सूर्यधाम, परसा

उग्रतारा मन्दिर, महिषी, सहरसा

वैशाली स्तूप

विक्रमशिला विश्वविद्यालय, भागलपुर

विराटपुर मन्दिर, मधेपुरा

वृषभ शीर्ष, रामपुरवा

सिंह शीर्ष, रामपुरवा

शरभ, नेपाल

पाँखियुक्त देवी, वैशाली

बाबा बडेश्वर, देवना, बनगाँव

वट वृक्ष, बनगाँव

भगवान विष्णु, देवना, बनगाँव

शास्त्रार्थ स्थल,तारास्थान महिषी

शास्त्रार्थ स्थल,तारास्थान महिषी

तारास्थान महिषी

माता तारा, तारास्थान महिषी

उग्रतारा (खादर वाणी तारा) मूर्ति, महिषी

वशिष्ठ मुनि, तारास्थान महिषी	आवर्धित काली उच्चैठ	बौद्धदेवी तारा वारी समस्तीपुर
भगवती देकुली	भगवती गिरिजा फुल्हर	भगवती मृणमूर्ति गन्धबारि
भगवती वारी समस्तीपुर	भुवनेश्वरी कोर्थ	देवीकाली कोर्थ
गंगामूर्ति नगरडीह दरभंगा	गोसाउनि मन्दिर कोर्थ	हैहट्ट देवी हाबीडीह
काली उच्चैठ	महिषासुरमर्दिनी बहेरी दरभंगा	महिषासुरमर्दिनी हाबीडीह

महिषासुरमर्दिनी नाहर-भगवतीपुर

उमा म्लेच्छमर्दिनी मिर्जापुर दरभंगा

यमुना भैरव बलिया मधुबनी

भैरव, भैरव-बलिया

नटराज, तारालाही

शिव-पार्वती मन्दिर, कपिलेश्वरस्थान

शिव-पार्वती मन्दिर, कपिलेश्वरस्थान

शिव मन्दिर, सिंगिया, विस्पी

उमामाहेश्वर, महादेवमठ

उमामाहेश्वर, तिरहुत

विष्णु, भवानीपुर

विष्णु, भीठ भगवानपुर

विष्णु, जयनगर

विष्णु, लदहो

		विष्णु, साहो-परसी, हाबीडीह
शेषशायी विष्णु, सवास, मुजफ्फरपुर	वराह मूर्ति, तिलकेश्वरस्थान	मिथिलाक्षर अभिलेख, विष्णु बुद्ध मूर्ति
भगवती उच्चैठ, बेनीपट्टी	भगवती वाणेश्वरी, भंडारीसम	चामुण्डा मन्दिर, कटरा, मुजफ्फर पुर
अष्टभुज गणेश, हाबीडीह	अष्टभुज गणेश, कोर्थ	गंगा, आन्ध्रा-ठाढ़ी
महिषासुरमर्दिनी, दुर्गा	म्लेच्छमर्दिनी मन्दिर, मिर्जापुर, द रभंगा	नटराज

 राममन्दिर, अहिल्यास्थान	 सेहनी, वैशाली, विष्णु तिलक-यज्ञोपवीतधारी	 रूपनगर शिव मन्दिर
 सूर्य, देकुली	 सूर्य मूर्ति, डिलाही	 सूर्य मूर्ति, विष्णु, बरुआर
 उमामाहेश्वर	 यमुना, आन्ध्रा-ठाढ़ी	 सिमरौनागढ़ मूर्ति
 आदि काली, चैनपुर सहरसा चैनपुर सहरसा- मिथिलाक एकमात्र नीलकंठ मन्दिर, संगमे आदिकालीन भव्य काली- मन्दिर सेहो एहि गाममे अछि। महा शिवरात्रि आ कालीपूजा बड़ धूमधाम सँ चैनपुरमे होइत अछि।	 त्योथागढ़क स्वामी माध्वानन्द कौलाचार्य काली मन्दिर त्योथा गढ़ लग। पुरान गढ़। एकर पूबमे ब्रह्मपुराक बाबा हरिहरनाथ महादेव मन्दिर आ दक्षिणमे उच्चैठ भगवती छथि।	 त्योथागढ़क दसमुखी काली त्योथा गढ़ लग। पुरान गढ़। एकर पूबमे ब्रह्मपुराक बाबा हरिहरनाथ महादेव मन्दिर आ दक्षिणमे उच्चैठ भगवती छथि।

 कोइलख (मधुबनी) देवीक मन्दिर	 अकौर, बेनीपट्टी, भगवती दुर्गा, भगवतीपीठ	 अकौर, बेनीपट्टी, भगवती दुर्गा, भगवतीपीठ
 १.अष्टभुज गणेश, कोर्थ २.शिव मन्दिर, सिंघिया, बिस्फी	 १. बौद्ध देवी तारा, वारी, समस्तीपुर २.उग्रतारा मन्दिर, महिषी, सहरसा	 १.भगवती, वारी २.भगवती, देकुली
 १. भगवती गिरिजा, फुलहर २.काली, उच्चैठ	 १. भैरव, भैरव बलिया २. उमामाहेश्वर, महादेवमठ	 १. देवीकाली, कोर्थ २. गुसाउनिस्थल मन्दिर, कोर्थ
 १. गणेश, लहेरियासराय २.उमामाहेश्वर ३. नटराज, ४. विष्णु, तिलक, जनउ धारी, सेहान, वैशाली	 १. गंगा मूर्ति, नगरडीह, दरभंगा २. भगवती मृण्मूर्ति, गन्धवारि	 १. हैहट्ट देवी, हाबीडीह २.भुवनेश्वरी, कोर्थ

१. कथित काली, उच्चैठ, २.अष्टभुज गणेश, कोर्थ

१. महिषासुर मर्दिनी, हाबीडीह, २ .उमा, म्लेच्छमर्दिनी, मिर्जापुर, दरभंगा

१.महिषासुरमर्दिनी, भगवतीपुर, नाहर, महिषासुर मर्दिनी, बहेरी, दरभंगा

१. म्लेच्छमर्दिनी भगवती, मिर्जापुर, दरभंगा २. राम मन्दिर, अहिल्यास्थान

१. म्लेच्छमर्दिनी भगवती, मिर्जापुर, दरभंगा २.सिंहेश्वर स्थान, मधेपुरा

१. नटराज, तारालाही २. उमामाहेश्वर

१_शेषसायी, सवास, मुजफ्फरपुर, २_नटराज_तारालाही ३_ भगवती ४_ उमा माहेश्वरी

१-
शिव पार्वती मन्दिर, कपिलेश्वर स्थान २. सूर्य मूर्ति डिलाही

१_ सूर्यमूर्ति, विष्णु बरुआर २. गंगा, आन्ध्रा ठाढ़ी

१_उच्चैठ भ्हगवती, बेनीपट्टी २_महिषासुरमर्दिनी, दुर्गा ३_ चामुण्डा मन्दिर, कटरा, मुजफ्फरपुर ४._भगवती वानेश्वरी, भण्डारिसम

१. वराहमूर्ति, तिलकेश्वरस्थान, २. विष्णु, भवानीपुर

१. विष्णु, जयनगर २.विष्णु, भीठ भगवानपुर

 १_विष्णु, लदहो, २.सूर्य, देकुली	 १_विष्णु_साहो परड़ी, स्थापित-हाभीडीह २.बुद्ध- विष्णु मूर्ति अभिलेख	 १_विष्णु, सेहान, २_वराह ३_गणेश ४.शिव मन्दिर_रूपनगर
 १_यमुना, आन्ध्रा ठाढ़ी, २.अष्टभुज गणेश, हाबीडीह	 १_यमुना, भैरव बलिया, २_शेषसायी, सवास, मुजफ्फरपुर, ३_नटराज_तारालाही ४_ भगवती ५_ उमा माहेश्वरी	 कथित, काली, उच्चैठ, बेनीपट्टी
 मूर्ति (मिथिला क्षेत्र)	 सम्भवतः सूर्य	 वेणुगोपाल, मिथिला
 विष्णु, जाले, दरभंगा	 विष्णु	 विष्णु, ओझौल, दरभंगा

मिथिलाक खोज

ई आलेख हमर दशकसँ ऊपरक मिथिलाक यात्राक उपरान्तक सूत्र-वृत्तान्त अछि आ ऐमे ऐ सभ स्थानक स्थानीय निवासी आ गाइड सभक अकथनीय योगदान छन्हि । कखनो कालतँ भाड़ाक गाड़ीक ड्राइवर लोकनि सेहो नीक गाइड सिद्ध भेला।-गजेन्द्र ठाकुर

"मिथिलायदयश्च मध्यंते रिपवो इति मिथिला नगरी" - मिथिला जतऽ शत्रुकेँ मथल जाइत अछि- पाणिनीक विवरण।

किला आ गढ़

बलिराजपुर किला- मधुबनी जिलाक बाबूबरही प्रखण्डसँ ५ किलोमीटर पूब बलिराजपुर गाम अछि। एकर दक्षिण दिशामे एकटा पुरान किलाक अवशेष अछि। किला चारि किलोमीटर नमगर आ एक किलोमीटर चाकर अछि। दस फीटक मोट देबालसँ ई घेरल अछि।

असुरगढ़ किला- मिथिलाक दोसर किला मधुबनी जिलाक पूब आ उत्तर सीमा पर तिलयुगा धारक कातमे महादेव मठ लग ५० एकड़मे पसरल अछि।

जयनगर किला- मिथिलाक तेसर किला अछि भारत नेपाल सीमा पर प्राचीन जयपुर आ वर्त्तमान जयनगर लग। दरभंगा लग पंचोभ गामसँ प्राप्त ताम्र अभिलेख पर जयपुर केर वर्णन अछि।

नन्दनगढ़- बेतियासँ १२ मील पश्चिम-उत्तरमे ई किला अछि। तीन पंक्तिमे १५ टा ऊँच डीह अछि।

लौरिया-नन्दनगढ़- नन्दनगढ़सँ उत्तर स्थित अछि, एतऽ अशोक स्तंभ आ बौद्ध स्तूप अछि।

देकुलीगढ़- शिवहर जिलासँ तीन किलोमीटर पूब हाइवे केर कातमे दू टा किलाक अवशेष अछि। चारू दिस खधाइ अछि।

कटरागढ़- मुजफ्फरपुरमे कटरा गाममे विशाल गढ़ अछि, देकुली गढ़ जकाँ चारू कात खधाइ खुनल अछि।

नौलागढ़-बेगुसरायसँ २५ किलोमीटर उत्तर ३५० एकड़मे पसरल ई गढ़ अछि।

जयमंगलगढ़- बेगूसरायमे बरियारपुर थानामे काबर झीलक मध्य एकटा ऊँच डीह अछि। एतऽ ई गढ़ अछि। नाओकोठी (मझौल) गाम लग ई गढ़ अछि।

मंगलगढ़- समस्तीपुर जिलामे हसनपुर ब्लॉकमे दुधपुरा बजार लग देओढ गाम लग। भगवान बुद्धक उपदेश एतऽ भेल, स्थानीय राजा मंगलदेवक आग्रहपर बुद्ध किछु दिन एतऽ निवास सेहो केलन्हि।

अलौलीगढ़- खगड़ियासँ १५ किलोमीटर उत्तर अलौली गाम लग १०० एकड़मे पसरल ई गढ़ अछि।

कीचकगढ़- पूर्णिया जिलामे डेंगरघाटसँ १० किलोमीटर उत्तर महानन्दा नदीक पूबमे ई गढ़ अछि।

बेनूगढ़- टेढ़गाछ थानामे कवल धारक कातमे ई गढ़ अछि।

वरिजनगढ़- बहादुरगंजसँ छह किलोमीटर दक्षिणमे लोनसवरी धारक कातमे ई गढ़ अछि।

नेऊरी- दरभंगाक बिरौल प्रखण्डसँ १३ किलोमीटर पश्चिममे एकटा गढ़ अछि जे लोरिकक मानल जाइत अछि।

बुद्ध

कुन्दग्राम- हाजीपुरसँ बत्तीस किलोमीटर उत्तर-पूर्वमे बसाढ़-वैशाली आ लगमे वासोकुण्ड लग गाम गढ़-टीलासँ २ कि.मी. उत्तर-पूर्व अछि कुन्दग्राम , जतऽ जैनक २४म तीर्थंकर महावीरक जन्म भेल छलन्हि। एतऽ बुद्धक छाउर, अभिषेक पुषकरणी (राजा अभिषेकसँ पूर्व एतऽ नहाइत रहथि), अशोक स्तम्भ आ संसद-भवन (राजा विशालक गढ़) अछि।

पजेबागढ़ वनही टोल- एतऽ एकटा बुद्ध मूर्त्ति भेटल छल, मुदा ओकर आब कोनो पता नै अछि। ई स्थल सेहो रखबारी गामक लगे अछि।

मंगलगढ़- समस्तीपुर जिलामे हसनपुर ब्लॉकमे दुधपुरा बजार लग देओढ गाम लग। भगवान बुद्धक उपदेश एतऽ भेल, स्थानीय राजा मंगलदेवक आग्रहपर बुद्ध किछु दिन एतऽ निवास सेहो केलन्हि।

मुसहरनियां डीह- अंधरा ठाढ़ीसँ ३ किलोमीटर पश्चिम पस्टन गाम लग एकटा ऊँच डीह अछि। बुद्धकालीन एकजनियाँ कोठली, बौद्धकालीन मूर्त्ति, पाइ, बर्त्तनक टुकड़ी आ पजेबाक अवशेष एतऽ अछि।

अकौर- मधुबनीसँ २० किलोमीटर पश्चिम आ उत्तरमे अकौर गाममे एकटा ऊँच डीह अछि, जतऽ बौद्धकालक मूर्त्ति अछि।

लौरिया-नन्दनगढ़- नन्दनगढ़सँ उत्तर स्थित अछि, एतऽ अशोक स्तंभ आ बौद्ध स्तूप अछि।

विक्रमशिला- भागलपुरमे स्थित प्राचीन विश्वविद्यालय। भागलपुर जिलाक अंतीचक गाममे राजा धर्मपालक बनाओल बुद्ध विश्वविद्यालय अछि। १०८ व्याख्याता लेल रहबाक स्थान आ बाहरसँ पढ़य बला लेल सेहो स्थान एतऽ निर्मित अछि।

चम्पानगर- भागलपुरक पश्चिममे, आब नगरसँ सटि गेल अछि। ई जैन लोकनिक एकटा पवित्रस्थल अछि, एतऽ महावीर तीनटा बस्सावास केने रहथि। दू टा जैन मन्दिर एतऽ अछि, जे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथकेँ समर्पित अछि। महावीर विदेहमे छह टा बस्सावास बितेलन्हि। बर्खा ऋतुमे चारि मास एक ठाम निवासकेँ बस्सावास कहल जाइ छल। बुद्ध एकोटा बस्सावास विदेहमे नै बितेलन्हि, मुदा वैशाली नगरीमे आम्रपालीक उद्यानमे लिच्छवीगणकेँ सन्देश देने छला। आम्रपालीसँ भिक्षा ग्रहण कऽ बुद्ध गेला वेणुमती करय चारि मासक बस्सावास।

अभिलेख

गौरी-शंकर स्थान, मधुबनी जिलाक जमथरि गाम आ हैंठी बाली गामक बीच ई स्थान गौरी आ शङ्करक सम्मिलित मूर्त्ति आ ऐपर मिथिलाक्षरमे लिखल पालवंशीय अभिलेख। बिदेश्वरस्थानसँ २-३ किलोमीटर उत्तर दिशामे ई स्थान अछि।

भीठ-भगवानपुर अभिलेख- राजा नान्यदेवक पुत्र मल्लदेवसँ संबंधित अभिलेख एतऽ अछि। मधुबनी जिलाक मधेपुर थानामे ई स्थल अछि।

भगीरथपुर- पण्डौल लग भगीरथपुर गाममे अभिलेख अछि जइसँ ओइनवार वंशक अंतिम दुनू शासक रामभद्रदेव आ लक्ष्मीनाथक प्रशासनक विषयमे सूचना भेटैत अछि।

मंदार पर्वत- बांका स्थित स्थलमे मिथिलाक्षरक गुप्तवंशीय ७म् शताब्दीक अभिलेख अछि। समुद्र मंथनक हेतु मंदारक प्रयोग भेल छल। निकटमे बौंसीमे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक दूटा मूर्त्ति अछि, पैघ मूर्ति लाल पाथरक अछि तँ दोसर काँसाक जकर सोझाँ दूटा पदचिन्ह अछि। जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक जन्म चम्पानगरमे आ निर्वाण एत्तै भेल छलन्हि।

बिदेश्वर- मधुबनी जिलामे लोहनारोड स्टेशन लग स्थित शिवधामक स्थापना महाराज माधवसिंह केलन्हि। तइ युगक मिथिलाक्षरक अभिलेख सेहो एतऽ अछि।

बसैटी (बाइसी-बसैटी), अररिया अभिलेख - पूणियाँमे श्रीनगर लग मिथिलाक्षरक ई अभिलेख मिथिलाक पहिल महिला शासक रानी इद्रावतीक राज्यकालक वर्णन करैत अछि। रानी इन्द्रावती (१७८४-१८०२) जे अकालक समय फूड-फॉर-वर्क आ अन्य कल्याणकारी कार्यक प्रारम्भ केने रहथि।

जयनगर किला- मिथिलाक तेसर किला अछि भारत नेपाल सीमा पर प्राचीन जयपुर आ वर्त्तमान जयनगर लग। दरभंगा लग पंचोभ गामसँ प्राप्त ताम्र अभिलेख पर जयपुर केर वर्णन अछि।

विष्णु

हुलासपट्टी- मधुबनी जिलाक फुलपरास थानाक जागेश्वर स्थान लग हुलासपट्टी गाम अछि। कारी पाथरक विष्णु भगवानक मूर्त्ति एतऽ अछि।

पिपराही- लौकहा थानाक पिपराही गाममे विष्णुक मूर्त्तिक चारू हाथ भग्न भऽ गेल अछि।

मधुबन- पिपराहीसँ १० किलोमीटर उत्तर नेपालक मधुबन गाममे चतुर्भुज विष्णुक मूर्त्ति अछि।

कमलादित्य स्थान- अंधरा ठाढ़ी लगमे कमलादित्य स्थानक विष्णु मंदिर कर्णाट राजा नान्यदेवक मंत्री श्रीधर दास द्वारा स्थापित भेल।

झंझारपुर अनुमण्डलक रखबारी गाममे वृक्षक नीचाँ राखल विष्णु मूर्त्ति, गांधारशैली मे बनाओल गेल अछि।

मटिहानी- विष्णु मन्दिर

जनकपुर- बृहद् विष्णुपुराणमे मिथिलामाहात्म्यमे जनकपुर क्षेत्रक वर्णन अछि। सत्रहम शताब्दीमे संत सूर किशोरकेँ अयोध्यामे सरयू धारमे राम आ जानकीक दू टा भव्य मूर्त्ति भेटलन्हि, जकरा ओ जानकी मन्दिर, जनकपुरमे स्थापित कऽ देलन्हि। वर्त्तमान मन्दिरक स्थापना टीकमगढ़क महारानी द्वारा १९११ ई. मे भेल। नगरक चारूकात यमुनी, गेरुखा आ दुग्धवती धार अछि। राम नवमी (चैत्र शुक्ल नवमी),जानकि नवमी (वैशाख शुक्ल नवमी) आ विवाह पंचमी (अगहन शुक्ल पंचमी) पर एतऽ मेला लगैए।

अंधरा-ठाढ़ीक स्थानीय वाचस्पति संग्रहालय- गौड़ गामक यक्षिणीक भव्य मूर्त्ति एतऽ राखल अछि।

गौतम तीर्थ- कमतौल स्टेशनसँ ६ किलोमीटर पश्चिम ब्रह्मपुर गाम लग एकटा गौतम कुण्ड पुष्करणी अछि।

मुंगेरक पूब 'सीता-कुण्ड'गर्म कुण्ड अछि, सीता जी एत्तै पृथ्वीमे समाहित भेल छली। ठंढ़ा जलक कुण्ड 'रामकुण्ड', लक्ष्मण कुण्ड, भरत कुण्ड, आ शत्रुघ्न कुण्ड सेहो अछि, भैयारीमे बड्ड मिलान। से मिलान बाबू गढ़ नारिकेलमे सेहो छै, बेसी पढ़ल लिखल गाममे से आब कहाँ?

हलावर्त्त- जनकपुरसँ ३५ किलोमीटर दक्षिण पश्चिममे सीतामढ़ी नगरमे हलवेश्वर शिव मन्दिर आ जानकी मन्दिर अछि। एतसँ डेढ़ किलोमीटर पर पुण्डरीक क्षेत्रमे सीताकुण्ड अछि। हलावर्त्तमे जनक द्वार हर चलेबा काल सीता भेटलि छली। राम नवमी (चैत्र शुक्ल नवमी) आ जानकी नवमी (वैशाख शुक्ल नवमी) पर एतऽ मेला लगैए।

फुलहर-मधुबनी जिलाक हरलाखी थानामे फुलहर गाममे जनकक पुष्पवाटिका छल जतऽ सीता फूल लोढ़ै छली।

धनुषा- जनकपुरसँ १५ किलोमीटर उत्तर धनुषा स्थानमे पीपरक गाछक नीचाँ एकटा धनुषाकार खण्ड पड़ल अछि। रामक तोड़ल ई धनुष अछि। ऐसँ पूब वाणगंगा धार बहैए जे लक्ष्मण द्वारा वाणसँ उद्घाटित भेल छल।

सुग्गा- जनकपुर लग जलेश्वर शिवधामक समीप सुग्गा ग्राममे शुकदेवजीक आश्रम अछि। शुकदेवजी जनकसँ शिक्षा लेबाक हेतु मिथिला ऐल छला- ऐ ठाम हुनका ठहरेबाक व्यवस्था भेल छल।

सिंहेश्वर- मधेपुरासँ ५ किलोमीटरपर गौरीपुर गाम लग सिंहेश्वर शिवधाम अछि।

कपिलेश्वर- कपिल मुनि द्वार स्थापित महादेव मधुबनीसँ ६ किलोमीटर पश्चिममे अछि।

कुशेश्वर- समस्तीपुरसँ उत्तर-पूब, लहेरियासरायसँ ६० किलोमीटर दक्षिण-पूब आ सहरसासँ २५ किलोमीटर पश्चिम ई एकटा प्रसिद्ध शिवस्थान अछि। एतऽ चिड़ै-अभ्यारण्य सेहो अछि जतऽ उज्जर आ कारी गैबर, लालसर, दिघौछ, मैल, नकटा, गैरी, गगन, सिल्ली, अधानी, हरिअल, चाहा, करन, रतबा चिड़ै सभ नवम्बरसँ मार्च धरि देखबामे अबैए।

सिमरदह- थलवारा स्टेशन लग शिवसिंह द्वारा बसाओल शिवसिंहपुर गाम लग ई शिवमन्दिर अछि।

सोमनाथ- मधुबनी जिलाक सौराठ गाममे सभागाछी लग सोमदेव महादेव छथि।

मदनेश्वर- मधुबनी जिलाक अंधरा ठाढ़ीसँ ४ किलोमीटर पूब मदनेश्वर शिव स्थान अछि।

चण्डेश्वर- झंझारपुरमे हरड़ी गाम लग चण्डेश्वर ठाकुर द्वारा स्थापित चण्डेश्वर शिवस्थान अछि।

शिलानाथ- जयनगर लग कमला धारक कातमे शिलानाथ महादेव छथि।

उग्रनाथ- मधुबनीसँ दक्षिण पण्डौल स्टेशन लग भवानीपुर गाममे उगना महादेवक शिवलिंग अछि। विद्यापतिकेँ प्यास लगलन्हि तँ उगनारूपी महादेव जटासँ गंगाजल निकालि जल पियेलखिन्ह। विद्यापतिक हठ केलापर ऐ स्थान पर उगना हुनका अपन असल शिवरूपक दर्शन देलखिन्ह।

उच्चैठ छिन्नमस्तिका भगवती- कमतौल स्टेशनसँ १६ किलोमीटर पूर्वोत्तर उच्चैठमे कालिदास भगवतीक पूजा करैत छला। भगवतीक मौलिक मूर्त्ति मस्तक विहीन अछि।

उग्रतारा- मण्डन मिश्रक जन्मभूमि महिषीमे मण्डनक गोसाउनि उग्रतारा छथि।

भद्रकालिका- मधुबनी जिलाक कोइलख गाममे भद्रकालिका मंदिर अछि।

चामुण्डा- मुजफ्फरपुर जिलामे कटरागढ़ लग लक्ष्मणा वा लखनदेइ धार लग दुर्गा द्वारा चण्ड-मुण्डक वध कएल गेल। ओइ स्थानपर ई मन्दिर अछि।

परसा सूर्य मन्दिर- झंझारपुरमे सग्रामसँ पाँच किलोमीटर पूर्व परसा गाममे साढ़े चारि फीटक भव्य सूर्य मूर्त्ति भेटल अछि।

चैनपुर सहरसा- मिथिलाक एकमात्र नीलकंठ मन्दिर, संगमे आदिकालीन भव्य काली-मन्दिर सेहो ऐ गाममे अछि। महाशिवरात्रि आ कालीपूजा बड़ धूमधामसँ चैनपुरमे होइत अछि।

धरहरा, बनमनखी, पूर्णियाँमे नरसिंह अवतारक स्थान अछि, एकटा खोह जकाँ पैघ पाया अछि जइमे जे किछु फेकबै तँ बड़ी काल धरि गों-गोँ अबाज होइत रहत। ई स्थान आब नरसिंह भगवानक मूर्ति आ मन्दिरक कारणसँ बेस विकसित भऽ गेल अछि। एत्तै नरसिंह पाया फाड़ि अवतरित भेल छला।

बिसफी- मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी थानामे कमतौल रेलवे स्टेशनसँ ६ किलोमीटर पूब आ कपिलेश्वर स्थानसँ ४ किलोमीटर पश्चिम बिसफी गाम अछि। ज्योतिरीश्वर पूर्व महाकवि विद्यापतिक जन्म-स्थान ई गाम अछि।

मिथिलाक बीस टा सिद्ध पीठ- १.गिरिजास्थान (फुलहर, मधुबनी), २.दुर्गास्थान (उचैठ, मधुबनी), ३.रहेश्वरी (दोखर, मधुबनी), ४.भुवनेश्वरीस्थान (भगवतीपुर, मधुबनी), ५. भद्रकालिका (कोइलख, मधुबनी), ६.चमुण्डा स्थान (पचाही, मधुबनी), ७.सोनामाइ (जनकपुर, नेपाल), ८.योगनिद्रा (जनकपुर, नेपाल), ९.कालिका स्थान (जनकपुर स्थान), १०.राजेश्वरी देवी (जनकपुर, नेपाल), ११.छिनमस्ता देवी (उजान, मधुबनी), १२.बनदुर्गा (खररख, मधुबनी), १३.सिधेश्वरी देवी (सरिसव, मधुबनी), १४.देवी-स्थान (अंधरा ठाढ़ी, मधुबनी), १५.कंकाली देवी (भारत नेपाल सीमा आ रामबाग प्लेस, दरभंगा), १६.उग्रतारा (महिषी, सहरसा), १७.कात्यानी देवी (बदलाघाट, सहरसा), १८.पुरन देवी(पूर्णियाँ), १९.काली स्थान (दरभंगा), २०.जैमंगलास्थान(मुंगेर), ५२. जनकपुर परिक्रमाक १५ स्थल आ ओतुक्का मुख्य देवता १. हनुमाननगर- हनुमानजी, २.कल्याणेश्वर- शिवलिंग, ३.गिरिजा-स्थान- शक्ति, ४.मटिहानी- विष्णु मन्दिर, ५.जालेश्वर- शिवलिंग, ६.मनाई- माण्डव ऋषि, ७. श्रुव कुण्ड- ध्रुव मन्दिर, ८.कंचन वन- कोनो मन्दिर नै मात्र मनोरम दृश्य, ९.पर्वत- पाँच टा पर्वत, १०.धनुषा- शिव धनुषक टुकड़ी, ११.सतोखड़ी- सप्तर्षिक सात टा कुण्ड, १२.हरुषाहा- विमलागंगा, १३. करुणा- कोनो मन्दिर नै मात्र मनोरम दृश्य, १४. बिसौल- विश्वामित्र मन्दिर आ १५.जनकपुर।

दरभंगा कैथोलिक चर्च- १८९१मे स्थापित ई चर्च १८९७ केर भूकम्पमे क्षतिग्रस्त भऽ गेल। एकरा होली रोजेरी चर्च सेहो कहल जाइए। सेंट फांसिस ऑसिसी चर्च मुजफ्फरपुरमे अछि।

भिखा सलामी मजार- गंगासागर पोखरि दरभंगाक महारपर ई मजार अछि। मकदूम बाबाक मजार:ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय आ कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगाक बीच स्थित ई मजार हिन्दू आ मुस्लिम मतावलम्बीक एकटा पावन स्थान अछि। दरभंगा टावर मस्जिद इस्लाम मतावलम्बीक एकटा भव्य मस्जिद आ धार्मिक स्थल अछि।

९.विदेह मिथिला रत्न

विदेह मिथिला रत्न

वि दे ह विदेह Videha बिदेह http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

भारत आ नेपालक माटिमे पसरल मिथिलाक धरती प्राचीन कालेसँ महान पुरुष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि रहल अछि। प्रस्तुत अछि मिथिला रत्नक एकटा छोट संग्रह। ऐ संग्रहकेँ पूर्ण करबाक हेतु अपन बहुमूल्य संग्रहकेँ editorial.staff.videha@gmail.com केँ पठाउ। आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार, सम्बन्धित फोटोग्राफर आ संग्रहकर्ताक लगमे छन्हि। फोटो सभ पठेबा लेल धन्यवाद पाठकगण। साभार। पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल। विशेष विवरण देखबा लेल क्लिक करू VIDEHA_346, VIDEHA_347, VIDEHA_366 *आ* **मिथिला रत्न/ मिथिला चित्रकला/ मिथिलाक पाबनि तिहार (कथा) आ मिथिलाक संगीत** |

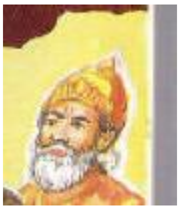

वैदिक जनक

'वैदेह राजा' ऋगवेदिक कालक नमी सप्याक नामसँ छलाह, यज्ञ करैत सदेह स्वर्ग गेलाह, ऋगवेदमे वर्णन अछि। ओ इन्द्रक संग देलन्हि असुर नमुचीक विरुद्ध आ ताहिमे इन्द्र हुनका बचओलन्हि। शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुराणक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गौतम

वाल्मीकि

सीतापति राम

छथि से दुनू एके छथि आ एतएसँ विदेह राज्यक प्रारम्भ। माथवक पुरहित गौतम मित्रविन्द यज्ञक/ बलिक प्रारम्भ कएलन्हि आ पुनः एकर पुनःस्थापना भेल महाजनक-२ क समयमे याज्ञवल्क्य द्वारा। निमि गौतमक आश्रमक लग जयन्त आ मिथि - जिनका मिथिला नामसँ सेहो सोर कएल जाइत छन्हि, मिथिला नगरक निर्माण कएलन्हि। निमीक जयन्तपुर वर्तमान जनकपुरमे छल, मिथीक मिथिलानगरीक स्थान एखन धरि निर्धारित नहि भए सकल अछि, अनुमानित अछि जनकपुरक लग । �सीरध्वज जनक� सीताक पिता छथि आ एतयसँ मिथिलाक राजाक सुदृढ़ परम्परा देखबामे अबैत अछि। �कृति जनक� सीरध्वजक बादक 18म पुस्तमे भेल छलाह। कृति हिरण्यनाभक पुत्र छलाह आ जनक बहुलाश्वक पुत्र छलाह। याज्ञवलक्य हिरण्याभक शिष्य छलाह, हुनकासँ योगक शिक्षा लेने छलाह। कराल जनक द्वारा एकटा ब्राह्मण युवतीक शील- अपहरणक प्रयास भेल आ जनक		

राजवंश समाप्त भए गेल (संदर्भ अश्वघोष-बुद्धचरित आ कौटिल्य-अर्थशास्त्र)।

लव कुश

विदेघ माथव

शतपथ ब्राह्मणक विदेघ माथवक विदेह आगमन, आगिक सदानीरासँ आगाँ नहि बढ़बाक चर्च।

शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुराणक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गौतम छथि से दुनू एके छथि आ एतएसँ विदेह राज्यक प्रारम्भ।

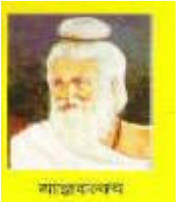

वाजसनेयी याज्ञवल्क्य

याज्ञवल्क्य मिथिलाक दार्शनिक राजा कृति जनकक दरबारमे छलाह। हुनकर माताक वा पिताक नाम सम्भवतः वाजसनी छलन्हि। ओना हुनकर पिता देवरातकें मानल जाइत छन्हि। याज्ञवल्क्य १. शुक्ल यजुरवेद, २. शतपथ ब्राह्मण, ३.बृहदारण्यक उपनिषद आ ४.याज्ञवल्क्य स्मृतिक द्रष्टा/लेखक छथि।

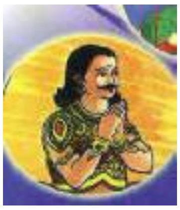

अंगराज कर्ण

वैशेषिक दर्शन कणाद

वैशेषिक दर्शन कणाद

महावीर जैन 599-527

		महावीर विदेहमे छह टा बस्सावास बितेलन्हि।
 गौतम बुद्ध BC 563-483 ओना तँ महावीर विदेहमे छह टा बस्सावास बितेलन्हि मुदा बुद्ध एकोटा नै मुदा मिथिलामे बौद्ध धर्मक प्रभाव पछाति बढ़ल। बुद्ध वैशाली नगरीमे आम्रपालीक उद्यानमे लिच्छवीगणकें सन्देश देने छलाह।	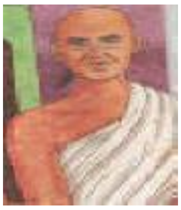 **चाणक्य BC 350-283** धर्म आ विधिक क्षेत्रमे कौटिल्यक अर्थशास्त्र आ याज्ञवल्क्य स्मृतिमे बड्ड समानता अछि जे चाणक्यक मिथिलावासी होयबाक प्रमाण अछि। अर्थशास्त्रमे(१.६ विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे षडोऽध्यायः इन्द्रियजये अरिषड्वर्गत्यागः) कराल जनकक पतनक सेहो चर्चा अछि। तद्विरुद्धवृत्तिरवश्येन्द्रियश्चातुरन्तोऽपि राजा सद्यो विनश्यति- यथा दाण्डक्यो नाम भोजः कामाद् ब्राह्मण कन्यायमभिमन्यमानः	 **चन्द्रगुप्त मौर्य चाणक्यक शिष्य BC 340-293** चाणक्यक शिष्य

सबन्धराष्ट्रो विननाश करालश्च

वैदेहः,...।

आर्यभट्ट वैज्ञानिक 476-550

पञ्जीमे आर्यभट्टक विवरण- (२७) (३४/०८) महिपतिय: मंगरौनी माण्डैर सै पीताम्ब र सुत दामू दौ माण्ड्र सै वीजी त्रिनयनभट्ट: ए सुतो ***आर्यभट्ट:*** ए सुतो उदयभट्ट: ए सुतो विजयभट्ट ए सुतो सुलोचनभट (सुनयनभट्ट) ए सुतो भट्ट ए सुतो धर्मजटीमिश्र ए सुतो धाराजटी मिश्र ए सुतोब्रह्मजरी मिश्र ए सुतो त्रिपुरजटी मिश्र ए सुत विघुजटी मिश्र ए सुतो अजयसिंह: ए सुतो विजयसिंह: ए सुतो ए सुतो आदिवराह: ए सुतो महोवराह: ए सुतो दुर्योधन सिंह: ए सुतो सोढ़र जयसिंहर्काचार्यास्त्रस महास्त्र विया पारङगत महामहोपाध्या य: नरसिंह:।।

सिद्ध सरहपाद 700-780

सरहपाद-�सिद्धिरत्थु मइ पढ़मे पढ़िअउ ,मण्ड पिबन्तों बिसरउ एमइउ�।मिथिलामे अक्षरारम्भ सिद्धिरस्तु जकर पूर्वमे सिद्धिरस्तु, गणेशजीक अंकुश आँजी, लिखल जाइत अछि। मिथिलामे ई धारणा जे माँड़ पिलासँ स्मरण शक्ति क्षीण होइत अछि; ई सरहपादक मिथिलावासी होएबाक प्रमाण अछि।

आदि शंकराचार्य 788-820 मंडन मिश्रसँ शास्त्रार्थ

म.म.गोनू झा 1050-1150

करमहे सोनकरियाम गोनू झाक वर्णन पञ्जीमे अछि- महामहोपाध्याय धूर्तराज गोनू। पञ्जीक अनुसार पीढ़ीक गणना कएलासँ गोनूक जन्म (गोनूक सोनकरियाम करमहे-वत्समे २४म पीढ़ी चलि रहल अछि) *आर्यभट्टक बाद (आर्यभट्टक माण्डर-काश्यपमे ३९ म पीढ़ी चलि रहल अछि) आ विद्यापतिक पहिने (विद्यापतिक विषएवार बिस्फी-काश्यपमे १४म पीढ़ी चलि रहल अछि)* लगभग १०५० ई.मे सिद्ध होइत अछि। कारण एहि तरहें एक पीढ़ीकें ४० सँ गुणा केला सँ आर्यभट्टक जन्म लगभग ४७६ ई. आ विद्यापतिक जन्म लगभग १३५० ई. अबैत अछि जे इतिहाससम्मत अछि।

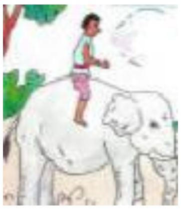

कृष्णाराम आ हाथी सुबरन

मिथिलाक यादव (गुआर) जातिक लोकदेवता कृष्णाराम अपन हाथी सुबरनपर सवार।

वंशीधर ब्राह्मण

छेछन महराज

मिथिलाक डोम जातिक लोकदेवता

दीना- भदरी

मिथिलाक मुसहर जातिक लोकदेवता

ज्योति पँजियार

राजा सलहेस

मिथिलाक दूधवंशी (दुसाध) जातिक लोकदेवता

दुलरा दयाल

गोनू झाक गाम भरौड़ाक राजकुमार, "बहुरा गोढिन नटुआ दयाल" लोककथाक मलाह कथानायक। भरौड़ामे एखनो हिनकर गहबर छन्हि।

कालिदास

बोधि कायस्थ

विद्यापतिक पुरुष-परीक्षामे मृत्युकालमे गंगा नदीक आयब आ बोधि-कायस्थकेँ अपनामे समेबाक खिसा वर्णित अछि जे बादमे

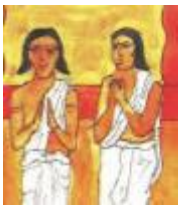

राधाकृष्ण आ करताराम मल्लिक

मिथिलाक अमता घरेनक प्रारम्भिक गबैय्या

महाराज नान्यदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक 1097 ई. मे स्थापना। 1147 ई. मे मृत्यु।

विद्यापतिकेँ लऽ कऽ सेहो प्रचलित भेल।

मल्लदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक संस्थापक नान्यदेवक पुत्र। मिथिलाक गंधवरिया राजपूत मल्लदेवकेँ अपन बीजीपुरुष मानैत छथि।

महाराज हरसिंहदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक प्रेरणासँ- आ ई हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकेमे स्थापना केने रहथि- नन्दैद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९

मंत्री गणेश्वर

मिथिलाक कर्णाट वंशक नरेश हरसिंहदेवक मंत्री। *सुगतिसोपान*मे मिथिलाक सांवैधानिक इतिहासक वर्णन।

शाके)... मिथिलाक पण्डित लोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे थोडे बुद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाके माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई.क आसपास) *श्रोत्रिय* नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।

मीरां साहेब

मिथिलाक मुस्लिम लोकनिक बीच प्रसिद्ध लोकगाथाक नायक।

अमर बाबा

मिथिलाक मलाह जातिक लोकदेवता।

गरीबन बाबा

मिथिलाक धोबि जातिक लोकदेवता।

लालबन बाबा

मिथिलाक चर्मकार जातिक लोकदेवता।

बंठा चमार

कारिख पजियार

लोरिक

राय रणपाल

अयाची मिश्र

पन्द्रहम शताब्दीक भवनाथ मिश्र बड पैघ नैय्यायिक छलाह आ कहियो ककरोसँ कोनो वस्तुक याचना नहि कएलन्हि, ताहि लेल सभ हुनका अयाची मिश्र कहए लगलन्हि।

शंकर मिश्र

"बालोऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती। अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम् ॥" क

पक्षधर मिश्र

विद्यापतिक समकालीन जयदेव मिश्र, जे अपन अकाट्य तर्कक कारण

मैथिलीक आदिक वि विद्यापति (ज्यो तिरीश्वर पूर्व)

वक्ता। पन्द्रहम शताब्दीमे भवनाथ मिश्रक घरमे मधुबनी जिलाक सरिसव ग्राममे शंकर मिश्रक जन्म भेल।शंकर मिश्र महाराज भैरव सिंहक कनिष्ठ पुत्र राजा पुरुषोत्तमदेवक आश्रित छलाह। एकर वर्णन रसार्णव ग्रंथमे भेटैत अछि। शंकर मिश्र कवि, नाटककार, धर्मशास्त्री आ न्याय-वैशेषिकक व्याख्याकार रहथि।शंकर मिश्र ग्रंथावली- १.गौरी दिगम्बर प्रहसन २.कृष्ण विनोद नाटक ३.मनोभवपराभव नाटक४.रसार्णव५.दुर्गा-टीका६.वादिविनोद७.वैशेषिक सूत्र पर उपस्कार८.कुसुमांजलि पर आमोद९.खण्डनखण्ड-खाद्य टीका १०.छन्दोगाह्निकोद्धार ११.श्राद्ध प्रदीप १२.प्रायश्चित प्रदीप।	पक्षधर मिश्रक नामसँ जानल गेलाह।	*मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (विद्यापतिक चित्र: विदेह चित्रकला सम्मानसँ पुरस्कृत पनकलाल मण्डल द्वारा)* *कवीश्वर ज्योतिरीश्वर(लगभग १२७५-१३५०)सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरःसँ भिन्न। सम्भवतः बिस्फी गामक बार्बर कास्टक श्री महेश ठाकुरक पुत्र। समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि।ज्योतिरीश्वर पूर्व* विद्यापति:- कश्मीरक अभिनव गुप्त (दशम शताब्दीक अन्त आ एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ)- ग्रन्थ �ईश्वर प्रत्याभिज्ञा-विभर्षिणी� मे विद्यापतिक उल्लेख करै छथि। श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृत, (रचना ११ फरबरी १२०६, मध्यकालीन मिथिला, वि.कु. ठाकुर)- श्रीधर दास

		विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत केने छथि जे विद्यापतिक पदावलीक भाषा छी। �जाव न मालतो कर परगास तावे न ताहि मधुकर विलास।� आ �मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द� ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) **षष्ठः कल्लोल**- ‖अथ विद्यावन्त वर्णना‖ **अष्टमः कल्लोलः**- ‖अथ राज्य वर्णना‖ मे उल्लेख।
 महाराज शिव सिंह मिथिला नरेश विद्यापतिक आश्रयदाता ओइनवार वंशक महाराज शिव सिंह।	 उगना महादेव महादेव विद्यापतिक अहिठाम गीत सुनबा लेल उगना नोकर बनि रहैत छलाह।	 महाकवि विद्यापति ठाकुर 1350-1435 (मैथिलीक आदि कवि ज्योतिरीश्वर-पूर्व विद्यापतिसँ भिन्न, संस्कृत आ अवहट्ठमे लेखन)

महाकवि विद्यापति ठाकुर

1350-1435

विद्यापति ठक्कुरः 1350-1435 विषएवार बिस्फी-काश्यप (राजा शिवसिंहक दरबारी) आ संस्कृत आ अवहट्ट लेखक। कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, गोरक्षविजय, लिखनावली आदि ग्रंथ समेत विपुल संख्यामे कालजयी रचना। ई मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)सँ भिन्न छथि।

(चित्रक आधार मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोलकाता द्वारा कोनो कलाकारसँ बनबाओल , कलाकारक नाम ६०-७० सालसँ अज्ञात कारणसँ गुप्त राखल गेल अछि।)

शंकरदेव 1449-1569

जगज्ज्योतिर्मल्ल १६१३-३७

सुनीति कुमार चटर्जी मैथिली प्रेमी 1890-1977

पारिजातहरण।	हरगौरी विवाह नाटक, कुञ्ज विहार नाटक।	
 अरविन्द घोष मैथिली प्रेमी 1872-1950 विद्यापति गीतक अंग्रेजीमे अनुवाद	 डॉ. सर आशुतोष मुखर्जी मैथिली प्रेमी 1864-1924	 सर जी. ए. ग्रियर्सन मैथिली प्रेमी 1851-1941
 कवि चन्दा झा 1831-1907 मूलनाम चन्द्रनाथ झा, ग्राम- पिण्डारुछ, दरभंगा। कवीश्वर, कविचन्द्र नामसँ विभूषित। ग्रिएर्सनकेँ मैथिलीक प्रसंगमे मुख्य सहायता केनिहार। कृति- मिथिला भाषा रामायण, गीति-सुधा, महेशवाणी संग्रह, चन्द्र पदावली, लक्ष्मीश्वर	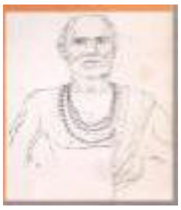 महाकवि लालदास 1856-1921 हिनक जन्म खड़ौआ ग्राममे १८५६ ई. मे तथा मृत्यु १९२१ ई. मे भेलन्हि । हिनक अनेक रचना उपलब्ध होइत अछि, यथा�रमेश्वर चरित रामायाण,� स्त्री शिक्षा,� �सावित्री-सत्यवान,� �चण्डी चरित,� �विरुदावली,� �दुर्गा सप्तशती,� तन्त्रोक्त मिथिला माहात्म्य� आदि । मैथिलीक अतिरिक्त ई संस्कृत, हिन्दी तथा फारसीक ज्ञाता छलाह । कविताक अतिरिक्त गद्यमे सेहो ई रचना कएल	 म. म. परमेश्वर झा 1856-1924 जन्म 1856 ई. मे तरौनी ग्राम (दरभंगा) जिलामे भेल छलन्हि तथा निधन 1924 ई. मे । संस्कृत व्याकरणक ई दिग्गज विद्वान् छलाह तथा �वैयाकरण केशरी� क उपाधिसँ विभूषित छलाह । मैथिली साहित्यमे अपन कृति �मिथिलातत्व विमर्श� तथा �सीमंतिनी आख्यायिका�क कारणे महत्वपूर्ण स्थान रखैत छथि

विलास, अहिल्याचरित आऽ विद्यापति रचित संस्कृत पुरुष-परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद।	। रमेश्वर चरित रामायण हिनक सभसँ विशिष्ट ग्रन्थ अछि । राम-कथाक उल्लेखमे सीताक महिमाक महत्त्व दए मिथिला तथा मैथिलीक प्रति ई अपन श्रद्धा तथा भक्तिकें व्यक्त कएल अछि ।	। ई महाराज रमेश्वर सिंहक दरवारमे राज-पंडितक पदपर अनेको वर्ष धरि सुप्रतिष्ठित छलाह ।
 अवध बिहारी प्रसाद शाही 1859-1929	 सर्वतंत्र स्वतंत्र बच्चा झा 1860-1921 मधुबनी जिलांतर्गत लवाणी(नवानी) गाममे हिनकर जन्म भेलन्हि।हिनक कृति सभ अछि। 1. सुलोचन-माधव चम्पू काव्य, 2.न्यायवार्तिक तात्पर्य व्याख्यान, 3.गूढ़ार्थ तत्वलोक(श्री मदभागवतगीता व्याख्याभूत मधुसूदनी टीका पर) 4.व्याप्तिपंचक टीका 5.अवच्छदकत्व निरुक्ति विवेचन 6.सव्यभिचार टिप्पण 7.सतप्रतिपक्ष टिप्पण 8.व्याप्तनुगन विवेचन 9.सिद्धांत लक्षण विवेक 10.व्युत्पत्तिवाद गूढार्थ तत्वालोक 11.शक्तिवाद टिप्पण 12.खण्डन-ख़ण्ड खाद्य टिप्पण 13. अद्वैत सिद्धि चन्द्रिका टिप्पण 14.कुकुकाञ्जलि प्रकाश टिप्पण।	 म. म. शशिनाथ झा 1860-1930

मुंशी रघुनन्दन दास 1860-1945

गाम-सखबार, ज़िला-मधुबनी। "मिथिला नाटक" आ "दूतांगद व्यायोग"क लेखक।

मधुसूदन ओझा 1866-1939

म.म. मुरलीधर झा १८६८-१९२९

जन्म- गाम- भराम (जिला मधुबनी), अपन मातृक श्यामसीधपमे बसि गेलाह। काशीसँ १९०६ ई. मे ई "मिथिलामोद" नामक मासिक मैथिली पत्रिकाक प्रकाशन शुरु केलन्हि। हितोपदेश (अनुवाद), मैथिली व्याकरण, "अर्जुन तपस्या" (उपन्यास) प्रकाशित।

मुकुन्द झा "बख्शी" 1869-1936

जन्म हरिपुर बख्शी टोल ग्राम (मधुबनी जिला) मे 1869 ई. मे भेल तथा हिनक निधन काशीमे 1937 ई. मे भेलन्हि । हिनक लिखल संस्कृत मे

डॉ. सर गंगानाथ झा 1871-1941

जन्म मधुबनी जिलाक सरिसब-पाही ग्राममे 1871 ई. मे भेल तथा निधन प्रयागमे 1941 ई. मे । ई अपना समयक संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वान म. म. चित्रधर मिश्र, म. म. जयदेव मिश्र तथा म. म. शिवकुमार शास्त्रीसँ

जनार्दन झा जनसीदन 1872-1951

अनेक ग्रंथ अछि । मैथिलीमे हिनक महत्त्वपूर्ण कृति अछि �मिथिला भाषामय इतिहास� । एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हिनक स्फुट निबन्ध सभ सेहो प्रकाशित भेल । मिथिलाक ऐतिहासिक वर्णन सभसँ पहिने हिनके प्रकाशित भेल । एहि इतिहासमे मिथिलाक सर्वतोमुखी परिचय प्रस्तुत कएल गेल अछि ।

मीमांसा एवं दर्शनक अध्ययन कएलन्हि तथा दर्शनक विभिन्न दुरूह ग्रंथक अङरेजीमे अनुवाद कए पाश्चात्य संसारक ध्यान आकृष्ट कएलन्हि । ई गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेज बनारसमे 1917 सँ 1923 धरि प्रिंसिपल छलाह तथा एलाहाबाद विश्वविद्यालयक 1923 सँ 1932 पर्यन्त कुलपति रहलाह । मैथिलीमे हिनक सम्पादित चन्दा झाक �महेशवाणी संग्रह� तथा �गणनाथ-विन्ध्यनाथ पदावली� प्रकाशित अछि । मैथिली साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशित हिनक �वेदान्त दीपक� (दर्शन) विषयक अपूर्व ग्रंथ अछि । एहिसँ भिन्न हिनक निबंध सभ सामयिक मैथिली पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अछि ।

रासबिहारी लालदास 1872-1940

"मिथिला दर्पण" क लेखक।

रामचन्द्र मिश्र "चन्द्र" 1873-1937 मैथिल प्रभा

महावैय्याकरणाचार्य पं दीनबन्धु झा 1878-1955

भवनाथ मिश्र 1879-1933 मैथिली शब्दकोष "मिथिला शब्द प्रकाश"क लेखक।	कीर्त्यानन्द सिंह	टंकनाथ चौधरी 1884-1928
 भवप्रीतानन्द ओझा 1886-1970	 कपिलेश्वर मिश्र 1887-1987 गाम सलेमपुर, थाना-उजियारपुर, जिला समस्तीपुर। �सीतादाइ� पुस्तक भंडारसँ प्रकाशित।	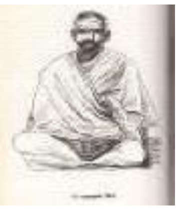 बालकृष्ण मिश्र 1888-1948
 बलदेव मिश्र 1890-1975 हिनक जन्म सहरसा जिलाक वनगाँव ग्राममे 1890 ई. मे एवं निधन फरवरी, 1975मे भेलन्हि । प्रारम्भमे पं. गेनालाल चौधरीसँ ज्यौतिष पढ़ि ई काशीमे पं. सुधाकर द्विवेदीजीक शिष्य भेलाह । बहुत वर्ष धरि	 आचार्य रामलोचन शरण 1889-1971 सीतामढ़ीमे जन्म आ दरभंगामे मृत्यु। "मैथिली रामचरित मानस" सहित तुलसीदासक समस्त रचनाक मैथिलीमे लेखन। मिथिलाक्षरमे मैथिलीक प्रकाशनक प्रारम्भ केनिहार। प्रकाशन संस्था "पुस्तक भण्डार", लहेरियासराय, पटनाक संस्थापक।	 सीताराम झा 1891-1975 जन्म चौगामा ग्राममे १८९१ ई.मे तथा निधन १९७५ ई. मे भेलन्हि । संस्कृतमे ज्योतिष शास्त्रक अनेक रचनाक .अतिरिक्त मैथिलीमे हिनक �अम्ब चरित� (महाकाव्य), �सूक्ति

सरस्वती भवन (वाराणसी) मे हस्तलिखित विभागमे कार्य कएल । पश्चात् पटनाक काशीप्रसाद जयसवाल रिसर्च संस्थानमे अनेक प्राचीन तिब्बती हस्तलिपिकें देवनारीमे लिप्यन्तरित कएल। �मिथिलामोद� प्रकाशन एवं म.म. मुरलीधर झाक प्रोत्साहनसँ ज्यौतिषीजी १९१० ई.सँ �मोद�मे लिखए लगलाह। हिनक प्रकाशित रचना अछि��रामायण शिक्षा�, �चन्दा झा�, �संस्कृति�, �भारत शिक्षा�, �गप्प-सप्प विवेक�, �समाज� आदि । पण्डितजी यावत् धरि पटना रहलाह बराबरि �मिहिर�मे लिखैत रहलाह ।		सुधा,� लोक लक्षण,� �पढ़ुआचरित,� �पूर्वापर व्यवहार,� उनटा बसात,� �अलंकार दर्पण�, �भूकम्प वर्णन�, �काव्य षट-रस�, �मैथिली काव्योपवन�, आदि ग्रन्थ उपलब्ध अछि । हिनक गीताक मैथिली अनुवाद सेहो उपलब्ध अछि । मिथिला मोदक सम्पादन १९२० ई.सँ १९२७ ई. धरि ई कएल ।
 ताराचरण झा 1892-1928	 बद्रीनाथ झा 1893-1973 जन्म मधुबनी जिलाक सरिसव ग्राममे १८९३ ई. मे भेलन्हि तथा १९१४ ई. मे ई	 जीवनाथ राय 1893-1964

काशी लाभ कएलिन्ह । बहुत दिन धरि ई मुजफ्फरपुरक धर्म्म समाज संस्कृत कॉलेजमे साहित्यक अध्यापक छलाह । मैथिलीक विख्यात कवि लोकनि यथा सुमनजी, मधुपजी, मोहनजी आदि हिनक शिष्य छथिन्ह । संस्कृत साहित्यमे हिनक अनेक रचना अछि । जाहिमे राधा परिणय� (महाकाव्य) क स्थान विशिष्ट अछि । मैथिलीमे हिनक �एकावली परिणय� (महाकाव्य) एक नवीन कीर्तिमान स्थापित कएलक। कोनो अलंकारक दृष्टान्त तकबाक हेतु �एकावली परिणय� पर्याप्त अछि ।

उमेश मिश्र 1895-1967

जन्म मधुबनी जिलाक गजहरा ग्राममे 1895 ई. मे भेल छलन्हि । ई एकहतरि वर्षक आयुमे १९६७ ई. मे

बाबू धनुषधारी दास 1895-1965

मैथिलीमे बिहारी कविक अनुवाद प्रकाशित।

अमरनाथ झा 1897-1955

सरिसब पाहीटोल ग्राममे १८९७ ई. मे भेल । हिनक निधन पटनामे जखन ई बिहार लोक सेवा आयोगक

प्रयागमे स्वर्गवासी भेलाह । ई अपन स्वनाम-धन्य पिता म. म. जयदेव मिश्र तथा म. म. डा. गंगानाथ झाक सान्निध्यमे विद्यार्जन कएल। १९२३ सँ १९५९ धरि मिश्रजी एलाहाबाद विश्वविद्यालयमे संस्कृतक प्राध्यापक छलाह । दरभंगा �मिथिला शोध संस्थान�क निदेशक पदपर किछु समय कार्य कए १९६२ सँ ६५ धरि कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक कुलपति रहलाह ।म. म. मुरलीधर झासँ प्रभावित भए �मिथिलामोद�मे ई लिखब प्रारम्भ कएलन्हि तथा अपन विविध प्रकारक रचनासँ मैथिलीक गद्यकेँ समृद्ध कएलन्हि । मैथिलीमे हिनक प्रसिद्ध ग्रन्थ अछि��कमला� (शेक्सपीयरक �टेम्पेस्ट�क भावानुवाद), �नलोपाख्यान�, �मैथिली-संस्कृति� तथा अनेक वर्णनात्मक एवं आलोचनात्मक निबन्ध; मनबोधक कृष्णजन्मक

अध्यक्ष छलाह, १९५५ मे भेलन्हि । ई एलाहाबाद विश्वविद्यालयक नओ वर्ष धरि कुलपति रहि पश्चात् हिन्दू विश्वविद्यालयक सेहो कुलपतिक पदकेँ सुशोभित कएलन्हि । ई अंगरेजीक प्रकाण्ड विद्वान् छलाह, ताहि संग हिन्दी, उर्दू, फारसी, संस्कृत, बङला एवं मैथिलीक सेहो अद्भुत विद्वान् छलाह ।मैथिलीमे हिनका द्वारा सम्पादित �हर्षनाथ काव्य ग्रन्थावली� तथा �गोविन्द दासक श्रृग्ङारभजन� महत्वपूर्ण अछि । एहिसँ भिन्न हिनक मैथिली साहित्य परिषदक अध्यक्षीय भाषण तथा अन्य लेख प्रकाशित अछि ।

सम्पादन, विद्यापतिक कीर्तिलता, कीर्तिपताका, गोरक्ष विजय आदिक अनुवाद-सम्पादन सेहो कएल।		
भोलालाल दास 1897-1977 हिनक जन्म दरभंगा जिलाक कसरौर मे भेलन्हि । साहित्य सर्जनाक अतिरिक्त अपन संगठन क्षमता तथा मैथिली साहित्यक सर्वतोमुखी विकासक हेतु सतत तत्पर रहबाक कारणेँ भोला बाबू मैथिली संसारक एक स्तम्भक रूपमे रहलाह । हिनक निधन 1977 ई. मे भेल । मैथिलीक प्रचार-प्रसारमे ई अपन जीवन समपित कएने छलाह। पाठ्यक्रममे मैथिलीकेँ स्थान हो ताहि हेतु ई बीड़ा उठओलन्हि । विद्यालय स्तरक अनेक पोथीक निर्माण कएल । मैथिली साहित्य परिषदक ई संस्थापक मण्डलक सदस्य छलाह । 1931 सँ 1940 ई. पर्यन्त ओकर प्रधान मन्त्री रहलाह ।	कुमार गंगानन्द सिंह 1898-1971 जन्म�बनैली राजपरिवारमे 24-9-1898, मृत्यु:-श्रीनगर पूर्णिञा 17-1-1970। भूतपूर्व शिक्षामंत्री, बिहार एबं कुलपति, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय ।रचना�अगिलही (अपूर्ण उपन्यास) तथा अनेक कथा एवं एकांकी । युगक अनुरूप सामाजिक कुरीति आदिकेँ आधार बनाए सुधारवादी दृष्टिएँ कथा सभहिक रचना ।	ब्रजमोहन ठाकुर 1899-1977

हिनक मन्त्रित्वकालमे �भारती� नामक मासिक पत्रक प्रकाशन भेल । एहिसँ पूर्व (१९२९-३१) कुशेश्वर कुमरजीक संग संयुक्त सम्पादनमे �मिथिला� नामक पत्र चलाओल । ई नवीन एवं प्रगतिशील विचारक लोक छलाह । ननव लेखककें प्रोत्साहित करब, शैलीमे एकरूपता आनब, नव प्रकाशनसँ मैथिलीक साहित्य भंडारक पूर्ति करब हिनक कर्तव्य बनि गेल छल । हिनक लिखल �मैथिली व्याकरण� तथा हिनकहि द्वारा सम्पादित �गद्यकुसुमांजलि बहुत दिन धरि विद्यालयमे पढ़ाओल जाइत रहल । हिनक लिखल अनेक निबन्ध समालोचना, कविता, संस्मरण, जीवनी-साहित्य मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे छिड़िआएल अछि ।

भुवनेश्वर प्रसाद 1902-

दरभंगा जिलाक बनौली गाम, निवास रायसाहेब पोखरि

जयनारायण झा 'विनीत' 1902-1991

नरेन्द्र नाथ दास विद्यालंकार १९०४-१९९३

लहेरियासराय। सरस्वती स्कूल लहेरियासरायमे १९३०-१९६४ ई. धरि अध्यापन। मैथिलीमे "बाल रामायण� प्रकाशित।		
 सुधाकर झा "शास्त्री" 1904-1974	 दामोदर लाल दास विशारद 1904-1981	 बबुआजी झा 'अज्ञात' 1904-1996 २००१- बबुआजी झा �अज्ञात� (प्रतिज्ञा पाण्डव, महाकाव्य)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।
 श्रीवल्लभ झा हाटी 1905-1940	 रमानाथ झा 1906-1971 जन्म दरभंगा जिलाक उजान (धर्मपुर) ग्राममे 1906 ई. मे एवं हिनक निधन दरभंगामे १९७१ ई. मे भेलन्हि । 1930 ई. मे अङरेजीमे एम. ए. कएलाक बाद ई कतोक वर्ष धरि मधेपुर उच्च विद्यालयक प्रधानाध्यापक छलाह, तकरा बाद	 काशीकान्त मिश्र "मधुप" 1906-1987 १९७०- काशीकान्त मिश्र �मधुप� (राधा विरह, महाकाव्य) पर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त मैथिलीक प्रशस्त कवि आ मैथिलीक प्रचार-प्रसारक समर्पित

	दरभग्डा-राज-लाइब्रेरीक पुस्तकालयाध्यक्षक रूपमे 1936 सँ अन्तिम समय धरि रहलाह । 1952 सँ 62 चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे प्रो. झा अङरेजीक प्राध्यापक रूपें काजka पश्चात् ओही कॉलेजमे मैथिली विभागाध्यक्ष बनाओल गेलाह । 1965 मे रमानाथ बाबू साहित्य अकादमीक मैथिलीक प्रतिनिधि निर्वाचित भेलाह जाहि पद पर ओ जीवनक अन्त समय तक रहलाह । हिनक रचनाक क्षेत्र बहुत व्यापक छल । हिनक अनुसंधानात्मक निबंक दू गोट संग्रह �निबन्धमाला� तथा �प्रबंध संग्रह� प्रकाशित अछि । संकलित सम्पादित पुस्तक सभमे �मैथिली पद्य-संग्रह�, �मैथिली गद्य-संग्रह�, �प्राचीन गीत�, �कथा काव्य�, �नवीन गीत�, �कविता कुसुम�, �कथा संग्रह� आदि अछि । �कथासरित्सागर�क आधार पर प्राञ्जल गद्य शैलीमे हिनक �उदयन-कथा� तथा �बररुचि-कथा� बेश ख्याति पओलक । व्याकरणक �मिथिला भाषा प्रकाश�, �अलङ्कारप्रवेश� आदि	कार्यकर्ता �झंकार� कवितासँ क्रान्ति गीतक आह्वान कएलनि । प्रकृति प्रेमक विलक्षण कवि । �घसल अठन्नी कविताक लेल कथ्य आ शिल्प-संवेदना�दुहू स्तर पर चरम लोकप्रियता भेटलनि।

	अनेक ग्रन्थ प्रकाशित अछि । �मैथिली साहित्य पत्र� त्रैमासिक पत्रिकाक संपादक।	
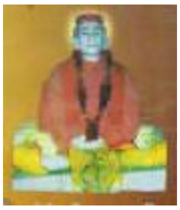 लक्ष्मीनाथ गोसाई 1793-1872	 मेही दास धरहरा कोठी_बनमनखी_असली नाम_रामानुग्रहलाल दास_आश्रम_मायामोहल्ला, कुप्पाघाट, भागलपुर	 बुचन भगत, संत 1928-1991
 अभिराम दास मिथिलाक प्रसिद्ध भागवत वाचक।	 स्नेहलता 1909-1993 गाम- डरोड़ी, समस्तीपुर। पूर्ण नाम- कपिलदेव ठाकुर "स्नेहलता"। रामाश्रयी रसिक सम्प्रदायक संत। हिनकर रचित वैदेही विवाह संकीर्तन, विनय पदावली, शिववाणी, चेतावनी, झूला- संकीर्तन, सीतावतरण प्रबन्धकाव्य आ स्नेहशतक- दोहावली-कवित्त आदि मिथिलाक महिला वर्ग आ संकीर्तनकार लोकनिक कंठमे परिव्याप्त अछि आ लोकमंगलक	 स्वतंत्रता सेनानी स्व. रामफल मण्डल

अनुष्ठानमे व्यापक रूपेँ व्यवहृत अछि। हिनक "वैदेही विवाह" मिथिलाक कीर्तनिया नाट्य परम्पराकेँ लोकरुचिक अनुकूल बनौने अछि।

सुन्दर झा "शास्त्री"

1930-1998

जनकपुर, नेपाल, युवावस्थाक जेलक दुर्लभ फोटो।नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक मानद सदस्यता- स्व. सुन्दर झा शास्त्री।

कांञ्चीनाथ झा "किरण"

1906-1988

जन्म स्थान-धर्मपुर,लोहना रोड, दरभंगा बिहार । मैथिली भाषा आंदोलनमे महत्वपूर्ण भूमिका। �पराशर� महाकाव्य लेल साहित्य अकादमी ओ �कथा किरण� लेल वैदेही पुरस्कारसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: चंद्रग्रहण (उपन्यास), वीर-प्रसून (बालकथा), जय जन्मभूमि (एकांकी), विजेता वियापति (नाटक), कथा-किरण (कथा-संग्रह), किरण-कवितावली, कतेक दिनक बाद (कविता-संग्रह), पराशर (महाकाव्य) ओ किरण-निबंधावली (निबंध-संग्रह) आदि।१९८९- काञ्चीनाथ झा �किरण�

श्यामानन्द झा 19 06-1949

(पराशर, महाकाव्य)पर मैथिली मे साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।

रमाकांत झा, नेपाल 1907-1971

ईशनाथ झा 1907-1965

बहुमुखी प्रतिभाक कवि । प्राचीन आ नवीन पद्धतिक काव्य-रचनाक विलक्षण संयोग हिनकर कवितामे भेटैत अछि । दलित वर्ग, शोषणक समस्या, स्वदेश प्रेमक यथार्थवादी रचनाक संग संग व्यक्तिनिष्ठ कल्पनाक अनेक विशिष्ट कविता मैथिलीमे लिखलनि ।

भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' 1907-1944

अपन खाढ़ीक बहुमुखी प्रतिभाक कवि । प्राचीन आ नवीन रीतिक कविताक रचना विपुल संख्यामे कएलनि । �भुवन भारती� कविता संकलन प्रकाशनसँ मैथिली ओज आ नव चेतनाक शंख फुकलनि।

हरिमोहन झा 1908-1984

कालीकान्त झा 1909-

मूल गाम ढंगा (हरिपुर), मधुबनी। फेर मातृक बरदबट्टा,पो.

तंत्रनाथ झा 1909-1984

हिनकर मैथिली कृति १९३३ मे �कन्यादान� (उपन्यास), १९४३ मे "द्विरागमन�(उपन्यास), १९४५ मे �प्रणम्य देवता� (कथा-संग्रह), १९४९ मे �रंगशाला�(कथा-संग्रह), १९६० मे �चर्चरी�(कथा-संग्रह) आऽ १९४८ ई. मे �खट्टर ककाक तरंग� (व्यंग्य) अछि। मृत्योपरांत १९८५मे (जीवन यात्रा, आत्मकथा)पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।	उरलाहा, भाया- मदनपुर, जिला- पूर्णियामे बसि गेलाह। सतघरा (मधुबनी), मदनपुर आ काशीमे पाणिनी व्याकरणक अध्ययन। "हनुमान चरित"क लेखक।	जन्म १९०९ ई मे दरभंगा जिलाक धर्मपुर ग्राममे भेलन्हि मृत्यु ४-५-�८४,चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे अर्थशास्त्रक प्राध्यापक छलाह । अवकाश ग्रहण क काव्य साधनामे लागल रहलाह । महाकाव्य, मुक्तक, एकांकी सभ विधामे ई सिद्व हस्त छलाह । हिनक �कीचक वंध� महाकाव्य अङरेजीक �ब्लैक्ङ भर्स� (अमित्राक्षर छन्द) म लिखल अछि । मैथिलीमे �सौनेट� एवं ब्लैक्ङ भर्स�क ई प्रथम प्रयोक्ता थिकाह । संस्कृत परम्परामे काव्य रचना करितहुँ पाश्चात्य शैलीक नवीनता हिनका रचनामे भेल । हिनक �कीचक वध� ओ �कृष्ण चरित� महाकाव्य��मङ्गल-पञ्चाशिका� एवं �नमस्या� मैथिली साहित्यमे अपन विशिष्ट स्थान रखैछ । तकर अतिरिक्त मुक्तक काव्यमे विषय वस्तुक व्यापकता एवं

शिल्प शैलिक प्रचुरता अबैत अछि । एक दिश यदि प्राचीन ढंगक ईश्बर वन्दनाक रचना कएलन्हि तँ दोसर दिस �सौनेट� (चतुर्दशपदी) �बैलेड� आदि लिखबामे पूर्ण सफलता प्राप्त कएलन्हि ।�कृष्ण चरित� महाकाव्य पर हिनका 1979 ई क साहित्यक अकादमी पुरस्कार भेटलन्हि । 1980 ई. मे हिनका अभिनन्दन ग्रन्थसमर्पित कएल गेलन्हि ।

जीवनाथ झा 1910-1977

सुरेन्द्र झा 'सुमन' 1910-2002

जन्म: ग्राम : बल्लीपुर, जिला-समस्तीपुर । प्रकाशित कृति: प्रतिपदा, अर्चना,साओन-भादव,अंकावली, अन्तर्नाद, पयस्विनी, उत्तरा आदि तीससँ अधिक मौलिक कविता-पुस्तक;पुरुष-परीक्षा, अनुगीतांजलि, ऋतु श्रृंगार तथा वर्णरत्नाकर, पारिजात-हरण, कृष्णजन्म, आनन्द-विजय आदि कतिपय ग्रन्थक अनुवाद-संपादन;

पं. रामचन्द्र झा 1910-

गाम तरौनी। काशी मिथिला ग्रन्थमालाक सम्पादक।

�मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव� नामक समीक्षा-ग्रंथ। �पयस्विनी� लेल १९७१ मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार तथा �उत्तरा� पर १९१८ मे मैथिली अकादेमीक विद्यापति पुरस्कार प्राप्त । मैथिलीक प्रथम दैनिक पत्र �स्वदेश�क लब्धप्रतिष्ठ सम्पादक।१९९७- सुरेन्द्र झा �सुमन� (रवीन्द्र नाटकावली- रवीन्द्रनाथ टैगोर, बांग्ला)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। २००० ई.- पं.सुरेन्द्र झा �सुमन�, दरभंगा;यात्री-चेतना पुरस्कार।

'नागार्जुन' वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' 1911-1998

जन्म अपन मामागाम सतलखामे भेलन्हि, जे हुनकर गाम तरौनीक समीपहिमे अछि, जिला-दरभ्गा । मूल नाम: वैद्यनाथ मिश्र । हिन्दीमे नागार्जुन नामे प्रख्यात । प्रकाशित कृति: चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ (मैथिली कविता-संग्रह); पारो, बलचनमा, नवतुरिया (मैथिली उपन्यास); युगधारा, सतरंगे पंखोंवाली, प्यासी पथराई आंखें, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, तुमने कहा था, हजार हजार बाहो वाली, पुरानी जूतियो

आरसीप्रसाद सिंह 1911-1996

जन्म: ग्राम-एरौत, जिला-समस्तीपुर । प्रकाशित कृति: माटिक दीप, पूजाक फूल, सूर्यमुखी (कविता-संग्रह), मेघदूत (अनुवाद), आरसी, नन्ददास, संजीवनी (हिन्दी काव्य संग्रह)। �सूर्यमुखी� लेल १९८४ मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त ।

गुरु जयदेव मिश्र 1911-1991 शिष्य गंगा नाथ झा

का कोरस, रत्नगर्भा, ऐसे भी हम क्या ! ऐसे भी तुम क्या ! (हिन्दी कविता-संग्रह); रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नई पौध, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के

बेटे, दुखमोचन, कुम्भीपाक, अभिनन्दन, उग्रतारा, इमरतिया (हिन्दी उपन्यास); आसमान में चन्दा तैरे (कहानी संग्रह); भस्मांकुर (हिन्दी खण्ड काव्य); अन्नहीनम् क्रियाहीनम् (निबन्ध-संग्रह); गीत गोविन्द; मेघदूत; विद्यापति के गीत, विद्यापति की कहानियां (अनुवाद) ।�पत्रहीन नग्न गाछ� लेल १९६८ मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त । यायावरी जीवन । मैथिली प्रतिनिधिक रूपमे रूस भ्रमण । नागार्जुन (**स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र �यात्री�**), हिन्दी आ मैथिली कवि, १९९४ ई.मे **साहित्य अकादेमीक फेलो** (भारत देशक सर्वोच्च साहित्यक पुरस्कार)।

यशोधर झा

मिथिला वैभव, दर्शन मैथिली पोथीपर 1966 मे पहिल साहित्य अकादमी पुरस्कार मैथिली लेल प्राप्त।

वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' 1912-1987

१९७६- वैद्यनाथ मल्लिक �विधु� (सीतायन, महाकाव्य) लेल मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कार।

भीम झा 1912-

पूर्णिया जिलाक मदनपुर गामक। जन्म ५ नवम्बर १९१२ ई.। बनैलीक श्री श्यामानन्द सिंहक अध्यक्षतामे �नारायण

संकीर्तन महामण्डली�क स्थापना।

राधानाथ दास १९१२-

उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' 1913-1980

जन्म १९१३ ई. मे दरभंगा जिलाक चतरिया ग्राममे भेलन्हि । मृत्यु २४-५-१९८० । संस्कृत शिक्षामे साहित्याचार्य ओ बड़ौदा राजक विद्वत्-परीक्षासँ �साहित्य-रत्न�क उपाधिसँ विभूषित भेलाह । दैनिक आर्यावर्तमे आदिअहिसँ, पश्चात् १९६० सँ मिथिला मिहिरक उप-सम्पादक एवं सह-सम्पादक रूपेँ कार्य करैत १९७७ मे सेवा निवृत भेलाह ।मोहनजी करीब पचास वर्ष साहित्य साधनामे लागल रहलाह ।

विजयानन्द, कुंजरंजन, सुदर्शन, पुण्डरीक, शास्त्री, बामन आदि छद्म नामसँ पत्र-पत्रिकामे विविध विषयपर हिनक लेख सभ प्रकाशित भेल अछि ।मोहन जीक �बाजि उठल मुरली�मे १०१ गोट कविताक संकलन अछि जाहिमे हिनक सुदीर्घ काव्य-आराधनाक विभिन्न विचारधाराक ओ विभिन्न अनुभूतिक सामग्री उपलब्ध अछि । एहि पुस्तकपर मोहन�जीकेँ १९७८ मे साहित्य अकादम् पुरस्कार भेटलन्हि। एहिसँ बहुत पूर्व हिनक �फुलडाली� नामक कविता संग्रह सेहो प्रकाशित भेल छल ।

जयनाथ मिश्र 1913-1985

श्रीकांत ठाकुर "विद्यालंकार"

पञ्जीकार मोदानन्द झा 1914-1998

लब्ध धौत पञ्जीशास्त्र मार्तण्ड पञ्जीकार मोदानन्द झा, शिवनगर, अररिया, पूर्णिया। पिता-स्व. श्री भिखिया झा। गुरु- पञ्जीकार भिखिया झा। पूर्णिया जिलाक बनैली लगक शिवनगर गामक। जन्म २२ सितम्बर १९१४ ई.।सौराठमे अपन मौसा स्व. लूटनझा सँ पंजीशास्त्रक अध्ययन। १९४८-१९५१ ई. धरि दरभंगामे रहि आचार्य रमानाथ झाकेँ पाँजि पढ़ओलनि।शास्त्रार्थ परीक्षा- दरभंगा महाराज कुमार जीवेश्वर सिंहक यज्ञोपवीत संस्कारक अवसर पर महाराजाधिराज(दरभंगा) कामेश्वर सिंह द्वारा आयोजित परीक्षा-1937 ई. जाहिमे मौखिक परीक्षाक मुख्य परीक्षक म.म. डॉ. सर गंगानाथ झा छलाह।

आनन्द झा 1914-1988

टोक्यो हासेगावा, निदेशक मिथिला म्यूजियम, निगाटा

माँगनि खबास 1908-1943 संगीतज्ञ

पचगछियामे जन्म आ अल्प बएसमे मृत्यु। पचगछियाक

रामाश्रय झा 'रामरंग' अभिनव भातखण्डे 1928-2009

	रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंहक शिष्य।	जन्म ११ अगस्त १९२८ ई. तदनुसारभाद्र कृष्णपक्ष एकादशी तिथिकेँ मधुबनी जिलान्तर्गत खजुरा नामक गाममे भेलन्हि। अभिनव गीतांजलि, हुनकर उच्चकोटिक शास्त्र रचना अछि।मिथिलावासी श्री रामरंग राग तीरभुक्ति, राग वैदेही भैरव, आऽ राग विद्यापति कल्याण केर रचना सेहो कएने छथि आऽ मैथिली भाषामे हिनकर खयाल �रंजयति इति रागः� केर अनुरूप अछि।
 रामचतुर मल्लिक ध्रुपद संगीत 1905-1990	 अभयनारायण मल्लिक	 कुमार तारानन्द सिंह, संगीतज्ञ
 संगीताचार्य रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंह	 पंडित परमानन्द चौधरी, संगीतज्ञ	 हृदयनारायण झा

संगीत भाष्कर राजकुमार श्यामानन्द सिंह १९१६-१९९४

मिथिलेश कुमार झा, तबला वादन

नागेश्वर लाल कर्ण, तबला वादक

बाबू साहेब चौधरी 1916-1998

दरभंगा जिलाक दुलारपुर गामक। १९४३ ई. मे जीविकार्थ कलकत्ता अएलाह। नवम कक्षामे स्वराज्य आन्दोलनमे बाझि कए शिक्षाक इतिश्री। कलकत्तामे स्थानीत मैथिल संघमे प्रवेश। कलकत्तामे मैथिली आर्ट प्रेस. ९/१, खिलात घोष लेन, कलकत्ता-७००००६ सँ मैथिली-मिथिला आन्दोलनमे सक्रिय। �कुहेस� आ �चाणक्य� दूटा नाटक। १९७१-७९ धरि �मिथिला दर्शन� आ �मैथिली दर्शन� मैथिली मासिकक सम्पादन।

लक्ष्मण (लखन) झा 1916-2000

मिथिला राज्य अभियानी।

शुद्धदेव झा 'उत्पल' 1916-

गोड्डा जिलाक अलखदत्त-महेनपुरक निवासी। जन्म १६ अक्टूबर १९१६ ई.।

 रामचरित्र पाण्डेय "अणु" १९१७-२०१०	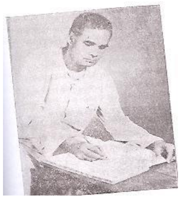 लक्ष्मीनाथ झा मिथिला चित्रकला 1917-1990	 उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' 1917-2002 जन्म स्थान-हरिपुर वकशीटोल, मधुबनी, बिहार । १९६९- उपेन्द्रनाथ झा �व्यास� (दू पत्र, उपन्यास) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित । साहित्य अकादेमीक अनुवाद पुरस्कार प्राप्त । प्रकाशित कृति: कुमार, दू पत्र (उपन्यास), विडंबना, भजना भजले (कथा-संग्रह), पतन संन्यासी, प्रतीक (काव्य), महाभारत (पहिल दू पर्व) आदि।
 मनमोहन झा 1918-2009 जन्म सरिसबमे, अश्रुकण, वीरभोग्या, मिथिलाक	 ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' 1918-1986	 पं. सहदेव झा १९१९-

निशापुरमे।२००९- स्व.मनमोहन झा (गंगापुत्र, कथासंग्रह)पर मृत्योपरांत साहित्य अकादमी पुरस्कार।	जन्म स्थान-बहेड़ा, दरभंगा बिहार । १९७३- ब्रजकिशोर वर्मा �मणिपद्म� (नैका बनिजारा, उपन्यास) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित । उपन्यासकार, कथाकार ओ कवि । प्रकाशित कृति: कोब्रागर्ल, कनकी, अर्द्धनारीश्वर, लोरिक विजय, नैका-बनिजारा, लवहरि-कुशहरि, राय रणपाल, आदिम गुलाम आदि उपन्यास ओ कंठहार (नाटक) आदि।	"मिथिला की धरोहर" पोथी प्रकाशित।
 बुद्धिधारी सिंह रमाकर 1919-1991 जन्म मधुबनीमे 1919 ई. मे भेल । अपन पिता स्व. क्षेमधारी सिंहसँ विभिन्न विषयक शिक्षा ग्रहण कएलन्हि । ई रामकृष्ण कॉलेज, मधुबनीक मैथिली विभागाध्यक्ष छलाह । जतएसँ अवकाश प्राप्त कएलन्हि । बाल्या-वस्थहिसँ ई कविकार्यमे लागल रहलाह अछि । संस्कृत तथा मैथिली दुनू भाषामे हिनक रचना प्रकाशित अछि । यथा�मैथिलीमे �प्रयास� (कथा-संग्रह), �मधुमती�, �अमरबापू� (कविता-	 आद्याचरण झा 1920-	 चन्द्र भानु सिंह 1922- २००४- चन्द्रभानु सिंह (शकुन्तला, महाकाव्य)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।

संग्रह), �शरशय्या� (खंड-काव्य) �स्मृति साहस्री� (महाकाव्य) आदि ।

सुधांशु शेखर चौधरी 1922-1990

जन्म दरभंगाक मिश्रटोलामे 1922 ई. मे भेलन्हि तथा मृत्यु 1990 ई. मे भेलन्हि । किछु दिन विभिन्न जीविकामे रहि पश्चात् साहित्यकारक जीवन प्रारम्भ कएल । किछु दिन �बैदेही�क सम्पादन श्री सुमनजी एवं श्री कृष्णकान्त मिश्रजीक संग कएल तत्पश्चात् 1960 ई. सँ 1982 ई. धरि पटनामे �मिथिला मिहिर��क सफल सम्पादन कएल ।हिनक दू गोट नाट्यकृति-�भफाइत चाहक जिनगी�, लेटाइत आँचर�, तथा �पहिल साँझ� हिनक नाटकक नीक व्यावहारिक अनुभवक परिचायक अछि ।छद्मनामसँ हिनक दू गोट उपन्यास मिहिर� मे प्रकाशित भेल अछि । हिनक उपन्यास ई वतहा संसार� जे मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित भेल आ जाहि पर 1980 क

राम इकबाल सिंह राकेश (१९१२-१९९४)

जन्म १४ जुलाइ १९१२, मृत्यु २७ नवम्बर १९९४,हिनकर मैथिली लोकगीत (संग्रह आ सम्पादन) एकटा लेजेण्डरी पोथी बनि गेल अछि।

जयकान्त मिश्र (१९२२-२००९)

मैथिली साहित्यक एकटा बड़ पैघ विद्वान डॉ. जयकांत मिश्र सन् १९८२ मे इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी आ आधुनिक यूरोपियन भाषा विभागक प्रोफेसर आ हेड पद सँ सेवानिवृत्त भेल छलाह। तकरा बाद ओ चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालयमे भाषा आ समाज विज्ञानक डीन रूपमे कार्य कएलन्हि। स्व.

साहित्य अकादमीक पुरस्कार देल गेल ।		मिश्र अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, इलाहाबादक अध्यक्ष, गंगानाथ रिसर्च इंस्टीट्यूट, इलाहाबादक अवैतनिक सचिव आ सम्पादक, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागक प्रबन्ध विभागक संयोजक आ साहित्य अकादमी, नई दिल्लीक मैथिली प्रतिनिधि आ भाषा सम्पादक रहल छलाह। मैथिली साहित्यक इतिहास, फोक लिटेरेचर ऑफ मिथिला, कीर्तनिया ड्रामा सभक क्रिटिकल एडीशन,लेक्चर्स ऑन थॉमस हार्डी, लेक्चर्स ऑन फोर पोएट्स आ द कॉम्प्लेक्स

स्टाइल इन एंगलिश पोएट्री हिनक लिखित किछु ग्रंथ अछि। हिनकर वृहत मैथिली शब्द कोष मात्र दू खण्ड प्रकाशित भए सकल, जाहिमे देवनागरीक संग मिथिलाक्षर आ फोनेटिक अंग्रेजीमे सेहो मैथिली शब्दक नाम रहए। ३ फरबरी २००९ कँ सात बजे साँझमे हिनकर निधन भऽ गेलन्हि।

उपेन्द्र ठाकुर १९२९-१९९१

History of Mithila, Madhubani Painting,

गोविन्द झा 1923-

जन्मस्थान- इसहपुर, सरिसब पाही, मधुबनी, बिहार । सिद्ध कथाकार, उपन्यासकार, नाटककार, भाषा वैज्ञानिक ओ अनुवादक। साहित्य अकादेमी पुरस्कार, साहित्य अकादेमी

योगानन्द झा 1923-1986

हिनक जन्म मधुबनी जिलाक कोइलख ग्राममे 1923 ई. मे भेलन्हि । मृत्यु 1986 मे भेलनि ।

Studies in Jainism and Buddhism in Mithila आदि पोथी प्रकाशित।	अनुवाद पुरस्कारसँ सम्मानित। बिहार सरकारसँ कामिल बुल्के पुरस्कार, ग्रियर्सन पुरस्कार आदिसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: उपन्यास, नाटक, कथा, कविता, भाषा विज्ञान आदि विभिन्न विधामे अड़तीस टा पोथी प्रकाशित । प्रकाशन: सामाक पौती,नेपाली साहित्यक इतिहास (अनु) आदि । १९९३- गोविन्द झा (सामाक पौती, कथा)पुस्तक लेल सहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित ।१९९३- गोविन्द झा (नेपाली साहित्यक इतिहास- कुमार प्रधान, अंग्रेजी) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। प्रबोध सम्मान 2006 सँ सम्मानित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१० (समग्र योगदान लेल)	अग्रेजीमे एम. ए. कएलाक पश्चात् ई किछु दिन चन्द्रधरी मिथिला कॉलेजमे प्राध्यापक रहलाह । बिहार प्रशासनिक सेवामे 1981 धरि विभिन्न पदपर कार्य कएल । तत्पश्चात्मैथिली अकादमीक निदेशक �84 धरि ।योगानन्द झाजी मैथिली साहित्यमे अपन उपन्यास �भलमानुस� एवं �पवित्रा�क हेतु ख्यात छथि । हिनक नाटक �मुनिक मतिभ्रम� एवं कथा संग्रह �उड़ैत वंशी� यथेष्ट प्रतिष्ठा प्राप्त कएने अछि । एकर अतिरिक्त ई महात्मा गान्धीक आत्मकथाक अनुवाद एवं �आमक जलखरी� नामक एक कथा संग्रहक सम्पादन सेहो कएने छथि ।

रामकृष्ण झा 'किसुन' 1923-1970

आधुनिक धाराक विशिष्ट कवि, कथाकार, चिन्तक । प्रकाशित कृति: आत्मनेपद (कविता संग्रह), मैथिली नवकविता (सम्पादन)।

उमानाथ झा 1923-2009

जन्म:-01-01-1923, मृत्यु 07-12-2009 महरैल, भधुबनी ।भूतपूर्व अङरेजी विभागाध्यक्ष एवं प्रति-कुलपति मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा । रचना:-रेखाचित्र, अतीत (कथा संग्रह); मैथिली नवीन साहित्य, इन्द्र धनुष, विद्यापति गीतशती (सम्पादन)।१९८७- उमानाथ झा (अतीत, कथा) पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।

ज़टाशंकर दास 1923-2006

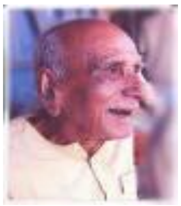

प्रबोध नारायण सिंह 1924-2005

हिन्दी, संस्कृत, मैथिली, पाली एवं फारसीक विद्वान्। मिथिला, मैथिल एवं मैथिलीक ई अनन्य भक्त छथि । कलकत्ता रहि मिथिला दर्शन�, मैथिली कविता�, मैथिली रंगमंच� आदि

मदनेश्वर मिश्र 1924-2004

"एक छलीह महारानी" प्रकाशित।

अमोघ नारायण झा "अमोघ" 1924-

पत्रिकाक प्रकाशनक माध्यमसँ श्री प्रबोधजी मैथिलीक जे सेवा कएल अछि तकर वर्णन थोड़मे सम्भव नहि । अनेक बङला कृतिक ई अनुवाद सेहो कएल अछि ।हिन्दीमे सेहो हिनक �कविता संग्रह� प्रकाशित अछि ।कलकत्ता विश्वविद्यालयमे हिन्दीक पूर्व अध्यक्ष। २००२- डॉ. प्रबोध नारायण सिंह (पतझड़क स्वर- कुर्तुल ऐन हैदर, उर्दू) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।		
मुरलीधर सिंह, ब्रजमोहन ठाकुर, शुभंकर झा, मदनेश्वर मिश्र 1924-2004, ललित नारायण मिश्र, देवनाथ राय	मतिनाथ मिश्र मतंग 1924-	आनन्द मिश्र 1924-2007
डॉ. जयमन्त मिश्र १९२५-२०१०	चन्द्रनाथ मिश्र अमर 1925- जन्म: खोजपुर, मधुबनी । वरिष्ठ कवि, कथाकार-उपन्यासकार । हास्य-व्यंग्यक कवितामे बेजोड़। मैथिलीक लेल	मुक्तिनाथ झा (1926-2009)

जन्म १५-१०-१९२५ मृत्यु ०७-०९-२०१०, गाम-ढंगा-हरिपुर-मजरही।

१९९५- जयमन्त मिश्र (कविता कुसुमांजलि, पद्य) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार- मैथिली।

समर्पित व्यक्तित्व । पांच दर्जनसं बेसी कथा आ विदागरी, वीरकन्या (उपन्यास) जल समाधि (कथा संग्रह) प्रकाशित ।१९८३- चन्द्रनाथ मिश्र �अमर� (मैथिली पत्रकारिताक इतिहास) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित। एम. एल. एकेडमी, लहेरिरियासरायसं शिक्षकक रूपमे अवकाश प्राप्त। आशा दिशा, गुदगुदी, युगचक्र, उनटा पाल आदि कविता संग्रह प्रकाशित। १९९८- चन्द्रनाथ मिश्र �अमर� (परशुरामक बीछल बेरायल कथा- राजशेखर बसु, बांग्ला) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। चन्द्रनाथ मिश्र अमर २०१० मे मैथिली साहित्य लेल **साहित्य अकादेमीक फेलो** (भारत देशक सर्वोच्च साहित्यक पुरस्कार)।

शुभंकर झा 1926-

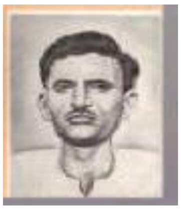

दीनानाथ पाठक 'बन्धु' 1928-1962

अनंत बिहारी लाल दास "इन्दु" 1928-2010

२००७- अनन्त बिहारी लाल दास �इन्दु� (युद्ध आ योद्धा-अगम सिंह गिरि, नेपाली)लेल साहित्य

		अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।
कृष्णकान्त मिश्र १९२८-२०००	जगदानन्द झा 1928-	दुर्गानाथ झा "श्रीश" हिनकर जन्म मधुबनी जिलाक विद्दो गाममे १९२९ ई. मे भेलन्हि। हिन्दी आ मैथिलीमे एम.ए. आ बी.एड. केलाक बाद किछु दिन स्कूलमे अध्यापन, फेर मिल्लत कॉलेज, लहेरियासरायमे मैथिली आ हिन्दी विभागक अध्यक्ष। मैथिली भाषामे पहिल पी.एच. डी.। "श्रीश" जीक मैथिलीमे प्रकाशित रचना अछि- "मैथिली साहित्यक इतिहास", "भुवन भारती" (सम्पादन), "महामत्स्य ओ मनु" (कविता), "नाट्य कथा सार"(सम्पादन), "पुरुषार्थ"(पद्य नाटक) आ

		अनेक कविता, एकांकी आ आलोचनात्मक निबन्ध।
 राजकमल चौधरी 1929-1967 महिषी, सहरसा। रचना:- आदि कथा, आन्दोलन, पाथर फूल (उपन्यास), स्वरगंधा (कविता संग्रह), ललका पाग (कथा संग्रह), कथा पराग (कथा संग्रह सम्पादन)। हिन्दीमे अनेक उपन्यास, कविताक रचना, चौरङ्गी (बङला उपन्यासक हिन्दी रूपान्तर) अत्यन्त प्रसिद्ध।	 विश्वनाथ झा "विषपायी" 1929-2005 "राम सुयश सागर" (मैथिली रामायण) १९८० ई. मे प्रकाशित। २५ जनवरी २००५ कें मृत्यु।	 जयधारी सिंह 1929-2007 समीक्षक, कवि । प्रकाशन: बौद्धगानमे तांत्रिक सिद्धांत, समीक्षा शास्त्रा अदि । रामकृष्ण कॉलेज, मधुबनीमै मैथिली विभागक पूर्व अध्यक्ष ।
 शैलेन्द्र मोहन झा 1929-1994 १९९२- शैलेन्द्र मोहन झा (शरतचन्द्र व्यक्ति आ कलाकार-सुबोधचन्द्र सेन, अंग्रेजी)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।	 विजयनाथ ठाकुर 1929-2008	 रमेशचन्द्र वर्मा 1930-

गोपालजी झा 'गोपेश' 1931-2008

जन्म मधुबनी जिलाक मेहथ गाममे १९३१ ई.मे भेलन्हि।हिनकर रचित �सोन दाइक चिट्ठी�, �गुम भेल ठाढ़ छी�, �एलबम� �आब कहू मन केहन लगैए�, "मखानक पात" प्रकाशित भेल जाहिमे सोनदाइक चिट्ठी बेश लोकप्रिय भेल।२००६ ई.-श्री गोपालजी झा गोपेश, मेंहथ, मधुबनी;यात्री-चेतना पुरस्कार।

विवेकानन्द ठाकुर 1931-

२००५- विवेकानन्द ठाकुर (चानन घन गछिया, पद्य)मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।

ताराकांत मिश्र 1931-

ललित 1932-1983

जन्म स्थान बसैठ चानपुरा मधुबनी, बिहार । प्रसिद्ध कथाकार ओ उपन्यासकार । प्रकाशित कृति: प्रतिनिधि,

मुरारि मधुसूदन ठाकुर 1932-

ताराशंकर बंदोपाध्यायक बंगला उपन्यास "आरोग्य निकेतन"क मैथिली अनुवाद लेल साहित्य अकादमीक अनुवाद पुरस्कार 1999 भेटल छन्हि।

विद्यानारायण ठाकुर 1933-

(कथा संग्रह), पृथ्वी-पुत्र (उपन्यास) आदि।

धूमकेतु 1932-2000

जन्म स्थान कोइलख, मधुबनी, बिहार । प्रसिद्ध कथाकार, उपन्यासकार ओ कवि । प्रकाशित कृति : दू टा कथा संग्रह ओ एक टा उपन्यास ।

राजमोहन झा 1934-

जन्म स्थान कुमरबाजितपुर, वैशाली, बिहार । प्रख्यात कथाकार ओ संपादक । आइ काल्हि परसू (कथा-संग्रह) लेल १९९६ मे साहित्य अकादेमीसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति : एक आदि एकांत, झूठ साँच, एकटा तेसर, अनुलग्नक, आइ काल्हि परसू (कथा संग्रह), गलतीनामा, भनहि विद्यापति, टीप्पणीत्यादि (आलोचना)। �आरम्भ� पत्रिकाक संपादन।प्रबोध सम्मान 2009 सँ सम्मानित।

डॉ. धीरेन्द्र 1934-2004

जन्म स्थान लोहना, मधुबनी, बिहार । प्रसिद्ध कथाकार,उपन्यासकार ओ कवि । प्रकाशित कृति: कुहेस आ किरण, पझाइत घूरक आगि, शतरूपा ओ मनु अपन मन्दिर (कथासंग्रह) हैंगरमे टाँगल कोट, काल्हि ओ आइ (कविता संग्रह) सहित कैक विधामे विभिन्न पोथी।

रमेश नारायण १९३४- २०११

नाम- रमेश नारायण दास, जन्म १५ मार्च १९३४ कें मधुबनीक बहेरा गाममे। पिता- श्री हरिवल्लभ लाल दास। शिक्षा

बाबू श्री सत्यनारायण सिंह आ राघवाचार्य

मायानन्द मिश्र 1934-

हिनक जन्म १७ अगस्त १९३४ ई. कें सुपौल जिलाक

मधेपुर, मधुबनी आ पटनामे। १९६१ ई.सँ १९९४ ई. धरि ए.एन. कॉलेज, पटनामे हिन्दी विभागमे अध्यापन। पाथरक नाव (मैथिली कथा संग्रह, १९७२) प्रकाशित। मृत्यु १२ जनवरी २०११ कँ पटनामे।

बनैनियाँ गाममे भेलनि।भाङ्क लोटा, आगि मोम आ� पाथर आओर चन्द्र-बिन्दु- हिनकर कथा संग्रह सभ छन्हि। बिहाड़ि पात पाथर , मंत्र-पुत्र ,खोता आ� चिडै आ� सूर्यास्त हिनकर उपन्यास सभ अछि॥ दिशांतर हिनकर कविता संग्रह अछि। एकर अतिरिक्त सोने की नैय्या माटी के लोग, प्रथमं शैल पुत्री च,मंत्रपुत्र, पुरोहित आ� स्त्री-धन हिनकर हिन्दीक कृति अछि।१९८८- मायानन्द मिश्र (मंत्रपुत्र, उपन्यास)पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।

प्रबोध सम्मान 2007सँ सम्मानित।

तारानन्द तरुण १९३५-२०११

सोमदेव 1934-

उपन्यासकार ओ कवि ।

साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ

राजनन्दन लाल दास 1934-

सम्मानित । प्रकाशित कृति: चानोदाइ, होटल अनारकली (उपन्यास), काल ध्वनि (कविता संग्रह), चरैवेति (गीति नाट्य) सोम सतसइ (दोहा)।२००२- सोमदेव (सहस्रमुखी चौक पर, पद्य) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार। २००१ ई. - श्री सोमदेव, दरभंगा;यात्री-चेतना पुरस्कार, प्रबोध साहित्य सम्मान २०११।

"कर्णामृतक"क सम्पादन। "चित्रा-विचित्रा" प्रकाशित।

रमानन्द रेणु 1934-2011

जन्म स्थान उसमामठ, दरभंगा, बिहार । वरिष्ठ कवि, कथाकार ओ उपन्यासकार। साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: कचोट, त्रिकोण, अंतहीन आकाश (कथा-संग्रह), दूधफूल (उपन्यास), अंतत:, ओकरे नाम (कविता-संग्रह)। २०००- रमानन्द रेणु (कतेक रास बात, पद्य)लेल साहित्य

कालीकांत झा "बूच" 1934-2009

हिनक जन्म, महान दार्शनिक उदयनाचार्यक कर्मभूमि समस्तीपुर जिलाक करियन ग्राममे 1934 ई. मे भेलनि । पिता स्व. पंडित राजकिशोर झा गामक मध्य विद्यालयक प्रथम प्रधानाध्यापक छलाह । माता स्व. कला देवी गृहिणी छलीह । अंतरस्नातक समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुरसँ कयलाक पश्चात् बिहार

श्याम चन्द्र 1934-

उपन्यास "रूपा दीदी" प्रकाशित। गाम मलंगिया, जिला- मधुबनी।

अकादमी पुरस्कार। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०११ (समग्र योगदान लेल)	सरकारक प्रखंड कर्मचारीक रूपमे सेवा प्रारंभ कयलनि । बालहिं कालसँ कविता लेखनमे विषेश रूचि छल । मैथिली पत्रिका - मिथिला मिहिर, माटि - पानि, भाखा तथा मैथिली अकादमी पटना द्वारा प्रकाशित पत्रिकामे समय - समय पर हिनक रचना प्रकाशित होइत रहलनि । जीवनक विविध विधाकेँ अपन कविता एवं गीत प्रस्तुत कयलनि । साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा प्रकाशित मैथिली कथाक विकास (संपादक डाॅ बासुकीनाथ झा) मे हास्य कथा कारक सूची मे डाॅ विद्यापति झा हिनक रचना ��धर्म शास्त्राचार्यक उल्लेख कयलनि । मैथिली अकादमी पटना एवं मिथिला मिहिर द्वारा प्रशंसा पत्र भेजल जाइत छल ।श्रृंगाररस एवं हास्य रसक संग-संग विचार मूलक कविताक रचना सेहो कयलनि । डाॅ दुर्गानाथ झा श्रीश संकलित मैथिली साहित्यक इतिहासमे कविक रूपमे हिनक उल्लेख कएल गेल अछि । **प्रकाशित**	

कृति (मृत्योपरांत)

: कलानिधि- कविता-संग्रह।

डोरीलाल शर्मा "श्रोत्रिय" १९३५-

"मिथिला की पाण्डित्य परम्परा" पोथी प्रकाशित।

रामभद्र, धनुषा, नेपाल १९३५-२०२०

साहित्य तथा अन्यान्य क्षेत्रक कतोक सफल व्यक्तिसभ अपन प्रेरणास्रोत आ पथ-प्रदर्शक मानैत छथि । मैथिली साहित्य-क्षेत्रमे हिनक परिचयक मादे एतबाए कहब पर्याप्त होएत जे मैथिलीक मूर्द्धन्य साहित्यकार डा. धीरेन्द्र हिनका मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ कथाकार मानैत छथि ।हिनक कथामे प्रतीकात्मकताक अदभुत प्रयोगहिटा नहि, अपितु एकटा आदर्श कथाक समस्त वैशिष्टसभविद्यमान रहैत अछि । कथाकारक अतिरिक्त ई उत्कृष्ट समालोचक, नाटककार आ कवि सेहो छथि । नेपालमे मैथिलीक पहिल मोनोड्रामा लिखबाक श्रेय सेहो हिनका जाइत छनि ।सामाजिक कुरीतिसभकँ कुशलतासँ चित्रण करबामे, चिन्तनीय बनएबामे आ मन-मस्तिष्कपर अमिट छाप छोड़बामे रामभद्र सिद्धहस्त छथि । धनुषा जिलाक कुर्था गाममे जनमल रामभद्रक पूर्ण नाम रामभद्र कर्ण छनि । अग्डरेजी विषयक अवकाशप्राप्त शिक्षक रामभद्र व्याकरण, पाठयपुस्तक आ सहायक

केदारनाथ चौधरी (१९३६-)

मैथिलीक पहिल फिल्म 'ममता गाबय गीत' केर निर्माता द्वयमेसँ एकटा निर्माता छथि केदारनाथ चौधरी आ दोसर मदनमोहन दास। बादमे आर्थिक मजबूरीवश तेसर सहनिर्माता भेलखिन उदयभानु सिंह।
माता-स्व. कुसुमपरी देवी,
पिता- स्व. किशोरी चौधरी,
जन्म: ०३/०१/१९३६

ग्रा.+पत्रा. नेहरा (दरभंगा),
अन्य पारिवारिक सदस्य-
पत्नी-श्रीमती कुमुद चौधरी,
संतान- प्रथम पुत्री-श्रीमती किरण झा, द्वितीय पुत्री-श्रीमती अर्चना चौधरी, शिक्षा-१९५८ ई.मे अर्थशास्त्रमे स्नातकोत्तर, १९५९ ई.मे लॉ। १९६९ ई.मे कैलिफोर्निया

	पुस्तकसभ लिखबाक काजमे निरन्तर सक्रिय छथि।	वि.वि.सँ अर्थस्थास्त्र मे स्नातकोत्तर, १९७१ ई.मे मार्केटिंग एंड डिस्ट्रीब्यूशन विषयमे गोल्डेन गेट यूनिवर्सिटी, सानफ्रांसिस्को, USA सँ एम.बी.ए., १९७८ मे भारत आगमन। १९८१-८६ क बीच तेहरान आ फ्रैंकफुर्तमे। फेर बम्बई, पुणे होइत रिटायरमेंटक बाद २००० सँ लहेरियासराय, दरभंगामे निवास।६ टा उपन्यास- चमेलीरानी २००४, करार २००६, माहुर २००८, अबारा नहितन २०१२, हीना २०१३, अयना २०१८. सम्मान- १) विदेह साहित्य सम्मान, बर्ख-२०१३ (झारखंड मैथिली मंच, राँची द्वारा), २) प्रबोध साहित्य सम्मान, बर्ख-२०१६ आ ३) केदार सम्मान, बर्ख-२०१६,'अबारा नहितन' लेल।
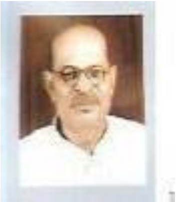 जीवकांत 1936-	देवकांत झा 1936-	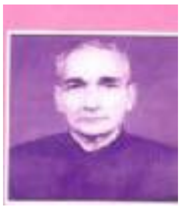 डॉ अमरेश पाठक 1936-

नाम- जीवकान्त झा,पिता- गुणानन्द झा, माता-महेश्वरी देवी, जन्म-२५.०७.१९३६ अभुआढ़, जिला-सुपौल। नौकरी- विज्ञान शिक्षक (उ.वि.खजौली १९५७-८१), हिन्दी शिक्षक (उ.वि.डेओढ़ एवं उ.वि.पोखराम १९८१-९८)।पहिल रचना-इजोड़िया आ टिटही (कविता, जनवरी १९६५ मिथिला मिहिर)।पहिल छपल पोथी- दू कुहेसक बाट (उपन्यास १९६८)।नूतन पोथी-खिखिरक बीअरि (२००७ बाल पद्य कथा), अठन्नी खसलइ वनमे (पद्य-कथा संग्रह) आ पंजरि प्रेम प्रकासिया (जीवन-वृत्तक अंश)।पुरस्कार-साहित्य अकादेमी 1998 तकै अछि चिड़ै, पद्य , किरण सम्मान (१९९८), वैदेही सम्मान (१९८५)।प्रकाशित पोथी-

कविता संग्रह:नाचू हे पृथ्वी (७१), धार नहि होइछ मुक्त (९१), तकैत अछि चिड़ै (९५), खाँड़ो (१९९६), पानिमे जोगने अछि बस्ती (९८), फुनगी नीलाकाशमे (२०००), गाछ झूल-झूल (२००४), छाह

हिनक जन्म सीतामढ़ी जिलाक अन्तर्गत सामारि ग्राममे १९३६ मे भेलन्हि । १९५७ मे पटना विश्वविद्यालयसँ मैथिलीक एम. ए. परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे प्रथमस्थान पाओल । १९५७ सँ १९६० धरि रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनीमे व्याख्याता रूपेँ तकरा बाद पटना विश्वविद्यालयमे व्याख्याता रूपमे कार्य करए लगलाह । पटना विश्वविद्यालयमे मैथिली विभागाध्यक्ष रूपेँ । मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन� शोध प्रबन्धपर हिनका बिहार विश्व-विद्यालय द्वारा डि. लिट्क उपाधि भेटलन्हि । ई शोध प्रबन्ध पुस्तकाकार रूपेँ सेहो प्रकाशित भेल अछि बिहार राष्ट्रभाषा परिषदक विद्यापति ग्रन्थावलीक सम्पादक मण्डलक सदस्य । हिनक अन्य प्रकाशित रचना अछि �निबन्ध संकलन� । एकरा छोड़ि विभिन्न पत्र-पत्रिकामे हिनक कतेको

सोहाओन (२००६), खिखिरिक बीअरि (२००७)

कथा-संग्रह:एकसरि ठाढ़ि कदम तर रे (७२), सूर्य गलि रहल अछि (७५), वस्तु (८३), करमी झील (९८)

उपन्यास:दू कुहेसक बाट(६८), पनिपत(७७), नहि, कतहु नहि (७६), पीयर गुलाब छल (७१), अगिनबान (८१)

हिन्दी अनुवाद- निशान्त की चिड़िया (तकैत अछि चिड़ै, साहित्य अकादमी, दिल्ली २००३)।

प्रबोध सम्मान 2010 सँ सम्मानित।

निबन्ध प्रकाशित छन्हि । मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित कथा-संग्रहक इहो एक सम्पादक छथि । ई अधिकतर उच्च स्तरीय आलोचनात्मक निबन्ध लिखैत छथि । २०००- डॉ. अमरेश पाठक, (तमस- भीष्म साहनी, हिन्दी)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।

बलराम 1936-2008

जन्म स्थान पचही, मधुबनी, बिहार । विशिष्ट कथाकार । प्रकाशित

मैथिलीपुत्र प्रदीप 1936-

ग्राम- कथवार, दरभंगा। प्रशिक्षित एम.ए., साहित्य रत्न, नवीन शास्त्री, पंचाग्नि साधक। हिनकर रचित "जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर" आ "सभक सुधि अहाँ लए छी

रामदेव झा 1936-

कथाकार, समीक्षक, अनुवादक, ग्रंथ सम्पादक । साहित्य अकादेमीक मूल एवं अनुवाद पुरस्कार प्राप्त कर्ता ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगाक मैथिली विभागक

कृति : दकचल देबाल (कथा-संग्रह)।	हे अम्बे, हमरा किए बिसरै छी यै" मिथिलामे लेजेंड भए गेल अछि।	पूर्व प्राचार्य । प्रकाशन: पसिझैत पाथर, (अनु.) आदि । १९९१- रामदेव झा (पसिझैत पाथर, एकांकी)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित ।१९९४- रामदेव झा (सगाइ- राजिन्दर सिंह बेदी, उर्दू) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।
 रवीन्द्र नाथ ठाकुर 1936- जन्म पूर्णिआ जिलाक धमदाहा ग्राममे 1936 ई. मे भेलन्हि । नेने अवस्थासँ गीत गएबामे एवं कविता लिखबामे विशेष रुचि । कोनो मंच पर ठाढ़ भेला पर ई सहजहि श्रीताकेँ आह्लादित करैत छथि । हिनक सात गोट मैथिलीक गीत संग्रह, एक मिनी महाकाव्य, एक प्रयोगधर्मी काव्य, एक उपन्यास, एक नाटक �एक राति� एवं एक हिन्दी नाटक, प्रकाशित भेल छन्हि ।	 बिनोद बिहारी वर्मा 1937-2003 मैथिल करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण, बलानक बोनिहार ओ पल्लवी तथा अन्य कथा (कथा संग्रह)	 वीरेन्द्र मल्लिक 1937- जन्म- 3 जनबरी 1937 ई. परसौनी, मधुबनीमे।कवि, सम्पादक, समीक्षक । आखर, अगनिपत्रक सम्पादन ।अग्नि-शिखा (कविता संग्रह)।

कीर्तिनारायण मिश्र 1937-

जन्म १७ जुलाई १९३७ ई. कें ग्राम शोकहारा (बरौनी), जिला बेगूसरायमे भेलन्हि। हुनकर प्रकाशित कृति अछि सीमान्त,महानगर (दीर्घ कविता), हम स्तवन नहि लिखब, ध्वस्त होइत शांति स्तूप (एहि पोथीपर साहित्य अकादमी 1997 पुरस्कार), आदमीकें जोहैत (कविता संग्रह)। संस्मरण-अपन एकांतमे, स्मृति यात्रा, पत्रक दर्पणमे। सम्पादन- आखर मासिक पत्रिका, आधुनिक मैथिली साहित्य, '63, राजकमल जीवन आ साहित्य, '68, कथा-संकलन- काल कोठरी। आलोचना- अर्थांतर-2004

गौरीकांत चौधरीकांत 1937-2001

युगल किशोर मिश्र १९३८-२००७

मैथिली शब्दकोष।

प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' 1938-

ग्राम+पोस्ट- हसनपुर, जिला-समस्तीपुर।मैथिलीमे १.नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास(विराटनगर,१९७२ई.), २.ब्रह्मग्राम(रिपोर्ताज दरभंगा १९७२ ई.), ३.�मैथिली� त्रैमासिकक

महेश्वरनाथ मल्लिक 1938-

परशुराम झा १९३८ -

गाम- मेंहथ (मधुबनी), कृति- डाइमेन्शन्स ऑफ पीस इन

सम्पादन (विराटनगर,नेपाल १९७०-७३ई.), ४.मैथिलीक नेनागीत (पटना, १९८८ ई.), ५.नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्य (पटना, १९९८ ई.), ६. प्रेमचन्द चयनित कथा, भाग- १ आऽ २ (अनुवाद), ७. वाल्मीकिक देशमे (महनार, २००५ ई.)।२००४- डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह �मौन� (प्रेमचन्द की कहानी-प्रेमचन्द, हिन्दी) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।

इन्गलिश ड्रामा,क्रिश्चियन पोएटिक ड्रामा।

कुलानन्द मिश्र 1940-2000

जन्म पकड़ी कोठी, सीतामढ़ी, बिहार। सुविख्यात कवि,, संपादक, समालोचक। प्रकाशित कृति- तावत एतबे, भोरक प्रतीक्षामे (कविता संग्रह), भारतक भाषा सर्वेक्षण, पारो, राजकमल चौधरी की ग्यारह कहानियाँ (अनुवाद)।

बिलट पासवान 'विहंगम' 1940-

जन्म मधुबनी जिलाक एकहत्था ग्राममे १९४० ई. मे भेलन्हि।

फजलुर रहमान हासमी 1940-2011

जन्म-पटना जिलाक बराह गाममे। वृत्ति अध्यापक। हिन्दी कविता संग्रह "रश्मि राशि" आ मैथिली कविता संग्रह "निर्मोही" प्रकाशित। १९९६मे अबुलकलाम आजाद- अब्दुलकवी देसनवी, उर्दूसँ मैथिली अनुवादपर साहित्य अकादमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार।

गुणनाथ झा

गुणनाथ झा "लोक मञ्च" मैथिली नाट्य पत्रिकाक संचालन- सम्पादन केने छथि। मैथिलीमे आधुनिक नाटकक प्रणयन। हुनकर नाटक सभ अछि:

मधुयामिनी: एकाङ्क नाट्य शैलीमे दूटा पात्र, पुरुष संयुक्त परिवारक पक्ष लेनिहार आ स्त्री तकर विरोधी।

पाथेय: एकाङ्क नाट्य शैलीमे रचित, मुदा पूर्णाङ्कक सभ विशेषता ऐमे भेटत। मुख्य अभिनेता मिथिलाक अधोगतिसँ दुखी भऽ गामकें कर्मस्थली बनबैत छथि, स्वजन विरोध करै छथि।

लाल-बुझक्कर: एकाङ्क नाट्य शैलीमे रचित। दाही रौदीसँ झमारल निम्न आ मध्य-निम्न वर्ग स्वतंत्रताक पहिनहियो आ बादो जीविकोपार्जन लेल प्रवास करबा लेल अभिशप्त छथि।

सातम चरित्र: एकाङ्क नाट्य शैलीमे रचित। मैथिली रंगमंचपर महिला अभिनेत्रीक अभाव, सातम चरित्रक प्रतीक्षामे पूर्वाभ्यास खतम भऽ जाइत अछि।

शेष नत्रि: आधुनिक सामाजिक पूर्णाङ्क नाटक। पिता-माताक मृत्युक बाद अग्रजक अनुजक प्रति पितृवत व्यवहार।

प्रभास कुमार चौधरी 1941-1998

गाम- पिंडारुछ, जिला- दरभंगा ।प्रख्यात कथाकार ओ उपन्यासकार । प्रभासक प्रकाशित कृति : कथा-प्रभास, प्रभासक कथा, नव घर उठय पुरान घर खसय, दिदवल (कथासंग्रह), अभिशप्त, युगपुरुष, हमरा लग रहब, नवारम्भ, राजा पोखरिमे कतेक मछरी (उपन्यास) । विभिन्न महत्वपूर्ण पत्रिकाक सम्पादन । त्रैमासिक कथा गोष्ठी 'सगर राति दीप जरय' केर प्रारम्भ।१९९०- प्रभास कुमार चौधरी (प्रभासक कथा, कथा) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित ।

साकेतानन्द 1940-

वरिष्ठ कथाकार, गणनायक (कथा-संग्रह) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: मैथिली कथा साहित्यमे 1962 स� सक्रिय । गोडेक चालिस_पचास टा कथा, रिपोर्ताज. संस्मरण, या त्रा_विवरण मैथिलीमे प्रकाशित अधिकांश पत्र_पत्रिकामे छपल । पहिल मैथिली कथा �ग्लेसियर� 1962मे �मिथिलामिहिर�मे प्रकाशित । हिन्दियोमे दू दर्जन कथा आदि प्रकाशित । सन 99मे छपल पहिल कथा_संग्रह �गणनायक� के ओही वर्ष �साहित्य अकादमी पुरस्कार। पैघ बान्ध� स� अबैबला विपत्तिके रेखांकित करैत, पर्यावरण के कथा वस्तु बना क� राजकमल प्रकाशन स� प्रकाशित एवं अत्यंत चर्चित

आजुक लोक: पूर्णाङ्क नाटक। विषय निम्नमध्यवर्गीय बेरोजगारी आ बियाहक दायित्वक बोझ।

जय मैथिली: पूर्णाङ्क नाटक। मिथिलाक भाषिक-सांस्कृतिक समस्या एकर कथावस्तु अछि।

महाकवि विद्यापति: विद्यापतिक नव विश्लेषण।

उपन्यास (�डौकूमेंट्री फिक्शन�) �सर्वस्वांत� ।आकाशवाणीक राष्ट्रीय कार्यक्रममे प्रसारित दू टा उल्लेखनीय वृत्त रूपक_ �महानन्दा अभयारण्य� पर आधारित �जंगल बोलता है� एवं झारखंड के ग्रामीण क्षेत्रक ज्वलंत डाइनक समस्या पर आधारित वृत्तरूपक � नैना जोगन � चर्चित एवं प्रसिद्ध ।

गंगेश गुंजन 1942-

जन्म स्थान- पिलखबाड़, मधुबनी।श्री गंगेश गुंजन मैथिलीक प्रथम चौबटिया नाटक बुधिबधियाक लेखक छथि आ हिनका उचितवक्ता (कथा संग्रह) क लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल छन्हि। एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हम एकटा मिथ्या परिचय, लोक सुनू (कविता

प्रेमशंकर सिंह 1942-

ग्राम+पोस्ट- जोगियारा, थाना- जाले, जिला- दरभंगा।मौलिक मैथिली: १.मैथिली नाटक ओ रंगमंच,मैथिली अकादमी, पटना, १९७८ २.मैथिली नाटक परिचय, मैथिली अकादमी, पटना, १९८१ ३.पुरुषार्थ ओ विद्यापति, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर, १९८६ ४.मिथिलाक विभूति जीवन झा, मैथिली अकादमी, पटना, १९८७५.नाट्यान्वाचय, शेखर प्रकाशन, पटना २००२ ६.आधुनिक मैथिली साहित्यमे हास्य-व्यंग्य, मैथिली अकादमी, पटना, २००४ ७.प्रपाणिका, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००५, ८.ईक्षण, ऋचा प्रकाशन भागलपुर २००८ ९.युगसंधिक प्रतिमान, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर २००८ १०.चेतना समिति ओ

मार्कण्डेय प्रवासी 1942-2010

जन्म ग्राम: गरुआर, जिला: समस्तीपुर । प्रकाशित कृति: अगस्त्यायिनी (महाकाव्य); एतदर्थ (कविता संग्रह), अक्षर चेतना (काव्य संग्रह)। अभियान, हम कालिदास (उपन्यास)। �अगस्त्यायिनी� लेल १९८१मे

संग्रह), अन्हार- इजोत (कथा संग्रह), पहिल लोक (उपन्यास), आइ भोर (नाटक)प्रकाशित। हिन्दीमे मिथिलांचल की लोक कथाएँ, मणिपद्मक नैका- बनिजाराक मैथिलीसँ हिन्दी अनुवाद आ शब्द तैयार है (कविता संग्रह)।१९९४- गंगेश गुंजन (उचितवक्ता, कथा)पुस्तक लेल सहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित ।

नाट्यमंच, चेतना समिति, पटना २००८। २००९ ई.-श्री प्रेमशंकर सिंह, जोगियारा, दरभंगा यात्री-चेतना पुरस्कार।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त।

देवेन्द्र झा १९४३-

गाम- चानपुरा (मधुबनी), कृति- विद्यापतिक श्रृंगारिक पदक काव्यशास्त्रीय अध्ययन, लालदास, सुधाकर झा "शास्त्री", अनुभव, बदलि जाइछ घरे टा।

डॉ. भीमनाथ झा 1945-

जन्म:कोइलख, मधुबनी, बिहार । प्रखर कवि, समालोचक, प्राध्यापक। �विविधा�निबन्ध पुस्तक लेल सन् १९९२मे सहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: त्रिधारा, वीणा, की फुरैए की नहि, नाम तँ थिक ओएह (कविता संकलन), परिचायिका, सीताराम झा, कवि चूड़ामणिक काव्य साधना, विविधा

महेन्द्र मलंगिया 1946-

गाम- मलंगिया, जिला- मधुबनी । मैथिलीक सुपरिचित नाटककार, रंग निर्देशक एवं मैलोरंगक संस्थापक अध्यक्ष । लोक साहित्य पर गंभीर शोध आलेख । मैथिलीमे 13टा नाटक, 19टा एकांकी, 14टा नुक्कड़ आ 10टा रेडियो नाटक प्रकाशित आ आकाशवाणी सँ

	(निबंध, आलोचना),टावर चौकसँ आदि ।	प्रसारित । सीनियर फेलोशिप (भारत सरकार), इंटरनेशनल थिएटर इंस्टिच्यूट (नेपाल), प्रबोध साहित्य सम्मान आदि सँ सम्मानित । संप्रति ज्योतिरीश्वर लिखित मैथिलीक प्रथम पुस्तक वर्णरत्नाकर पर शोध कार्य । श्री महेन्द्र मलगियाक जन्म २० जनबरी १९४६ मे मधुबनी जिलाक मलंगिया गाममे भेलन्हि। मलंगियाजी मैथिली हिन्दी, अंग्रेजी आ नेपाली भाषाक जानकार आ थियेटर शिक्षण, पटकथा लेखन आ तत्सम्बन्धी शोधक फ्रीलान्स शिक्षक छथि।२००२ ई.- श्री महेन्द्र मलंगिया, मलंगिया;यात्री-चेतना पुरस्कार। प्रबोध सम्मान 2005 सँ सम्मानित।
 डॉ राम दयाल राकेश, सर्लाही, नेपाल 1942-	 उपेन्द्र दोषी 1943-2001	 उदयचन्द्र झा "विनोद" 1943-

मैथिली मातृभाषा, हिन्दीक प्राध्यापक आ नेपालीक लेखक ई तीनू भाषा �राकेश�क व्यक्तित्वमे एना ने मिझराएल छैक जे कोनहुसँ हिनका भिन्न नहि कएल जा सकैत अछि । ई विशेषत: नेपालीमे लिखैत छथि, मुदा लेखनक विषय मूलत: मैथिलीए संस्कृति रहैत छनि । ओना मैथिली, हिन्दी आ अङ्ग्रेजीमे सेहो ई अनेक रचना कएने छथि ।नेपालक राजकीय-प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक सदस्य �राकेश� दिल्ली विश्वविद्यालयसँ पीएचडी आ अमेरिकास्थित इण्डियाना यूनिभर्सिटीसँ पोस्ट डाक्टरल रिसर्च कएने छथि । डा. �राकेश�क जन्म २५ जुलाइ १९४२ ई. कऽ सर्लाही जिलाक सिसौटियामे भेल छनि । नेपाली, मैथिली, हिन्दी आ अङ्ग्रेजीमे मौलिक, सम्पादित आ अनूदित कऽ करीब दू दर्जन पोथी प्रकाशित , दर्जनभरि देशक भ्रमण सेहो कएने छथि । नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्यता- श्री राम दयाल राकेश (1999)।

जन्म स्थान रामपुर-कोरिगामा, दरभंगा । कवि-कथाकार, गीत-गजलकार । प्रकाशित कृति: यंत्रणाक क्षणमे (कविता संग्रह)। हिन्दीमे अनेक पोथी प्रकाशित। ओड़ियासँ मैथिली अनुवाद हेतु मृत्युपरान्त साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत। २००३- उपेन्द दोषी (कथा कहिनी- मनोज दास, उड़िया) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।

जन्म 5 अप्रैल 1943 ई.। गाम- रहिका, मधुबनी । जन्म-ग्राम- दुलहा, मधुबनी । प्रकाशित कृति: संक्रान्ति, मौसम अयला पर, एहना स्थितिमे, भरि देह गौरा, एहि जनपदमे, दोहा तीन सय दू, कहलनि पत्नी, सहरजमीन, अपक्ष, प्रश्न वाचक (कविता-संग्रह), धूरी (सहयोगी कविता संग्रह); जाँत (कथा संग्रह), उदास गाछक वसंत (नाटक)। �माटि पानि�क वरेण्य सम्पादक।२००५ ई.-श्री उदय चन्द्र झा �विनोद�, रहिका, मधुबनी;यात्री-चेतना पुरस्कार।

रेवती रमण लाल, जनकपुर 1943-

मंत्रेश्वर झा 1944-

जन्म ६ जनवरी १९४४ ई.ग्राम-लालगंज, जिला-मधुबनीमे। प्रकाशित कृति: खाधि, अन्चिनहार गाम, बहसल रातिक

रत्नेश्वर मिश्र 1945-

अनुवादक, निबंधकार । प्रकाशन: तमिल साहित्यक इतिहास,भवभूति (दुनू अनुवाद)।

इजोत (कविता संग्रह); एक बटे दू (कथा संग्रह), ओझा लेखे गाम बताह (ललित निबन्ध)। मैथिली कथा संग्रहक हिन्दी अनुवाद �कुंडली� नामसँ प्रकाशित। दि फूल्स पैराडाइज (अंग्रेजीमे ललित निबन्ध)। २००८ ई.-श्री मंत्रेश्वर झा, लालगंज,मधुबनी यात्री-चेतना पुरस्कार। २००८- मंत्रेश्वर झा (कतेक डारि पर, आत्मकथा) पर साहित्य अकादमी पुरस्कार।

जगदीश प्रसाद मंडल

गाम-बेरमा, तमुरिया, जिला-मधुबनी। एम.ए.।कथाकार (गामक जिनगी-कथा संग्रह आ तरेगण- बाल-प्रेरक लघुकथा संग्रह), नाटककार(मिथिलाक बेटी- नाटक), उपन्यासकार(मौलाइल गाछक फूल, जीवन संघर्ष, जीवन मरण, उत्थान-पतन, जिनगीक जीत- उपन्यास)। मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर कथामे गामक लोकक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी

राज

महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिंह 1858-1898

पुरस्कार २०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (गामक जिनगी, कथा संग्रह)।मैथिली उपन्यास 'पंगु' लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार २०२१		
 महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह 1860-1929	 महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह 1907-1962	 सर हरगोविन्द मिश्र, अलीगढ़ आ कामेश्वर सिंह
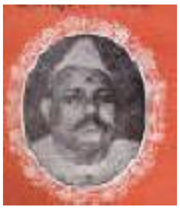 बिनोदानन्द झा 1895-1971	 ललित नारायण मिश्र 1922-1975	 डॉ. रामबरन यादव, नेपाल राष्ट्रपति
 स्वर्गीय विन्ध्येश्वरी प्रसाद मंडल, राजनेता 1919-1982	 भूपेन्द्र नारायण मण्डल	 कर्पूरी ठाकुर 1921-1988

रामविलास पासवान १९४६-

जन्म ५ जुलाइ १९४६, गाम- शहरबन्नी, जिला खगड़िया। भारतीय राजनीतिज्ञ।

राम लषण राम "रमण"

भोगेन्द्र झा

चतुरानन मिश्र

रमाकांत मिश्र

रमानाथ मिश्र "मिहिर"

"मैथिली मुहावरा एवम् लोकोक्ति प्रकाश" प्रकाशित।

गजेन्द्र नारायण चौधरी, पत्रकार 1929-2008

मोहन भारद्वाज 1943-

गाम- नवानी, जिला- मधुबनी । मैथिलीक प्रखर समालोचक।२००७ ई.-श्री आनन्द मोहन झा, भारद्वाज, नवानी, मधुबनी;यात्री-

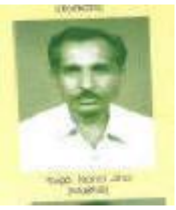

योगानन्द झा 1955-

२००५- डॉ. योगानन्द झा (बिहारक लोककथा- पी.सी.राय चौधरी, अंग्रेजी)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद

	चेतना पुरस्कार। प्रबोध सम्मान 2008 सँ सम्मानित।	पुरस्कार। **प्रकाशित कृति**: लोकजीवन ओ लोक साहित्य (निबन्ध) 1986, परिणीता (कथाकव्यांश) 1987, फकीर मोहन सेनापति (अनुवाद) 2000, आलेख सञ्चयन (निबन्ध) 2002, बिहारक लोककथा (अनुवाद) 2003, स्नेहलता (विनिबन्ध) 2006, मैथिली पत्रकारिताकें सौ वर्ष (निबन्ध) 2006, गहबरगीत (निबन्ध) 2007, लोक-साहित्य ओ शब्द-सम्पदा (निबन्ध) 2007, मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली (शोध-ग्रन्थ) 2009
 हीरानन्द झा "शास्त्री" ,पत्रकार	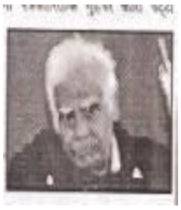 दीनानाथ झा, पत्रकार	 नरेन्द्र झा, अर्थशास्त्र-पत्रकार "विकास ओ अर्थतंत्र" प्रकाशित।

प्रेमशंकर झा, पत्रकार

शरदिन्दु चौधरी, पत्रकार

राजेश्वर झा (१९२३-१९७७)

जन्म- सहरसा जिलाक रसुआर गाम (आब सुपौल जिला)।

कृति- मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास, अवहट्ठ: उद्भव ओ विकास, मैथिली साहित्यक आदिकाल, विद्यापतिक संगीतमे वर्णित नायक-नायिका भेद एवं राग-रागिनी वर्गीकरण।

महाकवि विद्यापति नाटक, शास्त्रार्थ नाटक, कन्दर्पीघाट नाटक, एकादशी, विद्याधर-कथा, उर्वशी, धर्मव्याध- कथा, मेनका।

एस.एन.सत्यार्थी

मिथिलाक कला आ

शिल्पकलापर लेखन।

राधाकृष्ण चौधरी, इतिहासकार 1921-1985

मिथिलाक इतिहास, A Survey of Maithili Literature,

THE POLITICAL AND CULTURALHERITAGE OF

MITHILA प्रकाशित।

प्रो. रामशरण शर्मा १९२०-२०११

विजयकान्त मिश्र इतिहासकार 1927-1994

डॉ. विजयकांत मिश्रक जन्म १० अगस्त १९२७ मंगरौनी गाम - जे नव्य न्याय आ तांत्रिक साधनाक जन्म-स्थली अछि- (जिला मधुबनी) मे भेलन्हि। ओ 1948 मे प्राचीन भारतीय इतिहास आ संस्कृति विषयमे एलाहाबाद विश्वविद्यालयसँ सनात्तकोत्तर उपाधि कएलाक बाद कतेक बरख धरि बिहार सरकार आ पटना विश्वद्यालयसँ सम्बद्ध रहलाह आ 1957 ई. सँ भारतीय पुरात्तत्व विभागमे काज कएलन्हि आ ओकर शिशुपालगढ़, कौशाम्बी, वैशाली, हस्तिनापुर, कुम्हरार, पाटलिपुत्र, करियन, सोनपुर, बिलावली, नालन्दा, राजगीर, चन्द्रवल्ली, आ हम्पी खुदाइमे विभिना भूमिकामे भाग लेलन्हि।हिनकर लिखल-सम्पादित पोथी सभमे अछि: 1.वैशाली,1950 2.कुम्हरार एक्सकेवेशंस: 1950-1957 3.पुरातत्व की दृष्टिमे वैशाली 4.नागेश भट्टाज पारिभाषेन्दुशेखर 5.मिथिला आर्ट एण्ड

द्विजेन्द्र नारायण झा, इतिहासकार

सुरेश्वर झा, राजनीति विज्ञान

२००१- सुरेश्वर झा (अन्तरिक्षमे विस्फोट- जयन्त विष्णु नार्लीकर, मराठी)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।

आर्किटेक्चर (सम्पादित) 6.कल्चरल हेरिटेज ऑफ मिथिला 7.श्रृंगार भजनावली- एक अध्ययन 8.क्षेत्र पुरातत्वविज्ञान- 9.पुरातत्व शब्दावली।		
 भागीरथ लाल दास भारतक कएक देशमे राजदूत रहल छथि आ जी.ए.टी.टी. मे भारतक प्रतिनिधि सेहो छलाह।	 लक्ष्मीकान्त झा रिजर्व बैंक गवर्नर 1913-1988	 एन. एन. झा डिप्लोमेट
 कामेन्द्रनाथ झा "अमल" 1938- जन्म- 4 जनवरी 1938, गाम कोइलख (मधुबनी)। ग्रिभांस (कथासंग्रह) प्रकाशित।	 भाग्यनारायण झा 1941-	 रमाकांत राय "रमा" 1947 जन्म- भादो पूर्णिमा सम्वत् 2003, प्रथम रचना- बटुक, बाल मासिक प्रयाग, कथा विशेषांक द्वितीय भागमे 1964ई., प्रकाशित कृति(क) तीनटा बाबाजी- (रूसीसँ मैथिलीमे मैथिलीमे टाल्स्टायक कथाक अनुवाद- 1967ई.मे, (ख)

फूलपात, कविता संग्रह 1978, (ग) भांगक गोला (2004 ई.मे), (घ) कटैत पाँखि: हँसैत आँखि , कथा संग्रह-2005, शीघ्र प्रकाश्य- कृष्णकान्त मिश्र (विनिबन्ध) साहित्य अकादेमी नई दिल्ली। प्राय: डेढ़ सए रचना (कथा-निबन्ध कविता) मैथिली हिन्दीक पत्र-पत्रिका, आकाशवाणी एवं दूरदर्शनसँ प्रकाशित/ प्रसारित। साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कवि सम्मेलनक आयोजनक क्रममे रेलक चपेटमे पड़िदहिना पएर छाबा धरिगमा विकलांग। सेवा निवृत अध्यापक (उच्च विद्यालय) सम्पर्क- श्री रमानिवास, मानाराय टोल पो. नरहन (समस्तीपुर)।

प्रोफेसर महेन्द्र 1947-

जन्म: भेलाही, सुपौल, बिहार ।

प्रसिद्ध कवि, कथाकार, आलोचक

महेन्द्र 1944-2009

सुभाषचन्द्र यादव 1948-

। वृत्ति: भू.ना. विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर केन्द्र, सहरसामे मैथिली विभागाध्यक्ष। प्रकाशित कृति साहित्य अकादेमीसँ प्राकाशित मोनोग्राफ शैलेन्द्र मोहन झा । सहयोगी संकलन- संकल्प ।�राजकमल जयन्ती प्रसंगक संपादन।	जन्म मधुबनी जिलाक जमसम गाममे। प्रसिद्ध मैथिली गीतकार आ गायक।	जन्म ०५ मार्च १९४८, मातृक दीवानगंज, सुपौलमे। पैतृक स्थान: बलबा-मेनाही, सुपौल।घरदेखिया (मैथिली कथा-संग्रह), मैथिली अकादमी, पटना, १९८३, हाली (अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, १९८८, बीछल कथा (हरिमोहन झाक कथाक चयन एवं भूमिका), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, १९९९, बिहाड़ि आउ (बंगला सँ मैथिली अनुवाद), किसुन संकल्प लोक, सुपौल, १९९५, भारत-विभाजन और हिन्दी उपन्यास (हिन्दी आलोचना), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, २००१, राजकमल चौधरी का सफर (हिन्दी जीवनी) सारांश प्रकाशन, नई दिल्ली, २००१, बनैत-बिगड़ैत (कथा-संग्रह) २००९। मैथिलीमे करीब सत्तरि टा कथा, तीस टा समीक्षा आ हिन्दी, बंगला तथा अंग्रेजी मे अनेक अनुवाद प्रकाशित।

सुभद्र झा 1909-2000

"फॉर्मेशन ऑफ मैथिली लैंगुएज"क लेखक। १९८६- सुभद्र झा (नातिक पत्रक उत्तर, निबन्ध)पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।

रामावतार यादव, मैथिली भाषिकी, नेपाल 1942-

देश-विदेशक भाषाविज्ञान जर्नलमे पचासो आलेखक द्वारा मैथिलीक विशिष्टताकें उजागर केनिहार। *मैथिली ध्वनिशास्त्र* 1984 ई. मे जर्मनीसँ आ *मैथिलीक सन्दर्भ व्याकरण* 1996 ई. मे बर्लिन आ न्यूयार्कसँ प्रकाशित। 2000 ई..मे लंदनसँ प्रकाशित *भारतीय आर्यभाषा* पुस्तक मे संकलित हिनकर मैथिली भाषा संबंधी आलेख विशेष उल्लेखनीय। नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानसँ पासाङ ल्हामु प्रज्ञा-पुरस्कारसँ सम्मानित।

योगेन्द्र प्रसाद यादव, भाषिकी,सिरहा, नेपाल 1946-

1998 ई. मे जर्मनीसँ प्रकाशित *इशुज इन मैथिली सिंटैक्स* आ *टॉपिक्स इन नेपालीज लिंग्विस्टिक्स, रीडिंग्स इन मैथिली लंगुएज- लिटरेचर एण्ड कल्चर* आ *लेक्सीग्राफी इन नेपाल* (सम्पादित) प्रकाशित। नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानमे भाषा-विभागक प्राज्ञ रहि कतोक महत्वपूर्ण कार्यक सम्पादन। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्यता श्री योगेन्द्र प्रसाद यादव (1994)। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान आजीवन सदस्यता श्री योगेन्द्र प्रसाद यादव।

रमानन्द झा 'रमण' 1949-

रामलोचन ठाकुर 1949-

जन्म: 02 जनबरी 1949, शिक्षा- एम.ए., पीएच.डी., आजीविका- भारतीय रिजर्व बैंक, पटना (सेवा निवृत्त)। **प्रकाशन**: 1. नवीन मैथिली कविता,1982, 2. मैथिली नऽव कविता,1993, 3. मैथिली साहित्य ओ राजनीति, 1994, 4. अखियासल, 1995, 5. बेसाहल,2003, 6. भजारल, 2005., 7. निर्यात कैसे शुरू करें? हिन्दी- रिजर्व बैंक, पटनाक प्रकाशन सम्पादित 8. मैथिलीक आरम्भिक कथा, 1978 समीक्षा, 9. श्यामानन्द रचनावली, 1981, 10. जनार्दन झा जनसीदन कृत निर्दयीसासु (1914) आ पुनर्विवाह (1926), 1984, 11. चेतनाथझाकृत श्रीजगन्नाथपुरी यात्रा (1910), 1994, 12. तेजनाथ झाकृत सुरराजविजय नाटक (1919), 1994, 13. रासबिहारीलाल दासकृत सुमति (1918), 1996, 14. जीबछ मिश्रकृत रामेश्वर (1916), 1996, 15. भेटघॉट (भेटवार्ता), 1998, 16. रूचय तँ सत्य ने तँ फूसि, 1998, 17. पुण्यानन्द झाकृत मिथिला दर्पण (1925), 2003, 18. यदुवर रचनावली (1888-

श्री रामलचन ठाकुर, जन्म १८ मार्च १९४९ ई.पलिमोहन, मधुबनीमे। वरिष्ठ कवि, रंगकर्मी, सम्पादक, समीक्षक। भाषाई आन्दोलनमे सक्रिय भागीदारी। **प्रकाशित कृति**- इतिहासहन्ता, माटिपानिक गीत, देशक नाम छल सोन चिड़ैया, अपूर्वा (कविता संग्रह), बेताल कथा (व्यंग्य), मैथिली लोक कथा (लोककथा), प्रतिध्वनि (अनुदित कविता), *जा सकै छी, किन्तु किए जाउ*(अनुदित कविता), लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता), जादूगर (अनुवाद), स्मृतिक धोखरल रंग (संस्मरणात्मक निबन्ध), आंखि मुनने: आंखि खोलने (निबन्ध)। अनुवाद लेल **भाषा-भारती सम्मान** 2003-04 (सी.आइ.आइ.एल., मैसूर) *जा सकै छी, किन्तु किए जाउ*- शक्ति चट्टोपाध्यायक बांग्ला कविता-संग्रहक मैथिली अनुवाद लेल प्राप्त। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (पद्मानदीक माझी, बांग्लासँ मैथिली अनुवाद, बांग्ला-उपन्यास - मानिक बंद्योपाध्याय)

गंगा प्रसाद मंडल " अकेला", नेपाल 1944-

पं सुन्दर झा शास्त्री राष्ट्रिय प्रतिभा पुरस्कारसँ सम्मानित। मिथिलांचलक किछु लोक कथा (संकलन आ सम्पादन) आ शिरीषक फूल (अनुवाद) प्रकाशित।

1934) 2003, 19. श्रीवल्लभ झा (1905-1940) कृत विद्यापति विवरण, 2005, 20. मैथिली उपन्यासमे चित्रित समाज, 2003। अनुवाद लेल **भाषा-भारती सम्मान** 2004-05 (सी.आइ.आइ.एल., मैसूर) छओ बिगहा आठ कट्ठा- फकीर मोहन सेनापतिक ओड़िया उपन्यासक मैथिली अनुवाद लेल प्राप्त।		
 महेन्द्रनारायण निधि, धनुषा, नेपाल	 परमेश्वर कापड़ि, धनुषा, नेपाल	 जयनारायण झा "जिज्ञासु", नेपाल
 सुरेश झा, नेपाल 1920-1995	 रोहिणी रमण झा 1950-	 डॉ. कमलाकान्त भण्डारी 1952- कबीर (मैथिली) पर शोध।
	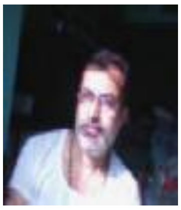	

विनोद बिहारी लाल 1953- जन्म स्थान पचही, मधुबनी, बिहार।चर्चित कथाकार । सयसँ ऊपर कथा प्रकाशित ।	**अरविन्द ठाकुर 1954-** परती टूटि रहल अछि (कविता संग्रह), अन्हारक विरोधमे (कथा संग्रह), बहुरुपिया प्रदेश मे (गजल संग्रह)।	**श्याम दरिहरे 1954 -** जन्म स्थान बरहा, बेनीपट्टी मधुबनी, बिहार । कवि, कथाकार । प्रकाशित कृति : सरिसोमे भूत (कथा संग्रह) अनूदित कृति : कनिप्रिया (धर्मवीर भारती)
 दिनेश कुमार झा मैथिलीक इतिहासपर लेखन।	 **अशोक कुमार ठाकुर** जन्म 2 जनवरी 1944 ई.। गाम बड़ागाँव (पंडौल)। नागमंडल (नाटक-अनुवाद), निशांत, वसुधाक संसार (उपन्यास)	 **प्रतापनारायण झा, नेपाल**
 शीतल झा, नेपाल	 **उग्रनारायण मिश्र "कनक"**	 **डॉ. शम्भूनाथ चौधरी 1920-2008**

इन्द्रकांत झा

पंचानन मिश्र

प्रोफेसर गुरमैता

ज्योतिरीश्वरपर लेखन।

महेन्द्र नारायण सिंह "मगन"

सूर्यकांत झा, जनकपुर

रमण झा (1957-)

रचना: पश्चाताप (कथा-संग्रह)-1995, काव्य-वाटिका (कविता-संग्रह)-1999, अलंकार-भास्कर (पूर्व-खण्ड) - 2002, अलंकार-भास्कर (अलंकार शास्त्र)-2003, भिन्न-अभिन्न (समीक्षा)-2008, संग सम्पादन: मैथिली (मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली विभागक शोध-पत्रिका) - 1996, सम्पादन: मैथिली (मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली विभागक शोध-पत्रिका)-2007,2008

विजयनाथ झा

"अहींक लेल" (गीत-गजल संग्रह प्रकाशित)।

योगानन्द हीरा

बाबा बैद्यनाथ

पहरा इमानपर (गजल संग्रह)

जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" १९५०-

मूल नाम जगदीश चन्द्र ठाकुर, जन्म: 27.11.1950,शंभुआर, मधुबनी । सेवा निवृत बैंक अधिकारी। मैथिलीमे प्रकाशित पोथी-1. तोरा अडनामे -गीत संग्रह-1978; 2. धारक ओइ पार-दीर्घ कविता-1999, गीत गंगा (गीत संग्रह), गजल गंगा (गजल संग्रह)।

विद्यानन्द झा 1965-

बुद्धपूर्णिमा, १९६५कें कैथिनियाँ, झंझारपुर मधुबनीमे जन्म। पराती जकाँ, बिछड़ल कोनो पिरीत जकाँ, दनुफक फूल जकाँ (कविता संग्रह) प्रकाशित । मूलतः कवि, थोड़ कथा लिखलनि, जे अपन मार्मिक अभिव्यक्तिक कारण बेस चर्चित भेल । विडम्बनापूर्ण परिस्थितिक पाछू जिम्मेवार समाजार्थिक कारणक खोज हिनकर मूल सृजन प्रेरणा थिक ।

हरेकृष्ण झा 1950-

जन्म १० जुलाई १९५० ई. गाम- कोइलखमे। अभियंत्रणक अध्ययण छोड़ि मार्क्सवादी राजनीतिमे सक्रिय। अनेक कविता आ आलोचनात्मक निबन्ध प्रकाशित। अनुवाद एवं विकास विषयक शोध कार्यमे रुचि। स्वतंत्र लेखन। प्रकृति एवं जीवनक तादात्म्य बोधक अग्रणी कवि। "एना त� नहि जे" (कविता संग्रह)।२००८ ई. -श्री हरेकृष्ण झाकें कविता संग्रह �एना त नहि

जे�लेल कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान।

उदय नारायण सिंह नचिकेता 1951-

जन्म-१९५१ ई. कलकत्तामे।पहिल काव्य संग्रह �कवयो वदन्ति�। १९७१ �अमृतस्य पुत्राः� (कविता संकलन) आऽ �नायकक नाम जीवन� (नाटक)| १९७४ मे �एक छल राजा�/ �नाटकक लेल� (नाटक)। १९७६-७७ �प्रत्यावर्तन�/ �रामलीला�(नाटक)। १९७८मे जनक आऽ अन्य एकांकी। १९८१ �अनुत्तरण�(कविता-संकलन)। १९८८ �प्रियंवदा� (नाटिका)। १९९७-�रवीन्द्रनाथक बाल-साहित्य�(अनुवाद)। १९९८ �अनुकृति�- आधुनिक मैथिली कविताक बंगलामे अनुवाद, संगहि बंगलामे दूटा कविता संकलन। १९९९ �अश्रु ओ परिहास�। २००२ �खाम खेयाली�। २००६मे �मध्यमपुरुष एकवचन�(कविता संग्रह। २००८ ई. मे नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश" सम्पूर्ण रूपें "विदेह" ई- पत्रिकामे धारावाहिक रूपें ई-प्रकाशित भए एकटा कीर्तिमान बनेलक।२००९ ई.-श्री उदय नारायण सिंह �नचिकेता�कें नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश लेल कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान।

आशीष अनचिन्हार

मूल

लेखन: कुमारि इच्छा (गजल संग्रह), जंघाजोड़ी (गजल संग्रह), अनचिन्हार आखर (गजल, रुबाइ आ कताक संग्रह), मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास, मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास, मैथिली गजलक रेडी रेकोनर, शब्द-अर्थ-शक्ति।

गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार (सम्पादन): मैथिलीक प्रतिनिधि गजल, मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा)

कुमार पवन 1958

गाम मुरैठा। कथा संग्रह, कविता संग्रह आ व्यंग्य संग्रह शीघ्र प्रकाश्य। मैथिलीमे १९९० ई सँ विरल लेखन। २००८ ई. सँ दस सालक मौन भंगक बाद पुनः रचनाक दोसर पालीक प्रारम्भ।

कीर्तिनाथ झा 1955- कुरल: मैथिली भावानुवाद	महेन्द्र हजारी	स्व. चन्द्रकान्त मिश्र, आसी, दरभंगा
स्व. महेन्द्र नारायण झा, बेलौंजा, मधुबनी	स्व.राजकुमार मल्लिक, सोहराय (पोखरिभीड़ा), मधुबनी	लक्ष्मीपति सिंह
फूलचन्द्र मिश्र रमण	किशोरनाथ झा गाम- विद्दो, पो. सरिसवपाही, मधुबनी। "लोकवेद" पोथी प्रकाशित।	सूर्यनारायण झा "सरस" पोथी "मैथिली श्री सीतारामचरितमानस" प्रकाशित।

कलानन्द भट्ट

कान्ह पर लहास हमर मैथिली गजल संग्रह

दयानाथ झा

गाम नागदह, मधुबनी।

मैथिली रंगमंडल मिथि-

यात्रिक, कोलकाता।

डॉ. सुधाकर चौधरी १९४६-

जन्म १५ मार्च १९४६ ई.। प्रकाशित पोथी: काजर, तीन रंग तेरह चित्र (कथा संग्रह), पंडी जी छत्ता (प्रहसन), विप्लवी सुभाष (नाटक)।

स्व. चुनचुन मिश्र, रहिका, मधुबनी।

मिथिला राज्यक आन्दोलन कर्मी।

सत्यनारायण लाल कर्ण

मिथिला चित्रकला

ले. कर्नल मायानाथ झा 1945-

जन्म 1 अप्रैल 1945 ई.। गाम- भराम (मधुबनी)। जकर नारि चतुर होइ (मैथिली लोक कथा संग्रह) प्रकाशित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)

श्याम किशोर सिंह

सचिन्द्रनाथ झा

मिथिला लोक चित्रकला

कालीनाथ ठाकुर

ग्राम सर्वसीमा

राजेन्द्र विमल, जनकपुर, नेपाल 1949-

मैथिली, नेपाली आ हिन्दी भाषाक प्राज्ञ विमल शिक्षाक हकमे विद्यावारिधि (पी.एच.डी.)क उपाधि प्राप्त कएने छथि।कम्मो लिखिकऽ यथेष्ट यश अरजनिहार डा. विमलक लेखनीक प्रशंसा मैथिलीक सङ्गसङ्ग नेपाली आ हिन्दी साहित्यमे सेहो होइत रहलनि अछि। त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गत रा.रा.ब. कैम्पस, जनकपुरधाममे प्राध्यापन कएनिहार डा. विमलक पूर्ण नाम राजेन्द्र लाभ छियनि। हिनक जन्म २६ जुलाई १९४९ ई. कऽ भेल अछि। साहित्यकारक नव पीढ़ीकें निरन्तर उत्प्रेरित करबाक कारणे ई डा.धीरेन्द्रक बाद जनकपुर-परिसरक साहित्यिक गुरुक रूपमे स्थापित भऽ गेल छथि।

नरेश कुमार विकल 1950-

जन्म २७ जुलाइ १९५० भगवानपुर देसुआ (समस्तीपुर)। काव्य- अरिपन, महुआ मदन रस टपकय, बिन बाती दीप जरय। कथा-संग्रह- भरि गेल दर्दक इनार। उपन्यास- टहकैत टीस। नाटक- चोखगर खोँच।

जनक किशोर लाल दास

कृष्णचन्द्र झा "मयंक"

लक्ष्मण झा "सागर"

1953-

"उचरि बैसू कौआ" मैथिली

कविता संग्रह प्रकाशित।

रघुवीर मोची

शारदानन्द दास "परिमल"

शशिबोध मिश्र "शशि"

1946-

सुरेन्द्रनाथ

अमरनाथ

१९७५

ई. मे "क्षणिका" लघुकथा संग्रह

प्रकाशित। हास्य कथाकार।

बच्चा ठाकुर

बुद्धिनाथ मिश्र

राजाराम सिंह राठौर, धनुषा	वैद्यनाथ विमल 1955-	डॉ वासुकीनाथ झा 1940-
 जितेन्द्र मिश्र "जीवन"	 वीरेन्द्र नारायण झा	 वीरेन्द्र झा 1956- गोनू झा पर लेखन।
 वैकुण्ठ झा 1954- पिता-स्वर्गीय रामचन्द्र झा, जन्म-२४ - ०७ - १९५४ (ग्राम-भरवाड़ा, जिला-दरभंगा), शिक्षा-स्नात्कोत्तर (अर्थशास्त्र), पेशा- शिक्षक। मैथिली, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा मे लगभग २०० गीतक रचना। गोनू झा पर आधारित नाटक "हास्यशिरोमणि गोनू झा तथा अन्य कहानी" क लेखन। एकर अलावा हिन्दीमे लगभग १५ उपन्यास तथा कथाक लेखन।	 वैकुण्ठ झा	 विद्यानन्द झा 'पञ्जीकार' 1957- जन्म-09.04.1957,पण्डुआ, ततैल, ककरौड़(मधुबनी), रशाढ़य(पूर्णिया), शिवनगर (अररिया) आ सम्प्रति पूर्णिया। पिता लब्धधौत पञ्जीशास्त्र मार्तण्ड पञ्जीकार मोदानन्द झा, शिवनगर, अररिया, पूर्णिया| पितामह-स्व. श्री भिखिया झा। पञ्जीशास्त्रक दस वर्ष धरि 1970 ई.सँ 1979 ई. धरि अध्ययन, 22 वर्षक बएससँ

		पञ्जी-प्रबंधक संवर्द्धन आ संरक्षणमे संलग्न। कृति- पञ्जी शाखा पुस्तकक लिप्यंतरण आ संवर्द्धन।
 महेन्द्र नारायण कर्ण	 डॉ. विश्वेश्वर मिश्र	 अर्जुन नारायण चौधरी
 नरेन्द्र गजलकार।	 महेन्द्र मिश्र, नेपाल	 कमल कांत झा 1943-
 महाप्रकाश 1946- जन्म: बनगांव, सहरसा, बिहार। वरिष्ट कवि ओ कथाकार। प्रकाशित कृति: कविता संभवा, संग समय के (कविता संग्रह)।	 छत्रानन्द सिंह झा 1946-	 अयोध्यानाथ चौधरी, धनुषा, नेपाल 1947- मूलत: कविक रूपमे परिचित छथि । नेपालक आधुनिक कविताक क्षेत्रमे हिनक नाम

कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान २०१० ई.- श्री महाप्रकाश (कविता संग्रह �संग समय के�)।

उल्लेखनीय अछि । श्री चौधरीक लेखनमे मानवीय संवेदनाक प्रतिबिम्ब पाओल जाइत अछि । कविताक संग कथा आ निबन्धमे सेहो ई कलम चलबैत छथि । फड़िछाएल लेखन हिनक विशेषता थिकनि ।धनुषा जिलाक दुहबी गामक रहनिहार श्री चौधरीक जन्म ६अक्टुबर १९४७कऽ भेल छनि । हिनक क्षितिजक ओहिपार नामसँ एक कविता-सग्ङ्रह प्रकाशित छनि ।

विद्यानाथ झा 'विदित'

सियाराम झा "सरस" 1948-

जन्म स्थान मेंहथ, मधुबनी बिहार । प्रसिद्ध गीतकार, बादमे कथा लेखन प्रारम्भ केलनि । प्रकाशित कृति आंजुर भरि सिंगरहार, शोणिताएल उगैत सूर्यक धम्मक (कथा संग्रह)।

अग्निपुष्प 1948-

जन्म: तरौनी, दरभंगा।

मूलनाम : महेन्द्र झा ।

मैथिलीमे सहस्त्रबाहु कविता संग्रह प्रकाशित । मुक्ति प्रसंगक अनुवाद प्रकाशित । वामपंथी आन्दोलनमे सक्रिय। शिक्षा, सम्वाद आदि पत्रिकाक सम्पादन ।

		वामपंथी विचारधाराक सशक्त कवि।
मधुकांत झा 1949-	वीनू भाइ	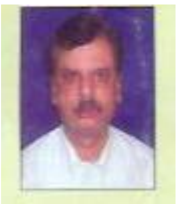 सत्यानन्द पाठक
योगीराज	कुणाल 1951-	राम भरोस कापड़ि भ्रमर, धनुषा, नेपाल 1951- जन्म-बघचौरा, जिला धनुषा (नेपाल)।बन्नकोठरी: औनाइत धुँआ (कविता संग्रह), नहि, आब नहि (दीर्घ कविता), तोरा संगे जएबौ रे कुजबा (कथा संग्रह, मैथिली अकादमी पटना, १९८४), मोमक पघलैत अधर (गीत, गजल संग्रह, १९८३), अप्पन अनचिन्हार (कविता संग्रह, १९९० ई.), रानी चन्द्रावती (नाटक), एकटा आओर

		बसन्त (नाटक), महिषासुर मुर्दाबाद एवं अन्य नाटक (नाटक संग्रह), अन्ततः (कथा-संग्रह), मैथिली संस्कृति बीच रमाउंदा (सांस्कृतिक निबन्ध सभक संग्रह), बिसरल-बिसरल सन (कविता-संग्रह), जनकपुर लोक चित्र (मिथिला पेंटिङ्गस), लोक नाट्य: जट-जटिन (अनुसन्धान)। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्यता- श्री राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (2010)।
 धीरेन्द्रनाथ मिश्र	 शिवेन्द्रलाल कर्ण, धनुषा, नेपाल 1951- लेखकसँ अधिक शिक्षकक रूपमे परिचित आ प्रतिष्ठित छथि । त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गतरा. रा. ब. कैम्पस, जनकपुर-धामक सह-प्राध्यापक श्री कर्णक ऐतिहासिक विषय-वस्तुपर लिखल कतोक लेख मैथिली, हिन्दी आ अग्ङरेजी भाषामे प्रकाशित अछि । स्वान्त-सुखाय ई कहियो कालकऽ कविता-कथा सेहो लिखि लैत छथि । हिनक लेखन ज्ञानवर्द्धक, जानकारीमूलक एवं सोझारएल रहैत अछि । देखलापर बुझना जाइत अछि जे ई हिनक गम्भीर	 ब्रह्मदेव लाल दास

	अध्ययनक परिणति थिक ।सामाजिक तथा साहित्यिक सङ्घ-संस्थासभमे सेहो सक्रिय प्राध्यापक कर्णक जन्म धनुषा जिलाक देवडीहा गाममे २ जनवरी १९५१ ई. कऽ भेल छनि ।	
चण्डेश्वर खान गाम- पट्टीटोल, जिला मधुबनी। लघुकथा लेल चर्चित प्रशंसित।	दयाकान्त झा	गजेन्द्र नारायण सिंह, नेपाल
पद्मश्री श्री गजेन्द्र नारायण सिंह	हरिकान्त झा	इन्द्रनारायण झा
प्रवासी साहित्यालंकार	सीताराम सिंह	तुलानन्द मिश्र

शैलेन्द्र कुमार झा 1952-

जन्म स्थान हरिपुर, वकशी टोल, मधुबनी बिहार। प्रकाशित कृति: आरोह अवरोह, दशम खुट्टी (कथा संग्रह), इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ मिथिला (अंग्रेजी) ।

शिवशंकर श्रीनिवास 1953-

जन्म स्थान लोहना मधुबनी, बिहार । चर्चित कथाकार ओ आलोचक । गीत ओ कविता सेहो कहियो काल लिखैत छथि । प्रकाशित कृति : त्रिकोण, अदहन, गाछ-पात, गामक लोक (कथा संग्रह)।

अशोक 1953-

जन्म स्थान लोहना, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार, कवि ओ सम्पादक । प्रकाशित कृति : चक्रव्यूह (कविता संग्रह) त्रिकोण (सहयोगी कथा संग्रह), ओहि रातिक भोर (कथा-संग्रह), मातवर (कथा संग्रह)।

विभूति आनन्द 1953-

जन्म: शिवनगर, मधुबनी, बिहार। चर्चित कवि, कथाकार, संपादक । प्रकाशित कृति टूटा उपन्यास टूटा समीक्षा, तीन टा कथ संग्रह, टूटा गीत-गजल संग्रह ओ चारिटा कथा-संग्रह प्रकाशित।२००६- विभूति आनन्द (काठ, कथा)मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार ।

केदार कानन 1959-

जन्म स्थान सुपौल, बिहार। चर्चित कवि, कथाकार ओ संपादक। प्रकाशित कृति : आकार लैत शब्द (कविता संग्रह), अनूदित कृति राजा राम मोहन राय, प्रायश्चित। सम्पादन संकल्प, भारती मंडन (पत्रिका)।

डॉ. शशिनाथ झा 1954-

गाम-दीप, जिला- मधुबनी। मैथिली, बांग्ला, नेवारी आ देवनागरी पांडुलिपिक विशेषज्ञ। साहित्य अकादमीक भाषा सम्मान 2007 क्लासिकल आ मध्यकालीन साहित्य लेल।

धनुर्धर झा

गाम- विशौल। "वाक्यार्थविवेचनम्" लेल श्रीवाणीयुवालंकरण पुरस्कार 2010 प्राप्त।

शिवकान्त पाठक

डॉ. योगेन्द्र पाठक " वियोगी" , वैज्ञानिक

"विज्ञानक बतकही" प्रकाशित।

राजनन्द झा

२००६- राजनन्द झा (कालबेला- समरेश मजुमदार, बांग्ला)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।

आद्यानाथ झा "नवीन"

अमलतास 1956-

यंत्रनाथ मिश्र

दिगम्बर ठाकुर

गणेश झा 1950-

कन्दर्पनारायण लाल कर्ण

शैलेन्द्र आनन्द 1955-

कमलाकांत झा

अध्यक्ष, मैथिली

अकादमी, पटना

लल्लन प्रसाद ठाकुर 1951-1995

जन्म ५ फरबरी १९५१ मुंगेर मे श्रीमती सुभद्रा देवी आ श्री हीरानंद ठाकुरक द्वितीय बालक । हिनक ग्राम-समौल,जिला-मधुबनी। सिविल इंजीनियर, टाटा स्टीलमे चाकरी। प्रकाश झाक फ़िल्म "कथा माधोपुर की" मे मुख्य भुमिका। नाटककार आ मंच अभिनेता। हुनक लिखल किछु प्रसिद्ध मैथिली नाटक छन्हि :बडका साहेब,मिस्टर निलो काका, लौंगिया मिरचाई,बकलेल आदि वा अंत।

डॉ. कमलानन्द झा

लोकनाथ मिश्र

डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी 1966-

जन्म:5 मार्च 1966 ई. गनपतगंज, सुपौल। मैथिलीक प्राध्यापक। रक्षामंत्रीक पदक आ बिहार आ झारखण्ड सरकार द्वारा पुरस्कृत। झारखण्डक मैथिली आन्दोलनमे अग्रणी।

अशोक अविचल

जन्म- ५ जनवरी १९६७, गाम- रहुआ संग्राम, जिला मधुबनी। मैथिली प्राध्यापक। रचना: एक बनू नेक बनू (लघु नाटक), मैथिली भाषा: सर्वेक्षण आ विश्लेषण, हमरा देशक भागमे (मैथिलीक प्रथम असंगत नाटक), सम्पादन: झारखण्डक सनेश, कचोट (नौ अंक), झारखण्ड वाणी (हिन्दी साप्ताहिक), सम्मान: अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनमे सम्मान (२०००), परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी समिति सम्मान (२००८)

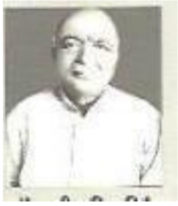

डॉ. श्रीपति सिंह १९४४-

"उमंग-तरंग" कविता-संग्रह प्रकाशित।

डॉ. उमाकान्त

सुशील 1942-

श्रीदेव

मैथिली व्यंग्य-आलेखक पोथी "अपन बात" प्रकाशित।

अस्मिता (लघुकथा संग्रह), भामती (नाटक) प्रकाशित।

मूल नाम- वागेश्वर झा। कथा-सँग्रह "हिलकोर", नाटक "लोहक कड्ना", गीत-प्रबन्ध "पुलोमा" प्रकाशित।

सुकांत सोम 1950-

जन्म दरभंगा जिलाक तरौनी गाममे 1950 ई. मे भेलन्हि । बी. ए. पास कए ई पटनाक दैनिक �जनशक्ति�क सहायक सम्पादक छलाह । फेर नव भारत टाइम्स, पटनामे।बाल्यवस्थासँ अपन पैतृक (पिता यात्रीजी) गुण कविता करबाक तथा कथा लिखबामे सेहो यश अर्जन कएलन्हि अछि । वर्तमान राजनीति सामाजिक विषयसँ सम्बद्ध व्यंग्यात्मक, सरल भाषामे लिखल नव कविता हिनक विशेषता छन्हि । गामघरक परिवेश तदनुकूल शब्द एवं

डॉ. देवकांत मिश्र 1952-

पिता कविचूड़क्षामणि पं. काशीकांत मिश्र "मधुप", "बेनीपुर अनुमण्डलमे मैथिली" पोथी प्रकाशित।

डॉ. नित्यानन्द लाल दास

पिता स्वर्गीय सूर्यनारायण दास। फारबिसगंज कॉलेज, फारबिसगंज सँ अंग्रेजी विभागाध्यक्ष पदसँ १९९८ मे अवकाशप्राप्त। डॉ. सुरेन्द्र झा "सुमन"क संयोजकत्वक कार्यकालमे "मैथिली परामर्शदातृ समिति" (साहित्य अकादेमी, दिल्ली)क सदस्य। मैथिली पत्रिका सभ जेना बटुक, प्रयाग; मिथिला मिहिर, पटना; स्वदेश, दरभंगा; पहुँच, पटना आ परती पलार, अररियामे रचना प्रकाशित। १९६७ ई. सँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मे सक्रिय। प्रांतीय प्रतिनिधि २००४ धरि

बिम्ब रचनामे क्रमहि सिद्ध छथि ।

जिला सरसंघचालक। जे.पी.आन्दोलनमे लोकतंत्र सेनानी। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलामक अंग्रेजी पोथी "इग्नाइटेड माइण्ड्स"क मैथिलीमे "प्रज्वलित प्रज्ञा" नामसँ अनुवाद। साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार २०१०- डॉ. नित्यानन्द लाल दास- (इग्नाइटेड माइण्ड्स- डॉ.ए.पी.जे. कलाम, अंग्रेजी) लेल।

राजनाथ मिश्र 1950-

"अ बड़र्स आइ व्यू ऑन मिथिला" प्रकाशित।

पशुपतिनाथ झा, महोत्तरी, नेपाल 1954-

हिनक लेखन विवरणात्मक होइत अछि आ सम्बद्ध विषयमे नीकजकाँ जानकारी दैत अछि । विभिन्न पत्र-पत्रिकामे हिनक लेख-रचना बरोबरि देखबामे अबैत रहैछ ।रा.रा.ब. कैम्पस, जनकपुरधाममे मैथिली विषयक प्राध्यापनमे संलग्न श्री झा मैथिलीसम्बन्धी सङ्गठनात्मक गतिविधिसँ सेहो जुड़ल छथि । मैथिली भाषाक लोपोन्मुख अवस्थामे रहल अपन लिपि तिरहुतामे विशेषज्ञता रखनिहार श्री झा एकर संरक्षण-सम्बर्द्धनक दिशामे सेहो क्रियाशील छथि ।प्रध्यापक झा मैथिली महाकाव्यमे रस निरूपण विषयपर विद्यावारिधि कएने छथि आ शिक्षा तथा कानून विषयमे सेहो स्नातक छथि । महोत्तरी जिलाक

अनिलचन्द्र ठाकुर 1954-2009

जन्म 13 सितम्बर 1954 ई.कें कटिहार जिलाक समेली गाममे भेलन्हि। 1982 ई.मे हिन्दी साहित्यमे स्नातकोत्तर केलाक बाद नवम्बर '93 सँ नवम्बर '94 धरि "सुबह" हस्त लिखित पत्रिकाक सम्पादन-प्रकाशन कएलन्हि आ कोशी क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकमे अधिकारी रहथि।

	एकरहिया रहनिहार श्री झाक जन्म ४ दिसम्बर १९५४ कऽ भेलछनि ।चेन्नैमे मिथिला रत्नसँ सम्मानित।	मैथिली, अंगिका, हिन्दी आ अंग्रेजीमे समानरूपें लेखन। मृत्युक पूर्व ब्रेन ट्यूमरसँ बीमार चलि रहल छलाह। **प्रकाशित कृति**: आब मानि जाउ(मैथिली उपन्यास)- पहिने भारती-मंडन पत्रिकामे प्रकाशित भेल, फेर मैलोरंग द्वारा पुस्तकाकार प्रकाशित भेल।; कच(अंगिकाक पहिल खण्ड काव्य,1975); एक और राम (हिन्दी नाटक,1981); एक घर सड़क पर (हिन्दी उपन्यास, 1982); द पपेट्स (अंग्रेजी उपन्यास, 1990); अनत कहाँ सुख पावै (हिन्दी कहानी संग्रह,2007)। आब मानि जाउ (मैथिली उपन्यास) - एहि उपन्यासमे एक एहन युवतीक संघर्ष-गाथा अंकित अछि जे अपन लगनसँ जीवन बदलैत अछि। असंख्य गामक ई कथा कुलीनताक अधःपतनक कथा, संस्कारविहीनताक उद्घाटन आ भविष्यक पीढ़ीकें बचएबाक चेतौनी छी।

बृषेश चन्द्र लाल

जन्म 29 मार्च 1955 ई. कें भेलन्हि। पिताः स्व. उदितनारायण लाल,माताः श्रीमती भुवनेश्वरी देव। हिनकर छठिहारक नाम विश्वेश्वर छन्हि। मूलतः राजनीतिककर्मी । नेपालमे लोकतन्त्रलेल निरन्तर संघर्षक क्रममे १७ बेर गिरफ्तार । लगभग ८ वर्ष जेल ।सम्प्रति तराई�मधेश लोकतान्त्रिक पार्टीक राष्ट�ीय उपाध्यक्ष । मैथिलीमे किछु कथा विभिन्न पत्रपत्रिकामे प्रकाशित । आन्दोलन कविता संग्रह आ बी.पीं कोइरालाक प्रसिद्ध लघु उपन्यास मोदिआइनक मैथिली रुपान्तरण तथा नेपालीमे संघीय शासनतिर नामक पुस्तक प्रकाशित । ओ विश्वेश्वर प्रसाद कोइरालाक प्रतिबद्ध राजनीति अनुयायी आ नेपालक

नारायणजी 1956-

जन्म: घोघरडीहा (मधुबनी)। मैथिली भाषा-साहित्यमे एम. ए., पी-एच. डी. कामेश्वर लता संस्कृत विद्यालय, घोघरडीहामे अध्यापन । प्रकाशित कृति: �घरि घुरि रहल छी� (काव्य-संग्रह)।

डॉ. श्री श्रीशंकर झा 1952-

प्रजातांत्रिक आन्दोलनक सक्रिय योद्धा छथि। नेपाली राजनीतिपर बरोबरि लिखैत रहैत छथि।

जगदीपनारायण "दीपक"

राजदेव मंडल

शिक्षा- एम.ए.द्वय, एल एल बी.,पता- ग्राम-मुसहरनियाँ, रतनसारा (निर्मली, मधुबनी)। **प्रकाशित कृति**- अम्बरा-कविता-संग्रह, हमर टोल (उपन्यास), बसुंधरा(कविता संग्रह), जाल (पटकथा), लाज (एकांकी), जल भंवर (उपन्यास), त्रिवेणीक रंग (विहनि आ लघु कथा संग्रह), पंचैती (लघु पटकथा), वापसी।

शिवप्रसाद यादव

हीरेन्द्र कुमार झा 1958-

जन्म 30 अगस्त 1958,गाम- कोइलख (मधुबनी), पिता श्री कामेन्द्र नाथ झा। ट्रांसफर्मर (मैथिली कथा संग्रह) प्रकाशित।

मानेश्वर मनुज 1958-

जन्म गम्हरिया (मानपौर, मधुबनी)मे, 1978सँ 1992 धरि नौसेनामे विभिन्न जहाजपर कार्यरत, फेर यात्री रेलमे। सम्बन्ध (कथा संग्रह) प्रकाशित।

नबोनाथ झा

महेन्द्र नारायण राम 1958-

तारानन्द वियोगी 1966-

महिषी, सहरसामे जन्म। पहिल पोथी अपन युद्धक साक्ष्य (गजल संग्रह) १९९१ मे प्रकाशित। अन्य पुस्तक हस्तक्षेप, प्रलय रहस्य(कविता-संग्रह), अतिक्रमण (कथा-संग्रह), शिलालेख (लघुकथा संग्रह), कर्मधारय। राजकमल चौधरीक कथाकृति एकटा चंपाकली एकटा विषधर संकलन-सपादन। साहित्य अकादेमी मैथिली बाल साहित्य पुरस्कार २०१०-तारानन्द वियोगीकेँ पोथी "ई भेटल तँ की भेटल" लेल। यात्री-चेतना पुरस्कार २०१० ई.- डॉ. तारानन्द वियोगी।

भालचन्द्र झा

ए.टी.डी., बी.ए., (अर्थशास्त्र), मुम्बईसँ थिएटर कलामे डिप्लोमा। मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दी, मराठी, अग्रेजी आ गुजरातीमे निष्णात। १९७४ ई.सँ मराठी आ हिन्दी थिएटरमे निदेशक। महाराष्ट्र राज्य उपाधि १९८६ आ १९९९ मे। आइ.एन.टी. केर लेल नाटक �सीता� क निर्देशन। �वासुदेव संगति� आइ.एन.टी.क लोक कलाक शोध आ प्रदर्शनसँ जुड़ल छथि आ नाट्यशालासँ जुड़ल छथि विकलांग बाल लेल थिएटरसँ। निम्न टी.वी. मीडियामे रचनात्मक निदेशक रूपेँ कार्य।लेखन- बीछल बेरायल मराठी एकांकी(अनुवाद), सिंहावलोकन (मराठी साहित्यक १५० वर्ष), आकाश (जी.टी.वी.क धारावाहिकक ३० एपीसोड), जीवन सन्ध्या(

		मराठी साप्ताहिक, डी.डी, मुम्बई), धना जी नाना चौधरी (मराठी), स्वयम्बर (मराठी), फिर नहीं कभी नहीं(हिन्दी), आहट (हिन्दी), यात्रा (मराठी सीरयल), मयूरपन्ख (मराठी बाल-धारावाहिक), हेल्थकेअर इन २०० ए.डी.) (डी.डी.)।२००९ मे- भालचन्द्र झा (बीछल बेरायल मराठी एकाँकी- सम्पादक सुधा जोशी आ रत्नाकर मतकरी, मराठी)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।
मनमोहन झा	कुमार शैलेन्द्र	रमेश 1961- जन्म स्थान मेंहथ, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार ओ कवि । प्रकाशित कृति: समांग, समानांतर, दखल (कथा संग्रह), नागफेनी (गजल संग्रह), संगोर, समवेत

		स्वरक आगू, कोसी धारक सभ्यता, पाथर पर दूभि (काव्य संग्रह), प्रतिक्रिया (आलोचनात्मक निबंध)।
 मेघन प्रसाद 1961-	 प्रदीप बिहारी 1963- जन्म स्थान कन्हौली मल्लिक टोल, खजौली, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार, उपन्यासकार ओ रंगकर्मी । प्रकाशित कृति: गुमकी ओ बिहाड़ि, विसूवियस (उपन्यास), औतीह कमला जयतीह कमला, खण्ड-खण्ड जिनगी, सरोकार (कथा संग्रह)। २००७- प्रदीप बिहारी (सरोकार, कथा)मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार ।	 चन्द्रमोहन झा पर्वा

डॉ. सुरेन्द्र लाभ, नेपाल	रोशन जनकपुरी, नेपाल	डॉ. अरविन्द अक्कू 1957-
फूलचन्द्र झा "प्रवीण" 1961- गाम तुमौल दरभंगा, आयल नवल प्रभात, पांगल गाछक छाहरि, हमरा मोनक खजन चिड़ैया, बसंतक बजनिञा (कविता संग्रह), भूत होइत भविष्य (कथा संग्रह)।	देवशंकर नवीन 1962- ओ ना मा सी (गद्य-पद्य मिश्रित हिन्दी-मैथिलीक प्रारम्भिक सर्जना), चानन-काजर (मैथिली कविता संग्रह), आधुनिक (मैथिली) साहित्यक परिदृश्य, गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति पदावली, राजकमल चौधरी का रचनाकर्म (आलोचना), जमाना बदल गया, सोना बाबू का यार, पहचान (हिन्दी कहानी), अभिधा (हिन्दी कविता-संग्रह), हाथी चलए बजार (कथा-संग्रह)।	कुमार मनीष अरविन्द 1964-
बदरी नारायण बर्मा	राजेन्द्र किशोर, नेपाल	श्याम सुन्दर शशि, नेपाल

श्याम सुन्दर शशि, जनकपुरधाम, नेपाल। पेशा-पत्रकारिता। शिक्षा: त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ,एम.ए. मैथिली , प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान। मैथिलीक प्रायः सभ विधामे रचनारत। बहुत रास रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित। हिन्दी, नेपाली आऽ अंग्रेजी भाषामे सेहो रचनारत आऽ बहुतरास रचना प्रकाशित। सम्प्रति- कान्तिपुर प्रवासक अरब ब्यूरोमे कार्यरत।

हिमांशु चौधरी, नेपाल

पिता : स्वर्गीय कामेश्र्वर चौधरी,माताः श्रीमती चन्द्रावती चौधरी,जन्मः वि स २०२०/६/५ लहान, सिरहा,शिक्षाः स्नातकोत्तर(नेपाली),पेशाः पत्रकारिता (सम्प्रति : राष्ट्रिय समाचार समिति),कृति : की भार सांठू ? (मैथिली कविता संग्रह),विगत दू दशकसं नेपाली

सत्यनारायण मेहता

भुवनेश्वर पाथेय

आ मैथिली लेखन तथा अभियानमे निरन्तर क्रियाशील आ विभिन्न संघ संस्थासं आबद्ध ।

राजेन्द्र झा, धनुषा

अशोक कुमार मेहता

धर्मेन्द्र विह्वल, सिरहा, नेपाल 1967-

रस्ता तकैत जिनगी, एक सृष्टि एक कविता, एक समयक बात, धुअनाएल आकृति सभ (मैथिली कविता संग्रह), भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरु, गोनूझाका कथाहरु (मैथिलीसँ नेपाली अनुवाद), मैथिलीक कक्षा 1 सँ 5 आ बाल-साहित्य संदर्भक तीनटा पोथीक सह-लेखक। पत्रकारिताक मूल सिद्धांत (मैथिली, प्रेसमे), दलित रिपोर्टिंग मैनुअल (नेपाली, प्रेसमे)।

धीरेन्द्र कुमार झा	निमिष झा, नेपाल	गौरीनाथ (अनलकान्त) "अन्तिका"क सम्पादन।
आनन्द कुमार झा 1977- जन्म स्थान: मेंहथ, झंझारपुर; पिता स्व. अभयकांत झा, माता श्रीमती इन्द्रकाली देवी, प्रकाशन- "धधाइत नवकी कनियाँक लहास", "हठात् परिवर्तन", "बदलैत समाज", "टाकाक मोल", "कलह" (पाँचू मैथिली नाटक) प्रकाशित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (कलह, नाटक)	वनदेवीपुत्र भवनाथ, नाटककार	चन्द्रेश
राम सेवक सिंह	शहीद दुर्गानन्द झा, नेपाल	उदयनाथ झा "अशोक"

कपिलेश्वर राउत

उलहन (विहनि - लघु कथा संग्रह) प्रकाशित।

कपिलेश्वर साहू

डॉ. शम्भु कुमार सिंह

जन्म:

18 अप्रील 1965 सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाममे। आरंभिक शिक्षा, गामहिसँ, आइ.ए., बी.ए. (मैथिली सम्मान) एम.ए. मैथिली (स्वर्णपदक प्राप्त) तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार सँ। BET [बिहार पात्रता परीक्षा (NET क समतुल्य) व्याख्याता हेतु उत्तीर्ण, 1995] �मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्त्तन� विषय पर पी-एच.डी. वर्ष 2008, तिलका माँ. भा.विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार सँ। मैथिलीक कतोक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे कविता, कथा, निबंध आदि समय-समय पर प्रकाशित। वर्तमानमे शैक्षिक सलाहकार (मैथिली) राष्ट्रीय

		अनुवाद मिशन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर-6 मे कार्यरत।
 कृष्णचन्द्र यादव, नेपाल	 शिवकान्त ठाकुर	 शोभाकान्त झा
 उमाकान्त झा आ प्रियंका, मैथिली रंगमंच	 श्यामानन्द ठाकुर	 हरिकांत लाल दास, नेपाल
 शशिनाथ ठाकुर, नेपाल	 दुर्गानन्द मंडल संचयिका, कथा कुसुम (विहनि आ लघु कथा संग्रह), चक्षु प्रकाशित।	 शिव कुमार झा 1973- शिव कुमार झा ��टिल्लू��,पिताक नामः स्व. काली कान्त झा ��बूच��, माताक नामः स्व. चन्द्रकला देवी,जन्म तिथिः 11-12-1973,शिक्षाः स्नातक

(प्रतिष्ठा),जन्म स्थानः मातृक- मालीपुर मोड़तर, जि. - बेगूसराय, मूलग्रामः ग्राम-पत्रालय - करियन, जिला - समस्तीपुर, पिन: 848101,संप्रतिः प्रबंधक, संग्रहण,जे. एम. ए. स्टोर्स लि.,मेन रोड, बिस्टुपुर जमशेदपुर - 831 001, अन्य गतिविधिः वर्ष 1996 सँ वर्ष 2002 धरि विद्यापति परिषद समस्तीपुरक सांस्कृतिक ,गतिवधि एवं मैथिलीक प्रचार-प्रसार हेतु डॉ. नरेश कुमार विकल आ श्री उदय नारायण चौधरी (राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक) क नेतृत्वमे संलग्न। **प्रकाशित कृति**: क्षणप्रभा- कविता-संग्रह, अंशु- समालोचना।

राम विलास साहु

मनक मैल, अंकुर- लघुकथा संग्रह, रथक चक्का उलटि चलै बाट (कविता/ टनका संग्रह), कर्म बिनु जग सुन्ना (दोसर कवि

महाकान्त ठाकुर

बचेश्वर झा, निर्मली

"निबन्ध-निकुञ्ज" प्रकाशित।

ता/ टनका संग्रह), स्कूलक खिचड़ी (विहनि/ लघु कथा संग्रह), दूधबेचनी (लघु कथा संग्रह) प्रकाशित।

धीरेन्द्र कुमार, निर्मली

चन्द्रशेखर कामति 1959-

मैथिली कवि। शिक्षा- एम.ए. (राजनीतिशास्त्र), पिता- स्व. योगेन्द्र कामति , गाम-पोस्ट- करियन, भाया- इलमास नगर, थाना- रोसड़ा, जिला- समस्तीपुर, बिहार। संप्रतिप्रखण्ड सहकारिता प्रसार पदाधिकारी (बेनीपट्टी)।

नन्द विलास राय

"भरदुतिया", "छठिक डाला", "हमर चारूधाम" प्रकाशित।

बिनय भूषण

उजरा परवाक खोज (कविता संग्रह)

सुधाकर झा, महोत्तरी , नेपाल

सएसँ बेशी सड़क नाटकमे मंचन।

सदरे आलम "गौहर "

गाम-पुरसौलिया, भाया- जयनगर, जिला मधुबनी।

डॉ. भुवन किशोर मिश्र "भुवनेश" मैथिली कथा संग्रह- गोबरछत्ता।	दिनकर कुमार "पूर्वोत्तर मैथिल"क सम्पादन।	डॉ. विनय विश्वबन्धु
रामदेव प्रसाद मण्डल झारूदार मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल �झारूदार�। "हमरा बिनु जगत सूना छै" आ "गीताञ्जलि झाड़ू" प्रकाशित।	उमेश पासवान "वर्णित रस" प्रकाशित।	ओम प्रकाश झा घोघरडीहा (मधुबनी)। "कियो बूझि नै सकल हमरा" (गजल, रुबाइ आ कता संग्रह) प्रकाशित।
जगदानन्द झा मनु नढ़िया भुकैए हमर घराड़ीपर (गजल संग्रह), तोहर कतेक रंग (विहनि कथा संग्रह), चोनहा- (बाल उपन्यास), व्यथा- (कविता-गीत संग्रह)।	अच्छेलाल शास्त्री	डॉ अमोल राय
नन्द कुमार मिश्र नन्द	डॉ. नन्द कुमार मिश्र	शिव कुमार प्रसाद

दिलीप कुमार झा

डॉ ताराकान्त झा

अमरकान्त, नेपाल

मुरलीधर झा

कबिलपुर, दरभंगा। बाल कथा संग्रह "पिलपिलहा गाछ" (2010) प्रकाशित।

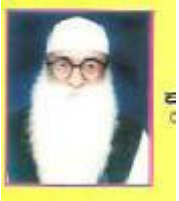

कमलधर दास

"मैथिल कर्ण कायस्थक गोत्र, प्रवर, मूल आ वैवाहिक सम्बन्ध" पोथी प्रकाशित।

श्रीकान्त मण्डल, मैथिली रंगमंच

बेचन ठाकुर

गाम: चनौरागंज, मधुबनी। प्रकाशित कृति: बेटीक अपमान आ छीनरदेवी (नाटक), बाप भेल पित्ती आ अधिकार (नाटक), बिसवासघात (नाटक), ऊँच-नीच (नाटक), भौंट (नाटक); एक

गंगा झा

मैथिली रंगमंडल कोकिल मंच, कोलकाता। कोलकाता आ गाम पजुआरिडीह टोलमे मैथिली रंगमंच निर्देशन।

नबोनारायण मिश्र

1955-

पिता-श्री गोबिन्द मिश्र, माता- श्रीमति अढ़ूला देवी।

गाम- कुशमौल,पो.नागदह-बलाइन, भाया-अरेड़हाट, जिला-मधुबनी।

मैथिली रंगमंचसँ

दर्जनसँ बेशी नाटक प्रकाशनक प्रतीक्षामे।		सम्बद्ध "कोकिल मंच" संस्थाक माध्यमसँ।
 कमलेश कुमार दास, रंगमंच कलाकार	 किशोर केशव, मैथिली रंगमंच	 कुमार गगन, मैथिली रंगमंच
 अशोक दत्त, जनकपुर	 मदन ठाकुर चर्चित रंगकर्मी, जनकपुरक चर्चित संस्था मिथिला नाट्यकला परिषदक संस्थापक । तीन दशकसँ बेसी समयसँ रंगक्षेत्रमे सक्रिय। करीब ३०�४० गोट मंचीय नाटकक सयो प्रस्तुति , २०�२५ गोट सड़क नाटकक हजारसँ बेसी प्रदर्शनमे अभिनय ।२० गोट टेली-सीरियल आ आधा दर्जन मैथिली फीचर फिल्ममे अभिनय । पुरस्कार: सप्तम अन्तर्राष्ट्रिय महोत्सवमे सर्वश्रेष्ठ अभिनेता	 अभय कुमार यादव, मैथिली रंगमंच

	२०४९ वि.स., क्षेत्रीय प्रतिभा पुरस्कार (नेपाल सरकार) २०६३ वि.स.।	
 आशुतोष यादव अभिज्ञ	 कृष्ण कुमार कश्यप 1949- जन्म १५ सितम्बर १९४९ ई.। पिता- कवि-उपन्यासकार स्व. इन्द्रनारायण लाल "सँवलिया"। जनबरी १९६५ ई. मे नेना सभ लेल "नाइट स्कूल", १९८१ ई. मे "कला आधारित जीवन आ शिक्षण पद्धति"क प्रवर्तन आ तकर कार्यान्वयन लेल शिवा कश्यप आ शशिबालाक सहयोगसँ "भारती विकास संस्था"क स्थापना। रचना: शशिबालाक संग "मेघदूत" आ "गीत-गोविन्द"क मैथिली अनुवाद, माछ-भात, मिथिला चित्र-शिक्षा, भाग-१, मिथिला चित्र- कोर, भाग-३।	 ललित कुमुद
 बटोही झा, मिथिला चित्रकला	 प्रवीण कुमार ठाकुर	

	जन्म तिथि -31 दिसम्बर 1977; जन्म स्थान -कन्हौली , सकरी , मधुबनी ; शिक्षा- सूर्य नारायण हाई स्कूल - नरपतिनगर , बी . एस . सी - मेमोरिअल कॉलेज - दरभंगा , डिप्लोमा इन फैशन डिजाईन (नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ फैशन डिजाईन - नयी दिल्ली) , चित्रकला �आओर फैशन पूर्वानुमानमे विशेष योग्यता, निवास स्थान- दिल्ली , इंडिया; पिता- श्री सत्य नारायण ठाकुर , सकरी - कन्हौली� ; माता- श्रीमती मालती ठाकुर , सकरी - कन्हौली । वर्तमानमे अपन एक्सपोर्ट बिज़नस एस्थेट) �क नामसँ शुरुआत , पूर्वमे प्रोडक्ट डेवेलोप्मेंट आओर मर्चटक रूपमे कार्यरत।	लाला पंडित, मिथिला मूर्तिकला
 राजेन्द्र पंडित, मिथिला मूर्तिकला	 गिरीश चन्द्र लाल	 नवेन्दु कुमार झा, पत्रकार
 चन्द्र किशोर लाल, पत्रकार, नेपाल	 उपेन्द्र भगत नागवंशी, नेपाल सड़क नाटक।	 रमेश रंजन, परवाहा, नेपाल 1966-

परवाहा, नेपालमे जन्म । नेपालीय कथा-जगतक नवीन मुदा सम्मानित नाम । जनपक्षधर कथा-दृष्टि आ मोहक शिल्प । थोड़ लिखलनि, मुदा बेर-बेर चर्चित रहलाह ।

विनीत ठाकुर

"बाँकी अछि हम्मर दूधक कर्ज" प्रकाशित।

सुजीत कुमार झा, नेपाल

जिद्दी (लघुकथा संग्रह), चिड़ै (लघुकथा-संग्रह), रिपोर्टर डायरी (रिपोर्ताज), गन्ध (लघु कथा संग्रह), खजुरीबाली (लघु कथा संग्रह), कोइली घूरि आउ (बाल लघु-विहनि कथा संग्रह), दूधमती- (सम्पादन- नेपाली आ मैथिलीमे)।

सरोज खिलाड़ी

नेपालक पहिल मैथिली रेडियो नाटक संचालक

देवांशु वत्स

जन्म- तुलापट्टी, सुपौल। मास कम्युनिकेशनमे एम.ए., हिन्दी, अंग्रेजी आ मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे कथा, लघुकथा, विज्ञान-

संतोष मिश्र, नेपाल

पोसपुत (लघुकथा-संग्रह), उदास मोन (लघुकथा-संग्रह), एना-किए (कविता-संग्रह), अएना (संपादन- कविता-संग्रह)।

सुनील कुमार मल्लिक, गायक, जनकपुर, नेपाल 1968-

मैथिलीक गायक-सङ्गीतकारक रूपमे प्रसिद्ध छथि । मैथिली भाषाक

कथा, चित्र-कथा, कार्टून, चित्र-प्रहेलिका इत्यादिक प्रकाशन। विशेष: गुजरात राज्य शाला पाठ्य-पुस्तक मंडल द्वारा आठम कक्षाक लेल विज्ञान कथा �जंग� प्रकाशित (2004 ई.), नताशा: मैथिलीक पहिल-चित्र-श्रृंखला (कॉमिक्स) प्रकाशित।

गीतसभमे मौलिक तथा सार्थक सग्डीतक सृजनमे हिनक सक्रियता प्रशंसनीय छनि । सुनीलक गायन तथा सग्डीतमे कैसेट एलबमसभ सेहो बाहर भेल अछि ।लेखनदिस हिनक सक्रियता परिमाणात्मक रूपमे कम रहितहुँ गुणात्मक दृष्टिएँ हृदयस्पर्शी मानल जाइत अछि ।पेशासँ विज्ञान-शिक्षक छथि ।

धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सिरहा, नेपाल 1967-

वि.सं.२०२४ साल भादब १८ गते सिरहा जिलाक गोविन्दपुर-१, बस्तीपुर गाममे जन्म लेनिहार प्रेमर्षिक पूर्ण नाम धीरेन्द्र झा छियनि।कान्तिपुरसँ हेल्लो मिथिला कार्यक्रम प्रस्तुत कर्ता जोड़ी रूपा-धीरेन्द्रक धीरेन्द्रक अबाज गामक बच्चा-बच्चा चिन्हैत अछि। �पल्लव� मैथिली साहित्यिक पत्रिका आ �समाज� मैथिली सामाजिक पत्रिकाक सम्पादन।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

पिताक नामःस्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नामःस्वर्गीया दया काशी देवी, पैतृक ग्रामःअडेर डीह, मातृकःसिन्घिआ ड्योढी। वृतिःयोजना आयोगक उप सचिव, दिल्लीमे स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट। आब सेवा निवृत्त। शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिकी विज्ञानमे प्रतिष्ठा; दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक । प्रकाशित कृति : मैथिली:-

१. �भोरसँ साँझ धरि� (आत्म कथा), २. �प्रसंगवश� (निवंध), ३. �स्वर्ग एतहि अछि� (यात्रा प्रसंग), ४. �फसाद� (कथा संग्रह) ५. `नमस्तस्यै� (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध) ७.महराज (मैथिली उपन्यास) ,८.लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

कुमार भास्कर

	,९.सीमाक ओहि पार (मैथिली उपन्यास) १०.समाधान(निवंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास) १३.शंखनाद(उपन्यास)।	
 अमरेन्द्र यादव, नेपाल	 रघुनाथ मुखिया	 प्रदीप पुष्प
 संदीप कुमार साफी "बैशाखमे दलानपर" प्रकाशित।	 उमेश मंडल निश्तुकी- कविता संग्रह, मिथिलाक संस्कार गीत, विध-व्यवहार गीत आ गीतनाद (संकलन), "मिथिलाक वनस्पति स्लाइड शो मिथिलाक जीव-जन्तु स्लाइड शो मिथिलाक जिनगी स्लाइड शो", सगर राति दीप जरय- इतिहास, दुध-पानि फराक-फराक (कथा एवं पाण्डुलिपि जगदीश प्रसाद मण्डल)-(छाया एवं सम्पादन- उमेश मण्डल), हिन्दुस्तानी मुसलमान और हिन्दुस्तानियत - मूल हिन्दी लेख- गीतेश शर्मा, मैथिली अनुवाद- उमेश मण्डल।	 चन्द्रमणि

स्व. हेमकान्त झा, गायक	मुरलीधर, मैथिली फिल्म निर्देशक	कुंज बिहारी, मैथिली गायक
 रामबाबू झा, गायक	 बि.पि.उदासी	 जितेन्द्र सहयोगी
 उदितनारायण फिल्म गायक	 प्रकाश झा, फिल्म निर्देशक	 कीर्ति आजाद क्रिकेट
 श्रीराम झा शतरंज	 अभिषेक झा गोल्फ	 अशोक कुमार 1981- साधारण काष्ठकारक परिवारमे समस्तीपुर जिलाक मोखियारपुर सखलानी गाममे जनमल अशोक कुमार कहियो स्कूल नहि गेलाह। दिनमे पचास टाका कमेनिहार दिल्लीक एकटा गोल्फ क्लबक एहि

		कैडीकेँ 1994 ई. मे चोरिक मिथ्यारोप लगा कए गोल्फ कोर्ससँ बाहर कए देल गेल। वैह कैडी दस सालक भीतर भारतक नम्बर एक गोल्फर बनि गेल।
 राजेश रंजन, मैथिली फेडोरा प्रोजेक्ट	 संजय झा सुल्तानगंज, भागलपुर। मोटोरोलाक सी.ई.ओ.।	 बिन्देश्वर पाठक
 बिनोद मिश्र डॉ. बिनोद मिश्र सम्प्रति आई आई टी रूडकी, उत्तराखंडमे अंग्रेजी पढ़बैत छथि आ हिनक रचनाb अंग्रेजी आ हिंदी मे प्रकाशित भेल छन्हि। अहि वर्ष हिनक कविता संग्रह Silent Steps and Other Poems प्रकाशित	 राजकमल झा, अंग्रेजी लेखक, पत्रकार हिनकर अंग्रेजी उपन्यास "द ब्लू बेडस्प्रेड" , "इफ यू आर अफरेड ऑफ हाइट्स" आ "फायरप्रूफ" प्रकाशित छन्हि। "द ब्लू बेडस्प्रेड" (१९९९)पर हुनका "कॉमनवेल्थ राइटर्स प्राइज फॉर बेस्ट फर्स्ट बुक- यूरेशिया" भेटल छन्हि। राजकमल झा श्री मुनीश्वर झा आ श्रीमती रंजना झाक पुत्र छथि, "आइ.आइ.टी.खड़गपुर"सँ बी.टेक.छथि, आ आइ कािल्ह दिल्लीमे रहै छथि, जतए ओ "इण्डियन एक्सप्रेस" मे एडिटर छथि।	 मानस बिहारी वर्मा, वैज्ञानिक

भेल छन्हि। एकर अतिरिक्त ई अंग्रेजीमे आलोचनाक क्षेत्रमे आठ टा पोथी संपादित केने छथि। हिनक पोथी Communication Skills for Engineers and Scientists बहुतो इंजीनियरिंग संस्थानमे पाठ्य पुस्तक रूपमे पढ़ाओल जाइत अछि।		
 फणीश्वर नाथ 'रेणु' मिथिला रत्न 1921-1977	 रामधारी सिंह 'दिनकर' मिथिला रत्न 1908-1974	 रामवृक्ष बेनीपुरी 1899-1967
 डॉ. हरिवंश तरुण 1927-2009 जन्म 21 जून 1927 ई.। गाम- चकसलेम, पो.- पटोरी, जिला- समस्तीपुर। तीन दर्जन सँ बेशी हिन्दी पोथी जाहिमे काव्य-कथा-प्रबन्ध सम्मिलित अछि।	 हरिशंकर श्रीवास्तव "शलभ" 1934-	 स्व. जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज' हिन्दीक साहित्यकार।

 रामेश्वर प्रेम हिन्दीक नाटककार।	 डॉ. नवल किशोर दास "नवल"	 मोहनानन्द झा 1955-
 रामाज्ञा शशिधर	 गणेश चंचल १९३०-२०११	 डॉ. अमरेन्द्र
 गोरेलाल मनीषी	 कुन्दन अमिताभ	 शंभु अगेही जन्म ८ जनवरी १९४१, प्रकाशित कृति:ओझराएल डीह (कथा-काव्य) १९९८, सतंजा (कथा संग्रह)१९९९, तेसरी बेरिआ (कथा काव्य)२००३, बज्जिका छंद विभास २००७

पोद्दार रामावतार अरुण १९२३-१९९९

मजहर इमाम १९३०-२०१२

अरुण प्रकाश १९४८-२०१२

अंशुमन पाण्डेय

तिरहुता यूनीकोडक आवेदनकर्ता।

दिनेश कुमार मिश्र

मिथिलाक बाढ़िक एक्स्पर्ट। मिथिलाक मोटा-मोटी सभ धारपर किताब प्रकाशित। उत्तर बिहार की व्यथा कथा (१९९०), कोसी- उम्र कैद से सजा-ए-मौत तक (१९९२) बंदिनी महानंदा (१९९४), बोया पेड़ बबूल का- बाढ़ नियंत्रण का रहस्य (२०००), बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी (२००४), भुतही नदी और तकनीकी झाड़- फूक (२००५), , दुई पाटन के बीच में- कोसी नदी की कहानी (२००६) तथा बागमती की सद्गति (२०१०)।

ओमप्रकाश भारती १९६८-

कोसी नदीक लोक सांस्कृतिक अध्ययन - नदियाँ गाती हैं, बिहार के पारम्परिक नाट्य आ मैथिलीक लोक नाट्य प्रकाशित

वैदेही सीता

याज्ञवल्क्य पत्नी मैत्रेयी

याज्ञवल्क्यक दू टा पत्नी छलथिन्ह पहिल कात्यायनी आ दोसर मैत्रेयी। मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी छलीह। कात्यायनीसँ हुनका तीनटा पुत्र छलन्हि- चन्द्रकान्ता, महामेघ आ विजय।

मोतीदाइ

मिथिलाक रजक (धोबि) जातिक लोकदेवता

बिहुला

चम्पानगरक बिहुला।

गांगो देवी

मिथिलाक मलाह जातिक लोकदेवता। गांगोदेवीक भगता अखनो मिथिलाक मलाह लोकनिमे प्रचलित अछि।

रेशमा, कुसुमा, फुल्वा

मोरंगक मोतीसायर

विन्ध्यवासिनी देवी मैथिली लोकगीत 1920-2006

कामेश्वरी देवी 1922-

मधुबनी जिलाक नवानी गामक। जन्म १९२२ ई. मे अपन मातृक नाहरमे भेलनि। पति पं मदनमोहन झा। बरौनीवासी प्रसिद्ध तान्त्रिक पण्डित केशव मिश्र हिनक पिता छलथिन। "मिथिला संस्कार गीत" पोथी।

कुसुमलता कर्ण

अणिमा सिंह 1924-

समीक्षिका, अनुवादिका, सम्पादिका । प्रकाशन: मैथिली लोकगीत, वसवेश्वर (अनु.), शिशु खेल गीत आदि। लेडी ब्रेबोर्न कॉलेज, कलकत्तामे पूर्व प्राध्यापिका।

लिली रे 1933-

जन्म:२६ जनवरी, १९३३,पिता:भीमनाथ मिश्र,पति:डॉ. एच.एन्.रे, दुर्गा गंज, मैथिलीक विशिष्ट कथाकार एवं उपन्यासकार । मरीचिका उपन्यासपर साहित्य अकादेमीक १९८२ ई. मे पुरस्कार । मैथिलीमे लगभग दू सय कथा आ पाँच टा उपन्यास प्रकाशित । विपुल बाल साहित्यक सृजन। अनेक भारतीय भाषामे कथाक अनुवाद-प्रकाशित। पहिल प्रबोध सम्मान 2004 सँ सम्मानित।

 चित्रलेखा देवी 1935-	 मोहिनी झा 1937-	 डॉ. सावित्री झा
 कविता देवी 1942-	 प्रमिला झा	 शान्ति सुमन 1942 - जन्म 15 सितम्बर 1942, का सिमपुर, सहरसा, बिहार, प्रका शित कृति, �ओ प्रतीक्षित, परछाई टूटती, सुलगते पसीने, पसीने के रिश्त, मौसम हुआ कबीर, समय चेतावनी नहीं देता, तप रेहे कचनार, भीतर- भीतर आग, मेघ इन्द्रनील (मैथिली गीत संग्रह), शोध प्रबंध: मध्यवर्गीय चेतना और हिन्दी का आधुनिक काव्य, उपन्यास: जल झुका हिरन। सम्मान: साहित्य सेवा सम्मान, कवि रत्न

सम्मान, महादेवी वर्मा सम्मान। अध्यापन कार्य।

प्रभावती झा 1945-1999

स्व. इलारानी सिंह 1945-1993

इलारानी सिंह: जन्म 1 जुलाई, 1945, निधन : 13 जून, 1993, पिता : प्रो. प्रबोध नारायण सिंह सम्पादिका : मिथिला दर्शन, विशेष अध्ययन : मैथिली, हिन्दी, बंगला, अंग्रेजी, भाषा विज्ञान एवं लोक साहित्य । प्रकाशित कृति : सलोमा (आस्कर वाइल्डक फ्रेंच नाटकक अनुवाद 1965), प्रेम एक कविता (1968) बंगला नाटकक अनुवाद, विषवृक्ष (1968) बंगला नाटकक अनुवाद, विन्दंती (1972), स्वरचित: मैथिली कविता संग्रह (1973), हिन्दी संग्रह।

उषाकिरण खान 1945-

जन्म:२४ अक्टूबर १९४५,कथा एवं उपन्यास लेखनमे प्रख्यात । मैथिली तथा हिन्दी दूनू भाषाक चर्चित लेखिका ।प्रकाशित कृति:अनुंतरित प्रश्न, दूर्वाक्षत, हसीना मंज़िल, भामती (उपन्यास) । २०१०-श्रीमति उषाकिरण खान (भामती, उपन्यास) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार-मैथिली।

नीरजा रेणु 1945-

वीणा ठाकुर 1954-

ज्ञानसुधा मिश्र

जन्म: ११ अक्टूबर १९४५,नाम: कामाख्या देवी,उपनाम:नीरजा रेणु,जन्म स्थान:नवटोल,सरिसबपाही ।शिक्षा: बी.ए. (आनर्स) एम.ए., पी-एच.डी.,गृहिणी ।प्रकाशित रचना : ओसकण (कविता मि.मि., १९६०) लेखन पर पारिवारिक, सांस्कृतिक परिवेशक प्रभाव । मैथिली कथा धारा साहित्य अकादेमी नई दिल्लीसँ स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथाक पन्द्रह टा प्रतिनिधि कथाक सम्पादन ।सृजन धार पियासल कथा संग्रह,आगत क्षण ले कविता संग्रह,ऋतम्भरा कथा संग्रह,प्रतिच्छवि हिन्दी कथा संग्रह,१९६० सँ आइधरि सएसँ अधिक कथा, कविता, शोधनिबन्ध, ललितनिबन्ध,आदि अनेक पत्र-पत्रिका तथा अभिनन्दनग्रन्थमे प्रकाशित ।मैथिलीक अतिरिक्त किछु रचना हिन्दी तथा अंग्रेजीमे सेहो।२००३- नीरजा रेणु (ऋतम्भरा, कथा)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।

जन्म- भवानीपुर, पण्डौल (मधुबनी)। पिता श्री श्रीमोहन ठाकुर। प्रकाशित कृति: मैथिली रामकाव्यक परम्परा, इतिहास-दर्पण (समीक्षा), विद्यापतिक उत्स (समालोचना), भारती (उपन्यास)

भारतक उच्चतम न्यायालयक चारिम महिला न्यायाधीश आ पहिल मैथिलानी।

जस्टिस मृदुला मिश्र

वीणा कर्ण 1946-

जन्म 3 नवम्बर 1946, गाम- पटोरी, पो.पंचगछिया, जिला- सहरसा। सदस्य, मैथिली साहित्य अकादेमी परामर्शदातृ समिति 1987-1993, सदस्य, भाषा परामर्शदातृ समिति (मैथिली), भारतीय ज्ञानपीठ। अवकाशप्राप्त विश्वविद्यालय आचार्य आ अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय। **प्रकाशित**

शेफालिका वर्मा 1943-

जन्म:९ अगस्त, १९४३,जन्म स्थान : बंगाली टोला, भागलपुर । शिक्षा:एम., पी-एच.डी. (पटना

	कृति- अर्गला, भावनाक अस्थिपंजर (मैथिली काव्य संग्रह), शंखनाद, तुभ्यमेव समर्पये, अनुबन्ध (हिन्दी काव्य संग्रह)। प्रकाश्य: सप्तपदी (मैथिली निबन्ध संग्रह), चारित्रिक पृष्ठभूमिमे मैथिलीक प्रसिद्ध उपन्यास, मैथिली-उपन्यासक कथा किछु कहैत अछि (मैथिली आलोचना); जिन्दगीनामा (हिन्दी काव्य संग्रह), क्रमशः (हिन्दी आलोचना)।	विश्वविद्यालय), ए. एन. कालेज, पटना मे हिन्दीक प्राध्यापिका पदसँ सेवानिवृत्त । नारी मनक ग्रन्थिकेँ खोलि:करुण रससँ भरल अधिकतर रचना। प्रकाशित रचना:झहरैत नोर, बिजुकैत ठोर; विप्रलब्धा (कविता संग्रह), स्मृति रेखा (संस्मरण संग्रह), एकटा आकाश (लघुकथा संग्रह), यायावरी (यात्रा-वृत्तान्त), भावाञ्जलि (काव्य-प्रगीत) , किस्त-किस्त जीवन (आत्मकथापर साहित्य अकादेमी पुरस्कार)। अर्थयुग (लघुकथा संग्रह)आखर-आखर प्रीत, नागफांस (उपन्यास)। २००४ ई.- डॉ. श्रीमती शेफालिका वर्मा, पटना;यात्री-चेतना पुरस्कार।
नीता झा 1953- जन्म : २१-०१-१९५३,व्यवसाय:प्राध्यापिका । लेखन पर समाजक परम्परा	आशा मिश्र 1950- जन्म:६-७-१९५० ई.,प्रकाशित कथा मे मैथिकीक संग	डॉ. सुनीति झा

तथा आधुनिकताक संस्कार सँ होइत विसंगतिक प्रभाव।प्रकाशित कृति : फरिच्छ, कथा संग्रह १९८४, कथानवनीत १९९०,सामाजिक असन्तोष ओ मैथिली साहित्य शोध समीक्षा । बिलाइ मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)।

हिन्दी मे सेहो । सभसँ पैघ विजय मैथिली कथा संग्रह ।

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' 1948-

जन्मस्थान:रहिका,माता:श्रीमती वृन्दा देवी,पिता:पं. दीनानाथ झा,शिक्षा:एम.ए., बी.एड.,प्रसिद्ध अभिनेत्री दू सयसँ बेशी नाटकमे भाग लेलनि ।भंगिमा (नाट्यमंच) क भूतपूर्व उपाध्यक्षा, पत्रिकाक सम्पादन, कथालेखन आदिमे कुशल । �अरिपन� आदि अनेक संस्था द्वारा पुरस्कृत-सम्मानित।

डॉ. इन्दिरा झा 1957

मेनका मल्लिक 1966-

 शारदा सिन्हा मैथिली लोकगीत 1953-	 लालपरी देवी	 शकुंतला चौधरी
 गोदावरी दत्ता, मिथिला चित्रकला	 उषा वर्मा 1948-	 कमला चौधरी 1953- कृति- मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली, प्रकाशनाधीन: बाटे बिलायल पानि (कथा संग्रह), पिया मधुमास (कविता संग्रह), आशापूर्णा देवीक बंगला लघु उपन्यास **मन मंजूषा**क मैथिली अनुवाद। मुजफ्फरपुरसँ प्रकाशित मैथिली साहित्यिक पत्रिका **स्वाती**क सम्पादन (१९८४-८५)।

 सीता देवी, मिथिला चित्रकला	 गंगा देवी १९२८-१९९१ मिथिला चित्रकला	 सरस्वती चौधरी, जनकपुर
 डॉ. अरुणा चौधरी	 विभा रानी 1959- मैथिली क 3 साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता लेखकक 4 गोट किताब "कन्यादान" (हरिमोहन झा), "राजा पोखरे में कितनी मछलियां" (प्रभास कुमार चाऊधरी), "बिल टेलर की डायरी" व "पटाक्षेप" (लिली रे) हिन्दीमे अनूदित छन्हि।2 गोट लोककथाक पुस्तक "मिथिला की लोक कथाएं" व "गोनू झा के किस्से"। मैथिली कथा संग्रह "खोहसँ निकसैत"।	 ज्योत्सना चन्द्रम 1963- जन्मतिथि: १५ दिसम्बर, १९६३,जन्मस्थान : मरूआरा, सिंधिया खुर्द, समस्तीपुर,पिता : श्री मार्कण्डेय प्रवासी,माता: श्रीमती सुशीला झा,अध्यापन ।सुपरिचित कवयित्री, कथाकार । प्रकाशित कृति: बोनसाई (कविता संग्रह), झिझिरकोना (कथासंग्रह)।

सुस्मिता पाठक 1962-

जन्म: सुपौल, बिहार । परिचिति कविता संग्रह प्रकाशित । कथावाचक, कथासंग्रह प्रकाशनाधीन । राजनीति शास्त्रमे एम.ए.। संगीत, पेंटिंगमे रुचि । मैथिलीक पोथी पत्रिका पर अनेक रेखाचित्र प्रकाशित । समकालीन जीवन, समय, आ तकर स्पंदनक कवयित्री । अनेक भाषामे रचनाक अनुवाद प्रकाशित।

उर्मिला देवी, मिथिला चित्रकला

यमुना देवी, मिथिला चित्रकला

यशोदा देवी, मिथिला चित्रकला

रमा झा, सम्पादक मिथिला दर्पण

पन्ना झा

अनुभूति (लघुकथा संग्रह)।

सुधा कर्ण

नूतन दास

राधिका झा, अंग्रेजी लेखिका

	सम्पादिका, मिथिलांगन	हुनकर अंग्रेजी उपन्यास "स्मेल" आ "लैन्टर्न्स ऑन देयर हॉर्न्स" आ अंग्रेजी लघु कथा संग्रह "द एलीफेन्ट एण्ड द मारुति" प्रकाशित अछि। उपन्यास "स्मेल" लेल हुनका "फ्रेन्च प्रिक्स गुएरलेन" पुरस्कार भेटल छन्हि आ ई पोथी सोलह भाषामे अनूदित भेल अछि। राधिका "एमहर्स्ट कॉलेज"सँ "एन्थ्रोपोलोजी" पढ़ने छथि आ "शिकागो विश्वविद्यालय"सँ राजनीति विज्ञानमे मास्टर्स डिग्री लेने छथि। ओ "हिन्दुस्तान टाइम्स" आ "बिजनेस वर्ल्ड"मे काज केने छथि आ संगमे "राजीव गांधी फाउन्डेशन, दिल्ली" मे सेहो, जतए ओ आतंकवादसँ पीड़ित बच्चा सभ लेल सम्पर्क कार्यक्रमक प्रारम्भ केने रहथि। आइ काल्हि ओ अपन पति आ बच्चीक संग टोक्योमे रहै छथि।

स्वयंप्रभा झा 1970-

रूपा धीरू 1973-

रूपा धीरू- जन्मस्थान-मयनाकडेरी, सप्तरी, श्रीमती पूनम झा आ श्री अरूणकुमार झाक पुत्री।स्थायी पता- अञ्चल-सगरमाथा, जिल्ला- सिरहा। प्रथम प्रकाशित रचना-कोइली कानए, माटिसँ सिनेह (कविता),भगता बेङक देश-भ्रमण (कनक दीक्षितक पुस्तकक धीरेन्द्र प्रेमर्षिसँग मैथिलीमे सहअनुवाद,सङ्गीतसम्बन्धी कृति- राष्ट्रियगान, भोर, नेहक वएन, चेतना, प्रियतम हमर कमौआ (पहिल मैथिली सीडी), प्रेम भेल तरघुस्कीमे, सुरक्षित मातृत्व गीतमाला, सुखक सनेस। सम्पादन-पल्लव, मैथिली साहित्यिक मासिक पत्रिका, सम्पादन-सहयोग,हमर मैथिली पोथी (कक्षा १, २, ३, ४ आ ५ आ कक्षा 9-10 क ऐच्छिक

रंजना झा, विद्यापति संगीत गायिका

	मैथिली विषय पाठ्यपुस्तकक भाषा सम्पादन)।	
रश्मि दत्त, गायिका, जनकपुर	कामिनी कामायनी	मुन्नी झा युवा रच नाकार
कामिनी 1978- युवा कवियित्री	रुक्साना सिद्दीकी	कल्पना मिश्र, मैथि ली रंगमंच
ज्योति झा, , मैथिली रंगमंच	किरण झा, मैथिली रंगमंच	प्रियंका झा, मैथि ली रंगमंच
ऋतु कर्ण, मैथिली रंगमंच	ज्योति वत्स, रंगमंच	नेहा वर्मा, रंगमंच

सविता	अनुप्रिया	मृदुला प्रधान
अरुण मिश्र, महिला बॉक्सिंग	राखी दास, मिथिला चित्रकला	बनारसी पंडित,मिथिला चित्रकला, धनुषा, नेपाल
देवकला देवी कर्ण,मिथिला चित्रकला, नेपाल	मदनकला कर्ण,मिथिला चित्रकला, नेपाल	महासुन्दरी देवी,मिथिला चित्रकला
निर्जला झा, मिथिला चित्रकला, नेपाल	फुलो साह, मिथिला चित्रकला, महोत्तरी, नेपाल	रजनी पल्लवी

 संगीता कुमारी, मैथिली फेडोरा प्रोजेक्ट	 विन्देश्वरी दास	 गौरी सेन
 सीमा झा	 वाणी मिश्र, कवियित्री १९५३-१९९६ कोइलख, मधुबनी। जन्मस्थान तिलाठी, नेपाल।	 मौसमी बनर्जी, कवियित्री
 शैल झा	 शान्ति देवी	 शशिबाला पिता श्री उग्र नारायण लाल, पति श्री उमेश कुमार कण्ठ (बिसहथ)। शिवा कश्यप आ कृष्ण कुमार कश्यपक सहयोगसँ "भारती विकास संस्था"क स्थापना। रचना: कृष्ण कुमार कश्यपक संग "मेघदूत" आ "गीत-

गोविन्द"क मैथिली अनुवाद, माछ-भात, मिथिला चित्र-शिक्षा, भाग-१, मिथिला चित्र-कोर, भाग-३।

मुन्नी कामत

सुखल मन तरसल आँखि (कविता संग्रह)।

प्रेरणा झा

मिथिला लोक कला

अंशुमाला

मैथिली लोकगीत।

श्वेता झा चौधरी, चित्रकार

गाम सरिसव-पाही, ललित कला आ गृहविज्ञानमे स्नातक। मिथिला चित्रकलामे सर्टिफिकेट कोर्स।कला प्रदर्शिनी: एक्स.एल.आर.आइ., जमशेदपुरक सांस्कृतिक कार्यक्रम, ग्राम-श्री मेला जमशेदपुर, कला मन्दिर जमशेदपुर (एक्जीवीशन आ वर्कशॉप)।कला सम्बन्धी कार्य: एन.आइ.टी. जमशेदपुरमे कला प्रतियोगितामे निर्णायकक रूपमे सहभागिता, २००२-०७ धरि बसेरा, जमशेदपुरमे कला-शिक्षक (मिथिला चित्रकला), वूमेन कॉलेज पुस्तकालय आ हॉटेल बूलेवार्ड लेल वाल-

श्वेता झा

मिथिला चित्रकला, सम्प्रति सिंगापुरमे निवास।

रानी झा

पेंटिंग।प्रतिष्ठित स्पॉन्सर: कॉरपोरेट कम्युनिकेशन्स, टिस्को; टी.एस.आर.डी.एस, टिस्को ; ए.आइ.ए.डी.ए., स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, जमशेदपुर; विभिन्न व्यक्ति, हॉटेल, संगठन आ व्यक्तिगत कला संग्राहक।

हॉबी: मिथिला चित्रकला, ललित कला, संगीत आ भानस-भात।

मोती कर्ण

मिथिला चित्रकला

निक्की प्रियदर्शिनी

प्रज्ञा झा

डॉ. नलिनी चौधरी

नीलम चौधरी, कथक नृत्यांगना

इरा मल्लिक

पिता स्व. शिवनन्दन मल्लिक, गाम- महिसारि, दरभंगा। पति श्री कमलेश कुमार, भरहुल्ली, दरभंगा।

गुंजन कर्ण

राँटी मधुबनी, सम्प्रति यू.के.मे रहै छथि। www.madhubaniarts.co.uk पर हुनकर कलाकृति देखि सकै छी।

पूनम मंडल

प्रियंका झाक संग मैथिली न्यूज पोर्टल "समदिया" www.esamaad.blogspot.com क संचालन ।

प्रियंका झा

पूनम मंडलक संग मैथिली न्यूज पोर्टल "समदिया" www.esamaad.blogspot.com क संचालन ।

स्तुति नारायण

डॉ. ललिता झा १९५१

जन्म पनिचोभ, दरभंगामे। "मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली" प्रकाशित"।

आरती कुमारी १९६७-

"मैथिली मुक्तक काव्यमे नारी" प्रकाशित।

मीना झा

ब्रेस्ट कैसरक समस्यापर विदेह मे मीना झा केर एकटा लघु कथा प्रकाशित भेल। ई मैथिलीक पहिल कथा छल जे ब्रेस्ट कैसर पर लिखल गेल। हिन्दीमे से

अनुपमा प्रियदर्शिनी

पति डॉ. रतन कर्ण, गाम-उजान (बड़कागाम), पो. लोहना रोड, जिला दरभंगा। सम्प्रति लोजियाना (संयुक्त

शिखा

मैथिली रंगमंच।

हो ताधरि एहि विषयपर कथा नहि लिखल गेल छल ।

राज्य अमेरिकामे), शिक्षा- एम.एस.सी. (जंतु विज्ञान), ल.ना. मिथिला वि.वि., दरभंगा; बी.एस.सी. बी.आर. अम्बेडकर वि.वि. मुजफ्फरपुरसँ, हॉबी, मिथिला चित्रकला, कम्प्यूटराइज्ड चित्रकला, ललित कला। उपलब्धि: अखिल भारतीय कला आ दस्तकारी प्रतियोगिताक पुरस्कार 1995 मे; संस्कार भारती भाव नृत्य प्रतियोगिता 1989 मे सहभागी।

प्रीति ठाकुर

गाम- जगेली, भाया तारानगर, पूर्णियाँ। मैथिली बाल साहित्यमे "गोनू झा आ आन चित्र कथा २००८", "मैथिली चित्रकथा २००९" आ "मिथिलाक लोकदेवता २०१०", विद्यापतिक पुरुष

अनुपमा झा

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल, भारत।

विनीता मल्लिक

परीक्षा (बाल साहित्य) २०१४ प्रकाशित।		
 रेवती मिश्र	 अनामिका राज	 शान्ति लक्ष्मी चौधरी ग्राम गोविन्दपुर, जिला सुपौल निवासी आ राजेन्द्र मिश्र महाविद्यालय, सहरसा मे कार्यरत पुस्तकालयाध्यक्ष श्री श्यामानन्द झाक जेष्ठ सुपुत्री, आओर ग्राम महिषी (पुनर्वास आरापट्टी), जिला सहरसा निवासी आ दिल्ली स्कूल ऑफ इकानोमिक्स सँ जुड़ल अन्वेषक आ समाजशास्त्री श्री अक्षय कुमार चौधरीक अर्धांगिनी छथि। प्राणीशास्त्र सँ स्नातकोत्तर रहितो शिक्षाशास्त्रक स्नातक शिक्षार्थी आ एकटा समाजशास्त्री सँ सानिध्यक चलिते आम जीवनक सामाजिक बिषय-बौस्तु आ खास कऽ महिलाजन्य सामाजिक समस्या आ

		प्रघटनामे हिनक विशेष अभिरूचि स्वभाविक।
 डॉ कल्पना मणिकान्त मिश्र पिता डॉ शिव कुमार झा, गाम राटी, सासुर- गजहारा। मेडिकल शिक्षा जे. जे. हॉस्पीटल/ ग्रान्ट हॉस्पीटलसँ सम्पन्न कय स्त्री-रोग विशेषज्ञ। मुम्बइसँ १९८०-८२ मे प्रकाशित होइबला मैथिली पत्रिका "विदेह"क पति डॉ मणिकान्त मिश्र (निर्माता- मैथिली फिल्म- आउ पिया हमर नगरी) संग सम्पादन।	 कुसुम ठाकुर प्रत्यावर्तन (आत्मकथा)	 नन्दिनी पाठक १९६१- पाथरक शहर (कविता संग्रह)

(c)२०००- २०२३। विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives; and the right to e-publish/ print-publish all these archives. रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता मध्य)

editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ पठा सकैत छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकरो वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ऐ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि। The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.
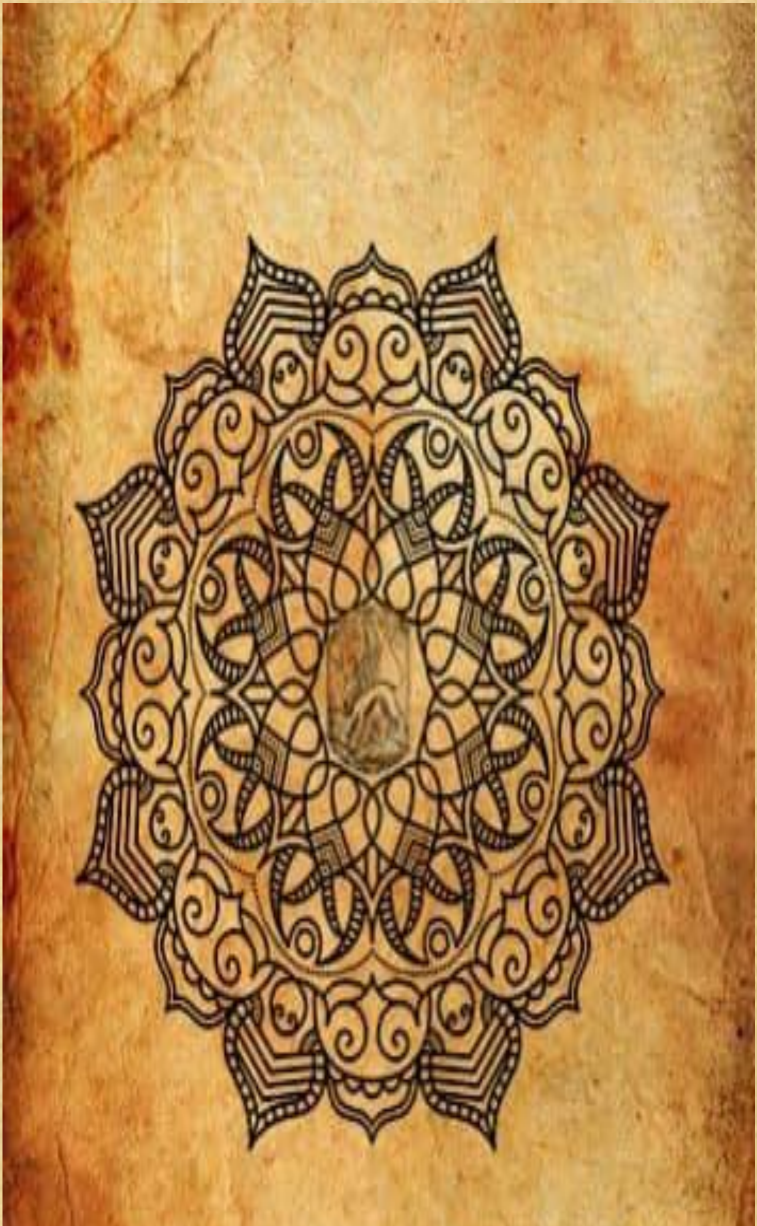
(c) २०००-२०२३ सर्वाधिकार सुरक्षित। विदेहमे प्रकाशित सभटा रचना आ आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार आ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.htm, http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.htm (किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.htm लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर) केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि। ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै।इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब 'भालसरिक गाछ' जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA